Plagiarism Detector v. 2867 - Originality Report 3/27/2025 4:52:52 PM

Analyzed document: CPS-4.pdf Licensed to: Pitamber Dutt Pant

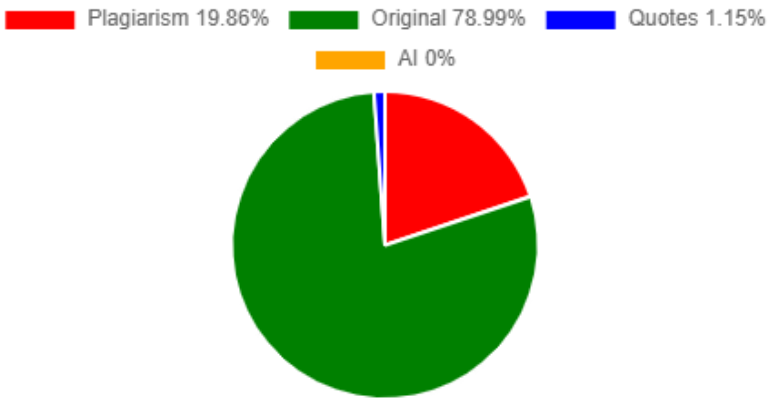
Comparison Preset: Rewrite Detected language: Hi

Check type: Internet Check

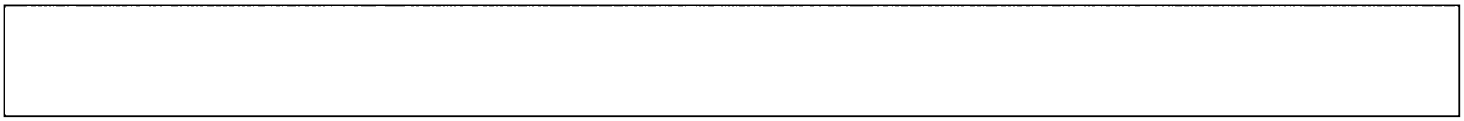
TEE and encoding: PdfPig

Detailed document body analysis:

Relation chart:



Distribution graph:



Top sources of plagiarism: 46

9%	7003	1. https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/
7%	5970	2. https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/wp-content/uploads/2020/07/11145827/लेखन-कौशल-hindi-notes.pdf
6%	4697	3. https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुदाय-और-मुख्य-वनस्पति

Processed resources details: 124 - Ok / 4 - Failed

Important notes:

Wikipedia:	Google Books:	Ghostwriting services:	Anti-cheating:
Wiki Detected!	[not detected]	[not detected]	[not detected]

UACE: UniCode Anti-Cheat Engine report:

1. Status: Analyzer **On** Normalizer **On** character similarity set to **100%**
2. Detected UniCode contamination percent: **0%** with limit of: 5%
3. Document not normalized: percent not reached 5%
4. All suspicious symbols will be marked in purple color: Abcd...

5. Invisible symbols found: 0

Assessment recommendation:

No special action is required. Document is Ok.

Alphabet stats and symbol analyzes:

UACE does not support the doc language! UACE logics skipped!

Active References (Urls Extracted from the Document):

No URLs detected

Excluded Urls:

No URLs detected

Included Urls:

No URLs detected

Detailed document analysis:

BED II- CPS 4 हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) Pedagogy of Hindi (Part I) हिक्षक हिक्षा हिभाग, हिक्षिाास्त्र हिद्याखा उत्तराखण्ड मक्त हिश्वहिद्यालय, ल्द्वानी ु ISBN: 13-978-93-85740-71-8 BED II- CPS 4 (BAR CODE) BED II- CPS 4 ह#दी का श)णशा+ (भाग I) श#क श#ा वभाग, श#ाशा% व'ाशाखा उ

Quotes detected: **0.01%** id: **1**

"राख&ड म* वि-व.ालय, ह"

#ानी ु अ

Quotes detected: **0.01%** id: **2**

"ययन बोड(वशेष& सिमित !ोफे सर एच० पी० श#ल (अ"

य$- पदने), नदशे क, श(ाशा* व,ाशाखा, !ोफे सर एच० पी० श#ल (अ

Quotes detected: **0.01%** id: **3**

"य$- पदने), नदशे क, श(ाशा* ु ु उ"

राख&ड म* वि-व.ालय व#ाशाखा, उ(राख*ड म. व/व#ालय ु ु !ोफे सर मह$मद मयाँ (बा# वशषे)- सद#य), पव$ अध(ाता, श#ा सकाय, !ोफे सर सी० बी० शमा$ (बा# वशषे)- सद#य), अ&य', रा*+ीय ु ू ं जामया मि&लया इ)लामया व पव- कलपित, मौलाना आजाद रा*+ीय उद 0 म# व&ालयी श,ा स/थान, नोएडा ू ु ु ं ू व#व$ालय, हदै राबाद !ोफे सर पवन कमार शमा/ (बा# वशषे)- सद#य), अध(ाता, ु !ोफे सर एन० एन० पा#डेय (बा# वशषे)- सद#य), वभागा&य(, श#ा वभाग, श#ा सकाय व सामाजक व,ान सकाय, अटल बहारी बाजपेयी ह7दी ं ं एम० जे० पी० ! हले ख&ड व*व+ालय, बरेली व#व$ालय, भोपाल !ोफे सर के ० बी० बधोरी (बा# वशषे)- सद#य), पव(अध,ाता, श0ा सकाय, !ोफे सर जे० के ० जोशी (वशषे आम)ी- सद#य), श'ाशा) ु ू ं ं एच० एन० बी० गढ़वाल व'व(ालय, *ीनगर, उ/राख1ड व#ाशाखा, उ(राख*ड म. व/व#ालय ु !ोफे सर जे० के ० जोशी (वशषे आम)ी- सद#य), श'ाशा) व+ाशाखा, !ोफे सर र'भा जोशी (वशषे आम)ी- सद#य), श#ाशा% ं ं उ"राख&ड म* वि-व.ालय व#ाशाखा, उ(राख*ड म. व/व#ालय ु ु !ोफे सर र'भा जोशी (वशषे आम)ी- सद#य), श'ाशा) व+ाशाखा, उ.राख0ड डॉ० दनेश कमार (सद#य), सहायक (ोफे सर, श/ाशा0 ु ं म# व&व'ालय व#ाशाखा, उ(राख*ड म. व/व#ालय ु ु डॉ० दनेश कमार (सद#य), सहायक (ोफे सर, श/ाशा0 व2ाशाखा, उ5राख6ड डॉ० भावना पलिड़या (सद#य), सहायक (ोफे सर, श/ाशा0 ु म# व&व'ालय व#ाशाखा, उ(राख*ड म. व/व#ालय ु ु डॉ० भावना पलिड़या (सद#य), सहायक (ोफे सर, श/ाशा0 व2ाशाखा, स!ी ममता कमारी (सद#य), सहायक (ोफे सर, श/ाशा0 ु ु उ"राख&ड म* वि-व.ालय व#ाशाखा एव सह-सम#वयक बी० एड० काय$%म, उ(राख+ड म. ु ु ं व#व$ालय स#ी ममता कमारी (सद#य), सहायक (ोफे सर, श/ाशा0 व2ाशाखा एव सह- ु ु ं डॉ० !वीण कमार तवारी (सद#य एव सयोजक), सहायक -ोफे सर, सम#वयक बी० एड० काय$%म, उ(राख+ड म. वि1व2ालय ु ं ं ु श#ाशा% व'ाशाखा एव सम-वयक बी० एड० काय$%म, उ(राख!ड ं डॉ० !वीण कमार तवारी (सद#य एव सयोजक), सहायक -ोफे सर, श3ाशा4 ु ं ं म# व&व'ालय ु व#ाशाखा एव सम+वयक बी० एड० काय$%म, उ(राख+ड म. वि1व!ालय ु ं दशाबोध: (ोफे सर जे० के ० जोशी, पव$ नदशे क, श+ाशा- व.ाशाखा, उ1राख3ड म7 व8व.ालय, ह =ानी ू ु काय$%म सम(वयक: काय$%म सह-सम#वयक: पाठय&म सम)वयक: पाठय&म सह सम*वयक: ् ् डॉ० !वीण कमार तवारी स#ी ममता कमारी डॉ० गरीश कमार तवारी डॉ० !वीण कमार तवारी ु ु ु ु ु सम#वयक, श)क श)ा वभाग, सह-सम#वयक, श)क श)ा वभाग, अतिथ %या(याता, श#ा वभाग, सम#वयक, श)क श)ा वभाग, श#ाशा% व'ाशाखा, श#ाशा% व'ाशाखा, उ*राख,ड मिहला महाव'ालय, काशी ह'द श#ाशा% व'ाशाखा, ू उ

Quotes detected: **0.02%** id: **4**

"राख&ड म* व#व$ालय, म# व&व'ालय, ह,-ानी, नैनीताल, व#व$ालय, वाराणसी, उ(र)दशे उ"

राख&ड म* वि-व.ालय, ह23ानी, ु ु ु ह

Quotes detected: **0.01%** id: **5**

"#ानी, नैनीताल, उ+राख.ड उ"

राख&ड नैनीताल, उ

Quotes detected: **0.05%** id: **6**

"राख&ड !धान स&पादक उप स$पादक डॉ० !वीण कमार तवारी डॉ० गरीश कमार तवारी ु ु सम#वयक, श)क श)ा वभाग, श)ाशा- व.ाशाखा, अतिथ %या(याता, श#ा वभाग, मिहला महाव'ालय, काशी ह'द ू उ"

राख&ड म* ि◌व-ि◌व.◌ालय, ह23ानी, नैनीताल, उ"राख&ड ि◌व#ि◌व$◌ालय, वाराणसी, उ(र)दशे ु ि◌वषयव%त स)पादक भाषा स%पादक !◌ा#प स&पादक !फ़ सशोधक ु ू ं डॉ० ि◌गरीश कमार ि◌तवारी डॉ० ि◌गरीश कमार ि◌तवारी स#◌ी ममता कमारी स#◌ी ममता कमारी ु ु ु ु ु ु अितिथ %या(याता, ि◌श#◌ा ि◌वभाग, अितिथ %या(याता, ि◌श#◌ा ि◌वभाग, सहायक &◌ोफे सर, ि◌श-ाशा. सहायक &◌ोफे सर, ि◌श-ाशा. मिहला महिाव'◌ालय, काशी ि◌ह,द मिहला महिाव'◌ालय, काशी ि◌ह,द ि◌व#◌ाशाखा, उ(राख*ड म. ि◌व#◌ाशाखा, उ(राख$ड म(ु ु ू ू ि◌व#ि◌व$◌ालय, वाराणसी, उ(र)दशे ि◌व#ि◌व$◌ालय, वाराणसी, उ(र)दशे ि◌व#ि◌व$◌ालय ि◌व#ि◌व$◌ालय साम$◌ी ि◌नमा(ण !◌ोफे सर एच० पी० श#ल !◌ोफे सर आर० सी० ि◌म# ु ि◌नदशे क, ि◌श'◌ाशा) ि◌व+◌ाशाखा, उ.राख0ड म4 ि◌वऽि◌व+◌ालय ि◌नदशे क, एम० पी० डी० डी०, उ"राख&ड म* ि◌वि◌व.◌ालय ु ु © उ"राख&ड म# ि◌व&ि◌व'◌ालय, 2017 ु ISBN-13-978-93-85740-71-8 !थम स&करण: 2017 (पाठय&म का नाम: ि◌ह#दी का ि◌श)णशा+, पाठय&म कोड- BED II- CPS 4) ृ ृ ं सवा$ि◌धकार सरि%त। इस प%तक के ि◌कसी भी अश को !◌ान के ि◌कसी भी मा+यम म - .योग करने से पव5 उ7राख9ड म ि◌व=ि◌व ◌ालय से ि◌लिखत अनमित लेना आव-यक ह।ै इकाई ु ु ं ू ु ु लेखन से सबिधत ि◌कसी भी ि◌ववाद के ि◌लए पण65 पेण लेखक ि◌ज8मदे ◌ार होगा। ि◌कसी भी ि◌ववाद का ि◌नपटारा उ"राख&ड उ(च *यायालय, नैनीताल म 2 होगा। ं ं ू ि◌नदशे क, ि◌श'◌ाशा) ि◌व+◌ाशाखा, उ.राख0ड म4 ि◌वऽि◌व+◌ालय 8ारा ि◌नदशे क, एम० पी० डी० डी० के मा%यम से उ)राख,ड म/ ि◌वि2व3ालय के ि◌लए मि6त व 8किशत। ु ु ु !काशक: उ"राख&ड म* ि◌वि◌व.◌ालय; म#क: उ"राख&ड म* ि◌वि◌व.◌ालय। ु ु ु काय$%म का नाम: बी० एड०, काय$%म कोड: BED- 17 पाठय&म का नाम: ि◌ह#दी का ि◌श#णशा&, पाठय&म कोड- BED II- CPS 4 ृ ृ ख"ड इकाई स#या स#या इकाई लेखक ं ं 1 1 व 5 !◌ोफे सर ि◌नरजन सहाय ं !◌ोफे सर, ि◌ह)दी ि◌वभाग, महा1मा गाँधी काशी ि◌व6ापीठ, वाराणसी, उ;र!दशे 1 2 डॉ० !रकल शमा) ं सहायक &◌ोफे सर, ि◌श#◌ा ि◌व#◌ापीठ, गलगिोटया ि◌व)ि◌व*◌ालय, !◌ेटर नोएडा, उ+र,दशे 1 3 डॉ० तारके &र ग)◌ा ु सहायक &◌ोफे सर, बी० एड० ि◌वभाग, महाराणा &ताप राजक+य -नातको0र महिाव&◌ालय, हरदोई, उ०!० 1 4 स#◌ी ि◌वजेता कमारी ु ु सहायक &◌ोफे सर, ि◌श#◌ा ि◌वभाग, जमशदे पर मिहला महिाव'◌ालय, जमशदे पर, झारख,ड ु ु 2 1 व 3 !◌ी मोहत राज कमरा स०- 13, मकान स०- A/7, फे ज 5, सडे माक(ट, आयानगर, नई ि◌द2ली ं ं ं 2 2, 4 व डॉ० ि◌गरीश कमार ि◌तवारी ु 5 अितिथ %या(याता, ि◌श#◌ा ि◌वभाग, मिहला महिाव'◌ालय, काशी ि◌ह,द ि◌व/ि◌व'◌ालय, वाराणसी ू BED II- CPS 4 ि◌ह#दी का ि◌श)णशा+ (भाग I) ख"ड 1 इकाई स० इकाई का नाम प# स० ृ ं ं 2-14 1 भाषा एव ि◌ववध सबिधत प- ं ं ं 15-29 2 ि◌हदी भाषा ि◌श*ण : एक प/रचय ं 30-44 3 ि◌हदी भाषा ि◌श#ण के कछ अ*य मह.वपण 2 आयाम ु ू ं 45-61 4 भारत म " ि◌हदी भाषा एव ि◌हदी भाषा ि◌श#ण क" !ि◌#थित ं ं ं 62-73 5 भारत ि◌हदी भाषा ि◌श*ण के कछ अनछए पहल ु ु ू ं ख"ड 2 इकाई स० इकाई का नाम प# स० ृ ं ं 75-93 1 ि◌हदी भाषा ि◌श*ण क- ि◌विभ/न ि◌विधयाँ ं 94-110 2 भाषा एव सिाह%य का सबध तथा भाषा ि◌श#ण म " ि◌हदी सिाह%य क" भिमका ू ं ं ं ं 111-133 3 ि◌हदी भाषा तथा ि◌हदी सिाह,य के ि◌विभ1न ि◌वधाओ का ि◌श6ण ं ं ं 134-149 4 ि◌हदी भाषा ि◌श#णाथ' ि◌श#ण-अिधगमसाम(ी एव पाठयसहगामी ि◌

Quotes detected: **0.01%** id: **7**

"याए ँ ृ ं ं 152-166 5 ि◌हदी भाषा ि◌श#ण म "

सचना एव तकनीक% का उपयोग ू ं ं

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.apornvideo.com/video/189907/hot… id: **8**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 खण्ड 1 Block 1 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 1 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इकाई 1- भाषा एवं वववधव संबंधत पक्ष 1.1 प्रस्तिाना 1.2 उद्दश्े य 1.3 भाषा का अर्थ : समप्रत्यय एि प्रकायथ ं 1.4 भाषा एि समाज ं 1.5 भाषा एि जेंडर ं 1.6 भाषा एि शावत ं ं 1.7 गह-भाषा एि विद्यालय की भाषा ृ ं 1.8 भाषा का महत्ि एि पाठयक्रम में उसका स्ान ृ ं 1.9 अविगम

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 3 resources! id: **9**

में भाषा की प्रिानता 1.10 एक विद्यालयी विषय के रुप में वहदी भाषा एि अविगम तर्ा सप्रेषण के माध्यम के ं ं ं रुप म

ें वहदी भाषा के मध्य अतर ं ं 1.11 साराश ं 1.12 सन्दभथ ग्रर् सची ू ं 1.1 प्रस्तावना भाषा वकसी समाज की ि◌ह वनवि ह ै , वजसके बल पर एक – दसरे से सम्ि◌ाद वकया जाता ह ै । ि◌ह समाज ू की अनेक उपलवधियों ,जय – पराजय . सघषों और लक्ष्यों को प्रकट करती ह ै । इस अर्थ में ि◌ह ं सामावजक , सास्कवतक और ऐवतहावसक यात्रा की हमसफर ह ै । वशक्षा की दवनया म ें भाषा की मौजदगी ृ ू ं ु के विवभन्न सन्दभ थ ह ैं , वजनपर व्यापक अध्ययन हए ह ैं । इस अध्ययन का फै लि तकनीकी पहल के सार् ु ू ही व्यिाहाररक पहल तक ह ै । भाषा के अध्ययन की परानी तरकीबों म ें कछ नए पहलओ का शावमल ू ु ु ु ं होना , उसकी पररवि म ें उन सन्दभों को जोड़ा जो हमारी भाषाई सस्कवत का वहस्सा र् े , पर वजनपर हमारी ृ ं नज़र नहीं जाती ◌ी । उदाहरण के वलए हम भाषा और जेंडर , भाषा और शावन्त के फलक को समझ सकते ह ैं । इस इकाई म ें हम भाषा और वशक्षा से जड़ें कछ ऐसे ही सन्दभों का अध्ययन करेंग े । ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 2 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1.2 उद्दश्े य भाषा और वशक्षा के विवि सन्दभों पर आिाररत इस इकाई म ें आप अनेक पहलओ का अध्ययन करेंग े ु ं / करेंगी । इस इकाई के विस्तत अध्ययन के बाद विद्या◌ी वशक्षक / वशवक्षका समझ पाएगँ े / पाएगँ ी – ृ 1. अलग-अलग सामावजक सन्दभों म ें भाषाई प्रयोग के रूप भी विवि प्रकार के होते ह ैं । भाषाई अवस्मता की स्ि◌ीकवत लोकतत्र म ें सबको अवभव्यवक्त का अिसर

महयै ा कराती ह ै । ृ ु ं 2. भाषा पद के सम्यक ज्ञान और प्रकायथ को जानकर उसके कारगर उपयोग की समझ बनाई जा सकती ह ै । 3. भाषा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जडें र सम्बन्ि असमानता का कारण भी बनती ह ै एि ं इसकी जानकारी ऐसी असमानताओ से हम ें बचाती भी ह ै । ं 4. वशक्षा का मकसद ज्ञान का प्रसार भर नहीं ह ै । हम सभी स्ानीय , राष्ट्रीय और भमडलीय स्तर ू ं पर अभतपि थ वहसा के दौर से गज़र रह े ह ैं । ऐसे म ें वशक्षा को शावत स्ापना के वलए , सशक्त ू ू ु ं ं माध्यम के रूप म ें इस्तेमाल करना हमारे समय की ज़रूरत ह ै । इसका वसरा भाषा आिाररत विवभन्न कक्षाई और विद्यालयी पररवस्वतयों से भी जड़ता

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **10**

ह ै । भाषा की इस समझ को जानना ु भी ज़रूरी ह ै । 5. घर की भाषा और विद्यालय की भाषा के बीच एक गहरी खाई विद्यमान ह ै । इसका खावमयाजा अविगम की प्रवक्रया को बावित करता ह ै । आिश्यकता इस बात की ह ै वक घर की भाषा और विद्यालय की भाषा क

े बीच सम्ाद उपवस्त हो , तावक अविगम की उत्कष्ट उपलवधियों को ृ प्राप्त करना सम्भि हो । 6. विद्यालय म ें भाषा का उपयोग माध्यम एि विषय के रूप म ें होता ह ै । भाषा विवभन्न विषयों के ं कें द्र म ें ह ै , अत: भाषा सीखने – वसखाने के अिसर सभी विषयों की कक्षाओ म ें सवजत करने ृ ं होंग े । 7. विद्यालय एि विद्यालय के बाहर पररिेश में भाषा के अनेक रूप वमलते ह ैं , वजनका स्कली ू ं प्रवक्रयाओ म ें ससिान के रूप म ें उपयोग वकया जाना चावहए । ं ं आइए इकाई का विस्तार से अध्ययन करें । 1.3 भाषा का अर् थ : समप्रत्यय एवं प्रकायथ भाषा मनष्ट्य की ि प्राकवतक क्षमता ह ै , वजसके बल पर ि ध्ि वन प्रतीकों की रचना करता ह ै । इन्हीं ृ ु प्रतीकों का उपयोग अवभव्यक्त हते वकया जाता ह ै । भाषा के अवस्तत्ि म ें आने का पहला कदम ध्ि वन ु प्रतीकों की रचना ही ह ै । यह सही ह ै वक भाषा सम्प्रेषण का माध्यम ह ै । पर क्

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… id: **11**

या भाषा का काम महज इतना ही ह ै ? दरअसल भाषा के सरोकार कहीं अविक विस्तत ह ैं । भाषा पर आिाररत , राष्ट्रीय

ृ पाठयचयाथ की रूपरेखा का आिार पत्र इस सम्बन्ि म ें बेहद मौज वटप्पणी करता ह ै , ् ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 3 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 ‘अहिकिा लोग भाषा को सम्प्रेषण का माध्यम मानते ि ं । यिाँ तक हक हिक्षक , हिक्षकों के ां रहिक्षक , पाठयपस्तक लेखक , पाठयचयाा अहभकल्पक (हडज़ाइनर) व ि क्षहणक योजनाकार ् ् ु तक की यि ि ारणा ि ं । जबहक हिक्षा में भाषा की भहमका को ठीक से सिराने के हलए ि में ू समग्रतावादी दहिकोण अपनाने की ज़रूरत ि ं । ि में इसके सरचनागत , साहिहययक , सामाहजक ां , सास्कहतक , मनोवैज्ञाहनक एव सौन्दयिाास्त्रीय पक्षों को मित्त्व देते ि ए इसे एक बिआयामी ृ ु ु ां ं हस्ि हत में रखकर इसकी पड़ताल करनी ि ोगी । सामान्यत: भाषा को ि ब्द-किो व कछ हनहित ु वाक्यगत हनयमों के हमश्रण के रूप में देखा जाता ि ं – जिाँ यि ध्वहनयों , ि ब्दों व वाक्यों के स्तर पर ख़ास ढग से हनयहित ि ोती ि ं । यि सच ि ं , इसे नकारा निीं जा सकता । लेहकन यि ां ं तसवीर का एक पिल ि ं- भले ि ी इसका स्वरूप सावाभौहमक ि ो ।’ ू (आिार पि, 2009:1, , भारतीय भाषाओ का हिक्षण , एन.सी.ई.आर.टी., नई हदल्ली) ां इस लम्बे उद्धरण को यहाँ शावमल करने का उद्दश्े य यह ह ै वक हम यह बखबी समझ सकें वक वशक्षा की ू दवनया म ें भाषा का सन्दभ थ सावहत्य और भाषाविज्ञान से कहीं अविक ह ै । आइए भाषा की प्रकवत और ृ ु स्ि रूप की कवतपय विशेषताओ को समझने का प्रयास वकया जाय । वनम्नावकत ि ाक्यों को दखे ें – ं ं □ भाषा रतीकों की वाहचक व्यवस्ि ा ि ं । □ भाषा हनयम सचाहलत व्यवस्ि ा ि ं । ां इन दोनों ि ाक्यों की जब हम व्याख्या करेंग े ,तब भाषा की आिारभत बातों की समझ बनेगी । ू □ भाषा रतीकों की वाहचक व्यवस्ि ा ि ं भाषा मलत: प्रतीकों की ि ावचक व्यिस्ा ह ै । लेवकन जब भी हम भाषा

Plagiarism detected: **0.12%** https://hi.wikipedia.org/wiki/सीआईडी_(धारावाहिक) + 6 resources! id: **12**

के बारे म ें बात करते ह ैं तब उसे ू मख्यत: सम्प्रेषण के माध्यम के रूप म ें समझते ह ैं । जब हम वकसी को वकसी ि स्त के बारे म ें बताना चाहते ु ु ह ैं , उस समय हम भाषा का इस्तेमाल उसे उस ि स्त के बारे म ें बताने के वलए करते ह ैं । इसे एक उदाहरण ु के द्वारा समझ ें । मान लीवजए हम अपने वकसी वमत्र को वकसी पेड़ के बारे म ें बताना चाह ें , तब कछ ु सम्भावित ि ाक्य वनम्न प्रकार क

े हो सकते ह ैं – मनैं े एक मजबत पेड़ दखे ा । ू ि हाँ पर अनेक पेड़ ह ैं । ि ह पेड़ खबसरत ह ै । ू ू आइए उवललवखत ि ाक्यों म ें आए कछ शधदों के सहारे भाषा के सन्दभ थ म ें एक महत्त्ि पण थ मद्द े की तरफ ु ू ु आग े बढ़ें । इन तीनों ि ाक्यों म ें आए पेड़ शधद के विवि सन्दभ थ ह ैं । जब पेड़ का उच्चारण वकया जाता ह ै , उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 4 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 तब बताने के पहले भाषा के स्तर पर मवस्तष्ट्क म ें अनेक वक्रयाए ँ चलती ह ैं । पेड़

Plagiarism detected: **0.02%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… id: **13**

उच्चारण करने की वस्वत तक पहचँ ने के वलए पेड़ नामक ि स्त के वलए वकसी ध्ि वन-प्रतीक क

ी रचना करनी होती ह ै । यवद ऐसा न हो ु ु पाए तो उस ि स्त (अ ाथत पेड़) से दर रहकर उसके बारे म ें बताना बेहद मवश्कल ह ै । ठीक यही बात अन्य ु ु ू शधदों पर भी लाग होती ह ै । यवद ध्ि वन प्रतीक न हों , तब भाषा अवभव्यक्त का व्यिाहाररक सिान नहीं ू रह पाएगी । सभी भाषाओ म ें व्यिहारकताथ अपने अनभिों को प्रतीकों म ें रूपाताररत कर उनको सरवक्षत

रखता ु ् ं ं / रखती ह ै । प्रतीकीकरण की सामर्थयथ त ा उसके उपयोग के वबना भाषा का अवस्तत्त्ि सभि नहीं ह ै । यही ं कारण ह ं वक हम यह मानते ह ैं वक भाषा के विचार को सम्प्रेषण म ें कै द करना , प्रत्येक व्यवक्त की भाषाई सजन क्षमता को नज़र अदाज़ करना ह ै , क्योंवक सम्प्रेषण तो रती – रटाई बातों का भी हो सकता ह ै । ृ ं कहना न होगा सम्प्रेषण से पहले भाषा , प्रतीकों का सजन ह ै । इस सन्दभ थ को और अविक विस्तार स े ृ समझाने के वलए वनम्नावकत अितरण को दखे ें – ं 'एडवडा साहपयर (1961) अमरीकी भाषाहवद ने भाषा को सम्प्रेषण का सिान मानने के हवचार का वैकहल्पक हवचार पि हकया ि । उनका हवचार ि हक - `यि स्वीकार कर लेना सबसे उहचत ोगा की रिहमक रूप से भाषा वास्तहवकताओ को रतीकों

Plagiarism detected: **0.05%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **14**

के रूप ां में देखने की रवहि की वाहचका रस्तहत ि ।....वाहचक अहभव्यहि के रूप में रस्तहत का ृ ु ु आि ि अनभव को जाने – पिचाने रूप में ढालकर , न हक रययक्ष रूप स

े सामना करके , ु वास्तहवकता पर हनयिण स्ि ाहपत करने की रवहि ।' हिटेन द्वारा उद्धररत साहपयर के इस ृ ां हवचार को छोटे -छोटे सवालों में हवभाहजत करने से इसे चेतना में उतारना अपेक्षाकत ृ सरल ो सकता ि । वाणी का सबसे मित्त्वपणा काया क्या ि ? वाणी का सबसे ू रिहमक काया वास्तहवकता को रतीकों ढालना ि । ि म वास्तहवकता को रतीकों में क्यों ढालते ि ? ऐसा करने से वास्तहवकता को सम्भालना सम्भव ो पाता ि । सम्भाल पाने की हस्ि हत के बाद ी वास्तहवकता पर हियिील िआ जा सकता ि । क्या ि म ु वास्तहवकता का हनरूपण इसे सम्भालने ति इस पर हियिील ोने मि के हलए करते ि ? मनष्य द्वारा रतीक – हनमााण के हवचार को इन गहतहवहियों तक सीहमत करना ु ग़लती ोगी । वास्तव में यहद ि म मनष्य को अपने ससार का हनरूपण करने वाले के रूप ु ां में देखते ि , ताहक वि इस हनरूपण पर हियिील ो सके तो अन्य तरि की गहतहवहियों का रास्ता भी उसके हलए खला ोता ि। वि सी तौर पर स्वय हनरूपण के ु ां अनसार हियिील ोता ि । वि इस बात का चनाव भी कर सकता ि हक वि हनरूपण ु ु पर हियिील ो ति ससार के अपने द्वारा हकए गए हनरूपण में सिार करें । यि काया ु ां वि लगातार रतीकों को गढ़कर करता ि । लेंगर ने इसान को तेज़ी से रतीक गढ़ने वाले ां (Proliferater of symbols) की सज्ञा दी ि । उनका मानना ि हक इसान का महस्तष्क ां ां रतीकों की अहवरल ारा से हनहमात ोता ि ।' उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 5 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 (रावत , बीरेंद्र हसि 2005:9,भाषा की बहनयाद ति अवबिोन , हदिाबो , अक 2 , ु ां ां हसतम्बर – अक्टबर , समातर , जयपर) ू ु ां इस लम्बे उद्धरण से यहाँ इसवलए गज़रा गया तावक हम यह बखबी समझ सकें वक भाषा के महत्त्ि को ु ू सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में समझने के सार् उसे चने गए ध्ि वन – प्रतीकों के रूप म ें भी समझ सकें । ु भाषा का एक और गण ह ै – यादृवच्छकता का गण । अ ाथत , वकसी ि स्त को नाम दने े में मनमानेपन का ु ु ु भि । अन्य शधदों म ें प्रत्येक भाषा म ें शधदों के चनि म ें मनमानेपन का तत्त्ि मौजद होता ह ै । जसै े हम ु ू पेड़ को पेड़ ही कहते ह ैं या नदी को नदी ही कहते ह ैं कछ और नहीं । इसके नामकरण में कोई तकथ नहीं ु मनमानेपन का भि वनवहत होता ह ै । अ ाथत भाषा म ें यादृवच्छकता का गण होता ह ै । ृ ु □ भाषा हनयम सचाहलत व्यवस्ि ा ि ां विश्व की समस्त भाषाए ँ वनयमबद्ध होतीं ह ैं । यह सभि ह ै वक विवभन्न भाषाओ को बरतनिोलों की ं ं सख्या असमान हो । वनयमबद्धता की पररवि म ें प्राय: तीन मानक आार बनाए जाते ह ैं –ध्ि वन , शधद ं और ि ाक्य । प्रत्येक भाषा की ध्ि वन म ें कछ स्ि र त ा कछ व्यजन

Plagiarism detected: **0.07%** https://mycoaching.in/barahkhadi + 2 resources! id: **15**

होते ह ैं । इन ध्ि वनयों (ि णों) के ु ु ं आार पर ही शधदों की रचना होती ह ै । हर भाषा के अपने विवशष्ट ध्ि वन ससार होते ह ैं । जसै े भारतीय ं भाषाओ म ें महाप्राण, स्पश थ एि मिथन्य ि वन्यों (ख,घ,छ,ष,ऋ) का स्ि ान ह ै , पर यरोपीय भाषाओ म

ें यी ू ू ं ं ं ध्ि वनयाँ नहीं वमलतीं । उसी तरह अग्रेजी का तालव्य सघषी व्यजन Z वहन्दी म ें नहीं ह ै । ं ं ं ध्ि वन सयोजन की ही तरह शधद सयोजन की भी अलग -अलग भाषाई विवशष्टताए ँ ह ैं । ससार की ं ं ं विवभन्न भाषाए ँ अपने-अपने तरीक़े से पदा ों त ा वक्रयाओ आवद का नामाकन करती ह ैं । जसै े – ं ं भाषा - शधद वहन्दी - फल ू सस्कत - पष्ट्पम ृ ् ु ं अग्रेजी - flower आवद । ं इसके मल म ें यादृवच्छकता की प्रिवत्त ह ै , वजसकी चचाथ पहल े की जा चकी ह ै । ृ ू ु उसी तरह शधद वनमाथण की भी प्रवक्रयाए ँ अलग – अलग होतीं ह ैं । जसै े – एकिचन से बहिचन बनाने के ु वहदी और अग्रेजी के वनयम अलग-अलग ह ैं । जसै े – लड़की – लड़वकयाँ (वहन्दी) , girl-girls ं ं (अग्रेजी)। सज्ञा से विशेषण बनाने के भी हर भाषा के अलग-अलग वनयम होते ह ैं । जैसे – सरकार – ं ं सरकारी (वहन्दी), rain-rainy (अग्रेजी)। ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 6 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 2 resources! id: **16**

प्रत्येक भाषा म ें सीवमत शधदों से असीवमत ि ाक्य सरचनाओ का जन्म होता ह ै । ि ाक्य

ों स े ही सबवित ं ं ं ं मसला सिाद सरचनाओ का भी ह ै । हर भाषा म ें अलग – अलग अवभव्यवक्तयों के वलए अलग- अलग ं ं ं तरह की ि ाक्य सरचनाओ का प्रयोग वकया जाता ह ै । ं ं भाषा के रकाया का मतलब भाषा का प्रकायाथत्मक अध्ययन प्राग स्कल की दने ह।ै इस स्कल की स्ि ापना 1926 ई. म ें हई। इसके मल ु ू ू ू सस्ि ापक विलेम म ेवसउस (Vilem Mathesius) हए जो कै रोलाइन विश्वविद्यालय म ें प्राध्यापक े । ु ं प्राग स्कल की सिप्रथ मख विशेषता

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **17**

भाषा का प्रकायथ के आिार पर विश्लेषण करना ◌ा। प्रकायथिावदयों के ◌ू ◌ु अनसार भाषा की सरचना प्रकायथ (सन्दभ)थ के अनरूप बदल जाती ह।◌ै इस प्रकार एक ही भाषा ◌ु ◌ु ◌ं प्रकायाथनसार वभन्न-वभन्न रूपों म◌ें प्रस्तत होती ह।◌ै वनम्नावकत छह रूप भाषा के प

◌्रकायथ के रूप म◌ें पहचान◌े ◌ु ◌ु ◌ं गए i. अवभव्यवक्तक प्रकायथ (Expressive Function) ii. इच्छा परक प्रकायथ (Conative Function) iii. अवभिापरक प्रकायथ (Donative Function) iv. सम्पकथ परक प्रकायथ (Phatic Function) v. आविभावषक प्रकायथ (Codifying Function) vi. काव्यात्मक प्रकायथ (Poetic Function) । 1.4 भाषा एवं समाज वकसी भी

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **18**

भाषा के व्याकरवणक सन्दभों के सार् ही अनेक अन्य सन्दभ थ भी होते ह◌ैं । भाष

◌ा ि◌ज्ञै ◌ावनकों का मानना ह◌ै वक बच्चे-बवच्चयाँ जन्मजात भावषक क्षमता के सार् जन्म लेते / लेतीं ह◌ैं । बिजद इसके ◌ू भाषाओ का सीखा जाना विशेष सामावजक – सास्कवतक और राजनीवतक सन्दभ थ

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiparenting.firstcry.com/articles/k-aks… id: **19**

म◌ें होता ह◌ै । भाषा और ◌ृ ◌ं ◌ं इन सन्दभों का ररश्ता उभयवनष्ठ ह◌ै । उदाहरण क

◌े वलए कौन सी बात कब , कहाँ और कै स◌े कहना ह◌ै यह सामावजक , सास्कवतक और राजनीवतक सन्दभों द्वारा बखबी वसखा वदए जाते ह◌ैं । सप्रेषण , विचार और ◌ृ ◌ू ◌ं ◌ं ज्ञान के तत्र भावषक व्यिहार में कौन सी भवमका अदा करते ह◌ैं , इसके बारे म◌ें भारतीय भाषाओ के वशक्षण ◌ू ◌ं ◌ं पर आिाररत आिार पत्र की राय ह◌ै – “भाषा का अहस्तत्त्व एव हवकास समाज के बिार निीं ि◌ो सकता । भाषा का हवकास ◌ां ि◌मारी सास्कहतक हवरासत और सामाहजक हवकास की ज़रूरतों से ि◌ी उद्दीप्त ि◌ोता ि◌ै , ◌ृ ◌ां लेहकन इसके हवपरीत भी उतना ि◌ी सच ि◌ै आिात भाषा भी उद्दीपन करने वाले इन ◌ृ कारकों को उद्दीप्त करती ि◌ै । मानव समाज भाषा के हबना निीं चल सकता क्योंहक यि सम्प्रेषण का सबसे ज़्यादा ि◌द्ध और सावाभौहमक ब्माध्यम ि◌ै । यि हवचारों के ◌ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 7 ◌ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 हनमााण और अहभव्यहि को बनाने और सचाररत करने में भी ज़रूरी भहमका हनभाती ◌ू ◌ां ि◌ै ।” (आिार पि, 2009:4, , भारतीय भाषाओ का हिक्षण , एन.सी.ई.आर.टी., नई ◌ां हदल्ली)। भाषाओ और समाज के सन्दभ थ म◌ें एक बात और बेहद महत्त्ि◌पण थ ह◌ै ।भाषा एक सतत ◌ू ◌ं पररितथनशील व्यिस्◌ा ह◌ै । यह इवगत करना इसवलए ज़रूरी ह◌ै वक अक्सर लोग भाषाओ को वस्र तत्त्ि◌ों ◌ं ◌ं के रूप म◌ें ग्रहण करते ह◌ैं और उनके बारे म◌ें रूढ़ ि◌ारणाए◌ँ बना लेते ह◌ैं । भाषा और समाज से जड़े अन्य ◌ु अनेक पहल भी ह◌ैं , वजनकी चचाथ अगले उपशीषकथ ◌ों म◌ें की जाएगी । ◌ू 1.5 भाषा एवं जेंडर भाषा और समाज पर विचार करते समय इससे जड़े एक अन्य अहम मद्द◌े की तरफ हमारा ध्यान स्◌ाभाविक ◌ृ ◌ु तौर पर चला जाता ह◌ै , ि◌ह ह◌ै भाषा और जडें र का ररश्ता । इस मद्द◌े की प्रिानता का अदाजा हम इस बात ◌ु ◌ं से लगा सकते ह◌ैं वक इस सन्दभ थ म◌ें आिार पत्र दज थ करता ह◌ै ,

Quotes detected: **0.07%** id: **20**

‘जेंडर का मद्दा आिी निीं बहल्क परी मानवता का मद्दा ि◌ै । समय करे सि◌ा भाषा ने ◌ु ◌ू ◌ु अपनी बनावट में कई तत्त्वों को समाहित कर हलया ि◌ै जो जेंडर के रहत रूहढ़यों को ◌ु लगातार पोहषत करती आ रि◌ी ि◌ै ।...न हस◌ारा हवद्वानों ने , बहल्क भाषाहवदों ने भी भाषा को `तच्छ’

व `मोहतयों के ि◌ार’ की उपमा तो दी ि◌ै हजससे कोई मित्त्वपणा बात ◌ृ ◌ु ◌ू सामने निीं आती , हकन्त वाक्यगत व कि◌ो के स्तर पर अहभव्यहियों में जेंडर- ◌ु पवाग्रि झलक जाते ि◌ैं । स्त्री – परुष के बीच की बातचीत के सक्ष्म हवश्ले षण से भी ◌ू ◌ु ◌ू ज्ञात ि◌आ ि◌ै हक कै से परुष अपनी बात को लादने के हलए भाहषक खेल खेलते ि◌ैं ।’ ◌ु ◌ु (आिार पि, 2009:6, , भारतीय भाषाओ का हिक्षण , एन.सी.ई.आर.टी., नई ◌ां हदल्ली)। कहना न होगा भाषा और जडें र सबिी अध्ययन के अनेक पहल हो सकते ह◌ैं । समाज के ◌ू ◌ं ◌ं प्रचवलत नामों म◌ें आसानी स◌े शधदों म◌ें पैठे भदे भि◌ा की मौजदगी नज़र आती ह◌ै । जसै◌े – ◌ू मनचरनी (मन को चर करने ि◌ाली), अणछाई बाई(न चाहते हए भी पैदा होने ि◌ाली) , ◌ु ◌ू ◌ू कावमनी , अवन्तमा जसै◌े नामों म◌ें यह बात नज़र आती ह◌ै । ऐसे नाम परुषों के नहीं होते , यवद ◌ु होते भी ह◌ैं तब उसके पीछे का भि◌ा नकारात्मकता नहीं होता । जसै◌े – घरा , हजारी आवद । ◌ू इस तरह के नामों के पीछे अमगल को दर कर मगल के भि◌ा की कामना सवक्रय ह◌ै । अनके ◌ं ◌ं ◌ू शधदों के स्त्रीवलग रूप ह◌ैं ही नहीं । जैसे – राष्ट्रपवत , प्रिानमन्त्री (वहन्दी), उसी तरह नीचे ◌ं वलख◌े अग्रेजी शधदों को दखे ◌ा जा सकता ह◌ै – ◌ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 8 ◌ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 □ श्रमशवक्त Manpower □ साहस Manfully □ मानिता Mankind □ श्रम के घटे Manhour ◌ं □ प्रबि करना Manage ◌ं आवद । जावहर ह◌ै इन शधदों के वहन्दी पयाथय नहीं ह◌ैं । भाषा और जडें र के सन्दभ थ म◌ें एक और महत्त्ि◌पण थ सन्दभ थ पर ध्यान दने◌े की ज़रूरत ह◌ै । ि◌ह ह◌ै – ◌ू पाठयपस्तकों की सस्कवत म◌ें मौजद जेंडर सन्दभ थ । पाठयपस्तकों म◌ें सम्बिोन के स्तर पर लड़वकयाँ ग़ायब ◌ृ ◌् ◌ु ◌ू ◌ु ◌ं ह◌ैं । अक्सर यह दलील दी जाती ह◌ै वक `छात्र’ सम्बिोन म◌ें छात्राए◌ँ शावमल ह◌ैं । परम्परा ने इस दलील को ि◌ठहराने के वलए एक व्याकरवणक वनयम को गढ़ा ह◌ै `एकशषे ’ । अ◌ाथत एक में शेष शावमल ह◌ै । पर सिाल ह◌ै , ि◌ह एक स्त्रीवलग क्यों नहीं ह◌ै ? मान लीवजए यवद लड़कों / छात्रों की जगह लड़की / छात्रा ◌ं सम्बिोन प्रयोग म◌ें लाया जाय तो क्या स्त्रीवलग सम्बिोनों म◌ें पवललग सम्बिोन को शावमल मान वलया ◌ु ◌ं ◌ं जाएगा ? यवद नहीं तो छात्र / लडके म◌ें छात्रा / लड़वकयाँ शावमल मान लेने की गरै बराबरी की परम्परा को वमटा दने◌ा चावहए । प्रश्न यह ह◌ै वक इसका समिान क्या ह◌ै ? एक रास्ता यह हो सकता ह◌ै , वजसे

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **21**

अर्थशास्त्री अमत्यथ सेन ने अपनाया ह ै । ि े कहीं पवललग तो कहीं स्त्रीवलग का प्रयोग करते ह ैं । दसरा रास्ता पाउले फ्रे रे ु ं ं ू का ह ै । उन्होंने आदमी के स्◌ान पर मानि जावत एि स्त्री और परुष प्रयोग करन

ा शरू वकया । लोकतावत्रक ु ु ं ं समाज को रचाने म ें भाषा की महत्त्◌िपण थ भवमका होती ह ै ,वलहाजा उस विचार के पक्ष म ें सवक्रय होना ू ू अपररहायथ ह ै , वजसम ें सभी के सम्◌ि ावनक हकों की जगह सवनवित हो । ु 1.6 भाषा एवं शांतत राष्ट्रीय पाठयचयाथ की रूपरेखा 2005 ने मौजदा दौर की ज़रूरतों के मद्दने ज़र अध्ययन की दवनया म ें वजस ू ु नयी ◌िआरणा को शावमल वकया , ि◌ह ह ै , `शावन्त के वलए वशक्षा' । भाषा और सावहत्य से शावन्त के वलए वशक्षा की ◌िआरणा का क्या सम्बन्◌ि ह ै , इसे समझने के वलए पहले यह जानना ज़रूरी ह ै वक `शावत के वलए वशक्षा' की ◌िआरणा क्या ह ै । राष्ट्रीय फोकस समह के ◌िआर पत्र की इस सदभ थ म ें की ू ं ं गई वटपण्णी ध्यान दने े लायक ह,ै 'ऐहतिाहसक रूप से नैहतक हिक्षा और मल्य हिक्षा ◌िहत के हलए हिक्षा के पवाज ◌िं । ू ू ां इनमें काफ़ी कछ एक-सा ◌ि ं ।.....◌िहन्त के हलए हिक्षा में मल्य हिक्षा भी समाहित ◌ि , ु ू लेहकन दोनों एक ◌ि ी निं◌ि ं ◌िहन्त मल्यों की सगहत के हलए रासहगक तौर पर उपयि ू ु ां ां और लाभदायक हिक्षाास्त्रीय हबद ◌ि । ◌िहत मल्यों के उद्देश्यों को ठोस रूप देती ◌ि ू ां ां ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 9 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 और उनके आन्तरीकरण को रेररत करती ◌ि ।' (◌िआर पि, 2010:1, , ◌िहन्त के हलए हिक्षा , एन.सी.ई.आर.टी., नई हदल्ली)। ◌िआर पत्र वशक्षायी दवनया की वचताओ को दज थ करते हए इस वशक्षा की अहवमयत को रोशन ु ं ं ु करता ह ै , वजस पर एक नज़र डालना मनावसब होगा , ु हिक्षा हनयहत के सि◌ाा राष्र की भेंट ◌ि । ◌िम दि का ऋण ऐसी हिक्षा देकर चका सकते ु ◌िं जो भारत की सम्प्पणाता और स्वास्◌्य के हलए लाभकारी ◌ि ो । राष्रीय एकता , ू हवकास एव तरक्की के हलए ◌िहन्त पिली आवश्यकता ◌ि । टकराव ◌िमारी सामहिक ू ां ऊजाा का अपव्यय कराते ◌िं और भौहतक ससिानों की उपलब्◌ि ता के बावजद जीवन ू ां की गणवि ा के ताने-बाने को हबखेर देते ◌िं । ◌िहन्त के हलए हिक्षा को कायारूप में ु लाना हस◌ा टकरावों के समि◌ाान और उनकी रोकिाम के हलए उपयि रणनीहत निं◌ि ु ◌ि , अहपत यि 'ि◌मारे सपनों के भारत' को वास्तहवकता में उतारने के हलए आगे बढ़कर ु हकया जानेवाला हनवि भी ◌ि । ि◌र दौर में ि◌र समाज ने ◌िहन्त को एक मि◌ान और आवश्यक आदि◌ा माना ◌ि ।..... यि व्यहि हविष के हलए ◌िहत पाने का कोई सन्दभा ◌ां निं◌ि , बहल्क सारे लोगों के ◌िहन्त के रहत ◌िमारी रहतबद्धता ◌ि । सभी की ◌िहन्त की अनदेखी करनेवाले जो भी पिल ◌ि ं, उन्◌ि पिचानाने, उनकी हनदा करने , उनका रहतरि◌ो ू ां करने और उन्◌ि ४ण जड़ से समाप्त करने का ◌िया भी इसमें ◌िहमल ◌ि ।' (◌िआर पि, 2010:4, , ◌िहन्त के हलए हिक्षा , एन.सी.ई.आर.टी., नई हदल्ली)। सिाल ह ै वक इसमें भाषा की क्या भवमका ह ै । दरअसल भाषा वशक्षक / वशवक्षका के वलए कक्षायी और ू विद्यालयी पररिश े म ें उन गवतविवियों के सजन की सम्भि◌ानाए ँ अवि◌क ह ैं , वजनके बल पर शावन्त की ृ वशक्षा के हक़ म ें प्रयास सम्भि ह ैं । कछ सभावित अिसरों का वज़क्र ◌िआर पत्र करता ह ै – ु ं □ कठपतवलयों का प्रयोग करते हए उवचत शधदों एि मद्राओ

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **22**

की सहायता से यह ु ु ु ं ं प्रदवशतथ करें वक द्वद्वों के हल शावतपण थ ढग से कै से होते ह ैं । ू ं ं ं □ व

ि◌िशाभास को व्याख्यावयत कीवजए : हर कोई शावतपण थ ससार चाहता ह ै , लेवकन ू ं ं ससार ऐसा नहीं ह ै । क्यों ? उन कारकों/बि◌ाओ का उललेख कीवजए जो शावन्त की ं ं राह म ें आते ह ैं । □ तस्◌ि ीर पर ◌िआररत कहानी,कविता, विचार को चाटथ पर प्रदवशतथ करना । ि◌ास्तविक होने के अलि◌ा कहानी कोई सामावजक या नैवतक सदेश दने े ि◌ाली भी हो सकती ह ै । ं □ दसरों के प्रवत सिदे नशील , सहनशील होने पर भी कहानी वलखना । विवभन्न विषयों ं ू पर अखबारों की वक्लवपग , पवत्रका , लेख इकट्ठे करना । दि◌ीर पवत्रका बनाना । ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 10 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 □ ईमानदारी और कड़ी महे नत जैसे मलय दशाथने ि◌ाली कविता या गीत का सजन करना । ृ ू वहसा के वशकार लोगों की ददथशा म ें अपने होने की कलपना करना । उदाहरण : आप ररश्वत ं ु द े रह े ह ैं , आपको शमशथ ार वकया गया , वकसी का जि◌ीन खतरे म ें ह ै , इस भय म ें जीना , लाल फीताशाही का वशकार होना इत्यावद । यह बताना वक पीवड़त होने का क्या अर्थ ह ै ? (◌िआर पत्र, 2010:12-13 , शावन्त के वलए वशक्षा , एन.सी.ई.आर.टी., नई वदलली) । कहना न होगा एक बेहतर अध्यापक/ अध्यावपका के कौशल का यह एक महत्त्◌िपण थ भाषायी पक्ष ह ै , ू वजससे शावन्त के वलए वशक्षा के मलयों को हावसल करने म ें सहवलयत हो सकती ह ै । ू ू 1.7 गृह-भाषा एवं तवद्यालय की भाषा भाषा के बारे म ें हमारी प्रचवलत समझ यह ह ै वक घर की भाषा और विद्यालय की भाषा म ें पयाथप्त दरी होनी ू चावहए । यह भी वक घरेल भाषाओ से मानक

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **23**

भाषा की प्रि◌ीणता पर बरा असर पड़ता ह ै घर की भाषा म ें ू ु ं व्याकरवणक वनयमों की अिहले ना होती ह ै । जाने – अनजाने घर की भाषा और विद्यालय की भाषा क

े बीच एक दि◌ीर खड़ी कर दी जाती ह ै । जबवक सच ठीक इसके उलट ह ै । दरअसल बच्चे – बच्ची विद्यालय म ें आने के पहले वजस भाषा के बल पर विकास प्रवक्रया से सबद्ध होते ह ैं , उनका बेहतर ं कक्षायी उपयोग सम्भि ह ै । बहभावषकता का सबि ऐसी ही पररवस्◌्वतयों से ह ै । घरेल भाषा और ु ू ं ं विद्यालय की भाषा म ें आि◌ाजाही की सहवलयत हो , तब विद्यावर्थयों के सीखने की क्षमता में ू आियथजनक ि◌वद्ध होती ह ै । विद्यावर्थयों के स्कल छोड़ने के बहत सारे कारणों म ें एक कारण यह भी होता ु ृ ू ह ै

वक घर की भाषा और स्कल की भाषा म ें उसे गहरी खाई नज़र आती ह ै । घर की भाषा म ें अपने विचार ू प्रकट करन े की आज़ादी स े उसकी वझझक खत्म होती ह ै । घर की भाषा और स्कल की भाषा म ें सिाद का ू ं यह अर्थ कतई नहीं ह ै वक

Plagiarism detected: **0.02%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… + 2 resources! id: **24**

व्याकरण के वनयमों की अिहले ना की जाय । इसका मतलब वसफथ इतना ह ै वक व्याकरण क

े समान तत्त्िों का रचनात्मक उपयोग वकया जाय । राष्ट्रीय पाठयचया थ की रूपरेखा 2005 इस ् सन्दभ थ म ें हमारा मागदथ शनथ करते हए बताती ह ै वक घर की भाषा और विद्यालय की भाषा का सिाद अनेक ु ं शवै क्षक उपलावधियों का कारक बन सकता ह ै । 1.8 भाषा का महत्व एवं पाठ्यक्रम म उसका स्ान ें भाषा एक माध्यम ह ै , वजसका उपयोग हम वज़न्दगी को समझने , उससे जड़ने और जिीन जगत को प्रकट ु करने के वलए करते ह ैं । पर सिाल यह ह ै वक इनके वलए वकन भाषाई योग्यताओ की ज़रूरत होती ह ै । ं इनम ें से कछ की पहचान हम जाच – पड़ताल , तकथ , सप्रेषण जसै े कौशलों के रूप म ें कर सकते ह ैं । सार् ु ं ं ही बहभावषकता हमारी पहचान ह ै और हमारी सभ्यता , सस्कवत का वहस्सा भी । आज वहदी की जो ु ृ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 11 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 सस्कवत फली – फली ह ै , उसके पीछे अनेक भाषाओ की भवमका रही ह ै । वलहाजा यह ज़रूरी ह ै वक ृ ू ू ं ं वहदी वशक्षण का दायरा इतना विस्तत होना चावहए वक भाषा के इन उपयोगों से उसका ररश्ता न टटे । ृ ू ं समाज म ें भाषा के अनेक रूप प्रचवलत ह ैं । रेवडयो ,

Plagiarism detected: **0.02%** https://hi.wikipedia.org/wiki/सीआईडी_(धारावाहिक) id: **25**

टेलीविजन , अखबार , पोस्टर , विज्ञापन , इटरनेट की ं वहदी के सार् ही सावहवत्यक वहदी भी भाषा के अनेक रूपों म

ें शावमल ह ै । उसी तरह भाषा की वनयमबद्ध ं ं व्यिस्ा के आलोक म ें भी भाषा वशक्षण की पररवि को समझना ज़रूरी ह ै । वहदी के इन व्यापक और ं विविि रूपों की गहरी समझ का विकास भाषा वशक्षण के विविि पहल ह ैं । इसी तरह भाषा की ताकत स े ू पररवचत होना भी इस स्तर के विद्या ी के वलए अपेवक्षत ह ै । सन्दभ थ और ज़रूरतों के मतावबक़ औपचाररक ु / अनौपचाररक भाषा के विवभन्न रूपों से पररवचत होना , विवभन्न वकस्म की भाषा शवै लयों से पररवचत होना , ि े जो सोचते / सोचती ह ैं उन्ह ें सन्दर , प्रभिाशाली और व्यजनात्मक तरीके से अवभव्यक्त करना ु ं भी भाषा वशक्षण के उललेखनीय पहल ह ैं । ू वनम्नावकत अितरण भाषा के महत्ि िए पाठयक्रम म ें उसके स्ान को बखबी प्रकट करता ह-ै ् ू ं ं हवद्यिी का भाषा – बिो और साहिययक – बिो इस सीमा तक हवकहसत ि ो जाए हक उसमें हकसी रचना के बारे में स्वति राय बनाने का आयमहवश्वास पैदा ि ो सके । वि पाठयपस्तकों की ् ु ां पररहि के बिार भी हकसी रचना से जड़कर उस पर भावनायमक और बौहद्धक रहतिया कर ु सके । वि तरि – तरि के औपचाररक व अनौपचाररक हवषयक्षिों में रयि ि ोने वाली भाषा के ु रूपों से पररहचत ि ो और उसका रयोग कर सके । वि सन्दभा और आवश्यकता के अनसार ु हवहभन्न हकस्म की ि हलयों से पररहचत ि ो सके । हवद्याहियों को भाषा की ताकत का अिसास ि ो । वि इस बात को समझे हक भाषा के माध्यम से ि म के वल सरेषण ि ी निीं करते ि ं , उसे ां सन्दर, रभाविाली , व्यजनायमक और पैने ढग से अहभव्यि करने के हलए भाषा एक सि ु ां ां सिान ि ं । - 9.2005 , पाठयिम - भाषा हिदी , राष्ट्रीय ि हक्षक अनसन्ान और रहिक्षण पररषद ् ु ां ् इस प्रकार पाठयक्रमों का विकास अनेक भाषाई दक्षताओ को अपने भीतर समटे े हए ह ै । ु ् ं 1.9 अतिगम म

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **26**

भाषा की प्रिानता ें भाषा महज सम्प्रेषण का सिान नहीं ह ै । दरअसल ि ह एक ऐसा माध्यम भी ह ै , वजसके आिार पर हम जिीन – जगत की अविकाँश जानकारी प्राप्त करते ह ैं । भाषा क

ी पहचान हम एक ऐसी व्यिस्ा के रूप म ें कर सकते ह ैं जो बहत हद तक हमारे आस-पास की ि ास्तविकताओ और घटनाओ को हमारे वदमाग म ें ु ं ं व्यिवस्त करती ह ै । इससे न के ि ल हमारी पहचान बनती ह ै , यह समाज , सत्ता और ताक़त से हमारे ररश्ते के स ि रूप को भी प्रकट करती ह ै । हम के ि ल दसरों स े बात करन े के वलए ही नहीं , बवलक खद स े ु ू बात करने के वलए भी भाषा का ही इस्तेमाल करते ह ैं । विवभन्न विषयों की समझ भाषा म ें ही बनती ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 12 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इस तरह अविगम का के न्द्रीय तत्त्ि भाषा ही ह ै । सभी विषयों का अध्यापक भाषा का अध्यापक होता ह ै । ंिआरणाए ँ , सकलपनाए ँ भाषा से मतथ होती ह ैं । अविगम म ें भाषा की महत्ता वकतनी ह ै , इसे और बेहतर ू ं ढग से समझने के वलए वनम्नावकत अितरण को दखे ना मौज होगा – ू ं ं ‘रारहम्भक हिक्षा की परी पाठयचयाा में भाषा का पररेक्ष्य हविष मित्त्व रखता ि ं । हवहभन्न ् ू आिपणा सन्दभों के जररए ि ी भाषा सबसे अच्छे तरीक़े से सीखी जा सकती ि ं , इसीहलए ि र ू हवषय का हिक्षण एक आि में भाषा हिक्षण ि ी ि ं । यि पररेक्ष्य माध्यहमक हिक्षा के अमता ू हवचारों के सन्दभा में भाषा की के न्द्रीयता को रेखाहकत करता ि ं ।जिाँ ि रुआती स्तर पर ु ां सदभागत आि भाषा रयोग को बढ़ावा देते ि ं विं बाद के स्तरों पर भाषा के जररए आि को पाया ां जा सकता ि ं । भाषा हिक्षा के कें द्र में ि ं और ि र अध्यापक पिले भाषा का ि ं हर्र हवषय का ।’- 27:2010, समझ का माध्यम , राष्ट्रीय ि हक्षक अनसन्ान और रहिक्षण पररषद । ु ् सच तो यह ह ै वक अविगम के वकसी भी पहल के वलए भाषा अवनियथ तत्त्ि ह ै । ू 1.10 एक तवद्यालयी तवषय

Plagiarism detected: **0.1%** https://hi.wikipedia.org/wiki/सीआईडी_(धारावाहिक) + 2 resources! id: **27**

के रुप म हहदी भाषा एवं अतिगम त ा सप्रं ेषण ें के माध्यम के रुप म हहदी भाषा के मध्य अंतर ें भाषा परी पाठयचया थ म ें विद्यमान रहती ह ै । वशक्षा की दवनया म ें मख्य रूप से भाषा के दो रूप मौजद ह ैं । ् ू ु ू ु एक विषय के रूप म ें दसरे

अन्य विषयों के सम्प्रेषण माध्यम के रूप म ें । जब भाषा के रूप म

ें वहन्दी की ू बात होती ह ै , तब उसका अर्थ ह ै वहन्दी के व्याकरवणक , सौन्दयाथत्मक और सजनात्मक रूप को समझना। ृ इसके अतगतथ सनना , बोलना , पढ़ना और वलखना जसै े विवभन्न भाषायी कौशलों के अजथन के सार् ही , ु ं विवभन्न सावहवत्यक ववाओ का अध्ययन – अध्यापन शावमल हो जाता ह ै । जसै े ही हम अविगम और ं सम्प्रेषण

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… + 4 resources! id: **28**

माध्यम के रूप म ें वहन्दी भाषा कहते ह ैं तब उसकी भवमका ाअिरणाओ को स्पष्ट करन े , ू ं सकलपनाओ को मतथ करने ाले माध्यम के रूप म

ें स्पष्ट होती ह ै । तकनीकी शधद , ैज्ञावनक शधद , ू ं ं पाररभावषक शधद आवद इसी दवनया के वहस्से ह ैं । ु 1.11 सारांश इस इकाई के अध्ययन के बाद भाषा की विस्तत दवनया से आपका पररचय हआ । आपने समझा भाषा ु ृ ु अवभव्यक्त का माध्यम भर नहीं ह ै । यह रचनात्मकता को सम्भि करने का सबसे महत्त्िपण थ औजार ह ै । ू इस इकाई के विस्तत अध्ययन के बाद आपने बखबी समझा – ृ ू □ भाषा सजन की वजस प्रवक्रया को जन्म दते ी ह ै , उसम ें ध्ि वन-प्रतीकों को रचने की क्षमता होती ह।ै ृ □ भाषा अवस्मता वनमाथण का माध्यम होती ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 13 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 □ भाषा और जेंडर की समझ एक सहभागी अविगम ससार को रचने म ें सहायक ह ै । ं □ बहभावषकता के प्रवत सिदे नशील नज़ररया वशक्षक / वशक्षका को विद्यावर्थयों से सिाद म ें ु ं ं सहवलयत

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 5 resources! id: **29**

प्रदान करता ह ै । ू □ भाषा म ें वनयमबद्धता होती ह ै । □ एक विषय के रूप म ें भाषा (वहदी) और अन्य विषयों के माध्यम (वहदी माध्यम) के रूप में ं ं भाषा के व

ि्वि सन्दभ थ ह ैं । 1.12 सन्दभ थ ग्रंर् सची ू 1. भारतीय भाषाओ का वशक्षण , एन.सी.ई.आर.टी., नई वदलली ,2009 ं 2. भाषा की बवनयाद त ा अिबिोन , वदशाबिो , अक 2 , वसतम्बर –अक्टबर , 2005 समातर ु ू ं ं , जयपर ु 3. आिार पत्र , भारतीय भाषाओ का वशक्षण , एन.सी.ई.आर.टी., नई वदलली),2009 ं 4. आिार पत्र, शावन्त के वलए वशक्षा , एन.सी.ई.आर.टी., नई वदलली) 2009 5. पाठयक्रम - भाषा वहदी ,

Plagiarism detected: **0.02%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **30**

राष्ट्रीय शवै क्षक अनसन्ि ान और प्रवशक्षण पररषद 2005 6.समझ ृ ु ं ृ का माध्यम , राष्ट्रीय

शवै क्षक अनसन्ि ान और प्रवशक्षण पररषद 2010 । ु ृ रयास उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 14 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इकाई 2 - हिंदी भाषा विक्षण : एक पविचय 2.1 प्रस्तािना 2.2 उद्दश्े य 2.3 वहदी वशक्षण: एक पररचय ं 2.4 वहदी भाषा वशक्षण के उद्दश्े य ं 2.5 भाषा विज्ञान त ा वहदी वशक्षण ं 2.5.1 ध्ि वन विज्ञान ए िवहदी वशक्षण ं ं 2.5.2 रुप विज्ञान ए िवहदी वशक्षण ं ं 2.5.3 ि ाक्य विज्ञान ए िवहदी वशक्षण ं ं 2.5.4 अर्थ विज्ञान ए िवहदी वशक्षण ं ं 2.6 वहदी वशक्षण की समस्याएँ ए िचनौवतयाँ ु ं ं 2.7 साराश ं 2.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 2.9 सदभथ ग्रर् सची ए िसहयोगी ग्रर् ू ं ं ं ं 2.10 वनबिात्मक प्रश्न ं 2.1 प्रस्तावना इस खड के इकाई एक म ें आपने वहदी भाषा ए िउसके वि्वि पक्षों का अध्ययन वकया। प्रस्तत इकाई ु ं ं ं वहदी वशक्षण के सैद्धावतक पक्षों से सबवित ह।ै ज्ञान की वकसी भी शाखा के दो पक्ष होते ह ैं - सैद्धावतक ए ि ं ं ं ं ं व्याहाररक । ये दोनों पक्ष एक-दसरे के परक ह।ैं एक के वबना दसरे की वशक्षा परी नहीं हो सकती । वहदी ू ू ं ू ू वशक्षण को प्रभाि बनाने के वलए प्रवशक्ष वशक्षकों को वहदी वशक्षण के सैद्धावतक पक्ष

Plagiarism detected: **0.02%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… id: **31**

का ज्ञान कराना ं ं ु आिश्यक ह।ै वहदी वशक्षण के सैद्धावतक पक्षों का क्षेत्र

बहत ही विस्तत ह।ै एक अध्याय म ें समस्त पक्षों ु ृ ं ं का ि णनथ सभि नहीं ह।ै प्रस्तत इकाई की रचना का उद्दश्े य प्रवशक्ष-वशक्षकों को वहदी वशक्षण का सवक्षप्त ु ं ं ं ु पररचय दने ा, ितथमान वहदी वशक्षण के उद्दश्े यों से पररवचत कराना, स्ि य के वहदी वशक्षण कायथ के वलए ं ं ं उद्दश्े यों को वनाथररत करने के योग्य बनाना, भाषा

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… id: **32**

विज्ञान के विवभन्न अगों य ा ध्ि वन विज्ञान, रुप विज्ञान, ि ाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान आवद की वहदी वशक्षण म ें भवमका की जानाकारी प्रदान करना त ा वहदी ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय

15 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 वशक्षण की समस्याओ ए िचनौवतयों से अिगत कराना ह।ै शषे तर्थयों को अन्य इकाइयों म ें प्रस्तत वकया ु ु ं ं गया ह।ै इस इकाई की रचना इसी उद्दश्े य से की गई ह।ै 2.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के पिात आप - 1. वहदी वशक्षण का पररचय द े सकें ग।े ं ं 2. वहदी भाषा वशक्षण के उद्दश्े यों की चचाथ कर सकें ग े । ं 3. भाषा

Plagiarism detected: **0.09%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 5 resources! id: **33**

विज्ञान त ा वहदी वशक्षण के मध्य सबवित कर सकें ग े । ं ं ं 4. वहदी वशक्षण की समस्याओ ए िचनौवतयों का ि णनथ कर सकें ।ग।े ु ं ं ं 2.3 हहदी तशक्षण: एक पतरचय वहदी भारत की राजभाषा ए िराष्ट्रभाषा ह।ै राष्ट्रभाषा से आशय उस भाषा से

होता ह ै जो वकसी राष्ट्र के ं ं एक बड़े भ-भाग म ें या जनसख्या के एक बड़े भाग द्वारा बोली जातीं ह

।ै भारतीय पररदृश्य म ें यह सम्मान ू ं वहदी को प्राप्त ह।ै भारत के लगभग सभी राज्यों एि सघशावसत प्रदशे ों म ें वहदी कम य अविक मात्रा म ें ं ं ं ं बोली जाती ह।ै उत्तर प्रदशे , वबहार, मध्य प्रदशे , राजस्◌ान, हररयाणा, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, वदलली, उत्तराखड, वहमाचल प्रदशे , चण्डीगढ़ आवद को वहदी भाषी

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 5 resources! id: **34**

क्षेत्र के रुप म ें जाना जाता ह।ै वनम्नवलवखत ं ं मानवचत्र का अिलोकन भारत म ें वहदी भाषी क्षेत्र क

ो और स्पष्ट करता ह।ै मानवचत्र म ें जो वहस्सा लाल रग ं ं से वदखाया गया ह ै उस वहस्से म ें वहदी भाषा या उसके विवभन्न रुप का प्रयोग वकया जाता ह।ै ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 16 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 हचि 1: भारत के हिदी भाषी क्षि ां (स्रोत: गगल मानहचि) ू राजभाषा वकसी

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **35**

राष्ट्र या राज्य के प्रशासवनक कार्यों की भाषा को कहते ह।ैं भारतीय सविान के अन० ु ं 343

Quotes detected: **0%** id: **36**

‘त’

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **37**

म ें वहदी को भारत के राजभाषा के रुप म ें प्रवतवष्ठत वकया गया ह।ै इस प्रकार, भारत की राजभाषा ं एि राष्ट्र

भाषा दोनों ही वहदी ह।ै ं ं िश्वै ीकरण के कारण विश्व के सभी दशे एक-दसरे के सम्पकथ म ें आए और सार् ही उन देशों की भाषाए ँ भी ू एक-दसरे के सम्पकथ म ें आयीं। पररणामस्िरुप विवभन्न भाषाओ के क्षेत्र म ें विस्तार हआ। वहदी भी भारत से ु ं ं ू बाहर वनकली और विश्व के विवभन्न दशे ों म ें फै ल गई। इस प्रकार वहदी ितथमान पररदृश्य म ें एक महत्िपण थ ू ं भाषा ह।ै जनमानस का इससे बड़ा ही गहरा लगिा ह।ै अतः, इसका अध्ययन-अध्यापन प्राचीन काल स े ही होता आ रहा ह।ै प्राचीन काल से यहाँ आशय िवै दक काल से नहीं ह।ै उन्नीसिीं शताधदी से वहदी भाषा ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 17 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 का अध्ययन-अध्यापन माना जा सकता ह।ै आज भारत म ें वहदी भाषा का वशक्षण मख्यतः तीन रुपों में ु ं होता ह ै - □ मख्

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **38**

य भाषा के रुप म ें ु □ गरै वहदी भाषी राज्यों त◌ा सघ शावसत प्रदशे ों म ें वद्वत्तीय भाषा के रुप म;ें त◌ा ं ं □ विदवे शयों के वलए विदेशी भाषा के रुप म

ें । वहदी भाषा का वशक्षण तो अिश्य हो रहा ह ै लेवकन उसे रुवचकर नहीं बनाया जा रहा ह।ै ितथमान पररिशे में ं भारत के वकसी भी वशक्षण सस्◌ान म ें वहदी के अध्ययन-अध्यापन को लेकर विद्यावर्थयों एि वशक्षकों म ें दो ं ं ं तरह की प्रवतवक्रयाए ँ दखे ने को वमलती ह।ैं प्रर्म,

Quotes detected: **0%** id: **39**

‘वहदी ही ह’

ै और दसरी,

Quotes detected: **0.01%** id: **40**

‘वहदी! क्या बकिास ह ै यार’

। ं ं ू अब इन दोनों प्रवतवक्रयाओ पर यवद दवष्टपात वकया जाय तो इनसे वहदी भाषा के प्रवत गभीरता का अभि ं ं ं एि नीरसता त◌ा उपेक्षा पररलवक्षत होती ह।ै हाँ विदशे ी भाषा के रुप म ें इसके वशक्षण-अविगम कायथ म ें ं शावमल व्यवक्तयों म ें रुवच अिश्य वदखती ह।ै वकसी भी विषय के वशक्षण के तीन अग होते ह ैं - वशक्षा◌ार्ी, वशक्षक एि वशक्षण-सामग्री। अतः, वहदी ं ं ं वशक्षण के भी उपरोक्त तीन अग ह।ै वशक्षण को रुवचकर बनाने म ें अन्य पक्षों के सार् इन तीनों अगों की भी ं ं भवमका होती ह।ै वशक्षा◌ार्ी जो वशक्षण-प्रवक्रया के कें द्र म ें होते ह ैं िो वहदी भाषा को रोजगारोत्पादक नहीं ू ं मानते ह ैं और इस विषय के अविगम म ें रुवच नहीं वदखाते ह।ैं उनकी इस अरुवच के और भी कारण ह।ै य◌ा वशक्षकों की अरुवच, पारपररक वशक्षण विवियों एि वशक्षण-सामवग्रयों का प्रयोग आवद। वशक्षावर्थयों ं ं म ें अरुवच वशक्षकों म ें अरुवच की मात्रा को और बढ़ा दते ा ह।ै अतः, वहदी भाषा वशक्षण भाषा की ितथमान ं प्रवस्◌वत जो वक शक्षै वणक सस्◌ानों की समय साररणी की शोभा बनकर रह गई ह ै को निीन वशक्षण ं विवियों त◌ा सचना एि सचार तकनीकी के प्रयोग द्वारा इसे पनजीवित करना होगा तावक इसकी प्रवस्◌वत ू ु ं ं को सशक्त वकया जा सके । अभ्यास रश्न 1.

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… id: **41**

भारत की राजभाषा क्या है? 2. भारतीय संविान के वकस अनच्छेद म ें भारत की राजभाषा क

ा िणनथ ह?ै ु ं 3. भारत के वहदी भाषी कह े जानिाले राज्यों के नाम बताए।ँ ं 4. भारत म ें वहदी भाषा वशक्षण वकतने रुपों म ें होता ह?ै ं 5. वकसी भी वशक्षण के मख्यतः वकतने अग होते ह?ैं ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 18 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 2.4 हहदी भाषा तशक्षण के उद्दश्े य एक भाषा एक

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… + 2 resources! id: **42**

राष्ट्र के सिांगीण प्रगवत, उसके अवस्मता का द्योतक होती ह।ै यह वसफथ ज्ञान की एक शाखा ही नहीं िरन राष्ट्र के मान-सम्मान का सचक, राष्ट्रीय

एकता एि अखडता का िाहक एि ज्ञान की अन्य ू ं ं शाखाओ के अजनथ का माध्यम ह।ै अतः, भाषा वशक्षण के उद्दश्े य का वनिाथरण बहत ही सिाानी के सार् ु ं होना चावहए। वहदी भाषा वशक्षण के सार् तो यह बात और भी महत्िपण थ हो जाती ह ै क्योंवक वहदी भाषा ू ं ं अपने ही घर म ें सकट के दौर से गजर रही ह।ै अतः, जब भी वहन्दी वशक्षण के उद्दश्े यों की बात की जाती ह ै ु ं तो दो महत्िपण थ प्रश्न सामने आते हःैं ू □ वहदी वशक्षण के ितथमान उद्दश्े य क्या ह?ै ं □ वहदी वशक्षण के उद्दश्े य क्या होने चावहए? ं आइए बारी-बारी से इन प्रश्नों के उत्तर पर चचा थ करें। पहल े वहदी वशक्षण के ितथमान उद्दश्े यों की चचा थ करत े ं ह।ैं ये उद्दश्े य वनम्नवलवखत हःैं i. विद्यावर्थयों को वहदी भाषा के विवभन्न ध्ववन रुपों के शद्ध

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 2 resources! id: **43**

उच्चारण को समझने एि उनका शद्ध ु ु ं ं उच्चारण करने के योग्य बनाना; ii. शधदों के शद्ध उच्चारण को समझने एि उनका शद्ध उच्चारण करने क

े योग्य बनाना; ु ु ं iii. िण थ एि शधद पढ़ने की क्षमता

Plagiarism detected: **0.25%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **44**

का विकास करना; ं iv. िणों और शधदों को वलखने की क्षमता का विकास करना ; v. िाक्य पढ़ने एि वलखने की क्षमता का विकास करना; ं vi. विराम वचन्हों के सही प्रयोग को समझना एि लेखन कायथ म ें उनका प्रयोग करने की क्षमता का ं विकास करना; vii. व्याकरण का समवचत ज्ञान प्रदान करना; त ा ु viii. नैवतक मलयों का विकास करना। ू इस प्रकार, हम सक्षेप म ें कह सकते ह ैं वक वहदी वशक्षण के सामान्य उद्दश्े य श्रिण, िाक, पठन एि लेखन ं ं ं कौशलों का विकास ह।ै इन उद्दश्े यों को हम तीन िगों म ें िगीकत कर सकते ह।ैं ये तीन िगथ वनम्नवलवखत ृ हःै i. ग्रह्यात्मक उद्दश्े य - बालक का भाषा विशेष के प्रवत सम्यक समझ का विकास करना ग्रह्यात्मक उद्दश्े य कहलाता ह।ै ii. अवभव्यजनात्मक उद्दश्े य - भाषा को अपने शधदों म ें व्यक्त करने की क्षमता के विकास को भाषा ं का अवभव्यजनात्मक उद्दश्े य कहते ह।ैं ं iii. सजनात्मक उद्दश्े य - वहदी म ें रचनात्मक कायथ करने की दक्षता का विकास करना वहदी वशक्षण ृ ं ं का सजनात्मक उद्दश्े य माना जाता ह।ै ृ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 19 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 वहदी वशक्षण के उद्दश्े यों को एक और प्रकार से िगीकत वकया जा सकता ह।ै यह िगीकरण वनम्नित हःैं ृ ं □ ज्ञानात्मक उद्दश्े य - इस िग थ म ें वहदी वशक्षण के वनम्नवलवखत उद्दश्े यों को शावमल वकया जाता हःै ं i. बालक को वहदी भाषा के विविि तत्िों का ज्ञान कराना; ं ii. उन तत्िों के ज्ञान से सबवित विषयिस्

Plagiarism detected: **0.03%** https://aqicn.org/city/delhi/hi/ + 2 resources! id: **45**

त की जानकारी प्रदान करना; त ा ु ं ं iii. उस भाषा म ें वकए जा सकने िाले रचना कायथ के विवभन्न रुपों की जानकारी प्रदान करन

ा □ अर्थग्रहण उद्दश्े य - इस िग थ म ें वनम्नवलवखत उद्दश्े य शावमल होते हःैं i. िणों. शधदों एि िाक्यों को सनकर उनका अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना; ु ं त ा ii. विद्यावर्थयों म ें पढ़कर वकसी बात का अर्थ ग्रहण करने

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiparenting.firstcry.com/articles/k-aks… id: **46**

की क्षमता का विकास करना; □ अवभव्यवक्तपरक उद्दश्े य - इस िग थ का मखय उद्दश्े य ह ै विद्यार

ी को वहदी भाषा म ें बोलकर एि ु ं ं वलखकर अपने विचारों को अवभव्यक्त करने के योग्य बनाना □ रुवचपरक उद्दश्े य - इस िग थ म ें शावमल उद्दश्े य वनम्नवलवखत हःैं i. बालकों म ें पाठयपस्तकों के अवतररक्त वहदी भाषा के पत्र-पवत्रकाओ एि सदभ थ पस्तकों के ृ ु ु ं ं ं ं अध्ययन के प्रवत रुवच जागत करना; ृ ii. विद्यालयों म ें आयोवजत वकए जानिाले विवभन्न प्रवतयोवगताओ, य ा, िाद-ंविाद ं प्रवतयोवगता, उत्सिों, बाल सभा आवद के आयोजन म ें भाग लेने के वलए जागरुक करना □ सजनात्मक उद्दश्े य - इस िग थ का मख्य उद्दश्े य ह ै विद्यावर्थयों म ें वहदी सावहत्य की विवभन्न ृ ु ं विाओ, य ा -कहानी, कविता, वनबि, पत्र, उपन्यास, डायरी, ररपोताथज आवद के लेखन के ं ं वलए प्रोत्सावहत करना वहदी वशक्षण के ितथमान उद्दश्े यों के उपरोक्त विचे न से स्पष्ट ह ै वक ितथमान पररदृश्य म ें वहदी वशक्षण के ं ं मख्य उद्दश्े य बालकों म ें भाषाई कौशलों का विकास करना ह।ै इसके इतर विद्यावर्थयों म ें वहदी सावहत्य के ु ं विवभन्न विाओ के अध्ययन-अध्यापन एि लेखन के प्रवत रुवच जागत करना ह।ै लेवकन ये पयाथप्त नहीं ह ै ृ ं ं और इसवलए ये उद्दश्े य वहदी भाषा के प्रवत विद्यावर्थयों को

आकवषतथ करने म ें असफल ह:ैं ं अब प्रश्न यह उठता ह ै वक वहदी वशक्षण के उद्दश्े य क्या होने चावहए। मानि जिीन का मख्य उद्दश्े य ु ं जीविकोपाजनथ करना होता ह।ै इस उद्दश्े य की प्रावप्त वशक्षा के माध्यम से करते ह।ैं अतः, विद्याार्ी ि े ही विषय पढ़ना चाहते ह ैं जो रोजगार के अिसरों का सजन करने म ें सहायक हों। वहदी भाषा को सावहत्य के ृ ं विद्यावर्थयों एि अवभभिाकों द्वारा रोजगारोत्पादक नहीं माना जाता ह।ै इसका एक कारण यह ह ै वक हम ं वहदी वशक्षण के उद्दश्े यों म ें रोजगारा के अिसरों के सजन जो स्ान नहीं दते े ह।ैं ृ ं ितथमान पररिश सचना एि सचार प्रौद्योवगकी का ह।ै तकनीकी का हर क्षेत्र म ें व्यापक प्रयोग हो रहा ह।ै ू ं ं विवभन्न विषयों के वशक्षण म ें भी इनका प्रयोग हो रहा ह।ै ऐसे म ें भाषा के वशक्षण-अविगम म ें भी इसका व्यापक प्रयोग होना चावहए। तावक विद्यावर्थयों का इस ओर रुझान हो सके । लेवकन वहदी वशक्षण अविगम ं म ें अभी भी उन्हीं पारपररक विवियों का प्रयोग वकया जा रहा ह ै फलस्िरुप वशक्षण प्रभिी नही ह।ै यहाँ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 20 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 तक वक वहदी वशक्षण के उद्दश्े यों म ें भी इन्ह ें स्ान नहीं वदया गया ह।ै अतः, वहदी वशक्षण के उद्दश्े यों को ं ं ितथमान पररदृश्य के सगत बनाने के वलए इसम ें पररितथन आिश्यक ह।ै ितथमान पररदृश्य म ें वहदी वशक्षण के ं ं ृ उद्दश्े य वनम्नित होने चावहए: i. बालक म ें भाषाई कौशल

Plagiarism detected: **0.16%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **47**

का विकास करना अर्ाथत बालक म ें शद्ध-शद्ध ध्िवनयों, िर्णों, शधदों ु ु एि िाक्यों का उच्चारण करने की योग्यता तर्ा बोलकर अपने विचारों को अवभव्यक्त करने की ं योग्यता का विकास करना; ii. बालकों म ें श्रिण कौशल का विकास करना अर्ाथत उनम ें सनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता ु का विकास करना; iii. बालक म ें पठन कौशल का विकास करना अर्ाथत विद्याार्ी म ें पढ़कर उसे समझ सकने तर्ा उसका अर्थ ग्रहण कर सकने की योग्यता का विकास करना; iv. बालकों म ें लेखन कौशल का विकास करना अर्ाथत लेखन कौशल से आशय िर्णों, शधदों, िाक्यों को शद्ध-शद्ध वलखने की योग्यता का विकास करना; ु ु v. वहदी भाषा के रोजगारोत्पादक पक्ष से वहदी भाषा के व

िद्यावर्थयों को अिगत कराना; ं ं vi. वशक्षार्ी को इस तर्थय से पररवचत कराना वक तकनी

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **48**

की ज्ञान का अजनथ वहदी भाषा के माध्यम से ं भी सभि ह;ै ं vii. वहदी वशक्षण-अविगम प्रवक्रया म ें सचना एि सचार तकनीक के प्रयोग

के सैद्धावतक एि ू ं ं ं ं ं व्यिहाररक पक्ष

Plagiarism detected: **0.03%** https://aqicn.org/city/delhi/hi/ + 2 resources! id: **49**

की जानकारी प्रदान करना; viii. विदशे ों म ें वहदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन के विषय म ें विद्यावर्थयों को जानकार

ी दने ा; ं ix. विदशे ों म ें वहदी विषय से सबवित रोजगार के अिसरों से विद्यावर्थयों को अिगत कराना; ं ं ं x. बालक को बहभावषकता के महत्ि को समझने के योग्य बनाना तर्ा उसे कम स े कम दो भाषाओ ु ं

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **50**

के ज्ञान अजनथ करने के वलए अवभप्रेररत करना; xi. रोजगारपरक तर्ा प्रयोजनमलक वहदी का ज्ञान

प्रदान करना; वनम्नवलवखत ू ं अभ्यास रश्न 6. वहदी वशक्षण के ितथमान उद्दश्े य क्यों विद्यावर्थयों को वहदी भाषा के अध्ययन के प्रवत आकवषतथ ं ं नहीं कर पाते ह?ैं 2.5 भाषा तवज्ञान तर्ा हहदी तशक्षण भाषा वशक्षण म ें आवदकाल से ही व्याकरण, वनरुक्त आवद की उपयोवगता स्ीकित ह।ै गरुकलों म ें तो ृ ु ु व्याकरण से ही वशक्षा का आरभ होता ार्ा। गरु पहले विद्यावर्थयों को उच्चारण वसखाता ह ै वफर उसके बाद ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 21 ु

Plagiarism detected: **0.19%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 6 resources! id: **51**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 अन्य तर्थयों का। भाषा का िास्तविक ज्ञान व्याकरण से ही सभि ह।ै व्याकरण को आिार बनाकर भाषा ं विज्ञान जसै े अनशासन का विकास हआ। समस्त भाषा विज्ञानी आज भी पावणनी को समिते स्ि में ु ु आवद भाषा विज्ञान की सज्ञा दते े ह।ैं ितथमान पररदृश्य म ें भाषा विज्ञान को अविक महत्ि वदया जाने लगा ह ै ं और भाषा वशक्षण म ें इसकी भवमका पर बल वदया जाने लगा ह।ै सामान्य शधदों म ें भाषा के विशषे एि ू ं क्रमबद्ध अध्ययन को भाषा विज्ञान कहते ह।ैं अब प्रश्न यह उठता ह ै वक भाषा का विशषे एि क्रमबद्ध ज्ञान ं क्या ह?ै इस प्रश्न का उत्तर हमें भाषा की पररभाषा से प्राप्त होता है? मानि द्वारा उच्चररत ध्िवन सके त या ं सके तों के समह वजनके कछ अर्थ होते ह ैं तर

ृ्ा वजनकी एक वनवित व्यिस्ा होती ह ै उसे भाषा कहते ह।ैं ू ु ं यह ध्िवन सके त िण थ शधद या िाक्य के रूप म ें होते ह।ैं दसरे शधदों म,ें यह कहा जा सकता ह ै वक ध्िवन, ं ू पद, िाक्य और अर्थ भाषा के महत्िपण थ अग होते ह।ैं इन्हीं

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **52**

का ज्ञान ही भाषा का विशषे एि क्रमबद्ध ू ं ं ज्ञान ह ै और भाषा विज्ञान म ें भाषा के इन्हीं अगों का अध्ययन वकया जाता ह।ै इस प्रकार भाषा विज्ञान के ं मख्य चार अग ह:ैं ु ं i. ध्िवन विज्ञान; ii. रूप विज्ञान; iii. िाक्य विज्ञान; तर्ा iv. अर्थ विज्ञान वहदी वशक्षण म ें इनकी भवमका का हम बारी-बारी से विचे न करेंग।े ू ं 2.5.1 ध्वहन हवज्ञान एव हिदी हिक्षण ां ां ध्िवन विज्ञान

म ें उच्चारण एि उससे सबवित समस्त बातों का अध्ययन वकया जाता ह।ै इसके सार् ही ं ं ं इसम ें उच्चररत ध्िवन को सनकर उनको समझने की प्रवक्रया का भी अध्ययन वकया जाता ह।ै दसरे शधदों म ें ु ू हम कह सकते ह ैं वक ध्िवनयों के उच्चारण, उनके उच्चारण स्ान, उच्चारण स्ान के अनसार ध्िवनयों ु का िगीकरण, अनतान, स्िराघात, आवद का अध्ययन ध्िवन विज्ञान म ें वकया जाता ह।ै वहदी की प्रकवत ृ ु ं ध्िन्यात्मक ह।ै ध्िन्यात्मक से तात्पयथ ह ै जसै ा उच्चररत हो िसै ा ही वलखा जाना। यवद शधदों का सही उच्चारण नहीं होगा तो लेखन म ें त्रवट होगी। अतः, वहदी भाषा की प्रकवत को दखे ते हए वहदी वशक्षण में ु ृ ु ं ं ध्िवन विज्ञान की भवमका स्पष्ट हो जाती ह।ै ू 2.5.2 रूप हवज्ञान एव हिदी हिक्षण ां ां रूप विज्ञान मख्यतः शधद से सबवित ह।ै पदों का स्िरूप, पद रचना, िाक्य के वनमाथण में पद का महत्ि ु ं ं आवद का िणथन वकया जाता ह।ै वसफथ ध्िवनयों का सही उच्चारण करना सीख लेने मात्र से ही वहदी ं वशक्षण- अविगम पण थ नहीं हो जाता ह।ै

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 7 resources! id: **53**

विद्याार्ी को शधद एि पद की भी समझ होनी चावहए। शधद ू ं वनमाथण की प्रवक्रया, उनकी उत्पवत्त, उनके अर्थ, पद एि शधद म ें अतर आवद का ज्ञान होना विद्याार्ी के ं ं वलए आिश्यक ह।ै यह ज्ञान रूप विज्ञान के माध्यम से ही प्राप्त होता ह।ै इस प्रकार रूप विज्ञान के वबना वहदी वशक्षण अपण थ ह।ै ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 22 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 2.5.3 वाक्य हवज्ञान एव हिदी हिक्षण ां ां भाषा का एक महत्िपण थ कायथ ह ै विचारों का सप्रेषण और यह िाक्य के माध्यम से सपन्न होता ह।ै इस ू ं ं प्रकार िाक्य भाषा का एक महत्िपण थ अग ह।ै अतः, िाक्य विज्ञान के अतगतथ िाक्य का गहन अध्ययन ू ं ं वकया जाता ह।ै िाक्य विज्ञान का प्रवतपाद्य विषय ह ै िाक्य वनमाथण, िाक्य म ें प्रयक्त विवभन्न पदों के ु पारस्पररक सबि, िाक्य के घटक, िाक्य के भदे , आवद। अब यह बात तो स्पष्ट हो गई की िाक्य विज्ञान ं ं के अभि म ें भाषा वशक्षण की कलपना नहीं की जा सकती ह।ै वहदी भाषा की प्रकवत पर यवद एक बार ृ ं पनविचथ ार वकया जाए तो यह बात स्पष्ट रुप से दृवष्टगोचर होगी वक वहदी भाषा वियोगात्मक ह ै क्योंवक इसमें ु ं कारक वचन्ह आवद

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **54**

का प्रयोग अलग से वकया जाता ह।ै यर्ा राम घर जाता ह ै (वहदी) ं रामः गहम गच्छवत (सस्कत) ृ ृ ् ं यहाँ जाने की वक्रया के वलए

Quotes detected: **0%** id: **55**

‘जाता ह’

ै

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **56**

का प्रयोग वकया गया ह ै वजसम ें जाता और ह ै दोनों को अलग- अलग वलखा जाता ह ै जबवक सस्कत म ें गच्छवत शधद से काम हो जाता ह।ै ृ ं िाक

्य विज्ञान वशक्षण के अभि में विद्याार्ी को इन सक्ष्म तत्िों का ज्ञान हो नहीं सकता ह।ै इसके ू पररणाम्स्िरुप वहदी वशक्षण अपण थ रह जाएगा। ू ं 2.5.4 आि हवज्ञान एव हिदी हिक्षण ां ां भाषा के विवभन्न महत्िपण थ अगों में अर्थ को भी स्ान प्राप्त ह ै एि भाषा अपने कायथ सप्रेषण के द्वारा ू ं ं ं अर्थ का ही सप्रेषण करती ह।ै अर्थ के अभि म ें भाषा महत्िहीन हो जाती ह।ै भाषा की पररभाषा म ें ही ं कहा गया ह ै वक भाषा उच्चररत ध्िवन सके तों का समह ह ै वजनके अपने अर्थ होते ह।ैं आिश्यक यह ह ै वक ू ं भाषा के माध्यम से वनष्टपावदत वकए जाने िाले कायथ सप्रेषण म ें शावमल दोनों पक्षों िक्ता एि श्रोता के मध्य ं ं अर्थ का समवचत सप्रेषण हो अर्ाथत िक्ता जो कह े श्रोता िहीं समझ।े अर्थ विज्ञान के प्रवतपाद्य विषय ह ै ु ं शधद और अर्थ म ें सबि, एकार्थक और अनेकार्थक शधद से अर्थ वनमाथण, अर्थ का बिो क्यों होता ह?ै ं ं अर्थबिो को प्रभावित करने िाले कौन-कौन से कारक ह?ैं अर्थ विस्तार, अर्थ आदशे , अर्थ सकोच आवद। ं इस प्रकार भाषा के महत्िपण थ कायथ सप्रेषण को सफल बनाने के वलए आिश्यक अर्थ तत्ि के समस्त पक्षों ू ं का इसम ें अध्ययन वकया जाता ह।ै अतः, अर्थ विज्ञान के वशक्षण के वबना तो वहदी-वशक्षण की कलपना ही ं नहीं की जा सकती ह।ै उपरोक्त विवचे न से भाषा विज्ञान और वहदी वशक्षण के सबि स्पष्ट

Plagiarism detected: **0.03%** https://hi.wikipedia.org/wiki/सीआईडी_(धारावाहिक) + 3 resources! id: **57**

हो जाते ह ैं तर्ा वहदी वशक्षण म ें भाषा ं ं ं ं की भवमका भी स्ितः स्पष्ट हो जाती ह

।ै यवद आपको प्रभिी वहदी वशक्षण कायथ करना ह ै तो आपको भाषा ू ं विज्ञान के विवभन्न तर्थयों का ज्ञान विद्यावर्थयों को प्रदान करना ही होगा। ध्िवन विज्ञान, रुप विज्ञान, िाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान आवद से विद्यावर्थयों को अिगत कराना ही होगा। जब तक विद्याार्ी को इन तर्थयों का समवचत ज्ञान नहीं होगा ि वहदी भाषा को समझ नहीं पाएगँ े और ना ही वहदी वशक्षण का कायथ कर पाएगँ ।े ु ं ं अतः, भाषा विज्ञान वहदी वशक्षण के वलए अत्यत ही महत्िपण थ ह।ै यवद यह कहा जाय वक भाषा विज्ञान के ू ं ं अभि म ें वहदी वशक्षण का कायथ सपावदत नहीं हो सकता ह ै तो यह अवतशयोवक्त नहीं होगी। ं ं उत्तराखण्ड मक्त

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… id: **58**

विश्वविद्यालय 23 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 अभ्यास रश्न 7. ध्िवन विज्ञान के प्रवतपाद्य विषय क्या ह?ैं 8. रुप विज्ञान के प्रवतपाद्य विषय क्या ह?ैं 9. िाक्य विज्ञान के प्रवतपाद्य विषय क्या ह?ैं 10. अर्थ विज्ञान क

े प्रवतपाद्य विषय क्या ह?ैं 2.6 हहदी तशक्षण की समस्याए ँ एवं चुनौततया ँ ितथमान समय म ें वहदी वशक्षण की सबसे बड़ी समस्या वहदी भाषा के प्रवत जनसामान्य म ें व्याप्त अरुवच ह।ै ं ं अरुवच की सीमा इतनी अविक ह ै वक विद्याार्ी वसफथ परीक्षा उत्तीण थ होने के वलए ही वहदी भाषा पढ़ते ह।ैं ं विद्यावर्थयों की अरुवच के कारण वशक्षकों म ें भी रूवच उत्पन्न हो गई ह।ै जब वशक्षाार्ी म ें रुवच ही नहीं तो पढ़ाया वकसको जाय। यह प्रश्न एक विचारणीय मद्दा ह।ै वहदी भाषा के प्रवत अरुवच के कारणों का यवद ु ं गभीरतापिकथ विचे न वकया जाए तो कई कारण सामने आते ह।ैं इनको हम वहदी वशक्षण की समस्याओ ू ं ं ं के रूप म ें भी समझ सकते ह।ैं कछ प्रमख समस्याओ का िणथन वनम्नवलवखत ह:ै ु ु ं 1. हिदी भाषा का रोजगारोयपादक न ोना- वहदी भाषा का अध्ययन रोजगार के अिसरों के ां ं सजन म ें सहायक नहीं ह।ै ि्श्वै ीकरण के प्रभाि के कारण अग्रेजी भाषा का इतना गहरा प्रभाि ृ ं पड़ा ह ै की हर क्षेत्र म ें आग्ल भाषा अग्रणी हो गई ह।ै विवभन्न सरकारी एि गरै सरकारी सस्ानों ं ं ं में आग्ल भाषी छात्रों को िरीयता दी जाती ह ै वजससे विद्यावर्थयों का रुझान अग्रेजी की तरफ हो ं ं गया ह ै और वहदी अपने ही घर म ें हावशए पर खड़ी ह।ै जो ोड़े बहत रोजगार के अिसर ह ैं ि्ह ु ं वशक्षक एि विद्यावर्थयों की जानकारी म ें नहीं ह।ै वहदी भाषा के उत्ान के वलए कायथ करा रह े ं ं सरकारीएि गरै सरकारी सस्ानों द्वारा उन अिसरोंके प्रवत जागरुकता लाने के वलए कोई प्रयास ं ं भी नहीं वकया जा रहा ह ै तावक विद्यावर्थयों एि वशक्षकों को उन अिसरों की जानकारी हो सके । ं विद्याार्ी आजकल ि्ही विषय पढ़ना चाह रह े ह ैं जो रोजगारोत्पादक ह ैं त ा जो उन्ह ें जीविकोपाजनथ म ें सक्षम बनाते ह।ैं 2. पारपररक उद्देश्यों की राहप्त ि्त हिदी हिक्षण- भारतीय समाज का स्ि्रूप गवतशील ह।ै ु ां ां इसकी आिश्यकताए ँ एि अपेक्षाए ँ वनरतर पररिवतथत होती रहती ह।ै विद्यालय से भी इसकी कछ ु ं ं अपेक्षाए ं होती ह ैं जो समाज के गवतशील स्ि्रुप के सार् वनरतर पररिवतथत होती रहती ह।ै ं फलस्ि्रूप वशक्षण के उद्द्श्े यों म ें भी पररितथन होना चावहए लेवकन वहदी वशक्षण आज भी, ं पारपररक वशक्षण उद्द्श्े यों य ा- छात्रों म ें भाषाई कौशल

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **59**

का विकास करना अ ार्थत बोलने, ं वलखने, पढ़ने एि सनने आवद की योग्यता का विकास

करना की प्रावप्त के वलए वकया जाता ह ै जो ु ं वक छात्रों की रुवच को आकवषतथ करने के वलए पयाथप्त नहीं ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 24 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 3. पारपररक हिक्षण हवहियों का रयोग- वशक्षण विवियाँ भी वकसी विषय को रुवचकर बनाने म ें ां पयाथप्त योगदान करती ह।ै समस्या समिान विवि, पररयोजना विवि, आवद विवियाँ वकसी भी विषय को रुवचकर बनाती ह।ै वहदी म ें ि्ही पारपररक वशक्षण विवियों का प्रयोग कर आज भी ं ं वशक्षण कायथ वकया जा रहा ह।ै फलस्ि्रुप विद्याार्ी वहदी भाषा की ओर आकवषतथ नहीं हो पा रह े ं ह।ैं 4. पाठयिम का रासहगक ना ोना- वहदी विषय का पाठयक्रम ितथमान समय के प्रासवगक नहीं ् ् ां ं ं ह।ै ितथमान पररिशे म ें वसफथ भाषा एि सावहत्य पढ़ने से काम नहीं चलेगा बवलक भाषा के ं रोजगारोत्पादक पक्ष को भी पाठयक्रम म ें स्ान दने ा होगा। वहदी भाषा के सदभ थ म ें भाषा के ् ं ं रोजगारोत्पादक पक्ष अनिाद, सपादन कायथ सबिी पाठयक्रम, वहदी म ें सजनात्मक लेखन, ृ ् ु ं ं ं ं प्रयोजनमलक वहदी, आवद ह।ैं इनको पाठयक्रम म ें स्ान दके र विद्यावर्थयों को वहदी भाषा की ् ू ं ं ओर आकवषतथ वकया जा सकता ह।ै 5. सचना एव तकनीकी के सिा समन्वयन- ितथमान यग सचना एि सचार तकनीकी का ह ै त ा ू ु ू ां ं ं यिाओ का इस ओर विशषे रुझान ह।ै ि्ह जिीन के प्रत्येक पक्ष म ें इसका समिाशे चाहते ह।ैं ु ं तकनीकी वशक्षा का प्रारभ आग्ल भाषा म ें होने के कारण लोगों के मन म ें यह ि्ारणा बैठ गई वक ं ं वहदी भाषा के माध्यम से तकनीकी वशक्षा नहीं प्राप्त की जा सकती ह।ै हालाँवक विवभन्न सरकारी ं एि गरै -सरकारी प्रयासों द्वारा इस ि्ारणा को गलत वसद्ध कर वदया गया ह ै लेवकन इस ि्ारणा ने ं विद्यावर्थयों म ें वहदी

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **60**

भाषा के प्रवत रुवच उत्पन्न कर दी। ितथमान पररिशे म ें वहदी वशक्षण के कायथ म ें ं ं भी सचना एि सचार तकनीकी का प्रयोग नहीं वकया जा रहा ह।ै यह वहदी भाषी छात्रों म ें नीरसता ू ं ं ं को जन्म दते ी ह।ै इस प्रकार,

सचना एि सचार तकनीकी का वहदी वशक्षण के सार् तालमेल ना ू ं ं ं होना एक बड़ी समस्या ह।ै उपरोक्त विचे न से स्पष्ट ह ै वक ितथमान समय म ें वहदी भाषा की सबसे बड़ी समस्या वहदी के प्रवत छात्रों, ं ं वशक्षकों एि अवभभिाकों म ें व्याप्त अरुवच ह।ै शषे सभी समस्याए ँ इसी से सबवित ह।ैं अतः, वहदी वशक्षण ं ं ं ं को प्रभिी बनाने के वलए इसे रुवचकर बनाना आिश्यक ह।ै हिदी हिक्षण की चनौहतयाँ- वहदी वशक्षण की वनम्नवलवखत चनौवतयाँ ह:ैं ु ु ां ं 1. हिदी हिक्षण को रुहचकर बनाना- विद्यावर्थयों में वहदी के प्रवत अरुवच की मात्रा इतनी बढ़ गई ां ं ह ै वक वफर से वहदी भाषा को उनके वलए रुवचकर बनाना एक चनौतीपण थ कायथ ह।ै हालाँवक ु ू ं वशक्षकों द्वारा व्यवक्तगत स्तर पर इसके वलए कछ प्रयास वकए जा रह े ह ैं लेवकन ये प्रयास अभी ु अपयाथप्त ह।ै 2. तकनीकी हिक्षा एव ज्ञान हवज्ञान की हिक्षा- इन विषयों की वशक्षा के वलए वहदी भाषा अभी ां ं भी उतनी प्रभिी नहीं ह।ै विशेषतः पररभावषक शधदिाली को लेकर समस्या आती ह।ै हालाँवक इसके वलए अनिरत प्रयास वकए जा रह े ह ैं लेवकन अभी तक पणरूथ पेण सफलता नहीं वमली ह।ै ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 25 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 3. मातभाषा के रभाि के कारण ि्हटपणा उच्चारण- यह एक बड़ी चनौती ह।ै वशक्षक स्ि्य ृ ु ू ु ं वत्रवटपण थ

उच्चारण करते ह ैं और उन्ह ें इस बात का ज्ञान भी नहीं होता ह ै वक उनका उच्चारण ू त्रवटपण थ ह ै वफर ि ह हवद्याहियों को कै से ि द्ध उच्चारण हसखा पाएगाँ े। ु ू ु 4. पारपररक पाठयिम- वहदी

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **61**

भाषा का पारपररक पाठयक्रम भी इसकी एक चनौती ह।ै पारपररक ृ ृ ु ां ं ं ं वशक्षण विवियों का प्रयोग

इस चनौती को और दरुह बना दते ा ह।ै ु ु 5. रहिहक्षत हिक्षकों की कमी- प्रवशवक्षत वशक्षकों की कमी तो नहीं ह।ै बहत सारे प्रवशवक्षत ु वशक्षक ह ैं लेवकन उनका प्रवशक्षण परपरागत वशक्षक- प्रवशक्षण कायथक्रम से हआ ह ै और ि ह ु ं वहदी वशक्षण को आिवनकता के सार् समायोवजत नहीं कर पाते ह।ैं ु ं उपरोक्त विचे न से ि तथमान पररिेश म ें वहदी वशक्षण की चनौवतयाँ स्पष्ट हो जाती ह।ै वहदी वशक्षण की इन ु ं ं चनौवतयों का जन्म ि स्ति में उपरोक्त स्मस्याओ से ही हआ ह।ै आिश्यकता ह ै तो इन समस्याओ के ु ु ं ं समिान की। यवद इन समस्याओ का समिान कर वदया जाय तो चनौवतयाँ स्ि तः समाप्त हो जाएगँ ी। ु ं कें द्रीय वहदी सस्ान जसै े सस्ानों द्वारा इस वदशा म ें प्रयास शरु भी वकए जा चके ह।ै लेवकन इसका कछ ु ु ु ं ं ं विशेष लाभ नहीं वदख रहा ह।ै औपचाररक वशक्षा के मख्य सस्ानों य ा विद्यालय, महाविद्यालय ु ं विश्वविद्यालय, आवद के द्वारा जब तक अपने पाठयक्रम में सिार नहीं लाया जाएगा तब तक इसका ृ ु विशेष लाभ नहीं होगा। वहदी भाषा के पाठयक्रम म ें सिार लाने के सार्-सार् वहदी वशक्षण प्रविवि के ृ ु ं ं पाठयक्रम म ें भी पयाथप्त सिार लाना होगा तब जाके कहीं ि वछत पररणाम की प्रावप्त होगी। ृ ु ं अभ्यास रश्न 11. वहदी वशक्षण की सबसे बड़ी समस्या क्या ह?ै ं 12. वहदी वशक्षण की चनौवतयों को सचीबद्ध करें। ु ू ं 13. प्रवशवक्षत वशक्षकों की कमी से क्या आशय ह?ै 2.7 सारांश प्रस्तत इकाई ि स्ततः वहदी वशक्षण के सैद्धावतक पक्ष से सबवित ह।ै इकाई का आरभ वहदी वशक्षण के ु ु ं ं ं ं ं ं पररचय से वकया गया ह।ै छात्रों को भारतीय पररदृश्य म ें वहदी भाषा से पररवचत कराया गया ह।ै इसके ं पिात वहदी वशक्षण के उद्दश्े यों की चचा थ की गई ह।ै वहदी वशक्षण के ि तथमान म ें क्या उद्दश्े य ह?ैं क्या यह ं ं उद्दश्े य पयाथप्त ह?ैं और यवद नहीं तो वहदी वशक्षण के क्या उद्दश्े य होने चावहए? आवद प्रश्नों की सदर व्याख्या ु ं ं की गई ह।ै भाषा विज्ञान त ा वहदी वशक्षण के सबिों पर भी प्रकाश डाला गया ह।ै इसके सार् ही ि तथमान ं ं ं पररिेश म ें वहदी वशक्षण की समस्याओ एि चनौवतयों की भी चचाथ की गई

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **62**

ह।ै इस प्रकार, यह इकाई ु ं ं ं विद्यावर्थयों को वहदी वशक्षण की ि तथमान प्रवस्त्रवत से पररवचत कराती ह ै तावक ि ह अपने वशक्षण कायथ में ं इस ज्ञान का प्रयोग कर वहदी वशक्षण को प्रभिी बना सकें । ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 26 ु हिन्दी क ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 2.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. वहदी ं 2. 343

Quotes detected: **0%** id: **63**

‘त’

3. भारत के वहदी भाषी राज्य ह:ैं उत्तर प्रदशे , वबहार, मध्य प्रदशे , राजस्ान, हररयाणा, ं छत्तीसगढ़, झारखण्ड, वदलली, उत्तराखड, वहमाचल प्रदशे , चण्डीगढ़ ं 4. भारत म ें वहदी भाषा का वशक्षण मख्यतः वनम्नवलवखत तीन रुपों म ें होता ह ै - ु ं □ मख्

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **64**

य भाषा के रुप म ें ु □ गरै वहदी भाषी राज्यों त ा सघ शावसत प्रदशे ों म ें वद्वत्तीय भारतीय भाषा के रुप में; त ा ं ं □ विदवे शयों के वलए विदेशी भाषा के रुप म

ें । 5. वकसी भी विषय के वशक्षण के वनम्नवलवखत तीन अग होते हैं- ं □ वशक्षा ी; □ वशक्षक; एि ं □ वशक्षण-सामग्री। 6. इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई का खड 2.4 दखे ें। ं 7. ध्ि वन विज्ञान के प्रवतपाद्य विषय वनम्नवलवखत हैं- □ ध्ि वनयों के उच्चारण □ उनके उच्चारण स्ान □ उच्चारण स्ान के अनसार ध्ि वनयों का ि गीकरण ु □ अनतान ु □ स्ि राघात 8. रुप विज्ञान के प्रवतपाद्य विषय वनम्नवलवखत ह:ैं - □ पदों का स्ि रूप □ पद रचना □ ि ाक्य के वनमाथण म ें पद का महत्ि □ शधद वनमाथण की प्रवक्रया □ शधदों की उत्पवत्त □ शधद का अर्थ □ पद एि शधद म ें अतर ं ं उत्तराखण्ड मक्त

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… id: **65**

विश्वविद्यालय 27 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 9. ि ाक्य विज्ञान के प्रवतपाद्य विषय वनम्नवलवखत ह:ैं - □ ि ाक्य वनमाथण □ ि ाक्य म ें प्रयक्त विवभन्न पदों के पारस्परपरक सबि ु ं ं □ ि ाक्य के घटक □ ि ाक्य के भदे 10. अर्थ विज्ञान क

े प्रवतपाद्य विषय वनम्नवलवखत हैं- □ शधद और अर्थ म ें सबि ं ं □ एकार्थक और अनेकार्थक शधद से अर्थ वनमाथण □ अर्थ का बि क्यों होता ह ै □ अर्थबिो को प्रभावित करने ि ाले कौन-कौन से कारक ह ैं □ अर्थ विस्तार □ अर्थ आदशे □ अर्थ सकोच ं 11. ि तथमान समय म ें वहदी वशक्षण की सबसे बड़ी समस्या वहदी भाषा के प्रवत जनसामान्य म ें व्याप्त ं ं अरुवच ह।ै 12. वहदी वशक्षण की वनम्नवलवखत चनौवतयाँ ह:ैं ु ं □ वहदी वशक्षण को रुवचकर बनाना ं □ तकनीकी वशक्षा एि ज्ञान विज्ञान की वशक्षा ं □ मातभाषा के प्रभि के कारण त्रवटपण थ उच्चारण ृ ु ू □ पारपररक पाठयक्रम ृ ं □ प्रवशवक्षत वशक्षकों की कमी 13.

प्रवशवक्षत वशक्षकों की कमी से आशय िसै े वशक्षकों की कमी से ह ै वजनके वशक्षक- प्रवशक्षण कायथक्रम म ें वहदी वशक्षण के आिवनक तत्ि यो्रा- सचना एि सचार तकनीकी के सैद्धावतक एि ु ू ं ं ं ं ं व्यिाहाररक पक्षों का समिाशे वकया गया हो। ऐसे वशक्षक बहत कम ह ै िरन यँ कह ें वक न के ु ू बराबर ह ैं । 2.9 सदं भ थग्रंर् सची एवं सहयोगी ग्रंर् ू 1. शमाथ, दि द्रें नार् (1999). राष्ट्रभाषा वहदी समस्याए ँ और समिान, लोकभारती प्रकाशन: ं इलाहाबाद। उत्तराखण्ड मक्त

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… id: **66**

विश्वविद्यालय 28 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 2. वतिारी, भोलानार् (1999). भाषाविज्ञान.

वकताबमहल। 3. अग्रिाल, विजय(2002). वहदी भाषा: अतीत से आज तक. िाणी प्रकाशन: नई वदललली। ं 4. भाई योगद्रें जीत (2008). वहदी भाषा वशक्षण. अग्रिाल पवधलके शस: आगरा। ं ं 5. पाडे, रामशकल(2008). वहदी वशक्षण. अग्रिाल पवधलके शस: आगरा। ं ं ं 6. शमाथ, राजमवण (2004). वहदी भाषा इवतहास और स्िरूप. िाणी प्रकाशन: नई वदललली। ं 7. झालटे, दगल (2002). प्रयोजनमलक वहन्दी वसद्धात और प्रयोग, वदललली: िाणी प्रकाशन। ू ं ं 8. श्रीास्ति, रविन्द्रनार् (1987). प्रयोजनमलक वहन्दी. आगरा: के न्द्रीय वहन्दी सस्ान। ू ं 9. गोदर, विनोद (2001). प्रयोजनमलक वहन्दी. वदललली: िाणी प्रकाशन। ू 10. शमाथ, खेमराज ि शमाथ, रजरजराज (2011). वहन्दी वशक्षण. आगरा: अग्रिाल पवधलके शन। 11. चोपड़ा, रविकाता ि व्यास आनन्द प्रकाश (1998). मातभाषा वहन्दी वशक्षण. वदललली: राष्ट्रीय ृ ं शवै क्षक अनसन्िान और प्रवशक्षण पररषद। ु 12. वसह, सावित्री (2007). वहन्दी वशक्षण. मरे ठ: इटरनेशनल पवधलवशग हाउस। ं ं ं 13. लाल, रामन वबहारी (2017). वहन्दी वशक्षण [वहन्दी वशक्षण विज्ञान]. मरे ठ: आर० लाल बक ु वडपो। 14. वतिारी, भोलानार् (2015). भाषा विज्ञान. इलाहाबाद: वकताब महल। 15. रस्तोगी, गोपाल कष्ट्ण ि अन्य (1998) मातभाषा वहन्दी वशक्षण. नई वदललली: राष्ट्रीय शवै क्षक ृ ृ अनसिान और प्रवशक्षण पररषद। ु ं 2.10 तनबिात्मक प्रश्न ं 1. भारत म ें वहदी वशक्षण की ितथमान प्रवस्ृवत पर एक लघ वनबि वलख।ें ु ं ं 2. वहदी वशक्षण के उद्दश्े य क्या ह?ैं ं 3. वहदी वशक्षण के उद्दश्े य क्या होने चावहए? ं 4. भाषा विज्ञान एि वहदी वशक्षण के मध्य सबि स्ावपत करें। ं ं ं ं 5. वहदी वशक्षण की समस्याए ँ एि चनौवतयों का िणनथ करें। ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 29 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 ु इकाई 3 -

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 5 resources! id: **67**

हिंदी भाषा विक्षण के कछ अन्य मिंत्वपूणण आयाम 3.1 प्रस्ताना 3.2 उद्दश्े य 3.3 वद्वतीय भाषा के रूप में वहन्दी का वशक्षण 3.3.1 वद्वतीय भाषा के रूप म

ें वहन्दी वशक्षण के उद्दश्े य 3.3.2 वद्वतीय भाषा- वशक्षण विवियाँ 3.4 प्रयोजनमलक उद्दश्यों के वलए वहन्दी का वशक्षण ू 3.4.1 प्रयोजनमलक वहन्दी का अर्थ ू 3.4.2 प्रयोजनमलक वहन्दी का स्िरुप ू 3.4.3 प्रयोजनमलक वहन्दी का वशक्षण ू 3.5 स्ित्रन्त्र भारत के विवभन्न वशक्षा आयोगों में वहन्दी वशक्षण 3.5.1 विश्वविद्यालय आयोग में वहदी वशक्षण ं 3.5.2 माध्यवमक वशक्षा आयोग में वहन्दी वशक्षण 3.5.3 वशक्षा आयोग में वहन्दी वशक्षण 3.6 स्ित्रन्त्र भारत की विवभन्न वशक्षा नीवतयों में वहदी वशक्षण ं 3.6.1

Plagiarism detected: **0.04%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **68**

राष्ट्रीय वशक्षा नीवत 1968 में वहदी वशक्षण ं 3.6.2 राष्ट्रीय वशक्षा नीवत 1979 में वहदी वशक्षण ं 3.6.3 राष्ट्रीय वशक्षा नीवत 1986 में वहदी वशक्षण ं 3.6.4 सशोवित राष्ट्रीय

वशक्षा नीवत 1992 में वहदी वशक्षण ं ं 3.7 साराश ं 3.8 शधदिाली 3.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 3.10 सदभथ ग्रत्र् सची ू ं 3.11 वनबिात्मक प्रश्न ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 30 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 3.1 प्रस्तावना वहन्दी को सम्पण थ

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… + 2 resources! id: **69**

राष्ट्र की िाणी बनने का गौरि प्राप्त ह।ै वहदी हमारी राष्ट्रीयता का मानदड ह ै । अनेक िषों ू ं ं से वहदी-प्रेम, स्िदशे -प्रेम का अवभन्न अग माना जाता रहा ह ै और राष्ट्रीयता के रचनात्मक कायों म ें वहदी ं ं ं प्रचार को प्रमख स्ान वदया गया । वहदी की सिा राष्ट्र

की सिा ह ै त्रा लोकतत्र की भी सिा

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **70**

ह ै । छात्रों ु ं ं का वहदी पर अविकार हो सके और ि े भाषाई कौशलों म ें दक्षता प्राप्त कर सकें , अध्यापक क

ो इस बात का ं प्रयत्न करना ह ै वक छात्र शद्ध उच्चारण कर सकें , शद्ध ितनथ ी वलख सकें , िारा प्रिाह भाषण कर सकें , ु ु प्रभिी लेख वलख सकें , सावहत्य की विवि विाओ से पररचय प्राप्त कर सकें और वहदी के प्रवत अभीष्ट ं ं दृवष्टकोण का विकास कर सकें । प्रस्तत इकाई म ें वद्वतीय भाषा के रूप म ें वहदी-वशक्षण, प्रयोजन मलक उद्दश्यों के वलए वहदी ु ू ं ं वशक्षण, स्ितत्र भारत के विवभन्न वशक्षा आयोगों म ें वहदी-वशक्षण त्रा स्ितत्र भारत के विवभन्न वशक्षा ं ं ं नीवतयों म ें वशक्षण का विस्तार पिकथ अध्ययन करेंग।े ू 3.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के पिात आप- 1. वहदी-वशक्षण के उद्दश्े यों को बता सकें ग।े ं 2. वहदी-वशक्षण की विवियों को स्पष्ट कर सकें ग।े ं 3. प्रयोजनमलक वहदी का अर्थ बता सकें ग।े ू ं 4. प्रयोजनमलक वहदी के स्िरूप को स्पष्ट कर सकें ग।े ू ं 5. प्रयोजनमलक वहदी-वशक्षण के महत्ि को समझ सकें ग।े ू ं 6. विश्वविद्यालय आयोग म ें

वहदी-वशक्षण को बता सकें ग।े ं 7. माध्यवमक वशक्षा आयोग म ें वहदी-वशक्षण को स्पष्ट कर सकें ग।े ं 8. वशक्षा आयोग म ें वहदी-वशक्षण के सदभ थ की व्याख्या कर सकें ग।े ं ं 9. विवभन्न वशक्षा नीवतयों म ें वहदी-वशक्षण की प्रासवगकता को स्पष्ट कर सकें ग।े ं ं 3.3 तितीय भाषा के रूप म हहदी का तशक्षण ें वकसी क्षेत्र विशेष के व्यवक्तयों के वलए उनकी मातभाषा को छोडकर अन्य सभी भाषाओ को मातभाषा, ृ ृ ं वद्वतीय भाषा अिर्ा भाषा कहा जाता ह।ै इस दृवष्ट से सभी अवहन्दी भाषा-भावषयों के वलए वहदी वद्वतीय ं भाषा ह।ै वहदी उत्तर भारत के विशाल भभाग की मातभाषा ह ै तर्ा दवक्षण भारत म ें व्यापारर्-विणज्य ृ ू ं अिर्ा सास्कवतकर्-विमकथ आवद अन्य कारणों से सम्पकथ -भाषा के रूप म ें हमशे ा प्रचवलत रही ह।ै ृ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 31 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 भारत िस्ततः बहभाषायी देश ह।ै उत्तर भारत के अविकाश राज्यों के वलए वहदी मातभाषा ह ै तो पविम ु ृ ु ं ं बगाल और दवक्षण के राज्यों के वलए सम्पकथ -भाषा या वद्वतीय भाषा ह।ै स्पष्ट: मातभाषा और वद्वतीय भाषा ृ ं के वशक्षण उद्दश्े य एक समान नहीं हो सकते। ितथमान म ें वहदी

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ id: **71**

विश्व के लगभग 70 करोड़ लोगों द्वारा बोली और समझी जाती ह।ै इस दृवष्ट से यह ं विश्व की तीसरे नम्बर की भाषा ह

।ै वहदी भाषा की वलवप दि नागरी ह ै वजसम ें ससार के वकसी भी भाषा ं ं तत्सम अिर्ा तद्भि शधदों को सरलता से वलखा जा सकता ह।ै इसका ध्िवन तत्ि भी बड़ा ज़ैि ावनक ह ै तर्ा शधदकोश एिम सावहत्य अन्य भारतीय भाषाओ ँ की अपेक्षा अविक समद्ध ह ै और सार् ही वहदी ृ ं भाषा के सावहत्य म ें भारतीय सस्कवत सरवक्षत और सरवक्षत भी ह।ै ृ ु ं ं 3.3.1 हद्वतीय भाषा

Plagiarism detected: **0.3%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 5 resources! id: **72**

के रूप में हिदी हिक्षण के उद्देश्य ां वहदी वशक्षण के उद्दश्े यों को वनम्न भागों म ें बाँट कर अध्ययन कर सकते ह।ैं ं ज्ञानायमक उद्देश्य i. छात्रों को वहदी की मल ध्िवनयों,शधदों एिम िाक्य रचना का ज्ञान दने ा। ू ं ii. छात्रों को सास्कवतक, पौरावणक, व्यिाहाररक एिम जिीनगत अनभवतयों, गा ाओ, तर्थयों, ृ ु ू ं ं घटनाओ आवद का ज्ञान प्रदान करना। ं iii. छात्रों को वनबि, कहानी, उपन्यास, नाटक, काव्यगीत, गद्यगीत आवद सावहवत्यक वििाओ का ं ं ज्ञान दने ा। iv. छात्रों को रचना कायथ के विविि रूपों य ा िाताथलाप, िाद-विवाद, साक्षात्कार, वनबि आवद का ं ज्ञान दने ा । कौिलायमक उद्देश्य i. छात्रों को बोि सवहत सनने की योग्यता प्रदान करना। ु ii. छात्रों को प्रभिी ढग से वलखकर अपनी बात कहने की योग्यता प्रदान करना। ं iii. छात्रों को विचारों, भिों एिम तर्थयों को परस्पर समझने की योग्यता प्रदान करना। iv. छात्रों को स्िराघात, बलाघात ि स्िर के उतार-चढ़ाि के अनसार अर्थ ग्रहण करने की योग्यता ु प्रदान करना। सजनायमक उद्देश्य ृ i. छात्रों को भाषा कौशलों म ें मौवलकता लाने की योग्यता प्रदान करना। ii. छात्रों को स्िानभत भिों त ा विचारों को प्रभिापण थ ढग से अवभव्यक्त करने की योग्यता प्रदान ु ू ू ं करना। iii. छात्रों को विषय त ा प्रसग के अनकल भाषा एिम शलै ी का उपयोग करने की योग्यता प्रदान ु ू ं करना। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 32 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 अहभवतयायमक उद्देश्य ृ i. छात्रों म ें भाषा और सावहत्य के प्रवत रुवच उत्पन्न करना। ii. छात्रों म ें सद्भवतयों

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **73**

का विकास करना। ृ iii. छात्रों म ें सस्कवत एि सौन्दयथ के प्रवत मनोभि का विकास

करना। ृ ं ं 3.3.2 हद्वतीय भाषा-हिक्षण की हवहियाँ वद्वतीय भाषा-वशक्षण हते वनम्न विवियों के प्रयोग पर बल वदया जा रहा ह।ै ु 1. परोक्ष हवहि (Indirect Method)- वद्वतीय भाषा सीखने की यह प्राचीन विवि ह।ै इस विवि से सीखने िालों को सिप्रथ र्म मल ध्िवनयों, शधदों और िाक्यों त ा उसके व्याकरण

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **74**

का ज्ञान ू कराया जाता ह।ै वजससे नई सीखी जाने िाली भाषा के शधद ि महिारों का भी सरलता से ज्ञान ु हो जाता ह।ै ल

ेवकन यह विवि प्रभिी नहीं ह,ै क्योंवक अनिाद द्वारा वशक्षा दने े म ें विद्यावर्थयों के ु समक्ष मातभाषा ही रहती ह ै त ा विद्या ी नई भाषा बोलने ि वलखने म ें स्िय को असमर्थ ृ ं समझते ह।ैं के िल पठन पर ही अविक ध्यान वदया

Plagiarism detected: **0.13%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 12 resources! id: **75**

जाता ह।ै इस विवि की सबसे बड़ी विशेषता यह ह ै वक इसके द्वारा सीखने िालों को वद्वतीय भाषा के व्याकरण का स्पष्ट ज्ञान हो जाता ह।ै अप्रत्यक्ष विवि से सीखने िालों को सिप्रथ र्म वद्वतीय भाषा की मल ध्िवनयों, शधदों और िाक्यों ू त ा उसके व्याकरण का ज्ञान कराया जाता ह।ै इस विवि द्वारा सिप्रथ र्म मातभाषा के शधद और ृ िाक्य प्रस्तत वकये जाता ह ैं तत्पिात उनके वलए वद्वतीय भाषा के शधद और िाक्य बताये जाते ह।ैं ु इस विवि से वदवितीय भाषा के व्याकरण का ज्ञान भी मातभाषा के व्याकरण के आिार पर ही ृ कराया जाता ह।ै इस

प्रणाली म ें पढने-वलखने और अनिाद पर अविक बल वदया जाता ह ै और ु सब कछ मातभाषा म ें ही रहती ह।ै इस वलए विद्या ी वद्वतीय भाषा का स्ितत्र रूप से प्रयोग करने ृ ु ं म ें दक्षता नहीं प्राप्त कर पता। 2. रययक्ष हवहि (Direct Method)- इस

विवि के माध्यम से विद्याार्ी मातभाषा सीखने के ृ समान ही वद्वतीय भाषा सीखता ह।ै िह वदितीय भाषा को शधदों से नहीं िाक्यों से ग्रहण करता ह।ै इस विवि म ें िाताथलाप की प्रिानता रहती ह।ै सिप्रथ र्म विद्याार्ी के सामने िस्त अिर्ा वक्रया ु उपवस्र्त करते ह,ैं वफर उसके वलए वद्वतीय भाषा के शधद अिर्ा िाक्य प्रस्तत करते ह।ैं इसवलए ु इसे प्रत्यक्ष विवि कहते ह।ैं जब विद्यार्ी नई भाषा बोलने लगता ह ै तत्पिात उसे वलवप का ज्ञान करा

Plagiarism detected: **0.04%** https://hi.wikipedia.org/wiki/सीआईडी_(धारावाहिक) id: **76**

या जाता ह ै और िह पढने एिम वलखने की प्रवक्रया को सीखना आरम्भ कर दते ा ह।ै इस विवि म ें विद्यवर्थयों को वद्वतीय भाषा का व्याकरण नहीं सीखाया जात

ा वजससे शद्ध रूप स े ु बोलना और वलखना कवठन हो जाता ह।ै यह विवि मनिैज्ञावनक ह ै लेवकन इसे प्रयक्त करने म ें ु कवठनाईया भी अविक ह।ैं जैसे निीन भाषा सीखने के वलए यह अिसर कछ कक्षा-कक्ष घटों म ें ु ं वमलते ह।ैं अत: कोई विद्यार्ी निीन भाषा म ें शधद ज्ञान से पहले बोलना सीख सके गा, प्रायोवगक दवष्ट से यह कायथ आसान नहीं ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 33 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 3. वेस्ट हवहि (West's Method)- इस विवि का प्रवतपादन डा0 माइके ल िस्े ट ने वकया। इस विवि म ें सिप्रथ र्म पठन की वशक्षा दी जाती ह ै तर्ा मातभाषा का प्रयोग भी िवजतथ नहीं ह।ै िस्े ट ृ महोदय का तकथ ह ै वक जब तक विद्याार्ी को वद्वतीय भाषा के शधदों एिम िाक्यों का ज्ञान नहीं हो जाता तब तक ि े उसका वलखना ि बोलना सीख ही नहीं सकते। उस विवि की एक विशेषता यह भी ह ै वक इसम े पठन माला की पस्तकों का अर्थ समझने के वलए सहायक पस्तकों

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 5 resources! id: **77**

का प्रयोग ु ु वकया जाता ह ै और रचना अभ्यास भी उन्हीं के आिार पर कराया जाता ह

।ै परन्त भाषा की ु वशक्षा म ें पठन, लेखन और भाषण की वशक्षा अलग-अलग देने की बात यवक्तसगत नहीं ह।ै ु ं 4. वाक्य सरचना हवहि (Structural Method)- इस विवि म ें सिप्रथ र्म विद्यावर्थयों को वद्वतीय ां भाषा अग्रेजी के समान रचना िाले िाक्यों

Plagiarism detected: **0.09%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 5 resources! id: **78**

का ज्ञान पहले कराया जाता ह।ै विद्यावर्थयों को कछ ु ं चने हए शधदों एिम ढाचों का अभ्यास करते-करते भाषा का ज्ञान तो हो जाता ह,ै परन्त बोलने ु ु ु का अिसर प्राप्त न होने के कारण उनके मौवखक सभाषण का अभ्यास नहीं हो पाता। अवहन्दी ं क्षेत्रों म ें वहदी वशक्षा का मख्य उद्दश्े य उन्ह ें वहदी के माध्यम से विचार-विवनमय करने योग्य बनाना ु ं ं होता ह

।ै अत: िाताथलाप पर विशेष ध्यान दने े की आिश्यकता ह ै सार् ही अभ्यास की भी क्योंवक भाषा प्रयोग की िस्त ह।ै ु उपरोक्त िवणतथ विवियों म ें से वकसी एक विवि

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **79**

को राष्ट्रभाषा वहदी (वद्वतीय) के वशक्षण हते प्रयोग ु ं म ें नहीं लाया जा सकता। वद्वतीय भाषा के रूप म ें वहदी वशक्षण म ें स्ान, पररवस्र्वत तर्ा ं आिश्यकता को ध्यान म ें रखकर विवि-विशेष का प्रयोग करन

ा चावहए। अवहन्दी भाषी क्षेत्रों म ें वहदी वशक्षण के समय पढ़ना, वलखना और बोलने को सार्-सार् सीखाने की प्रवक्रया अपनाना ं श्रेष्ठ होगा। अभ्यास के रश्न 1. प्रार्वमक स्तर पर_____को प्रमखता प्रदान की गयी। ु 2. वहन्दी भाषा की वलवप_____ह।ै 3. वहन्दी वशक्षण के _____उद्दश्े य वनिाथररत वकये गए ह।ैं 3.4 प्रयोजनमूलक उद्दश्े यों के तलए हहदी का तशक्षण प्रयोजनमलक वहदी वशक्षण का आज सिाथविक महत्ि ह।ै यह शधदानशासन का एक नया चररत्र ह ै वजसके ू ु ं द्वारा वहदी सावहवत्यक भाषा मात्र न रहकर आिवनक विविि विषयों के माध्यम की भाषा के रूप म ें ु ं विकवसत हो रही ह।ै प्रयोजनमलक भाषा समकालीन सरोकार से जड़ी हई ह।ै कें द्र सरकार की ओर से वहदी ु ू ु ं को व्याहाररक ि सिग्रथ ाही बनाने की वदशा म ें कायाथलयों के उपयोवगता की दवष्ट से समद्ध करने हते सन ृ ु 1963 से प्रयोजनमलक वहदी वशक्षण पर बल वदया जाने लगा ह।ै प्रयोजनमलक वहदी के अतगतथ प्राय: ू ू ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 34 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 पररसिद, पत्रलेखन, प्रवतिदे न लेखन, िाताथलाप, कायथगोवष्ठयाँ, सामवहक िाद-ंविाद, पररचाथ, प्रश्नोत्तर ू ं आवद का विशषे रूप से प्रवशक्षण वदया जाता ह।ै 3.4.1 रयोजनमलक हिदी का आि ू ां प्रयोजनमलक वहदी के सदभ थ म ं

Quotes detected: **0%** id: **80**

'प्रयोजन'

शधद के सार्

Quotes detected: **0%** id: **81**

'मलक'

प्रत्यय लगने से प्रयोजनमलक पद ू ू ू ं ं सवजत हआ ह।ै प्रयोजन का तात्पयथ उद्दश्े य या प्रयवक्त तर्ा मलक से तात्पयथ आिाररत ह।ै अत: ु ृ ु ू प्रयोजनमलक भाषा का तात्पयथ वकसी विवशष्ट उद्दश्े य के अनसार प्रयक्त भाषा। इस प्रकार प्रयोजनमलक ू ु ु ू वहदी से आशय वहदी का िह प्रयवक्तपरक विवशष्ट रूप या शैली से ह ै जो विषयगत तर्ा सदभगथ त

प्रयोजन ु ं ं ं के वलए विवशष्ट भावषक सरचना द्वारा प्रयक्त की जाती ह।ै अत: सावहत्येत्तर मानक भाषा को प्रयोजनमलक ु ू ं भाषा कहते ह।ैं दसरे शधदों म ें प्रयोजनमलक वहदी िह ह ै जो लावलत्य के बोझ से न दबकर खरी-खरी ू ं ू कहती ह।ै 3.4.2 रयोजनमलक हिदी का स्वरूप ू ां अग्रेजी भाषा के शधद (Functional) के पयाथय के रूप म ें प्रयोजनमलक शधद ग्रहण वकया गया ह ै ू ं इसवलए इसे प्रयोजनमलक भाषा (Functional Language) त ा प्रयोजनमलक वहदी के वलए ू ू ं (Functional Hindi) का प्रयोग वकया जाता ह।ै प्रयोजनमलक वहदी को दखे ें तो जीविका के प्रत्येक क्षेत्र ू ं का अिलोकन करना पड़ेगा। ािवणज्य त ा व्यापार की वहदी म ें मवडयों की भाषा, शये र बाजार की भाषा, ं ं कायाथलयी वहदी के अतगथत प्रशासन और कायाथलयों म ें प्रयक्त वहदी ज्ञान और वशक्षा के विवभन्न शास्त्रों की ु ं ं ं वहदी, इजीवनयररग के वलए तकनीकी वहदी, कारखानों म ें प्रयक्त होने ाली वहदी आवद के माध्यम से ु ं ं ं ं ं प्रयोजनमलक वहदी के स्ाूप को स्पष्ट वकया जा सकता ह।ै ू ं अत: प्रयोजनमलक वहदी का स्ाूप बहत विस्तत ह ै इसम ें

Plagiarism detected: **0.02%** https://ddnews.gov.in/the-central-governments-… id: **82**

बाजार, मीवडया, प्रशासन, वशक्षा जगत, ु ृ ू ं वचवकत्सा, यातायात, उद्योग, ज्ञै ावनक क्षेत्र,

पयथटन एिम तीर्थस्ान, गली-हाट त ा चौराह े सब सम्मवलत ह।ैं 3.4.3 रयोजनमलक हिन्दी की हविषताए ाँ ू प्रयोजनमलक वहन्दी की विशेषताए ँ वनम्नित ह।ैं ू i. वैज्ञाहनकता- प्रयोजनमलक शधद पाररभावषक होते ह।ैं वकसी स्त के कायथ-कारण सम्बन्ि के ू ु आिार पर उनका नामकरण होता ह,ै जो शधद से ही प्रवतध्ावनत होता ह।ै ये शधद ज्ञावनक तत्ों की भावत साियभौवमक होते ह।ैं वहन्दी पाररभावषक शधदाली इस दृवष्ट से महत्पण थ ह।ै ू ं ii. अनरयिता- उपसगों, प्रत्ययों और सामावसक शधदों की बहलता के कारण वहन्दी की ु ु ु प्रयोजनमलक शधदाली स्त: अर्थ स्पष्ट करने में समर्थ ह।ै इसवलए वहन्दी की शधदाली का ू अनप्रयोग सहज ह।ै ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 35 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… id: **83**

र (भाग I) CPS 4 iii. वाच्यिा रिनता- वहन्दी के पयाथय शधदों की सख्या अविक ह।ै अत: ज्ञान-विज्ञान के विविि ं क्षेत्रों म

ें उसके अर्थ को स्पष्ट करने ाले वभन्न पयाथय चनकर नये शधदों का वनमाथण सम्भि ह।ै ु इससे ािवचक शधद ठीक िही अर्थ प्रस्तत कर दते ा ह।ै ु iv. सरलता और स्पिता- वहन्दी की प्रयोजनमलक शधदाली सरल और एकार्थक ह,ै जो ू प्रयोजनमलक भाषा का मख्य गण ह।ै प्रयोजनमलक भाषा म ें अनेकार्थकता का दोष ह।ै वहन्दी ू ु ु ू शधदाली इस दोष से मक्त ह।ै ु 3.4.4 रयोजनमलक

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **84**

हिन्दी का हिक्षण ू प्रयोजनमलक भाषा के रूप म ें वहदी को ैवि शविक प्रसार वमला ह।ै वहदी के प्रयोजनमलक स्ाुरुप के ू ू ं ं विकास के कारण ही आज सम्पण थ भारत म ें वहदी को समझने और बोलने ाले वमल जाते ह।ैं वहदी का ू ं ं विकास

राजकीय प्रयोजन से अलग माध्यमों के द्वारा हो रहा ह,ै वजनम ें चलवचत्र, दरदशनथ और उद्योग, ू व्यापार के विदशे ी प्रवतष्ठानों का योगदान अविक ह।ै इसवलए आज वहन्दी के प्रयोजनमलक सदभों से जो ू ं जड़े ह ैं ि- ु i. राजभाषा और उससे सम्बद्

Plagiarism detected: **0.06%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 6 resources! id: **85**

ध क्षेत्र (कामकाजी क्षेत्र) । ii. पत्रकाररता iii. श्रव्य माध्यम iv. दरदशनथ और चलवचत्र ू v. अनिाद और उसके माध्यम के विज्ञान, तकनीक और व्यापार । ु इन क्षेत्रों म ें वहन्दी के प्रयोग का ज्ञान ही आज के उपभोक्तिावादी सभ्यता म ें वहन्दी और वहन्दी भाषी क

ो सम्मान वदला सकता ह।ै प्रयोजनमलक वहन्दी म ें वशक्षण से आशय कामकाजी या व्यिाहाररक वहन्दी के ू वशक्षण से ह।ै यह भाषा वजतनी सरल होगी उसकी बिोगम्यता उतनी ही बढ़ती जायेगी। कवठन त ा दबिे ु शधदों और ाक्यों को प्रार्वमकता दी जानी चावहए। कमचथ ारी के न्द्रीय अनिाद धयरो से प्रवशवक्षत कमचथ ारी बैंक, वनगम, उपक्रम त ा सरकारी ु ू कायाथलय म ें कायथरत ह ैं त ा ि े वहदी की प्रयोजनशीलता को वसद्ध करने म ें लग े ह।ैं कई विद्यालयों, ं महाविद्यालयों त ा विश्वविद्यालयों म ें अनिाद कौशल के पाठयक्रम सचावलत वकये जा रह े ह।ैं अब ृ ु ं अनिाद कायथ आजीविका का साि न बन गया ह।ै यवद कोई चाह े तो समवपथत भिा और एकाग्रता के सार् ु लक्ष्य का वनिाथरण करके अनिाद म ें अपना कै ररयर बना सकता ह,ै इन्टरनेट पर अनिाद रोजगार प्रदान कर ु ु रहा ह।ै प्रयोजनमलक वहन्दी म ें अनिाद वशक्षण बहत महत्पण थ ह।ै अनिाद विश्व सावहत्य का सते ह।ै ु ू ु ू ु ु विवभन्न सस्कवतयों ाले ातिारण को समरस बनाने त ा एक दसरे को नजदीक से समझने हते अनिाद ृ ु ु ं ू सशक्त माध्यम ह।ै सावहवत्यक अनिाद तो सास्कवतक आिश्यकता ह ै त ा वहन्दी भाषा का अनिाद ृ ु ु ं

Plagiarism detected: **0.05%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 2 resources! id: **86**

राष्ट्रीयता की पहचान ह।ै इसके विविि कायथ क्षेत्र ह ैं और सभी क्षेत्रों हेत वशक्षण आिश्यक ह।ै ािवणज्य ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 36 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 और व्यापार, कवष वशक्षा, सेना, विज्ञान,

सचना एिम प्रौद्योवगकी, वचवकत्सा, विवि, प्रशासन, जनसचार ृ ू ं माध्यम, विज्ञापन एिम बैंवकग आवद का वशक्षण कै से वकया जाय वजससे सभी क्षेत्रों में कायथ सचारू रूप ु ं से चल सके त ा सभी क्षेत्रों जो जिीन के रोजमराथ से जड़े ह ैं की जानकारी लोगों

को प्राप्त हो सके । ु प्रयोजनमलक वहन्दी के वलए कछ वशक्षण विवियों

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **87**

का प्रयोग वकया जा सकता ह,ै य ा- व्याख्यान त ा ू ु विश्लेषण, सगोष्ठी त ा स ाध्याय, दृश्य/ श्रव्य माध्यमों/ सिानों का प्रयोग, वहन्दी के कायाथन्ियन के वलए ं विवभन्न सरकारी कायाथलयों की कामकाज सम्बन्ि जानकारी के वलए प्रत्यक्ष भटें । इन वशक्षण विवियों के माध्यम स

े यह कायथ वकया जा सकता ह।ै आज आिश्यकता इस बात की भी ह ै वक बदलते पररिश के अनसार उद्दश्े य आाररत वहन्दी को विकवत से बचाया जाना चावहए। ृ ु अभ्यास के रश्न 4. प्रयोजन शधद का तात्पयथ_____ह।ै 5. प्रयोजनमलक वहन्दी का क्षेत्र_____ह।ै ू 6. प्रयोजनमलक वहन्दी लावलत्य के बोझ से न दबकर_____कहती ह।ै ू 3.5 स्वतत्रं भारत के तवतभन्न तशक्षा आयोगों म हहदी तशक्षण ें भारतीय सविान म ें राजभाषा नामक भाग 17 के अनच्छेद 343 स े 351 तक भाषा सम्बन्ि प्रिाानों ु ं की चचाथ की गयी ह।ै ये सभी अनच्छेद मख्यत: सघ और राज्यों की राजभाषा से सम्बवित ह।ै सघ की ु ु ं ं ं राजभाषा वहदी और वलवप दि नागरी को मान्यता प्रदान की गयी ह।ै स ितत्र भारत के सभी वशक्षा आयोगों ं ं ने वशक्षा के सभी स्तरों पर वहदी भाषा को स िकवत प्रदान की ह।ै वशक्षा के विवभन्न स्तरों पर मातभाषा ृ ृ ं एिम राष्ट्रभाषा के सार् ही विदशे ी भाषा (अग्रेजी) को स्ान प्रदान वकया गया ह,ै परन्त आज भी अग्रेगी ु ं ं प्रमख भाषा बनी हई ह।ै ु ु 3.5.1 हवश्वहवद्यालय आयोग में हिदी हिक्षण ां स ितत्र भारत का प्रर्म आयोग विश्वविद्यालय आयोग या रिाकष्णन आयोग का गठन 4 निम्बर सन ृ ं 1948 को वकया गया वजसके अध्यक्ष डॉक्टर सिपथ लली रिाकष्णन ्रे। आयोग ने वहदी वशक्षण के ृ ं सम्बन्ि म ें कहा की उच्चतर माध्यवमक और विश्वविद्यालय स्तर पर 3 भाषायें पढायी जाय वजनमें प्रादवे शक भाषा (Reginal Language) सघीय भाषा (FederalLanguage) त ा अग्रेजी (English) ं ं को सवम्मवलत वकया जाय। सार् ही आयोग ने कहा वक उच्च वशक्षा का माध्यम अग्रेजी के स्ान पर ं वकसी आिवनक भारती

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… id: **88**

य भाषा को बनाया जाय। ु आयोग ने वहदी भाषा को सघीय भाषा का दजाथ वदया सार् ही कहा वक राष्ट्रभाषा के वलए दि नागरी वलवप ं ं सिश्रथ ेष्ठ ह।ै दि नागरी वलवप िज्ञै ावनक वलवप ह ै और राष्ट्रीय

एकता को कायम करने म ें मददगार ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 37 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 आयोग ने यह सझिा वदया ्रा वक सघीय भाषा म ें अन्य स्रोतों से आये हए शधदों का समन्िय वकया जाय ु ु ं और उसे समद्ध बनाया जाय। उच्च वशक्षा म ें अग्रेजी के स्ान पर वकसी भारतीय भाषा का प्रयोग वकया ृ ं जाय। राज्य सरकारें उच्चतर माध्यवमक स्कलों, वडग्री कालेजों एिम विश्वविद्यालयों की सभी कक्षाओ म ें ू ं सघीय भाषा के वशक्षा की व्यिस्ा करें। ं 3.5.2 माध्यहमक हिक्षा आयोग में हिदी हिक्षण ां स ितत्र भारत का वद्वतीय आयोग लक्ष्मणस ामी मदावलयर की अध्यक्षता म ें 23 वसतम्बर 1952 ई0 म ें ु ं माध्यवमक वशक्षा आयोग का गठन हआ। आयोग का प्रमख कायथक्षेत्र भारत की तत्कालीन माध्यवमक ु ु वशक्षा के सभी पहलओ के वस्वत की जाँच करके उस पर प्रकाश डालना त ा माध्यवमक वशक्षा के ु ं उद्दश्े य, सगठन, विषयि-स्त एिम वशक्षा के विवभन्न स्तरों के पारस्पररक सम्बन्ि का अध्ययन करना ु ं एिम सझिा दने ा त ा माध्यवमक वशक्षा से सम्बवित समस्याओ का पता लगाना ्रा। ु ं ं दशे म ें वहदी के स्ान पर अपने विचारों को व्यक्त करते हए आयोग ने वलखा वक राज्यों म ें वहदी के ु ं ं अध्ययन के वलए मख्यत: चार प्रकार के प्रयास वकये ह।ैं ु i. कछ राज्यों म ें वहदी को अवनियथ विषय बना वदया गया ह ै और ि ह वशक्षा त ा परीक्षा

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **89**

का ु ं माध्यम ह।ै ii. कछ राज्यों म ें वहदी अध्ययन और परीक्षा के वलए अवनियथ ह ै वकन्त वशक्षा का माध्यम

प्रादवे शक ु ु ं भाषा ह।ै iii. कछ राज्यों म ें वहदी एक भाषा के रूप अवनियथ विषय ह ै और इसम े परीक्षा भी ली जाती ह ै ु ं लेवकन परीक्षाफल को कक्षा-उन्नवत का आिार नहीं बनाया गया ह।ै iv. कछ राज्यों म ें वहदी को पाठयक्रम म ें स्ान तो वदया गया ह,ै परन्त उसे ऐवच्छक विषय ् ु ु ं (Optional) विषय के रूप म ें रखा गया ह।ै आयोग ने वहदी की ि तथमान वस्वत का अध्ययन करके इस बात पर बल वदया वक इसको विद्यालय स्तर ं पर अध्ययन का अवनियथ विषय बनाया जाय। आयोग ने तकथ प्रस्तत करते हए वलखा वक- ु ु i. सविान म ें वहदी को

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 2 resources! id: **90**

राजभाषा का स्ान वदया गया ह।ै ं ं ii. कछ समय पिात वहदी कें द्र और राज्यों के बीच पारस्पररक आदान-प्रदान की भाषा हो जायेगी। ु ं iii. वहदी अविकाश लोगों विचारों के आदान-प्रदान की भाषा बन जायेगी। ं ं iv. राजभाषा के रूप म

ें वहन्दी राष्ट्रीय एकता और सदृढ़ता का विकास करेगी। ु v. जो लोग वहदी नहीं पढेंग े उन्ह ें सरकारी नौकररया नहीं वमल सकें गी और न तो ि े वहदी पढ़े- वलखे ं ं ं लोगों के विचारों को समझ सकें ग।े आयोग ने माध्यवमक स्तर पर वहदी को प्रमख स्ान वदया सार् ही वहदी की िज्ञै ावनकता और ु ं ं सम्पन्नता का उललेख वकया। यह

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **91**

राष्ट्रीय एकता की भिाना का विकास करने म ें सक्षम ह ै त ा राष्ट्रीय विकास का आिार ह।ै ितथमान समय म ें यह अतराथष्ट्रीय भाषा बनने हते अग्रसर ह।ै ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 38 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 3.5.3 हिक्षा आयोग में हिदी हिक्षण ां स्ितत्र भारत म ें रिाकष्ट्णन आयोग एिम मदावलयर आयोग की वनयवक्त के पिात उनके सझिाों पर ृ ् ु ु ु ं पणतथ या अमल भी नहीं हो पाया त ा पररणाम पररलवक्षत नहीं हए वक भारत सरकार ने 14 जलाई सन ु ू ु 1964 ई0 को एक नए आयोग का गठन करके दशे को प्रगवत के पर् पर अग्रसर करने का साहस वदखाया। यह आयोग वपछले आयोगों से कई स्तरों पर वभन्न ा त ा अपने अन्दर व्यापकता को समटे े हए ा। इसे ु वशक्षा के सम्पणथ

Plagiarism detected: **0.07%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 6 resources! id: **92**

क्षेत्र की जाँच कर सतवलत एिम सगवठत राष्ट्रीय वशक्षा प्रणाली का विकास कर राष्ट्रीय ू ु ं ं जिीन के सभी क्षेत्रों में पण थ योग प्राप्त करने का दावयत्ि सौंपा गया। इस आयोग के अध्यक्ष प्रोफे सर दौलत ू वसह कोठारी ्रे। ं आयोग ने वहदी को सघ की राजभाषा क

े रूप म ें मातभाषा के पिात महत्िपण थ स्ान वदया। ृ ् ू ं ं आयोग का मानना ा त ा वक अग्रेजी उच्च वशक्षा म ें बौवद्धक आदान-प्रदान की भाषा हो सकती ह।ै लेवकन ं भारतीय जनता के वलए विचार-विवनमय की भाषा वहदी ही हो सकती ह।ै इसवलए भारत के सभी भागों में ं वहदी का प्रसार वकया जाना आिश्यक ह ै वजससे राष्ट्रीय एकता की भिाना का विकास हो सके । ं वहदी को समह की सम्पकथ भाषा

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **93**

होनी चावहए, सम्पण थ भारत के आतररक सम्प्रेषण का माध्यम ू ू ं ं होना चावहए त ा प्रत्येक व्यवक्त को इसका ज्ञान होना चावहए, वकन्त इसे वकसी पर लादा नहीं जाना ु चावहए। वहदी को कें द्र और राज्य की कायाथलयी भाषा होनी चावहए

। आयोग का कहना ह ै वक इसम ें कोई ं सदहे नहीं ह ै वक हमारे लड़के -लड़वकया वहदी का गहनता से अध्ययन करेंग े और उन्ह ें प्रेरणा प्राप्त होगी। ं ं ं ज्ञान और सस्कवत के पोषण हते वहदी का ज्ञान आिश्यक ह।ै ृ ु ं ं अभ्यास के रश्न 7. विश्वविद्यालय आयोग का गठन _____हआ। ु 8. माध्यवमक वशक्षा आयोग के अध्यक्ष_____्रे। 9. _____के अध्यक्ष दौलत वसह कोठारी ्रे। ं 10. वत्रभाषा सत्र को_____लाग करने की वसफाररश की। ू ू 3.6 स्वतत्र भारत की तवतभन्न तशक्षा नीततयों म हहदी तशक्षण ें वकसी भी

Plagiarism detected: **0.05%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **94**

राष्ट्र के चहमँ खी विकास म ें उस राष्ट्र की वशक्षा व्यिस्ा एिम शवै क्षक गणित्ता का अत्यन्त ु ु ु महत्िपण थ योगदान होता ह।ै वकसी भी राष्ट्र का आवर्थक, तकनीकी त ा िज्ञै ावनक आवद क्षेत्रों म

ें विकास ू वशक्

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **95**

षा के विकास पर ही वनभरथ करता ह।ै वशक्षा के प्रसार म ें आविकाविक िवद्ध करके त ा वशक्षा स्तर का ृ य ासम्मि उन्नयन करके राष्ट्रीय विकास की दर को बढ़ाया जा सकता ह।ै स्ितत्रता के पिात (1964- ् ं 66 ई0 में) गवठत कोठारी आयोग ने राष्ट्रीय वशक्षा-नीवत के वनमाथण की आिश्यकता पर जोर वदया ा वजसके फलस्िरूप भारत सरकार ने सन 1968 ई0 म ें प्रर्म

Plagiarism detected: **0.08%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **96**

राष्ट्रीय वशक्षा-नीवत की घोषणा की। प्रर्म उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 39 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 राष्ट्रीय वशक्षा-नीवत के उपरान्त सन 1979 ई0 एिम 1986 ई0 म ें भी राष्ट्रीय वशक्षा-नीवत सामने आयी। सन 1992 ई0 म ें भी 1986 ई0 की राष्ट्रीय वशक्षा-नीवत म ें सशिोन हते राष्ट्रीय वशक्षा-नीवत की घोषणा ु ं की। ितथमान म ें राष्ट्रीय

वशक्षा-नीवत 2016 प्रस्तावित ह।ै 3.6.1 राष्ट्रीय हिक्षा-नीहत 1968 ई0 में हिदी हिक्षण ां वहदी का विकास करने के वलए हर सम्भि प्रयास होने चावहए। वहदी का सम्पकथ भाषा के रूप म ें विकास ं ं करते समय भारत के वमवश्रत सस्कवत के सभी तत्िों की अवभव्यवक्त का माध्यम बनने म ें समर्थ हो सके ृ ं इसका ध्यान रखना चावहए। अवहन्दी भाषी राज्य म ें उच्च वशक्षा के सि

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **97**

न के रूप म ें ऐसे कालेजों एिम अन्य सस्ाओ की स्ापना पर जोर दने ा चावहए और उन्ह ें प्रोत्सावहत करना चावहए जो माध्यम के रूप में ं ं वहदी का प्रयोग करते ह।ैं ं राष्ट्रीय वशक्षा-नीवत म ें वत्रभाषा सत्र को लाग

करने बात कही गयी ह।ै ू ू वहन्दी भाषी

Plagiarism detected: **0.08%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 2 resources! id: **98**

राज्यों मंे a. वहदी ं b. अग्रेजी ं c. वकसी एक आिवनक भारतीय भाषा वजसम े वकसी दवक्षणी भाषा को िरीयता प्रदान की जाय। ु अवहन्दी भाषी राज्यों में- a. क्षेत्रीय भाषा b. अग्रेजी ं c. वहदी ं राज्य सरकारों को चावहए वक ि े माध्यवमक स्तर पर वत्रभाषा सत्र को दृढ़ता पिकथ वक्रयावन्ित करे। ू ू अतराथष्ट्रीय भाष

ाओ के अध्ययन की आिश्यकता स्िय स्पष्ट ह।ै अत: अग्रेजी तर्ा अन्य विदशे ी भाषओ ं ं ं ं ं के अध्ययन पर विशषे बल दने े आिश्यकता ह।ै 3.6.2 राष्ट्रीय हिक्षा-नीहत 1979 ई0 में हिदी हिक्षण ां राष्ट्रीय वशक्षा-नीवत, 1979 की प्रस्ताना म ंे कहा गया ह ै की

Quotes detected: **0.1%** id: **99**

“वशक्षा की आदश थ प्रणाली को लोगों को यह जानने के वलए तत्पर बनाना चावहए वक उनकी शारीररक एिम बौवद्धक क्षमताए ँ क्या ह ैं और इसका अविकतम विकास वकस प्रकार वकया जा सकता ह।ै आदश थ वशक्षा-प्रणाली लोगों म ंे सामावजक तर्ा मानिीय मलयों के प्रवत जागरूकता विकवसत करके उनम ंे उत्तम चररत्र का विकास करती ह ै और समाज के ू उत्तरदायी सदस्यों के रूप म ंे उन्ह ंे उत्तम जिीन व्यतीत करना वसखाती ह।ै ”

व्यवक्त की बौवद्धक क्षमताओ का विकास उनके मातभाषा में

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **100**

होती ह।ै इस नीवत के अतगतथ सभी ृ ं ं स्तरों पर वशक्षा के माध्यम हते क्षेत्रीय भाषओ का सझिा वदया गया तर्ा प्रार्वमक स्तर पर मातभाषा को ृ ु ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 40 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 अपनाने पर बल वदया गया ह।ै माध्यवमक स्तर पर वत्रभाषा सत्र को लाग करने की ि क

ालत की गयी। नीवत ू ू म ंे कहा गया ह ै वक अग्रेजी तर्ा अन्य विदशे ी भाषाओ की भी व्यिस्र्ा रहगे ी वजससे छात्र निविकवसत ं ं ज्ञान के सम्पकथ आ सकें ग।े इस वशक्षा नीवत म ंे मातभा

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **101**

षा के विकास के सार् ही क्षेत्रीय भाषा के विकास पर बल वदया गया। ृ भारतीय प्राचीन भाषा सस्कत के प्रचार हते प्रयास करने एिम अन्य शास्त्रीय भाषाओ के अध्ययन को ृ ु ं ं प्रोत्सावहत करने की बात भी कही गयी ह।ै वहदी को सम्पकथ भाषा के र

ूप म ंे विकवसत करने हते प्रयास ु ं करने एिम उद थ एिम वसन्ि का विकास करने की इच्छा जतायी गयी ह।ै ू 3.6.3 राष्ट्रीय हिक्षा-नीहत 1986 ई0 में हिदी हिक्षण ां स्ितत्र भारत म ंे

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **102**

राष्ट्रीय वशक्षा नीवत 1968 एक महत्िपण थ कदम रहा ह।ै इसका उद्दश्े य राष्ट्रीय प्रगवत, ू ं समान नागररकता तर्ा सस्कवत की भिना एिम राष्ट्रीय

एकता को सदृढ़ करना रहा ह।ै इस नीवत ने ृ ु ं वशक्षा-प्रणाली के क्रावतकारी निवनमाथण की आिश्यकता पर जोर वदया ह।ै सभी स्तरों पर वशक्षा म ंे ं गणात्मक सिार, विज्ञान तर्ा तकनीकी पर विशषे ध्यान, नैवतक मलयों के विकास तर्ा जिीन के ु ु ू पारस्पररक सम्बन्िों को घवनष्ठ बनाने पर बल वदया।

Plagiarism detected: **0.02%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **103**

राष्ट्रीय वशक्षा नीवत 1986 म ंे वहदी वशक्षण के स्र्ान का प्रश्न ह ै तो राष्ट्रीय

वशक्षा नीवत 1968 के सत्र को ू ं स्िीकार कर वलया गया ह।ै प्रार्वमक स्तर पर मातभाषा को प्रमखता दी गई ह ै तर्ा माध्यवमक स्तर पर ृ ु वत्रभाषा सत्र को स्िीकार करने का सकलप दोहराया गया ह।ै ू ं राष्ट्रीय वशक्षा प्रणाली का आिार एक

Plagiarism detected: **0.03%** https://leverageedu.com/blog/hi/k-se-shuru-hon… id: **104**

सामान्य पाठयक्रम की सरचना ह,ै वजसम ंे सामान्य मल ृ ू ं विषयों के सार्-सार् अन्य विषय लचीले होंग।े सामान्य

मल विषयों म ंे भारतीय स्िीिनता का इवतहास, ू ससै ंावनक प्रवतबन्ि तर्ा राष्ट्रीय एकता के अन्य तत्ि होंगे। ये ि तत्ि होंग े वजससे भारत की सामान्य ं सास्कवतक विरासत, समतिाद, जनतत्र, ि-थ वनरपेक्षता के मलयों

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **105**

का विकास वलग भदे के वबना होगा। ृ ू ं ं ं ितिारण की रक्षा, सामावजक बराइयों को दर करना, छोटे पररिार के मानकों का वनमाथण तर्ा ि ैज्ञ ंावनक ु ू स्िभिा विकवसत हो। सभी प्रकार क

े शवै क्षक कायथक्रम इस प्रकार बनाये जायेंग े जो ि-थ वनरपेक्ष मलयों को ू परी वनष्ठा के सार् विकवसत कर सकें । वकन्त ये बातें या योजनाए ँ तभी सफल होंगी जब भाषा की समझ ू ु हो। राष्ट्र भाषा वहदी तर्ा विदेशी भाषा का ज्ञान आिश्यक ह।ै सार् ही प्रार्वमक स्तर पर मातभाषा में ही ृ ं वशक्षा दी जाय इसे भी ध्यान में रखना होगा। 3.6.4 सिोहित राष्ट्रीय हिक्षा नीहत 1992 में हिदी

हिक्षण ांं सन 1990 म ें के न्द्रीय सरकार ने 1986 की नीवत का पनरीक्षण करने के वलए आचायथ राममवतथ की ु ू अध्यक्षता म ें

Quotes detected: **0.01%** id: **106**

'राष्ट्रीय वशक्षा नीवत पनरीक्षण सवमवत'

(National Policy of Education Review ु Committee-NPERC) की वनयवक्त की। सवमवत ने 26 वदसम्बर 1990 को अपनी ररपोटथ प्रस्तत की। 9 ु ु जनिरी 1991 को ससद म ें इस ररपोटथ को रखा गया त ा के न्द्रीय वशक्षा सलाहकार बोडथ (Central ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 41 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 Advisory Board of Education-CABE) ने अपनी बैठक म ें इसे अगीकत करने के वलए प्रवक्रया ृ ं वनाथररत करने हते मडल के अध्यक्ष से एक सवमवत वनयक्त करने की वसफाररश की। ु ु ं पनरीक्षण सवमवत की चार बैठकें हई। चौ ी बैठक वदलली म ें 21-22 जनिरी 1992 को हई। इन बैठकों में ु ु ु पनरीक्षण सवमवत पर विचार-विमश थ वकया गया और उसको लाग करने के उपायों पर विचार वकया गया। ु ू भारत सरकार ने इसकी ररपोटथ को ध्यान म ें रखकर 1986

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 2 resources! id: **107**

की राष्ट्रीय वशक्षा नीवत म ें कछ सशिोन वकये। ु ं पनरीक्षण सवमवत ने वहन्दी को सम्पकथ भाषा के रूप म

ें विकास करने पर बल दते े हए वत्रभाषा सत्र ु ु ू को स ीकार कर वलया। सवमवत ने अवहन्दी भाषी क्षेत्रों के उच्च वशक्षा म ें वहन्दी को विशेष प्रोत्साहन दने े की बात कही। सवमवत ने यह भी कहा वक राज्य सरकारें माध्यवमक स्तर पर वत्रभाषा सत्र प्रभिापण थ तरीके ू ू से लाग करें। त ा अन्तराथष्

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… id: **108**

ट्रीय भाषाओ के अध्ययन को स ीकार करने की आिश्यकता ह।ै ू ं अभ्यास के रश्न 11. राष्ट्रीय

वशक्षा नीवत 1968 म ें माध्यवमक स्तर पर_____सत्र को वक्रयावन्ित करने पर बल ू वदया गया। 12.

Plagiarism detected: **0.04%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **109**

राष्ट्रीय वशक्षा नीवत 1979 में मात्रभाषा के सार्-सार् _____भाषा के विकास पर बल वदया गया। 13. राष्ट्रीय वशक्षा नीवत 1986 म ें प्रार्वमक स्तर पर_____को प्रमखता दी गयी ह।ै ु 14. राष्ट्रीय

वशक्षा नीवत पनरीक्षण सवमवत के अध्यक्ष_____ ्रे। ु 3.7 सारांश भारत म ें वशक्षा का भिी स ि रूप इतना पेचीदा ह ै वक उसके बारे म ें स्पष्ट रूपरेखा बना सकना सम्भि नहीं ह,ै वफर भी हमारी उन परम्पराओ को दखे ते हए वक वजन्होंने हमशे ा बौवद्धक और आध्यावत्मक ु ं उपलवधियों को महत्ि वदया ह ै उनका वनाथह आिश्यक ह।ै इसम ें वकसी तरह का शक नहीं वक हम अपने उद्दश्े यों को हावसल करने म ें कामयाब होंग।े सबसे बड़ा काम ह ै शवै क्षक वपरावमड की बवनयाद को सदृढ़ बनाना; उस बवनयाद को वजसम े यह ु ु ु सवनवशवचत हो वक जो इस वपरावमड के वशखर पर हों, ि े विश्व म ें सिोत्तम स्तर के हों। अतीत म ें इन दोनों ु छोरों को हमारी सस्कवत के मल-स्रोतों ने भलीभावत वसवचत रखा, लेवकन विदशे ी आविपत्य एिम प्रभा ृ ू ं ं ं के कारण इस प्रवक्रया म ें विकार पैदा हो गया। अब मानि ससिान विकास का एक राष्ट्रव्यापी प्रयास पन: ु ं शरू होना चावहए वजसम ें वशक्षा अपनी बहमखी भवमका पण थ रूप से वनभाए। ु ु ु ू ू विवभन्न स्तरों पर वहन्दी वशक्षण का अनमोदन स ितत्र भारत के सभी वशक्षा आयोगों, वशक्षा ु ं सवमवतयों और वशक्षा नीवतयों द्वारा वकया गया। परन्त आज भी वहन्दी वशक्षण म ें गणात्मक सिार ु ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 42 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 पररलवक्षत नहीं होता। वत्रभाषा सत्र को सभी नीवतयों द्वारा लगभग स ीकार वकया गया ह,ै वफर भी हम ू आज वहन्दी को सम्पकथ भाषा के अवतररक्त कछ और मानने को तैयार नहीं ह।ैं यह तर्थय सही ह ै वक वजस ु स्तर का मानवसक विकास मातभाषा म ें होगा ि ह वकसी अन्य भाषा म ें नहीं हो सकता। वफर भी हम ें ृ अतराथष्ट्रीय स्तर पर अपने को स्ा वपत करना ह ै तो विदशे ी भाषओ की तरफ ध्यान रखना पड़ेगा, वकन्त ु ं ं इस आिार पर कभी नहीं वक वहदी को नया रग दके र विदशे ी प्राध्यापकों को वनयक्त करना पड़े। ु ं ं वहदी की प्रयोजनमलकता को ध्यान म ें रखते हए समकालीन निाचारों म ें इसे स्ा वपत करना ु ू ं होगा। क्योंवक भाषा का प्रयोजन तो अवभव्यवक्त ही ह।ै और यही अवभव्यवक्त लोकवहत का उद्दश्े य ि ारण कर दशे और काल की सीमा से परे होकर सावहत्य हो जाता ह।ै 3.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. मातभाषा ृ 2. दि नागरी 3. चार 4. उद्दश्े य या प्रयवक्त ु 5. विस्तत ृ 6. खरी-खरी 7. निम्बर 1948 8. मदावलयर ु 9. वशक्षा आयोग 10. कोठारी आयोग 11. वत्रभाषा 12. क्षेत्रीय 13. मातभाषा ृ 14. आचायथ राममवतथ ू 3.9 सन्दभ थ ग्रन्त् सची ू 1. झालटे, दगल (2002). प्रयोजनमलक वहन्दी वसिात और प्रयोग. वदलली: ि ाणी प्रकाशन। ू ं ं 2. पाडेय, कै लाशनार् (). प्रयोजनमलक वहन्दी की भवमका. वदलली: ि ाणी प्रकाशन। ू ू ं 3. श्रीास्ति, रविन्द्रनार् (1987). प्रयोजनमलक वहन्दी. आगरा: के न्द्रीय वहन्दी सस्ान। ू ं 4. गोदर, विनोद (2001). प्रयोजनमलक वहन्दी. वदलली: ि ाणी प्रकाशन। ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 43 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 5. Kochhar, S.K. (1984). Pivotal Issues in Indian Education. New Delhi: Sterling Publishers Private Limited. 6. वसह, कमार ि ारेन्द्र (2006). परीक्षा मर्न. इलाहाबाद: मर्न प्रकाशन। ु ं ं ं 7. शमाथ, खेमराज ि शमाथ, रजरजराज (2011). वहन्दी वशक्षण. आगरा: अग्रिाल पवधलके शन। 8. चोपड़ा, रविकाता ि व्यास आनन्द प्रकाश (1998). मातभाषा वहन्दी वशक्षण. वदलली: राष्ट्रीय ृ ं शवै क्षक अनसन्ि ान और प्रवशक्षण

पररषद। ु 9. पाण्डेय, रामशकल (2014). वहन्दी वशक्षण. आगरा: अग्रिाल पवधलके शन्स। 10. वसह, सावित्री (2007). वहन्दी वशक्षण. मरे ठ: इटरनेशनल पवधलवशग हाउस। ं ं ं 11. लाल, रामन वबहारी (2017). वहन्दी वशक्षण [वहन्दी वशक्षण विज्ञान]. मरे ठ: आर0 लाल बक ु वडपो। 12. त्यागी, गरसरन दास (2011). भारत म ें वशक्षा का विकास. आगरा: अग्रिाल पवधलके शन्स। ु 13. जौहरी, बी0 पी0, ि पाठक, पी0 डी0 (2009). भारतीय वशक्षा का इवतहास. आगरा: अग्रिाल पवधलके शन्स। 14. भटनागर, सरेश (2005). कोठारी कमीशन और शवै क्षक पररितथन. मरे ठ: आर0 लाल बक ु ु वडपो। 15. वतिारी, भोलानार् (2015). भाषा विज्ञान. इलाहाबाद: वकताब महल। 16. गप्ता, एस0पी0 (2008) आिवनक मापन एि मलयाकन इलाहाबाद शारदा पस्तक भिन। ु ु ू ु ं ं 17. राय, अवनरूद्ध (सपादक) (1996) वहन्दी वशक्षण पाठ योजनाएँ नई वदललली

Plagiarism detected: **0.05%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **110**

राष्ट्रीय शवै क्षक ं अनसिान और प्रवशक्षण पररषद। ु ं 18. रस्तोगी, गोपाल कष्टण ि अन्य (1998) मातभाषा वहन्दी वशक्षण नई वदललली राष्ट्रीय शवै क्षक ृ ृ अनसिान और प्रवशक्षण पररषद। ु ं 3.10 तनबिात्मक प्रश्न ं 1. वद्वतीय भाषा क

ी कौन-कौन वशक्षण विविया ह?ैं 2. प्रयोजनमलक वहन्दी वकसे कहते ह?ैं ू 3. प्रयोजनमलक वहन्दी की विशेषताए ँ बताइए? ू 4. वत्रभाषा सत्र की प्रासवगकता क्या ह?ै ू ं 5. वहन्दी वशक्षण पर माध्यवमक वशक्षा आयोग के विचारों को स्पष्ट कीवजए? उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 44 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इकाई 4- भित में हिंदी भाषा एवं हिंदी भाषा विक्षण की प्रस्थिवत 4.1 प्रस्तिाना 4.2 उद्दश्े य 4.3 स्ितत्रता से पि थ वहदी की वस्त्वत ू ं ं 4.4 वहदी भाषा से सबवित ंसैावनक ंप्रिाान ं ं ं ं 4.5

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 4 resources! id: **111**

राष्ट्रीय पाठयचयाथ प्रारूप 1975 ् 4.6 राष्ट्रीय पाठयचयाथ प्रारूप 1988 ् 4.7 राष्ट्रीय पाठयचयाथ प्रारूप 2000 ् 4.8 राष्ट्रीय पाठयचयाथ प्रारूप

2005 ् 4.9 साराश ं 4.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 4.11 सदभथ ग्रर् सची ू ं ं 4.12 सहायक सामग्री पाठय सामग्री ् 4.13 वनबिात्मक प्रश्न ं 4.1 प्रस्तावना आप इस इकाई में वहदी

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **112**

भाषा के विषय म ें जानकारी प्राप्त करेंग े । वहदी भारत की सबसे महत्िपण थ भाषा ह।ै ू ं ं वहदी के विकास की यात्रा भारतीय जनता की राष्ट्रीय भिाना के विकास से जड़ी हई ह।ै वहदी भाषा न े ु ु ं ं भारत को एक

सत्र में वपरोने का कायथ वकया ह ै । स्ितत्रता प्रावप्त के बाद भारत के सविान द्वारा इसे ू ं ं राजभाषा के रुप में स्ावपत वकया गया। वशक्षा के प्रचार-प्रसार पढ़न े ालों की सख्या की िवद्ध सावहत्य, ृ ं रेवडयो, वसनेमा का प्रचार बड़े नगरों का विकास यातायात की सविा, सैन्य गवतविवि, सरकारी ु कमचथ ाररयों का स्ानातरण ि अविक सस्ानों ि विश्वविद्यालयों म ें वहदी का दायरा बढ़ता जा रहा ह।ै ं ं ं ं अब यह राजभाषा, राष्ट्रभाषा ि सपकथ

Plagiarism detected: **0.04%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **113**

भाषा के रूप म ें प्रयक्त की जाती ह।ै इस इकाई म ें आपको वहदी ु ं ं भाषा क्षेत्र, वहदी से सबवित ंसै ावनक ंप्रिाान की जानकारी के सार् ही राष्ट्रीय

पाठयचया थ प्रारूप ् ं ं ं ं 1975, 1988, 2000, 2005 का पररचय भी वमलेगा । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 45 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… id: **114**

र (भाग I) CPS 4 4.2 उद्दश्े य इस इकाई का अध्ययन करने के पिात आप- 1. आप वहदी भाषा ि उसका क्षेत्र

जान सकें ग े । ं 2. स्ितत्रता से पि थ वहदी भाषा की वस्त्वत से अिगत हो सकें ग े । ू ं ं 3. राजभाषा भाषा के रूप म ें वहदी की ंसै ावनक वस्त्वत को स्पष्ट रूप में समझ सकें ग े । ं ं 4.

Plagiarism detected: **0.09%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… + 2 resources! id: **115**

राष्ट्रीय पाठयचया थ प्रारूप 1975, 1988, 2000 ि 2005 की वशक्षा में क्या भवमका ह,ै यह ज्ञान ् ू प्राप्त कर सकें ग े । 5. राजभाषा, राष्ट्रभाषा ि सपकथ भाषा के रूप म ें वहदी की वस्त्वत को समझ सकें ग े । ं ं 6. ितथमान म ें वहदी भाषा की वस्त्वत स्पष्ट कर सकें ग े । ं 4.3 स्वतत्रं ता से पूवथ हहदी की स्स्तत राष्ट्रीय

स्ंिीनता सग्राम 1857 तक भारत पर अग्रेजी शासन परी तरह से स्ावपत हो चका ार्ा। सन ू ु ं ं 1800 में फोटथ विवलयम कॉलेज की स्ापना के सार् इग्लैंड से भारत आने िाले अविकाररयों के वलए ं वहदी का ज्ञान आिश्यक कर वदया गया ार्ा। विदशे ी सत्तिाररयों के अतगथत भारत की राजनीवतक, ं ं सामावजक, ावमकथ , ऐवतहावसक, आवर्थक पररवस्त्वतयों म ें काफी उतार-चढ़ाि आया। इसी तरह निजागरण काल के प्रादभाथि से लोग एक दसरे से जड़ने लग,े उनमें विदशे ी शासकों के प्रवत आक्रोश का ु ु ू भाि बढ़ने लगा, प्रेस की स्ापना, भारतीय सस्कवत पर विदशे ी सस्कवत का प्रभाि, मकै ाले की वशक्षा ृ ृ ं ं नीवत, भारतेंद,

महिीर, प्रसाद ,वद्विदे ी जसै े रचनाकारों के वहदी भाषा को और मजबत करने का प्रयास ू ं ु और तेज हो गया। भारतेंद ने कहा ह ै ु

Quotes detected: **0.02%** id: **116**

"हनज भाषा उन्नहत अि, सब उन्नहत को मल ू हबन हनज भाषा ज्ञान के हमटत न हिय को सल"

ू उत्तरोत्तर काल म ें स्ंिीनता सग्राम और भी तीव्र होता चला गया। स्िदशे ी की भिना, विदशे ी िस्तओ ु ं ं का बवहष्ट्कार, राष्ट्रीयता की भिना की ज्योवत लोगों के वदलों म ें जली। राजा राममोहन राय, स्िामी दयानद सरस्ित्ती, भारतेंद जसै े िावमकथ नेताओ सामावजक ि िावमकथ आदोलन से जड़े लोग यह समझने ु ं ं ं ु लगे वक भारत म ें एकता ि अखडता के वलए उसका एक सत्र में बिना बहत ही आिश्यक ह ै और यहा ु ू ं ं ं एक सत्र में बिने का काम वहदी सही भि से कर सकती ह ै क्योंवक एक दसरे का सख दख बाटने के वलए ू ु ं ं ं ू ु भि विचार समझना वहदी के द्वारा ही सभि ह।ै ं ं यहा वतलक का यह कर्न उललेखनीय ह ै –

Quotes detected: **0.03%** id: **117**

"राष्ट्रीय सगठन के वलए आज ऐसी भाषा की आिश्यकता ह ै ं ं वजसे सित्रथ समझा जा सके , वहदी राष्ट्रभाषा बन सकती ह।ै "

इसके अलिा बोस, अयगर, मदन मोहन ं ं मालीय, लोवहया आवद नेता भी वहदी को ही राष्ट्रभाषा मानत े ेर्े। उन्होंने भारत की सस्कवत को सरवक्षत ृ ु ं ं रखने म ें वहदी को सक्षम मानते हए उसे राष्ट्रभाषा बनाने की अवनियथता पर बल वदया। 1ष्ठिं सदी म ें वहदी ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 46 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 गि का उपयोग होने लगा, विवभन्न पस्तक से जड़ी सोसाइटी, नागरी प्रचाररणी सभा काशी, वहदी सावहत्य ु ु ं सम्मले न प्रयाग, दवक्षण भारत वहदी प्रचार सभा ,ंिाथ राष्ट्रभाषा प्रचार सवमवत ंिाथ, वहदी विद्यापीठ बॉम्ब े ं ं आवद सस्ाए और िावमकथ सामावजक सस्ाए इसके प्रचार प्रसार म ें आग े ेर्ी। इसके अलिा रजरह्म ं ं ं ं समाज, आय थ समाज, सनातन िम थ सभा, प्रार्थना समाज, रामकष्ट्ण वमशन आवद भी उललेखनीय ह।ै 1918 ृ में इदौर के आठिं वहदी सम्मेलन की अध्यक्षता में महात्मा गिी ने कहा –

Quotes detected: **0.05%** id: **118**

"मरे ा यह मत ह ै की वहदी को ं ं ं ं ही वहदस्तान की राष्ट्रभाषा बनाने का गौरि का प्रदान करें, वहदी सब समझते ह।ैं इसे राष्ट्रभाषा बना कर ं ं ु हमें अपना कतथव्य पालन करना चावहए।"

इसी तरह भारत के अलग-अलग भाग म ें वहदी के प्रचार-प्रसार ं का काम तेजी से बढ़ने लगा। यहा यह बता दने ा आिश्यक ह ै वक सिप्रथ र्म एडिडथ टेरी ने वॉइज ट द ईस्ट ू ं इडीज नामक अपने यात्रा ंिविरण में (1665 म ें प्रकावशत) वहदस्तानी को भारत की बोलचाल की भाषा ं ं ु कहा ह।ै 1704 म ें तरोनेवसवस ने

Quotes detected: **0.01%** id: **119**

'लैक्सिकन क्लग्वा क् दस्तानीका'

नामक ग्र् दवक्षण भारत में व्यापार कर ू ं ं ं ु रह े डचो को वहदस्तानी सीखने के वलए वलखी । 1715 म ें जजे े कै टेलेयर ने डच भाषा में वहदस्तानी का ं ं ु ु प्रर्म व्याकरण वशक्षण के वलए प्रस्तत वकया, लाएडेन 1743 में इसका लैवटन अनिाद वकया। 1727 म ें ु ु हवै मलटन ने अपनी यात्रा ंिविरण म ें मगल राज्य में वहदस्तानी भाषा के विषय म ें वलखा ह।ै 1852 ईसिी म ें ु ं ु गासाथ द तासी ने भी अवखल भारतीय वहदी स्िरूप को स्ंिीकार वकया सार् ही वग्रयसथन ने भी वहदी की ं ं अवखल भारतीय सत्ता को स्ंिीकार वकया। उन्नीसिं शताधदी म ें वद्विदे ी ि छायिादी यग तक आते-आते यह परी तरह से पररष्ट्कत, भि ि ृ ु ू अवभव्यवक्त म ें समर्थ, राष्ट्रभिना के ओज से ओतप्रोत पण थ पररपक्ि भाषा के रुप में स्ावपत हो गई। ू ितथमान म ें वहदी भारत के सबसे बड़े भ भाग म ें बोली जाने िाली भाषा ह।ै प्रमख वहदी भाषी क्षेत्र के ू ु ं ं अतगतथ उत्तर प्रदशे , उत्तराचल,वबहार, झारखड, मध्य प्रदशे , छत्तीसगढ़, राजस्ान, हररयाणा ,वहमाचल ं ं ं प्रदशे ि वदललली आते ह।ैं इसके अलिा यह भारत के लगभग सभी भागों में बोवलयों का समह ह।ै के लाग ू के वहदी भाषा की व्याकरण में वहदी के रूप म ें वजनको सवम्मवलत वकया ह,ै उनके नाम हैं कन्नौजी, रजरज ं ं ,मारिाड़ी, मिै ाड़ी ,गढ़िाली ,कमाऊनी, नेपाली, परानी बैसिारी, ंिअि ,ररहाई, भोजपरी, मवै र्ली। ु ु ु डॉक्टर वग्रयसथन ने भारतीय भाषाओ के सिक्षे ण के आिार पर वहदी को दो भागों म ें बाटा हैै पि थ वहदी ू ं ं ं ं ं त ारा पविमी वहदी। 1950 ईस्िी में डॉक्टर ंिरेंद्र िमाथ ने वहदी की ग्रामीण बोवलयों म ें वलखा हैै

Quotes detected: **0.02%** id: **120**

" खड़ी ं ं बोली वहदी के सावहवत्यक रूप त्तर वहदी, उद,थ वहदस्तानी।"

इसको ही वग्रयसथन ने िनाथकलर वहदस्तानी नाम ु ं ं ं ं ं ू ु ु वदया ह।ै वहदी ि उनकी उपभाषाओ के बीच इतनी बिगम्यता स्ावपत ह ै वक कभी-कभी यह पहचानना मवश्कल ु ं ं हो जाता ह,ै ि ह दो अलग-अलग बोवलया ह।ैं स्ितत्रता के बाद वहदी को राष्ट्रभाषा के रुप में स्ावपत ं ं ं करने का लक्ष्य ही ारा वक ऐसी सरल सगम भाषा जो सभी वनिासी बोलते हो त ारा ि ह सपण थ भारत को ु ू ं िावमकथ , आवर्थक, राजनीवतक, प्रशासवनक व्यिहार में प्रयक्त की जा सके । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 47 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 वहदी को भारत म ें मातभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सपकथ भाषा ि

सास्कवतक भाषा का दावयत्ि वमला ह।ै ृ ृ ं ं ं ससार के सभी दशे की अपनी अपनी मातभाषा ह,ै यह भाषा का पहला रूप ह ै जो वक मा से ग्रहण की गई ृ ं ं

Plagiarism detected: **0.04%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 5 resources! id: **121**

भाषा के रूप में जानी जाती ह।ै भारत के सदभथ में मातभाषाए क्षेत्रीय भाषाए भी ह।ै भारत म ें बोवलया ृ ं ं ं ं अनेक ह,ै वकत मातभाषा ि क्षेत्रीय भाष

ा 22 ह।ै इन भाषाओ को भारतीय सविान की आठिं अनसची ृ ु ु ू ं ं ं में शावमल वकया गया ह।ै भाषा का दसरा रूप राष्ट्रभाषा ह ै जो वकसी भी दशे के बहसख्यक लोगों के द्वारा ु ं ू

Plagiarism detected: **0.09%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… + 3 resources! id: **122**

बोली जाती ह,ै और िहा के वनिासी अपने विचारों का आदान प्रदान करते ह।ैं भारत के गणतत्र की ं ं राजभाषा के रूप में वहदी को 14 वसतबर 1949 में स्िीकार वकया गया। ं ं स्ितत्रता के पित कछ नेता गिीजी द्वारा समवपथत वहदस्तानी को राजभाषा मान रह े ंरे, जबवक दसरा पक्ष ु ं ं ं ु ू अवहदी भाषा प्रदशे अग्रेजी को राजभाषा बनाना चाहता ंरा। राजभाषा क

ी समस्या िह परे दशे के वलए ू ं ं राष्ट्रभाषा चनन े के प्रश्न पर भारत के सविान वनमाथत्री सभा में जबरदस्त चचाथ चली, वजसमें लगभग कई ु ं सशिोन प्रस्तत वकए गए, अत में कन्हयै ालाल मावणकलाल मशी- आयगर फामलथ े को स्िीकार कर, वहदी ु ु ू ं ं ं ं ं को राष्ट्रभाषा के पद पर सशोवभत वकया गया ह।ै भारतीय सविान के भाग 17 म ें राजभाषा सबवित ु ं ं ं अनच्छेद 343 से 351 तक ह।ै सविान के पररवशष्ट की अष्टम अनसची में भी मशी आयगर फामथले के ु ु ू ु ू ं ं ं अतगतथ रखी गई ह।ै 14 वसतबर 1949 को सविान सभा ने वहदी

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… id: **123**

को राजभाषा घोवषत वकया इसवलए 14 ं ं ं ं वसतबर के वदन को हम क् दी क्दवि के रुप में मनाते ह।ैं ं ं सविान के अनच्छेद 343 से 351 म ें राजभाषा क

ा प्रिाान ह ै , अनच्छेदों को चार अध्याय म ें बाटा गया ु ु ं ं ह- सघ की भाषा, प्रादवे शक भाषा, उच्चतम न्यायालय उच्च न्यायालयों की भाषा ए विशेष वनदशे न। ं ं □ अनच्छेद 343 ु i. सघ की राजभाषा वहदी और दि नागरी होगी ं ं ii. सघ के राज्य के प्रयोजनों के वलए प्रयोग होने िाला अकों का रूप भारतीय अकों का अतराथष्ट्रीय ं ं ं ं रूप होगा। iii. खड-1 म ें वकसी बात के होते हए भी इस सविान के प्रारभ से 15 िषथ की कालिवि के वलए ु ं ं ं सघ के उन सब राज्य के प्रयोजनों के वलए अग्रेजी भाषा प्रयोग की जाती रहगे ी वजनके वलए ऐसे ं ं प्रारभ के ठीक पहले िह प्रयोग की जाती ंरी । ं iv. परत राष्ट्रपवत उक्त कालिी म ें आदशे द्वारा सघ के राजकीय प्रयोजनों म ें से वकसी के वलए ु ं ं अग्रेजी भाषा के सार् वहदी भाषा का तंरा भारतीय अकों के अतराथष्ट्रीय रूप के सार्-सार् ं ं ं ं दि नागरी रूप का प्रयोग प्राविकत कर सकें ग े । ृ v. इस अनच्छेद में वकसी बात के होते हए भी, ससद विवि द्वारा, उक्त 15 साल की अिवि के ु ु ं पित- अग्रेजी भाषा का अिंरा अकों के दि नागरी रूप का ऐसे प्रयोजनों के वलए प्रयोग ं ं उपबवित कर सकें गी जसै े वक ऐसी विवि में उवललवखत हो। ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 48 ु

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **124**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 □ अनच्छेद 351 - अनच्छेद 351 में वहदी कई के विकास का प

ंसार के विषय म ें विशषे वनदशे वदया ु ु ं गया ह ै -“सघ का यह कतथव्य होगा वक िह वहदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करें तावक ं ं ं िह भारत की सामावसक सस्कवत के सभी तत्िों की अवभव्यवक्त का माध्यम बन सके और उसकी ृ ं प्राकवतक में हस्तक्षेप वकए वबना वहदस्तानी के और आठिं अनसची में विवनवदष्टथ भारत की अन्य ृ ु ू ं ु भाषाओ के प्रयक्त रूप शलै ी और पदों को आत्मगत करते हए और जहा आिश्यक या िाछनीय हो ु ु ं ं ं िहा उनके शधद भडार के वलए मख्यता सस्कत से और गोंडा अब ह ै अन्य भाषाओ से शधद ग्रहण ृ ु ं ं ं ं करते हए उसकी समवद्ध सवनवित करें।” ु ृ ु □ अनच्छेद 350 - अनच्छेद 350 वकसी व्यंरा के वनिारण के वलए सघ या राज्य के वकसी पदाविकारी ु ु ं या प्राविकारी को, यंरावस्र्वत, सघ म ें या राज्य में प्रयोग होने िाली वकसी भाषा में अवभिदे न दने े का, ं प्रत्येक व्यवक्त को हक होगा। हिदी भाषा से सबहित अन्य अनच्छेद ु ां ां ां □ अनच्छेद 344 - । इस अनच्छेद के अनसार वहदी की प्रगवत का लेखा-जोखा रखा जाएगा। ु ु ु ं राष्ट्रपवत सविान लाग होने के 15 िषथ बाद तंरा उसके बाद हर िषथ 10 िषथ में एक बार आयोग ू ं का गठन करेगा । यह आयोग वहदी के प्रयोग के विषय में अपनी वसफाररश प्रस्तत करेगा । ु ं □ अनच्छेद 345 - यह अनच्छेद राज्य की भाषा से (प्रादवे शक भाषा) से सबवित ह।ै इसके ु ु ं ं अनसार यह व्यिस्र्ा की गई ह ै वक यवद कोई राज्य में 15 िषथ के अदर अपनी कोई भाषा ु ं अगीकार कर लेता ह,ै तो िह लाग हो जाएगी अन्यंरा उसे वहदी भाषा का प्रयोग करना होगा। ू ं ं □ अनच्छेद 344 की विवभन्न िारा अनच्छेद 343 से 347 तक प्रादवे शक भाषा का उललेख वकया ु ु गया ह।ै अनच्छेद 348 से 349 में उच्चतम न्यायालय ले िह उच्च न्यायालय

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **125**

की भाषा का ु ंविान ह।ै अनच्छेद 346 - यह अनच्छेद इस बात से सबवित ह ै वक विवभन्न राज्यों में परस्पर ु ु ं ं वकसी भाषा का प्रयोग

होगा। उन्ह ें आपस म ें इस बात का वनणयथ करना होगा, वनणयथ ना होने की वस्र्वत म ें वहदी को ही व्यिहार में लाया जाएगा। ं □ अनच्छेद 347 - इसके अनसार यह व्यिस्र्ा की गई ह ै वक यवद वकसी

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.doubtnut.com/qna/364564594 id: **126**

राज्य की जनसख्या के ु ु ं पयाथप्त लोग अपने द्वारा बोली जान े ाली भाषा को राज्य द्व

ारा मान्यता वदए जान े की माग करते ं ह,ैं तब राष्ट्रपवत ऐसे अनमवत द े सकत े ह।ैं ु □ अनच्छेद 348 - इसके अतगथत यह व्यिस्र्ा की गई ह ै वक उच्चतम न्यायालय की भाषा तब ु ं तक अग्रेजी होगी, जब तक की वहदी उसका पण थ स्र्ान नहीं ले लेती। वकत उच्च न्यायालय की ू ु ं ं ं माग पर राज्यपाल उच्च न्यायालय में उस राज्य की भाषा के प्रयोग की अनमवत द े सकते ह।ैं ु ं □ अनच्छेद 349 - इसके अनसार पररवस्र्वतयों को दखे ते हए समय-समय पर राष्ट्रपवत की पि थ ु ु ु ू सम्मवत से ससद राजभाषा के सबि में अविवनयम बना सकती ह।ै ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 49 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 □ इसके अवतररक्त अनच्छेद 120 और अनच्छेद 210 राजभाषा से सबवित ह।ै अनच्छेद 120 के ु ु ु ं ं अनसार ससद में संविान में स्ीकवत भाषाओ म ें से वकसी भी भाषा पर बहस हो सकती ह।ै ृ ु ं ं ं सदन के सदस्य वकसी भी भाषा में बोल सकते ह।ैं अनच्छेद 210 के अनसार ंविानसभा में भी ु ु अपने राज्य की मान्यता प्राप्त भाषाओ में कायथ कर सकती ह।ै इसके अवतररक्त प्रर्म सशिोन के ं ं अनसार संविान के अनच्छेद 350 के सार् 350 अ, 350 ि जोड़े गए इसके द्वारा भाषाई ु ु ं अलपसख्यकों की सरक्षा की व्यिस्र्ा की गई ह।ै संविान का यह सशिोन सन 1956 में पाररत ु ं ं ं वकया गया। दसरे सशिोन के द्वारा संविान की अष्टम अनसची म ें वसिी भाषा को जोड़ा गया। ु ू ं ं ं ू ितथमान म ें संविान की अष्टम अनसची म ें मान्यता प्राप्त राज्य भाषाओ की कल सख्या 22 हो ु ू ु ं ं ं गई ह- असवमया बगला बोडो डोंगरी गजराती वहदी ु ं ं कन्नड़ कश्मीरी कोंकणी मैवर्ली मलयालम मवणपरी ु मराठी नेपाली उवड़या पजाबी सस्कत स ंराली ृ ं ं ं वसिी तवमल तेलग उद थ ु ू ं ू स्ितत्रता के बाद माध्यवमक वशक्षा आयोग 1951- 53 का गठन भारत सरकार द्वारा वकया गया। इस ं आयोग ने स्कली वशक्षा की गणित्ता बढ़ाने के वलए बहत सारी वसफाररशें पेश की प्रस्तत की\ 1964 66 ु ू ु ु में कोठारी आयोग ने वशक्षा के सभी स्तरों और आयामों को ध्यान म ें रखते हए एक दस्ताजे तैयार वकया ु जो वक भारत की वशक्षा प्रणाली म ें मील का पत्र सावबत हआ। इसी आयोग की अनेक वसफाररशों को ु वशक्षा नीवत 1968 का आिार बनाया गया ंरा। विद्यालय वशक्षा में सिार लान े के वलए कछ महत्िपणथ ु ु ू कदम वलए गए। लोगों के शवै क्षक अिसरों

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **127**

का विस्तार करने, वशक्षा की गणित्ता बढ़ाने के वलए गभीर प्रयास, विज्ञान और ु ं प्रौद्योवगकी विकास पर जोर दने ा ि नैवतक एि सामावजक मलयों के विकास के प

्रवत जागरुकता लाना । ू ं

Plagiarism detected: **0.02%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **128**

राष्ट्रीय वशक्षा नीवत 1986 सशोवित 1992 म ें सामान्य शवै क्षक प्रणाली 10+2 +3 पर आिाररत राष्ट्रीय

ं वशक्षा प्रणाली के विकास पर वकया गया गया। इसके अनसार वशक्षा के हर स्तर पर न्यनतम अविगम स्तर ु ू करने की बात की गई। इस दौरान ncert विद्यालय वशक्षा के क्षेत्र एक अग्रणी सस्र्ा के रूप में होगी, ं पाठयचया थ का विकास, पाठयक्रम रचना, पाठयपस्तक मलयाकन आवद की प्रवक्रया में यह अग्रणी भवमका ् ् ् ु ू ू ं वनभा रही ह,ै सार् पाठय पस्तक रचना से जड़े तकनीक ि शिो तकनीक ि शिो राज्य वशक्षा सस्र्ान ् ु ु ं शवै क्षक अनसिान और प्रवशक्षण पररषद की स्र्ापना में भी मख्य भवमका वनभा रही ह।ै ु ु ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 50 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 4.5 राष्ट्रीय पाठ्यचया

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.doubtnut.com/qna/603934450 id: **129**

प्रारूप 1975 10 िषीय विद्यालय के वलए पाठयचयाथ :एक रूपरेखा 1975 के वशक्षा आयोगों पि थ के वशक्षा आयोगों ् ू को ध्यान में रखते हए 1972 में पाठयक्रम का प्रारूप

तैयार वकया गया, वजसमें 1973 म ें कछ सशिोन ु ् ु ं वकए गए ंरे इसी दौरान 1973 में ही वशक्षा एि समाज कलयाण मत्रालय ने 10+2 प्रणाली का पाठयक्रम ् ं ं तैयार करने के वलए एक विशेषज्ञ दल का गठन वकया, वजसमें विवभन्न

Plagiarism detected: **0.02%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… id: **130**

क्षेत्रों के वलए उप सवमवतया बनाई ं गई ंरी ।1976 म ें इस म ें राष्ट्रीय

शवै क्षक अनसिान और प्रवशक्षण पररषद ncert को भी शावमल वकया ु ं गया, अततः अगस्त 1975 में पाठयक्रम प्रारूप प्रचार करने के वलए वदलली में एक सम्मले न बलाया गया ् ु ं ंरा वजसमें दशे भर के लगभग 200 वशक्षाविदों को शावमल वकया गया। वशक्षा आयोग 1964 66 में बेवसक वशक्षा की श्रेष्ठ तत्िों को शावमल करते हए वशक्षा को राष्ट्र के जीन आिश्यकता ि आकाक्षाओ के सार् ु ं ं सबि सबि सबद्ध करने के वलए आतररक पररितथन पर बल वदया गया ंरा ।दशे म ें बढ़ती जनसख्या को ं ं ं ं ं ं

ं ध्यान म ें रखते हए अच्छी वशक्षा उपलधि कराना ,नई विवियों को समझना जानना ,विद्यालय म ें पाठयक्रम ु ् वशक्षण, सीखने की विवियों -सामवग्रयों ,मलयाकन, प्रिशे नीवत, समय-सारणी में लवक्षत प्रवक्रया को ू ं बरकरार रखते हए, कक्षा प्रर्म कक्षा से बारहिीं तक पाठयक्रम वनमाथण की सबसे प्रमख समस्या कायथ पर ु ् ु उसके पक्षों पर बल वदया जाए, तावक वशक्षा म ें समाज की बदलती सामावजक, आवर्थक व्यिस्र्ा, विज्ञान ि टेक्नोलॉजी का ध्यान के अतगतथ एक समान पाठयक्रम का विकास अवनियथ वकया जा सके । पाठयक्रम ् ् ं में जनजिीन की जरूरतों का स्ि रूप होना चावहए। स्कली वशक्षा में विज्ञान ि गवणत के स्तर को सिारत े ू ु हए उनकी निीनीकरण करने के विषय पर चचा थ की गई वजसस े बच्चों की वजज्ञासा भी बढ़ाई जा सके । ु उन्ह ें एक खोज की ि्रै ावनक विवि बताई जा सके , स्कल में कायथ कें वद्रत वशक्षा वजससे हा र्ों के प्रयोग ू द्वारा सीखने उत्पादन करने के सार्-सार् सामावजक उत्तरदावयत्ि के वनिहथ न के प्रवत विचार विचार वनमाथण के अिसर प्राप्त वकए जा सके । भारत जसै े विवभन्न उप सस्कवतयों ि िम थ के दशे के अतगतथ वलग, जावत, ृ ं ं ं ि म,थ भाषा क्षेत्र पर आिाररत भदे भिा को ना मानते हए जनतावत्रक मलयों का विकास सामावजक न्याय ि ु ू ं चेतना राष्ट्रीय एकता की भिाना का विकास वकया

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **131**

जाना चावहए। वशक्षा में वत्रभाषा फामलथ ा वजस में ू प्रार्वमक वशक्षा मातभाषा म ें हो लाग वकया जाना चावहए,

शारीररक वशक्षा चररत्र वनमाथण, मानि मलयों के ृ ू ू प्रवत सिदे नशीलता, कलात्मक अवभव्यवक्त ि अनभि

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **132**

का विकास छात्रों की अवभरुवचयों को अवभव्यवक्त ु ं की शवै लयों को ध्यान में रखत े हए उन्ह ें अविक से अविक अिसर प्रदान करने का प्रयास वकया जाए। ु बच्चों में विकास क

े सार् सार् शारीररक, बौवद्धक ,भिात्मक क्षेत्रों म ें व्यिवस्र्त ि क्रमबद्ध तरीके से विकास करन े के वलए सीखन े ि वसखाने की प्रवक्रया इस तरह से होनी चावहए वक ि्रह समस्याओ का हल ं ढढने का प्रयास करे,अपनी गवत से आगे बढ़े। बच्चों पर वकताबों का बोझ ना हो रटन े की पद्धवत की जगह ू ं खद या स्ि य वशक्षा ग्रहण करने की ऐसी पद्धवतयों को व्यिहार म ें लाना चावहए वजसके द्वारा बच्चे की ु ं रुवच म ें भी विस्तार हो और ि्रह अपनी गवत से सीखने ि विकास करने की प्रवक्रया को आग े भी बढ़ा सके । स्कलों में बहस्तरीय प्रिशे ,विषय म े सत्रीय सेमस्े टर प्रणाली से मलयाकन का दबिा कम करना, ु ू ू ं पाठयक्रम की इकाइयों को लघ इकाइयों म ें विभावजत करने से वशक्षण प्रवक्रया सार्थक, तावकथ क ि उवचत ् ु क्रम में स्र्ावपत की जा सकती ह।ै वपछड़े

Plagiarism detected: **0.04%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **133**

क्षेत्र से आने िाले प्रवतभिान विद्यावर्थयों के वलए अलग उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 51 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इकाइयों की स्र्ापना वजसमें ि्रह गवणत, विज्ञान, वचत्रकला आवद म ें उच्च प्रवशक्षण प्राप्त

कर सके । सार् कमजोर बच्चों को उपचार इकाइयों अि्रा इकाइयों के माध्यम से विवशष्ट कायथक्रम के अतगतथ मलभत ू ू ं पाठयक्रम ि ससिानों की उपलधिता करिाई जा सके । मलयाकन प्रणाली रटत प्रवक्रया से दर की जा ् ू ं ं ं ू सके , प्रत्येक विषय की ि्रावषथक परीक्षा के वलए वशक्षा के प्रत्येक स्तर के वलए उद्दश्े यों का वनवित वकया जाना आिश्यक ह।ै आिश्यक सिानों और विवियों का प्रयोग विद्यार्ी कायथ में ि्रह वशक्षा प्रवक्रया के मलयाकन में भी वकया

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **134**

जाना चावहए। बच्चों को अ फे ल वकए जाने की बजाय उनकी कवमयों को उपचार ू ं पाठय के द्वारा दर करने की कोवशश की जानी चावहए

। पाठयक्रम में एकरूपता ि लक्ष्य का वनिाथरण इस ् ् ू प्रकार होना चावहए, समय-समय पर पाठयक्रम को सयोवजत ि ससबद्ध करने ि योजनाबद्ध तरीके स े ् ु ं ं उसके विकास के वलए अभी अनसिान ि विकास के कायथक्रम चलाए जाते रहने चावहए, वजससे क्रमबद्ध ु ं रूप से उसका विकास होता रह े पाठयक्रम म ें के द्वारा स्कली बच्चों को पाठय विषय समय विभाजन ् ् ू अविगम अध्यापन अनभि सहायक सामग्री विषय अनसार शक्षै वणक उद्दश्े य विषयिस्त अविगम ु ु ु पररणामों का मलयाकन अध्यापकों का अवभभिाकों का पि पोषण अिश्य वकया जाना चावहए। राष्ट्रीय ू ं पाठयचया थ प्रारूप 1975 के अतगतथ यह क्या यह भी कहा गया इसके उद्दश्े य वशक्षा जिीन के वलए त र्ा ् ं स्ि य सीखने के वलए तैयार कर सकें 1) साक्षरता 2) ज्ञान 3) राष्ट्रीय प्रतीक4) जनतावत्रक पद्धवत हार् से ं ं काम करना अच्छा समझने का दवष्टकोण 5)स्ि च्छता ि स्ि च्छ जिीन स्ि स् जिीन जीने के प्रवत ललक आदत सहकाररता की भिाना

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **135**

का विकास करना 6)सजनथ ात्मक कायों के माध्यम से अवभव्यवक्त क्षमता का विकास करना। प्रर्म भाषा क

े क्षेत्र म ें बच्चों को प्रर्म स्ान पर इतना

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **136**

ज्ञान होना चावहए वक िह सावहत्य के सिश्रथ ेष्ठ नमनों को समझ सके सजनथ ात्मक लेखन का प्रारभ कर सके , वद्वत्ि भाषा का ज्ञान

स्तर ू ं तक वमलना चावहए वक िह स्िय को भली-भावत अवभव्यवक्त कर सके ि ततीय भाषा का स्तर इस तरह ृ ं ं होना चावहए वक िह तरा छात्र स्िय पाठ को पढ़कर समझ सकें और उसके अर्थ को व्यक्त कर सकत े ह।ैं ं स्कली वशक्षा के प्रर्म 10 िषों म ें सब विद्यावर्थयों को सामान्य वशक्षा दी जानी चावहए 9 ििं ि 10 ििं ू कक्षाओ में पाठयक्रमों के पररितथन में कोई की कोई योजना नहीं ह ै अिरा अतः दसिं कक्षा तक सभी ् ं विद्यावर्थयों के वलए गवणत विषय अवनियथ रहगे ा सामान्य वशक्षा का स्तर इतना होना चावहए तावक अिरा छात्र आगे चलकर उच्च वशक्षा ग्रहण करने के वलए आिश्यक आार का वनमाथण भी कर सके और सार् ही दवै नक समस्याओ का सामना करने की योग्यता का विकास भी कर सकें । ज्ञानाजनथ की प्रवक्रया मे कछ ु ं मलभत तत्ि की तरफ ध्यान दने ा आिश्यक ह ै जसै े -सगम से कवठन की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर, ू ू ु सपण थ से खडों की ओर, सरल से जवटल की ओर आवद वशक्षण प्रवक्रया

Plagiarism detected: **0.03%** https://askfilo.com/user-question-answers-sma… id: **137**

के द्वारा इन वशक्षण सत्रों को ध्यान ू ू ं ं में रखत े हए िास्तविक वस्त्वत असगत शधद िह तकथ पणथ अनभिों के मले के द्वार ा मनोिज्ञावनक पद्धवत से ु ू ु ं बच्चों को वसखाने का प्रयास वकया जा सके । प्रशसा ि मान्यता से बच्चा अविक सीखने का प्रयास ं करता ह ै इसवलए बच्चों के अवजतथ

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 3 resources! id: **138**

ज्ञान को स्िीकार करते हए उसकी अवभव्यवक्त ,विषय सबिी ज्ञान को ु ं ं मान्यता प्रदान की जाए सारी उसके समक्ष ऐसी वस्त्वतया ि समस्याए रखी जाए वजसमें िह अपने अवजतथ ं ं ज्ञान का उपयोग करें और स्िय उच्च वशक्षा अिरा ज्ञान प्राप्त करने के वलए प्रेरणा प्राप्त कर

ें क्योंवक इससे ं इच्छा की के विकास का स्तर बढ़ जाता ह ै और िह स्िय भी अविक ही ज्ञान अजनथ की क्षमता रखता ह ै ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 52 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 4.6 प्रारंतभक और माध्यतमक तशक्षा के तलए राष्ट्रीय पाठ्यचया एक रूपरेखा 1988 राष्ट्रीय वशक्षा नीवत 1986 के आलोक म ें यह लेख ह ै वक नीन नीवत के विवभन्न मानदडों के वक्रयान्ियन की प्रगवत और उससे समय-समय पर पड़ने िाली द्दवष्ट को सवनवित करने के वलए ु ं ंरोड़े रोड़े अतराल पर अपलोड करना आिश्यक होगा ।इसी को ध्यान म ें रखते हए प्रारवभक और ु ं ं माध्यवमक वशक्षा के वलए राष्ट्रीय पाठयचया थ एक रूपरेखा 1988 नामक दस्तिाजे को तैयार वकया गया ् इसमें भाषा वशक्षण और वशक्षा के माध्यम से जड़े मद्द े कॉमन स्कल की सरचना की आिश्यकता ु ु ू ं सामावजक समरसता से जड़े मद्द े राष्ट्रीय एकता को शवै क्षक प्रवक्रया से जोड़ने का काम वकया गया सामान्य ु ु कें द्रीय तत्ि, सतत और व्यापक मलयाकन स्ितत्र लचीलेपन के तत्ि व्यिसावयक वशक्षा की रूपरेखा को ू ं ं ध्यान म ें रखते हए न्यनतम अविगम स्तर , मलय वशक्षा, सचना सचार प्रौद्योवगकी व्यिस्र्ा के प्रबिन ु ू ू ू ं ं आवद की जिाबदहे ी को भी जोड़ा गया। पयाथिरण वशक्षा के सार्-सार् स्िास्र्थय और उत्पादक जिीन के वलए कला का सके तन सभी िर्मों के वशक्षा सामावजक विज्ञान म ें विषयिस्त आाररत समय समझ पैदा ु ं करने िाल े समय वकतना काम द े ज्ञान प्रौद्योवगकी आवद का समिशे इस सविसथ की प्रमख अग ह।ै भाषाई ु ं कौशल म ें मौवखक एि मलयाकन प्रणाली व्यवक्तगत और समह मलयाकन नीन तत्िों को भी इसमें ू ू ू ं ं ं समवे कत वकया गया ि।ैसै कटबकम की भिना

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **139**

को ध्यान में रखते हए दशे भवक्त और राष्ट्रीयता की ु ु ु ु अनभवत छात्रों क

ो करिानी आिश्यक ह।ै 1977 म ें ईश्वर भाई कमटे ी ने

Plagiarism detected: **0.04%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **140**

राष्ट्रीय पाठयचया थ रूपरेखा 1975 ् ु ू का के ऊपर पनविचथ ार वकया ,1988 राष्ट्रीय पाठयचया थ कायथक्रम म ें 1986 की वशक्षा नीवत की झलक ् ु आसानी से वदख जाते ह।ैं राष्ट्रीय

वशक्षा नीवत 1986 को ध्यान म ें रखते हए प्रार्वमक ि माध्यवमक स्तर ु पर वशक्षा म ें बदलि की आिश्यकता पर बल वदया गया। इसके अतगथत यह बात ें भी कही गई वक छोटे ं बच्चों को सामवहक गवतविवियों का खले

Plagiarism detected: **0.03%** https://askfilo.com/user-question-answers-sma… id: **141**

के द्वारा वशक्षा का पररचय वदया जाएगा उन्ह ें भाषा ि नबर ू ं सबिी ज्ञान दने े के वलए वक्रयात्मक खले ों के द्वार

ा वशक्षा

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.justice.gov/crs/media/1059271/dl?… id: **142**

प्रदान की जाएगी इससे बच्चों में आनदमई ं ं ं वशक्षा का प्रसार हो वशक्षा के माध्यम के रूप म

ें मातभाषा को ही सिोत्तम माना गया तर्ा प्रादवे शक ृ भाषाओ को भी प्रार्वमक वशक्षा के प्रर्म 2 िषों में जगह दी गई स्कलों का वशक्षण समय 200 वदन ू ं परीक्षा अिवि िह अन्य वक्रया कलापों के शावमल होने के सार् रखा गया। उच्च प्रार्वमक िह माध्यवमक स्तर के स्कलों का समय 6 घटे वजसमें से 5 घटे वशक्षा और शषे अन्य गवतविवियों के वलए रखे जाएग े ू ं ं ं कक्षा का समय तकरीबन 40 वमनट का रखा जाएगा। 4.7

Plagiarism detected: **0.1%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 4 resources! id: **143**

राष्ट्रीय पाठ्यचया प्रारूप 2000 विद्यालय वशक्षा के वलए राष्ट्रीय पाठयचया थ की रूपरेखा पाठ के पि थ अकों में आपने राष्ट्रीय पाठयचया थ ् ् ू ं प्रारूप 1975 ि 1988 में पाठयक्रम वनमाथण सबिी जानकाररया प्राप्त की सार् ही (ncert) राष्ट्रीय शवै क्षक ् ं ं ं अनसिान और प्रवशक्षण पररषद द्वारा वकए गए सार्थक प्रयास को पढ़ा। राष्ट्रीय वशक्षा नीवत 1986 के ु ं अतगतथ प्रारवभक और माध्यवमक वशक्षा के वलए राष्ट्रीय प

ाठयचया:थ एक रूपरेखा तर्ा कायथ योजना ् ं ं उत्तराखण्ड मक्त

Plagiarism detected: **0.08%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 2 resources! id: **144**

विश्वविद्यालय 53 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1992 में ज्ञान की उत्कषथ ि आिवनकीकरण पर जोर वदया गया और नी पचिषीय योजना वसतबर 1999 ु ं ं में पररषद ने एक पाठयचयाथ समह का सगठन वकया वजसमें सभी क्षेत्रीय वशक्षा सस्ानों से परामशथ वसद्धात ् ू ं ं ं एि शिो पर आिाररत सामग्री का अध्ययन करके विद्यालय वशक्षा के वलए राष्ट्रीय

पाठयचया थ की ् ं रूपरेखा पररचाथ दस्तिाजे तैयार वकया गया। जनिरी 2000 में समाज के विवभन्न िगों के प्रवतवनवि, वशक्षक, विभागों विश्वविद्यालय, शिो सस्ानों ,अतराथष्ट्रीय सस्ाओ को सझिा और वटप्पवणयों के वलए ु ं ं ं ं यह दस्तिाजे उनके पास भजे ा गया यहा तक की उच्चतर माध्यवमक स्तर के छात्र छात्राओ से भी इस ं ं दस्तिाजे पर वटप्पवणया एि सझिा सझिा मागे गए । राष्ट्रीय वशक्षा नीवत 1986 ि राष्ट्रीय पाठयचया थ ् ु ु ं ं ं प्रारूप 1988, वजन मद्दों पर वचता व्यक्त की गई ी। पनः सन 2000 में भी उन पर बल वदया गया वदया ु ु ं गया । कॉमन कोर कपोनेंट(सामान्य कें वद्रक तत्ि) सतत और व्यापक मलयाकन, स्ितत्रता और ू ं ं ं लचीलेपन के तत्ि व्यिासावयक वशक्षा जसै े मद्द े पहले के दस्तिाजे ों में मौजद रह े ह।ैं इसके अलिा कछ ु ू ु विषयों पर ध्यान कें वद्रत करने का प्रयास वकया गया जो न्यनतम अविगम स्तर (वमवनमम लिल लवनांग) ू सचना एि सचार प्रौद्योवगकी, मलय वशक्षा, व्यिस्ा के प्रबिन आवद । राष्ट्रीय पाठयचया थ प्रारूप 2000 ् ू ू ं ं ं में पाठयचया थ पर चचा थ करते समय इस बात पर ध्यान वदया गया वक वशक्षण का जिन चलन े िाली ् प्रवक्रया ह ै वजससे हम बच्चों के समवचत विकास ि व्यवक्तत्ि वनमाथण का कायथ करते ह।ैं इसवलए भिी ु पाठय चया थ ि उसका विकास करते समय हमें न्यनतम अविगम स्तर वशक्षा के सामान्य उद्दश्े य वशक्षाी्र ् ू अिर्ा छात्र के वलए अध्ययन योजना मलय वशक्षा वशक्षण वनयवक्तया, वशक्षण माध्यम, समय पर ध्यान ू ु ं दने ा होगा। सार् ही, प्रार्वमक ि उच्च माध्यवमक स्तर पर पाठयचया थ का समायोजन होना आिश्यक ह ै ् । मलयाकन की ितथमान प्रणावलयों उसके उपयोग विवभन्न स्तरों पर मलयाकन स्तर सपोषण की प्रवक्रया ू ू ं ं ं और भी सहज और सरल बनाने के सार् राष्ट्रीय मलयाकन सगठन को वनदशे वदया गया पाठयचया थ ् ू ं ं विकास के वलए अध्यापक वशक्षा प्रणाली व्यिासावयक सहयोग, मागदथ शनथ ि परामशथ व्यिासावयक वशक्षा का प्रबिन सस्ा गत, सगठन में सिार जसै े विषय भी शावमल वकए गए।

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **145**

राष्ट्रीय पाठयचया थ प्रारूप के ् ु ं ं ं सदभ थ म ें वशक्षा के क्षेत्र में की गई प्रमख सस्तवतयों का िणनथ इस प्रकार ह

ै भारतीय परपरा ि लोकाचार को ु ु ं ं ं िवै श्वक विचारों के सार् जोड़ने का प्रयास परे दशे में विश्वविद्यालय, विद्यालय सरचना 10+2+ 3 म ें ू ं एकरूपता स्ावपत करना ।ससि ावनक मलयों के प्रवत वनरतरता ि समिाशे करना माध्यवमक स्तर तक ू ं ं

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **146**

छात्रों को ऐसी वशक्षा दने ा जो उनके बवनयादी जिीन, कौशल, उच्चस्तरीय बौवद्धक स्तर(आईक्य ु ू)सिगे ात्मक स्तर (एक्य) आध्यावत्मक स्तर(s q) अजनथ में सहायक हो। छात्र

ों में मानि अविकार विषय ू ं विशेषकर बावलकाओ के अविकार पर ध्यान वदया जाएगा। वशक्षा के वलए सभी स्तरों पर ज्ञान समाज ं और कौशल अवजतथ करने के वलए न्यनतम अविगम स्तर को सवनवित करना जो समाज के ढाच े छात्र की ू ु ं योग्यता के अनरूप हो प्रारवभक और माध्यवमक स्तर के वलए कौशल पर जोर दते े हए विषय ि्स वसखाने ु ु ु ं के तरीके ढढन े जाए और छात्रों म ें विशेष आिश्यकता िाले

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **147**

छात्रों को भी शावमल करते हए कै से सीखा ु ू ं जाए पर ध्यान कें वद्रत वकया जाए। जिीन कौशलों क

ी जरूरत समस्या वनिारण आलोचनात्मक सोच सप्रेषण आत्म चेतना तनि से विचवलत ना होना वनणयथ लेना सजनात्मक वचत वचतन विचार और विचार ृ ं ं उत्पादक वचतन अतियै वक्तक सबि सहानभवत या दसरों की भिानाओ से जड़ना ह ै सफलतापिकथ जिीन ु ू ु ू ं ं ं ं ं ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 54 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 जीने के वलए यह कौशल बहत ही

जरूरी ह ै सभी स्तरों पर मौवलक कतथव्य और पाठयचया थ को का ु ् समिाशे करना । स्ितत्रता के पिात मलय और गणों में वनरतर वगरिाट दखे ी जा रही ह ै वजससे समाज में ू ु ं ं मलयों के प्रवत अनादर उत्पन्न हआ ह ै परत विद्यालय ि उसके पाठयक्रम के अतगतथ नैवतक ि ु ् ू ु ं ं आध्यावत्मक विकास की ओर छात्रों को ले जाने के वलए मलय आिाररत वशक्षा प्रदान करना आिश्यक ू होगा 1999 म ें भारतीय ससद में प्रस्तत एस बी चौहान सवमवत की ररपोटथ म ें अनशषा के अनसार सभी ु ु ु ं ं शवै क्षक कायथक्रमों को मलय आिाररत बनाने के वलए सत्य ,सदाचरण, शावत, प्रेम और अवहसा ऐसे ू ं ं मलभत और सिाभथ ौम मलय ह ैं जो मानि व्यवक्तत्ि के पाच आयामों का प्रवतवनवित्ि करते ह।ैं विद्यालय ु ु ू ं वशक्षा, विषय िस्त ि पाठयचयाथ वनमाथण के चयन, वशक्षण की प्रविवियों का उपयोग करते समय ् ु स्ितत्रता लचीलापन प्रासवगकता ि पारदवशतथ ा

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **148**

को ध्यान में रखा जाए ।छात्रों की प्रवतभा, गोष्टी, जनशवक्त ं ं ि सजन शवक्त का पोषण ि वनरतरता बनाए रखने के वलए ज्ञान के विवभन्न आयामों का प्रयोग करना। ृ ं छात्र कें वद्रत वशक्षा प्रणाली को प्रयोग म ें ल

ाने के समय सचना आिाररत पाठयचया थ ि वमत्रित वशक्षा पर ् ू जोर वदया जाए। ि ै ावनक दवष्टकोन, मानिाद, ज्ञानाजनथ ि सिार की भािना का विकास करें ।वशक्षा के ु प्रयासों को सार्थक बनाने के वलए स्िदशे ी परपराओ में जड़े अनभि ि नाचार पर पाठयचया थ वनमाथण की ् ु ु ं ं प्रणाली विकवसत की जाए। वशक्षावर्थयों को विवभन्न क्षेत्रों की सस्कवतयों का ज्ञान लोक गीत, नत्य शलै ी, ृ ृ ं िशे भषा, िाद यत्र िाद्य यत्र की जानकारी दी जानी चावहए। विद्यालय वशक्षा में अविगम स्तरों को गणित्ता ू ु ं ं से जोड़ने की जरूरत ह ै वजस में सविा िवचत बच्चे ,कामकाजी बच्चे, लड़वकया सभी शावमल ह,ैं ु ं ं इसवलए इनकी विकासात्मक जरूरतों को ध्यान में रखत े हए अविगम के न्यनतम अविगम स्तर का ु ू वनाथरण वकया जाए। इसके अलाि अविगम या सीखना ,गणित्ता दवष्टकोण, न्यनतम अविगम स्तर म ें ु ू सज्ञानात्मक, वक्रयात्मक ि सिगे ात्मक तीनों का जड़ाि रहगे ा। गणित्ता पण थ प्रारवभक वशक्षण के वलए ु ु ू ं ं ं गवतविवि आिाररत वशक्षण, सतत ि व्यापक मलयाकन, वनदानात्मक और उपचारात्मक वशक्षण, बाल ू ं कें वद्रत वशक्षा, कायाथत्मक शिो(एक्शन ररसचथ) सभी तत्िों को उपलधि करिाना आिश्यक ह।ै प्रारवभक ं वशक्षा में प्रार्वमक स्तर 5 िषथ तक पहली ि दसरी कक्षा के वलए मातभाषा ि क्षेत्रीय भाषा गवणत स्िास्थय ृ ू और उत्पादक जिीन कला के विषय म ें बच्चों को जानकारी दी जाए। बच्चों को कें द्र में रखते हए स्िास्थय ु सबवित गवतविवि, खले कद, सगीत, नाटक, वचत्रकला के कायों से बच्चों को जोड़ा जाए, मलयों के ू ू ं ं ं वनमाथण के वलए कहानी का प्रयोग वकया जाए वजससे बच्चों की वजज्ञासा, कलपना और के अनभि को ु समवे कत करन े का भाि उत्पन्न होगा। तीसरी से पाचिी कक्षा तक मातभाषा

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 4 resources! id: **149**

क्षेत्रीय भाषा गवणत पयाथिरण ृ ं अध्ययन स्िास्र् ि उतपादक जिीन कला का प्रयोग वजया जाए। उच्च प्रार्वमक स्तर 3 िषथ तक बच्चों को मातभाषा क्षेत्रीय भाष

ा, आिनक भारतीय भाषा और अग्रेजी वत्रभाषा फामथला के अतगतथ गवणत ृ ु ू ं ं विज्ञान और प्रौद्योवगकी समावजक विज्ञान कायथ वशक्षा ,कला वशक्षा ,स्िास्थय एि शारीररक वशक्षा का ं प्रयोग वकया जाए भाषा के स्तर पर आने ाली परेशावनयों को दखे ते हए पाठय पस्तकों के अध्यापन के ु ् ु सार् विस्तत ाचन पर जोर दने ा होगा। मागदथ शनथ और दखे रेख मॉवनटररग की जरूरत, भाषा वशक्षण म ें ृ ं मौवखक परीक्षा को मलयाकन प्रवक्रया का अवभन्न अग बनाना होगा ।भाषा वशक्षण के उद्देश्य स्ितत्र और ू ं ं ं प्रभिाशाली ढग से मत दने ा स्ितत्र वचतन के सार् ितथमान भतकाल की घटनाओ का तावकथ क विश्लेषण ू ं ं ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 55 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 करते हए बच्चे अपनी बात को सही ढग से कह सके । भाषा सपणथ वशक्षा प्रवक्रया में महत्िपणथ भवमका ु ू ू ू ं ं वनभाती ह ै कायथस्र्ल और समाज में मौवखक और वलवखत भाषा की योग्यता के विकास पर बल दने ा वत्रभाषा सत्र के अतगतथ राष्ट्रीय एकता अतर राज्य ि अतरराष्ट्रीय स्तर पर सचार ि सिाद के वलए बच्चों ू ं ं ं ं ं ं को मातभाषा पढ़ाने का प्रिाान वकया जाएगा। विद्यालयों में वशक्षण कायथ के वलए कम से कम 180 ृ वदिस कायथवदिस सवनवित करने का प्रयास

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **150**

होना चावहए वजसमें मलयाकन गवतविविया, विद्यालय ु ू ं ं कायथक्रम और उत्सि आवद भी सवम्मवलत होने चावहए। प्रत्येक

कक्षा का कालखड अिवि एक कालखड ं ं की अिवि लगभग 40 वमनट की होगी वजस के वहसाब से प्रवतवदन वशक्षण अिवि 6 घटे की होगी वजसमें ं से 5 घटे के िल अध्यापन के वलए वनाथररत होंग े और अन्य और वशष्ट्य अन्य गवतविवियों के वलए। ं भारतीय सविान के अनसार 14 िषथ तक की आय के सभी बच्चों को वनशलक ि अवनायथ वशक्षा दने े ु ु ु ं का प्रिाान वकया गया ह ै और यह विद्यालय व्यिस्र्ा के को अनभि बनाने के जरूरत पर बल दगे ा माता ु वपता की वशक्षा और समदाय की वशक्षा म ें भागीदारी । मक्त विद्यालय की िारणा वजसमें एक मक्त ु ु ु विद्यालय वदलली में स्र्ावपत ह ै इन का विस्तार करके उन्ह ें सिान-सपन्न बनाना तावक यह बड़ी सख्या म ें ं ं उपलधि वशक्षावर्थयों जोवक समाचार सामावजक-आवर्थक भौगोवलक या अन्य वकसी कारण से वशक्षा प्राप्त कर पाए ह ैं या उन्ह ें विद्यालय बीच में ही छोड़ना पड़ा हो िहा वफर से वशक्षा का प्रचार ि प्रसार वकया जा ं सके कें द्रीय स्तर ि राष्ट्रीय मक्त विद्यालय विश्वविद्यालय स्तर पर भी मक्त वशक्षा प्रणाली स्र्ावपत हो चकी ु ु ु ह,ै इस प्रणाली म ें कप्यटर, रेवडयो ,टेलीविजन के अन्य सचना प्रौद्योवगकी के सार् चनि के प्रवत

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 5 resources! id: **151**

छात्रों ू ू ु ं की परीक्षा योजना आवद उपयोग वकया जाता ह।ै वशक्षा छात्रों को राष्ट्र वनमाथण में योगदान दने े आत्मविश्वास व्यवक्त के रूप म ें एक अच्छे नागररक के रूप म ें स्ावपत करती ह।ै 4.8 राष्ट्रीय पाठ्यचया प्रारूप 2005 जसै ा वक आप जानते ह ैं पाठयचया थ प्रारूप 1975, 1988, 2000 के बाद ,सन 2004 की बैठकों म ें राष्ट्रीय

् पाठयचया थ को सशोवित करने का फै सला वलया गया । 1993 की वशक्षा वबना बोझ की रोशनी म ें ् ं विद्यालय वशक्षा के वलए पाठयचया थ प्रारभ

Plagiarism detected: **0.07%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **152**

राष्ट्रीय पाठयचया थ प्रारूप 2000 की समीक्षा पर जोर वदया ् ् ं गया। इन वनणयथ को ध्यान में रखते हए प्रोफे सर यशपाल की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय सचालन सवमवत ु ं और 21 राष्ट्रीय फोकस समहों का गठन वकया गया। इस सवमवत में उच्च वशक्षण सस्ान के प्रवतवनवि, ू ं राष्ट्रीय

शवै क्षक अनसिान प्रवशक्षण पररषद पररषद के सदस्य, वशक्षक, गरै सरकारी सगठन को शावमल ु ं ं वकया गया। वशक्षा को लोकतावत्रक बनाने ि स्कल जान े िाली पीढ़ी की उपवस्वत को ध्यान म ें रखते हए सविान म ें ु ू ं ं आरवभक वशक्षा को हर बच्चे का मौवलक अविकार बना वदया गया। इसका अर्थ ह ै हम सभी बच्चों को ं जावत, ि,थ वलग आवद चनोवतयों से हटकर उन्ह ें स्ासथ्य, पोषण और समिशे ी स्कल की वशक्षा प्रदान ु ू ं करें, उन्ह ें हम सशक्त बनाए। इसके वलए पाठयचया थ वनमाथण के पाच वनदशे क वसद्धातों का प्रस्ति रखा ् ं ं गया ह-ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 56 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 i. ज्ञान को स्कल के बाहर के जिीन से जोड़ना जोड़ना ू ii. पढ़ाई को रटत प्रवक्रया से मवक्त वदलाना ु ं iii. बच्चों के चहमखी विकास के वलए पाठयचया थ का वनमाथण वकस तरह से वकया जाए वक िह ु ् ु पाठयपस्तक कें वद्रत ना रह े ् ु iv. परीक्षा की प्रवक्रया को लचीला बनाना और कक्षा को गवतविवियों से जड़ने का प्रयास करना ु v. वशक्षा का विकास इस तरह से वकया जाए वजसमें राज्य व्यिस्ा की प्रजातावत्रक प्रवक्रया ि ं राष्ट्रीय वचताओ का समिशे हो ं ं राष्ट्रीय पाठयचया थ प्रारूप 2005 के अतगतथ वनम्नवलवखत वसफाररशों वसफाररशें की गई पाठयचया थ को ् ् ं बोझ कम करन े के वलए वशक्षा वबना बोझ के के सत्र पर आिाररत वकया गया । सविान म ें शावमल ू ं सामावजक न्याय, समता ि िमवथ नरपेक्षता पर कें द्रीय वकया गया। सभी बच्चों को गणित्ता पण थ वशक्षा दने े ु ू का प्रयास वकया जाए तावक ऐसे नागररक िगथ का वनमाथण वकया जा सके जो सिदे नशील हो और ं सिै ावनक मलयों के प्रवत िचनबद्ध रह।े विद्यावर्थयों

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **153**

के विकास ि अविगम में समिोशी ितिारण को ू ं तैयार करना, बच्चों की रचनात्मक ि सजन शवक्त का विकास

करना। ज्ञान वनमाथण म ें छात्रों की ृ सहभावगता ि सवक्रय वशक्षण आिश्यक रहगे ा। बच्चों की सहभावगता में विवभन्न वशक्षण विवियों जसै े अन्िषे ण, विश्लेषणात्मक विमशथ, अिलोकन आवद महत्िपण थ रहगें ।े ज्ञान को बच्चों की सोच और ू वजज्ञासा के अनरूप एक व्यापक ढाचा तैयार करना वजसमें बच्चों को सीमाओ म ें ना बिा जाए। ु ं ं ं स्कली वशक्षा म ें प्रारवभक िषथ काफी तीव्र िवद्ध से जड़ा होता ह ै इसवलए बच्चों की क्षमताओ, ृ ू ु ं ं अवभरुवचयों, दवष्टकोण पर कछ ध्यान रखते हए पाठयक्रम का वनमाथण विषय िस्त का चनिा करना ु ् ु ु ु चावहए ।भारतीय भाषाओ के सार्-सार् अग्रेजी को भी स्ान वमलना चावहए वत्रभाषा फामथले को ध्यान म ें ू ं ं रखते हए घरेल भाषा मातभाषा वजनमें आवदासी भाषाए अिरा सविान की आठिीं अनसची म ें ु ृ ू ु ू ं ं सवम्मवलत भाषाओ म ें वशक्षण के माध्यम म ें मान्यता दी जाए। प्रारभ प्रार्वमक वशक्षा से लेकर उच्च ं ं माध्यवमक वशक्षा तक वलखने बोलने सनने ि पढ़न े की क्षमताए उन सभी विषयों से सबवित अनशासन के ु ु ं ं ं महत्ि को समझते हए बच्चों में उनका पण थ विकास करना। गवणत वशक्षण में तावकथ क ढग से अमतथ िह ु ू ू ं मरत सकलपनाओ को व्यक्त करने की क्षमता, तावकथ क ढग से सोचने की क्षमता ि समस्या को सलझाने ू ु ं ं ं की क्षमता का विकास करना मलय लक्ष्य

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **154**

होना चावहए। इसी तरह इसी तरह विज्ञान म ें विषय िस्त बच्चों ू ु की उम्र ि ज्ञान सीमा के अनकल होनी चावहए तावक िह रचनात्मक तरीके से अपनी वजज्ञासाओ को शात ु ू ं ं कर पाए। विज्ञान वशक्षा इस तरह की होनी चावहए

जो वक बच्चों के पररिशे के अनरूप हो और उनमें ज्ञान ु ि कौशल का विकास कर सके सा ी पयाथिरण की वचताओ को लेकर जागरूकता का विषय स्कली ू ं ं वशक्षा म ें शावमल होना आिश्यक ह।ै सामावजक विज्ञान में राष्ट्रीय वचन्ह राष्ट्रीय जागरुकता से सबवित ं ं विषय मानि अविकार, मानिीय दवष्टकोण न्याय सिदे नशीलता जसै े मद्दों पर उन्ह ें स्ितत्र रूप से सोचने ु ं ं का अिसर प्रदान वकया जाए विषय की आिारणा को समझाते हए बच्चों को रटने के अलिा विवभन्न ु मद्दों पर स्िय सोचने ि अवभव्यक्त करने का अिसर प्रदान वकया जाए। इवतहास में भारत के सास्कवतक, ृ ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 57 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 राजनैवतक अतीत ि नागररकता ि नागररक शास्त्र को राजनीवत शास्त्र में तधदील कर वदया जाए, वजसमें नागररकता के विषय से जड़ी आिारणाओ को बच्चों के जिीन के सार् जोड़ने का प्रयास वकया जा सके । ु ं इसी तरह विवभन्न कलाओ जैसे- सगीत, नत्य, नाटक, लोक ि शास्त्रीय रूप िरोहर, वशलप आवद को भी ृ ं ं पाठयक्रम म ें शावमल वकया जाए ।

कला को स्कल के हर स्तर पर शावमल करने पर बल वदया जाएगा। ृ ू स्ािस्थय एि शारीररक वशक्षा बालकों के समग्र विकास के वलए बहत जरूरी ह ै इसवलए शारीररक वशक्षा ु ं स्ािस्थय एि शारीररक वशक्षा के माध्यम से स्कल में नामाकन उपवस्वत आवद की समस्याओ से वनपटने ू ं ं ं का प्रयास वकया जाएगा। वशक्षण प्रवशक्षण कायथक्रम के अतगथत शावत के वलए वशक्षा को एक घटक के रुप ं ं में शावमल वकया जाए वजसमें स्कली वशक्षा ि सभी विषयों में शावत की मलय का ंिसिथन वकया जाए। ू ू ं ं बच्चों में उनके प्रदशनथ को सिारने के वलए योजना को लचीला बनाना, ढाचागत सिार, भौवतक सामग्री ु ु ं की उपलधिता पर ध्यान दने ा आिश्यक ह।ै ऐसी गवतविवियों का आयोजन वकया जाए वजसमें सभी बच्चे भाग ले सके और उनमें स्ि-अनशासज्ञान की प्रवक्रया- स्कल ि समदाय की साझदे ारी होनी आिश्यक ह।ै ु ू ू सार् ही, ससिानों के रूप में पस्तक पाठयपस्तक की ंिआरणा, गवतविवि, समस्या, अभ्यास सहायक ृ ु ु ं पस्तकें , वशक्षकों के वलए मागथदवशकथ ाए, अवभनि वचतन पर बल दने े िाली होनी चावहए। पठन पाठन के ु ं ं वलए प्रिानाध्यापकों ि वशक्षकों से अकादवमक योजना का विकास अच्छी तरह से वकया जाना चावहए। सिाकालीन वशक्षक वशक्षा म ें ज्ञान वनमाथण की प्रवक्रया अविगम के सदभथ- वशक्षक ि छात्र की सवक्रय ं भागीदारी के सैद्धावतक और व्यिहाररक दृवष्टकोण का आलोचनात्मक पररपेक्ष्य शावमल करना आिश्यक ं ह।ै परीक्षा प्रणाली लचीली हो, वजसमें लघ परीक्षाओ, प्रश्न पत्र के ितथमान प्रारूप पर विशषे ध्यान वदया ु ं जाए। विवभन्न व्यिसावयक वशक्षा ि प्रवशक्षण कें द्

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **155**

रों के माध्यम से गिा समदाय धलॉक स्तर से लेकर ु ं अनमडल, वजला, नगर, महानगर तक वकया जाए। वशक्षकों म ें वशक्षक वशक्षा के माध्यम स

े विवि ु ं आयाम ि विवियों के समझ विकवसत की जाए, तावक बच्चों की आिश्यकता ि रुवचयों के अनरूप ि े ु अपने विषय को सकता ह।ै कायथ कें वद्रत वशक्षा को वशक्षा का आिार मानते हए व्यिसावयक वशक्षा की ु ं पनरथचना का प्रयास वकया जाए, विवभन्न गरै सरकारी सस्ा, वशक्षक सगठन, विश्वविद्यालय विशेषज्ञ ु ं ं ,विश्वविद्यालय विशषे ज्ञ आवद , सहभावगता के सार् पाठयपस्तक, पाठयक्रम, वशक्षण अविगम प्रवक्रया ि ृ ृ ु ससिानों का विकास करके वशक्षण प्रवक्रया को सरल िह सहज ढग से बच्चों तक पहचान े का प्रयास ु ं ं ं वकया जाना चावहए। अभ्यास रश्न 1. मातभाषा की आिश्यकता ह ै- ृ a. शारीररक विकास b. मानवसक विकास c. सामावजक विकास d. उपरोक्त सभी 2. मातभाषा का वसद्धात ह ै- ृ ं a. वक्रयाशीलता उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 58 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 b. अभ्यास c. अनकरण ु d. उपरोक्त सभी 3. भारत के सविान की आठिीं अनसची में वकतनी भाषाओ को स्ीकवत वमली ह ै – ृ ु ू ं ं a. 18 b. 20 c. 24 d. 22 4. वहदी की कौन-कौन सी बोवलया ह ैं ं ं a. ंिअी b. भोजपरी ु c. रजरज d. उपयथक्त तीनों ु 5. राष्ट्रीय एकता म ें सहायक होती ह ै- a. अतराथष्ट्रीय भाषा ं b. मातभाषा ृ c. राष्ट्रभाषा d. उपरोक्त कोई भी नहीं 6. भारतीय सविान सभा ने राजभाषा

Plagiarism detected: **0.13%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **156**

के रूप म ें वहदी को कब स्ीकार वकया- ं ं a. 3 वसतबर 1949 b. 13 वसतबर 1950 ं ं c. 14 वसतबर 1949 d. 14 वसतबर 1950 ं ं a. राष्ट्रीय पाठयचया थ प्रारूप के वनमाथण म ें प्रमख भवमका वनभाई ह ै- ृ ु ू a. राष्ट्रीय शवै क्षक अनसिान और प्रवशक्षण पररषद ु ं b. राष्ट्रीय अध्यापक वशक्षा पररषद c. विश्वविद्यालय अनदान आयोग ु d. राष्ट्रीय मलयाकन एि प्रत्यायन पररषद ू ं ं 4.9 सारांश इस इकाई को पढ़ने के बाद आप यह जान चके ह,ैं वहदी भारत की सिमथ ान्य भाषा ह,ै यह राष्ट्र

को सगवठत ु ं ं करती ह,ै शासन व्यिस्ा, ि सावहत्य वशक्षा बोलने िालों की सख्या के अनसार भी यह दशे के बड़े ु ं भभाग म ें बोली और समझी जाती ह।ै भाषा वक सामान्यता वजतनी बढ़ती ह,ै उतनी ही लोगों की िवद्ध, उसे ृ ू जानने ि समझने िालों

Plagiarism detected: **0.08%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **157**

के रुप म ें हो जाती ह।ै इसके सार् ही पाठयचया थ से सबवित समस्याओ के ृ ं ं ं वनराकरण के वलए राष्ट्रीय शवै क्षक अनसिान और प्रवशक्षण पररषद द्वारा वकए गए प्रयासों के फल स्िरुप ु ं राष्ट्रीय पाठयचया थ प्रारूप 1975, 1988, 2000, 2005 के वनमाथण ि विद्यालय वशक्षा को गणित्तापण थ ृ ु ू बनाने ,राष्ट्रीय स

ंिि ावनक मलयों का वशक्षा म ें समिोश विषय सबिी समय सारणी, समय का वनिाथरण ि ू ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 59 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 विद्यालय समस्याओ का वनराकरण करने म,ें विद्यालय वशक्षा के भविष्य को सिारने के वलए बहत ही ु ु ं अमलय प्रयास वकए ह।ैं ू 4.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. उपरोक्त सभी 2. अनकरण ु 3. 22 4. उपयथक्त तीनों ु 5. 5.

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ id: **158**

राष्ट्रभाषा 6. 14 वसतबर 1949 ं 7. राष्ट्रीय शवै क्षक अनसिान और प्रवशक्षण पररषद ु ं 4.11 सदं भ थ ग्रंर् सची ू 1. आचायथ शमाथ, दि द्रें नार् (1999) राष्ट्रभाषा वहदी समस्याए और समिाान, लोकभारती प्रकाशन ं ं इलाहाबाद 2. वतिारी, भोलानार् (1999) भाषा विज्ञान,

वकताब महल 3. डॉक्टर अग्रिाल, विजय(2002) वहदी भाषा अतीत से आज तक, ाणी प्रकाशन नई वदललली ं 4. भाई योगद्रें जीत (2008) वहदी भाषा वशक्षण, अग्रिाल पवधलके शस आगरा ं ं 5. डॉक्टर पाडे, रामशकल(2008) वहदी वशक्षण, अग्रिाल पवधलके शस आगरा ं ं ं 6. डॉक्टर शमाथ, राजमवण (2004) वहदी भाषा इवतहास और स्िरूप, ाणी प्रकाशन नई वदललली ं 4.12

सहायक पाठ्य सामग्री 1. http://www.ncert.nic.in/rightside/links/pdf/framework/ncf_hindi_2005/ncf20 05.pdf 4.13 तनबिात्मक प्रश्न ं 1. भारतीय सविान म ें राजभाषा वहदी के सबि म ें वकन बातों का उललेख वकया गया ह?ै ं ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 60 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 2. राष्ट्रीय पाठयचयाथ प्रारूप 2005 के आलोक में विद्यालय वशक्षा ि पाठयक्रम सबिी सझिों का ् ् ु ं ं सझिों पर अपने विचा र वलख।ें ु 3. 10 िषीय विद्यालय के वलए पाठयचयाथ एक रूपरेखा 1975 िह प्रारवभक और माध्यवमक वशक्षा ् ं के वलए

Plagiarism detected: **0.02%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद... + 3 resources! id: **159**

राष्ट्रीय पाठयचयाथ की रूपरेखा 1988 का विश्लेषण कीवजए। ् 4. राष्ट्रीय पाठयचयाथ प्रारूप 2000 म ें राष्ट्रीय

शवै क्षक अनसिान और प्रवशक्षण पररषद द्वारा की गई ् ु ं मख्य सस्तवतयों विरण द।ें ु ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 61 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 ु इकाई 5 - हिंदी भाषा विक्षण के कछ अनछु ए पिंलू 5.1 भवमका ू 5.2 उद्दश्े य 5.3 वहदी सावहत्य की विाओ के वशक्षण की प्रयोजनमलकता ू ं ं 5.4 सचना के यग में वहदी का भविष्ट्य ू ु ं 5.5 तकनीकी आिाररत भाषा-वशक्षण सबिी ितथमान कायथक्रम ं ं 5.6 राष्ट्रीय परीक्षण सिा की दवष्ट में वहदी भाषा में परीक्षण एि मलयाकन ू ं ं ं 5.7 सचना एि तकनीकी के उपयोग से वहदी सावहत्य वशक्षण को जीत बनाना ू ं ं ं 5.8 साराश ं 5.9 सन्दभथ ग्र्र सची ू ं 5.1 भूतमका वहन्दी भाषा वशक्षण के अनेक पहल ह ैं । भावषक कौशल यानी सनना , बोलना , पढ़ना और वलखना ऐसी ू ु उपलवधियाँ ह ें , वजनसे वकसी व्यवक्त का परा जिीन प्रभावित होता ह ै । उसी तरह वहन्दी सावहत्य की ू विविि विाओ का अध्ययन भी एक वशक्षाार्री के जिीन को विवभन्न तरीकों से समद्ध करता ह ै । बदलते ृ ं दौर की चनौवतयों का सामना करने के वलए वहन्दी वशक्षण में अनेक नए पहल शावमल हए । सचना ु ु ू ू विस्फोट के दौर म ें बदलती वहन्दी , भाषा वशक्षण के तकनीकी पहल , राष्ट्रीय परीक्षण सिा के सरोकार , ू सचना एि तकनीक के इस्तेमाल से बदलता सावहत्य ससार अनेक नए पहल ह ैं , वजनसे वहन्दी वशक्षण ू ू ं ं ससार समद्ध हआ ह ै । ु ृ ं 5.2 उद्दश्े य वहन्दी भाषा वशक्षण के अनछए पहल पर आिाररत इस इकाई के अध्ययन के बाद आप अनेक पहलओ ु ू ु ं से पररवचत होंग े , वजनम ें कछ की पहचान वनम्न रूप से सम्भि ह ै – ु 1. आप यह समझ पाएगँ े वक वहन्दी सावहत्य की विवभन्न विाओ के अध्ययन-अध्यापन से वहन्दी ं की प्रयोजनमलकता की पररवि का विस्तार होता ह ै । ू 2. मौजदा दौर में विद्यार्री की योग्यता और उनकी उम्मीद ें बीते दौर से अलग ह ैं । सावहत्य का सबि ू ं ं अन्य समानिाथ अवभव्यवक्त

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **160**

माध्यमों से बना ह ै । वसनेमा , टेलीविजन , वर्येटर , इटरनेट आवद ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 62 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 अनेक माध्यमों से सावहत्य के दोस्ताना ररश्ते का विस्तार

हआ ह।ै ऐसे म ें सावहत्य वशक्षण के नए ु रूप उभरे ह ैं । 3. एक महत्त्िपण थ परक के रूप म ें वशक्षण की परम्परागत पद्धवत के सार् सचना तकनीक का उपयोग ू ू ू वशक्षण म ें रूपनातारण ला सकता ह ै । 4. सचना के यग म ें वहन्दी के नए

Plagiarism detected: **0.04%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद... + 4 resources! id: **161**

क्षेत्रों का जन्म हआ ह ै , वजनकी अनदखे ी सम्भि नहीं । ु ू ु 5. राष्ट्रीय परीक्षण सिा का गठन कर शक्षै वणक परीक्षण एि मलयाकन के क्षेत्र म

ें अनेक पद्धवतयों , ू ं ं सन्दभ थ सामवग्रयों और मानि ससिानों का विकास वकया जा रहा ह ै । ं 5.3 हहदी सातहत्य की तविाओं के तशक्षण की प्रयोजनमूलकता इस विषय पर बातचीत आगे बढाने से पहले यह जानना ज़रूरी ह ै वक हम प्रयोजनमलकता शधद पर ू विचार कर लें । प्रयोजन का तात्पयथ ह ै – कारण या उद्दश्े य । पराने ज़माने की अपेक्षा आज के समय की ु पररवस्त्वतयाँ वजतनी जवटल ह ैं , उतनी ही विविितामलक भी । ऐसे में अध्यापन के तौर तरीकों म ें भी ू अनेक तरह के बदलिों की अपेक्षा ह ै । उसी तरह उन आिारभत बातों की समझ भी ज़रूरी ह ै , जो ू विवभन्न विाओ के अध्यापन के दरवमयान बाराती जानी चावहए । कविता अध्ययन – अध्यापन के वलए ं यह ज़रूरी ह ै वक वबम्बों की समझ अध्यापन कौशल का वहस्सा हो । वबम्ब का अर्थ ह ै – शधद वनवमतथ वचत्र । वबम्ब बार – बार प्रयोग के बाद प्रतीक म ें रूपाततरत हो जाते ह ैं । विवभन्न सचार माध्यमों के इस ं ं दौर म ें वबम्बों की व्याख्या के सहज उदाहरण मौजद ह ैं । हर कवि के अपने वप्रय प्रतीक होते ह ैं , जसै े – ू तलसी के वलए चातक , कबीर के वलए सिा या हस , महादि ेी िमाथ के वलए आसँ , मवक्तबिो के वलए ु ु ू ु ं अन्िरा आवद । कविता की िशगत विवशष्टता लय को भी अध्यापन कौशल का वहस्सा बनाना ज़रूरी ह ै । ं आजकल छन्दमक्त कविताओ का दौर ह ै । प्राय: परानी कविताओ की तलना म ें इनके कमतर होने का ु ु ु ं ं वज़ह्र वकया जाता ह ै । जबवक ऐसा ह ै नहीं । ये कविताए ँ गेयता से भले दर ह ैं , पर अपनी समानिाथ ू अवभव्यवक्तयों के करीब । जसै े – नाटक के सिाद से आज की कविता का अपनापन बढ़ा ह ै । इसे और ं बेहतर ढग से समझ ें , ं `ऐसे कविता रवसक अध्यापकों की भी कमी नहीं , जो यह कहते नहीं अघाते वक दम तो परानी कविता (यानी छद , अलकार और तकात पदिाली की कविता) में ही था , नयी ु ु ं ं ं यानी आधवनक काल की छन्दमक्त कविता में िह बात नहीं वक िह काव्यरवसकों को ु ु प्रभावित कर सके । लेवकन ऐसी बात कहने िाले यह नज़रदाज़ कर जाते हैं वक कविता ं ज्ञान या कला के अन्य अनशासनों की तरह अपने समय के विवेक , आकाक्षा और ु ं तनिाों को प्रकट करती है । हाँ , उसकी आधारभत विशेषता कला मानदडों का वनिाह ू ं होता है । सच तो यह है वक प्राचीन या मध्यकालीन कविता और आधवनक कविता के ु पाठ की अलग-अलग कसौवटयाँ हैं । उन कसौवटयों और मानकों को समझे वबना न तो उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय

63 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 कविता का पाठ सम्भि है न ही अध्यापन ।' – 2013:214,सहाय वनरजन , सचना यग में ू ु ं वहन्दी वशक्षण एि परीक्षण समस्याए ाँ एि पररपेक्ष्य , राष्ट्रीय परीक्षण सिा मैसर । ू ं ं जावहर ह ै कविता की प्रयोजनमलकता के वलए इस आिारभत तत्त्ि की समझा ज़रूरी ह ै । ू ू अब सावहत्य की अन्य विाओ पर एक नज़र डालें । आिवनक यग की बौवद्धकता ने काल की ु ु ं मख्यचेतना के रूप म ें इवतित्तात्मकता और गद्यात्मकता को प्रवतवष्ठत वकया । अनेक नयी गद्यविाओ का ृ ु ं जन्म हआ - आत्मकर्ा , जिीनी , सस्मरण , यात्रा विरण , रेखावचत्र आवद । दरअसल स्ि ीनता ु ं आदोलन के उस दौर म ें अनेक नये सामावजक - सास्कवतक उभारों ने अवस्मताओ की तलाश और ृ ं ं ं स्ि ीकवत को भविष्ट्य का लक्ष्य बनाया । अनेक गद्यविाओ का आना इस यगीन सच्चाई का साक्ष्य ह ै वक ृ ु ं अवभव्यवक्त की दवनया अनतरूपा होती ह ै ।बहरूपा अवभव्यवक्त कौशलों का बनना और विकसना ु ं ु मानिीय समाज के अविकाविक जनतावन्त्रक लक्ष्य की ओर बढ़ना भी ह ै । यह प्रश्न उठना एकदम स्ि ाभाविक ह ै वक ि कौन से तत्त्ि ह ैं जो वकसी रचना को सावहवत्यक गणों से सपन्न ु ं कर दते े ह ैं ? या अवभव्यवक्त के विवि रूपों को सावहत्य ससार ने वकन रूपों में पहचाना ह ै ? एक बात यह ं भी वक यवद भाषा वशक्षण के नज़ररए से सावहत्य की दवनया में हम जाते ह ैं , तो हम ें क्या हावसल होता ह ै ? ु अन्य शधदों म ें अवभव्यवक्त कौशलों म ें कौन से नए आयाम जड़ते ह ैं ? दरअसलगद्य विाओ के वशक्षण ु ं की बात तबतक अिरी रहगे ी जबतक हम यह समझ नहीं बना पाए ँ वक गद्य विाओ के अध्यापन से हम ू ं क्या हावसल करते ह ैं । आप यह भली – भाँती जान चके ह ैं वक सावहत्य के दो रूप मख्यत: प्रचालन म ें ह ैं ु ु – गद्य और पद्य । गद्य म ें भाषा का जिीत ,वनखरा हआ और मानक रूप प्रकट होता ह ै । भाषा के शद्ध ु ु ं और पररवनवष्ठत रूप को सीखने के वलए गद्य सावहत्य के पाठों से विद्यावर्थयों को पररवचत कराना ज़रूरी ह ै । गद्य पठन म ें भावषक तत्त्िों का ज्ञान प्राप्त करन े – कराने का विशेष अिसर वमलता ह ै । भावषक तत्त्िों म ें भाषा के घटकों – ध्ि वन , रूप , पदबि , ि ाक्य आवद का समिाशे होता ह ै । इनके अवतररक्त शधद भडार , ं ं ि ाक्य सरचना , अनच्छेद रचना , महिारों – लोकोक्तोयों का वशक्षण भी गढ़ी वशक्षण का अवभन्न अग ह।ै ु ु ं ं गद्य पाठ विद्यावर्थयों को सनने , बोलने , पढ़ने तर्ा वलखने के अनेक अिसर प्रदान करते ह ैं । गद्य सावहत्य ु के अतगतथ कहानी , वनबन्ि , उपन्यास , जिीनी , आत्मकर्ा , सस्मरण, रेखावचत्र , यात्रा ि ातं आवद ृ ् ं ं ं विाए ँ आती ह ैं । प्रत्येक विा की अपनी – अपनी शलै ी होती ह ै । गद्य वशक्षण अविगम द्वारा विद्यावर्थयों को गद्य की अनेक विाओ और शवै लयों की जानकारी प्राप्त हो सकती ह।ै ं कछ प्रमख गद्य विाओ के अध्यापन के दौरान बरती जाने ि ाली सिाावनयों पर एक नज़र डालना ु ु ं मनावसब होगा। सबसे पहले कहानी वशक्षण। ु कहानी वशक्षण के विवि सन्दभ थ ह ैं । इसके माध्यम से भाषा वशक्षण तो होता ही ह ै , अन्य विषयों के वशक्षण म ें भी कशल वशक्षक कहानी माध्यम का सफलतापिकथ उपयोग करते ह ैं ।मशहर वशक्षाशास्त्री ू ु ू वगजभाई ने विद्यालयी वशक्षण म ें कहानी की उपयोवगता पर एक बेहद महत्त्ि पण थ पस्तक की रचना की – ु ू ु कर्ा कहानी का शास्त्र । उनके अनसार कहावनयों का बच्चों पर जबरदस्त प्रभि ा पड़ता ह ै । कर्ा पात्रों ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 64 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 और घटना क्रम से पररवचत होते हए एक एकात्म भि ा विकवसत होता ह ै ।इस एकात्म भि ा म ें माता-वपता ु और बालक , वशक्षक और विद्यार्ी एक दसरे से प्रगाढ़ पररचय म ें आते ह ैं , उनके बीच उम्र और ज्ञान का ू अतर वमट जाता ह ै और ि े एक दसरे के बन

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.nou.ac.in/Online Resourses/30-8/p… id: **162**

जाते ह ैं । इससे उनके बीच विशिास , प्रेम और सहानभवत ु ू ं ू अपने आप प्रकट होती ह।ै इस मिर सबि से घर की , विद्यालय की या समाज की व्यिस्र्ा के साि ु ं ं अपने आप हल हो जाते ह

ैं । कहावनयाँ सनाने ि ाले माता-वपता तर्ा अध्यापकों का अनभि ह ै वक ु ु कहावनयाँ सनने म ें रुवच लेनि ाले रवसक विद्यार्ी व्यिस्र्ा सम्बन्िी सभी वनयमों को बहत आदर दते े ह।ैं ु ु कहानी कहना अपने आप म ें कौशल ह ै , वजसम ें प्रिीण होना वशक्षक के वलए आिश्यक ह ै । अत:कहानी कहने या पढ़ाने से पहले कछ आिारभत बातों को जानना ज़रूरी ह ै – ु ू □ कहानी वशक्षण के वलए वशक्षक का स्ि यम भी कहानी म ें रुवच लेना और कहने म ें कशल होना ज़रूरी ृ ु ह ै तावक विद्यावर्थयों म ें भिानभवत एि रसानभवत की भिना को विकवसत कर सके ।कक्षा म ें कहानी ु ू ु ू ं पठन या ि ाचन के सार् सार् कहानी कहन पर बल वदया जाना ज़रूरी ह ै , क्योंवक कहने से कहानी म ें एक नीिनता आ जाती ह ै । कहानी को आद्यन्त क्रमबद्ध और प्रिाह के सार् कहा जाना चावहए । इससे कहानी की अतिस्थ त बची रहती ह ै । ु ं □ कहानी के माध्यम से नीवत या आदश थ की बात बताते समय काफी सतकथ ता बरतनी चावहए । कहानी समाप्त होते ही वशक्षक द्वारा यह पछना वक इस कहानी से हम ें क्या वशक्षा वमली ठीक नहीं। ू नाटक एक महत्त्ि पण थ गद्य वि ा तो ह ै ही , यह अध्यापन कला का भी एक ज़रूरी तत्त्ि ह ै । वशक्षाशास्त्री ू वगजभाई बिेका ने वशक्षण–काल म ें नाटय प्रयोग को महत्त्ि पण थ माना ह ै । उनके मतावबक़ ऐसी वशक्षा ु ु ू ु पद्धवत म ें बाल स्ि भिा और बाल रुवचयों को अविक से अविक स्र्ान वदया जाता ह ै । नाटक म ें सिाद होते ह ैं , हालाँवक सिाद अन्य विाओ म ें भी हो सकते ह ैं । पर ि हाँ इसकी अवनियथता ं ं ं नहीं होती। इसम ें अवभनेयता की अवनियथता रहती ह ै । इसीवलए वजस नाटक / एकाकी को रगमच पर ं ं ं अवभनीत नहीं वकया जा सकता , उसकी सफलता सवदग्ि ही होती ह ै । पराने ज़माने म ें नाटक को दखे ा ु ं सना जाता र्ा, इसवलए इसे दृश्य - श्रव्य वि ा के रूप म ें भी जाना जाता ह ै । हालाँवक आजकल इसका ु पठन भी वकया जाता ह ै । भरतमवन के अनसार, वकसी भी अिस्र्ा के अनकरण को नाटक कहते ह ैं । अत: ु ु ु छात्र-छात्राओ की अनकरण करने की स्ि ाभाविक प्रिवत्त को इससे पोषण वमलता ह ै । नाटक / एकाकी ृ ु ं ं एक रागात्मक रचना ह ै । इसमें मानिीय भिों का प्रदशनथ बहत प्रभिापण थ तरीके

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.prabhatkhabar.com/state/bihar/pat… id: **163**

से होता ह ै । नाटक पढ़न े ु ू या दखे ने से भिों का उद्रके बहत तीव्र होता ह

ै । ु आइए एक अत्यत लोकवप्रय गद्य विंा वनबि के अध्यापन के वसलवसले म ें भी कछ बातें करें । पहले यह ु ं ं समझ े वक वनबि कहते वकसे ह ैं ? भारतीय परपरा गद्य को कवियों की कसौटी कहती ह ै । आचायथ रामचन्द्र ं ं शक्ल का विचार ह ै यवद गद्य कवियों की कसौटी ह ै तो वनबि गद्य की कसौटी ह ै । इस विंा म ें गद्य का ु ं वनजी रूप वदखायी पड़ता ह ै । वनबि का क्षेत्र अत्यत व्यापक ह ै । इवतहास , परातत्त्ि , दशनथ , विज्ञान , ु ं ं आलोचना , जिीन - मीमासा वकसी भी विषय पर वनबि लेखन वकया जा सकता ह ै । प्रत्येक वनबि ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 65 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 लेखक की एक विवशष्ट शैली होती ह ै ।वहन्दी वनबि लेखन पविम के सपकथ म ें विशषे तौर पर विकवसत ं ं हआ। वनबि को पररभावषत करने के विविि प्रयास हए । गलाब राय ने अपनी बहचववचथत रचना

Quotes detected: **0.01%** id: **164**

‘ काव्य के ु ु ु ु ं रूप ’

म ें कहा ह ै - ‘ वनबि उस गद्य - रचना को कहते ह ैं वजसम ें एक सीवमत आकार के भीतर वकसी विषय ं का ि णनथ या प्रवतपादन एक विशषे वनजीपन , स्ि च्छदता , सौष्ठि और सजिीता त ा आिश्यक सगवत ं ं और सबद्धता के सार् वकया गया हो । तकरीबन सिा सौ ि षों के इवतहास म ें वनबि ने अनेक बेहतरीन ं ं रचनाकारों से अपने अवभव्यवक्त ससार का विस्तार वकया । ं ररपोताथज और रेखावचत्र आिनक गद्य की चवचथत विंाएँ ह ैं । इन विंाओ को पढ़ाते समय सबसे पहले ु ं यह बताने की ज़रूरत ह ै वक इन विंाओ का स्ि रूप क्या ह ै त ा अपनी वकन विशषे ताओ के कारण ये ं ं अन्य समरूप विंाओ से अलग ह ै । उदाहरण के वलए यह जानना ज़रूरी ह ै वक ररपोताथज ररपोटथ से कै से ं अलग ह ै ? या रेखावचत्र और सस्मरण में वकन वबन्दओ के आिार पर फकथ वकया जा सकता ह ै । रचना की ं ं ु बवनयादी विशेषता होती ह ै साद की ललक और कर्न भवगमा की वनजता , वलहाजा यह बताना भी ु ं ं ज़रूरी होता ह ै वक कै से कोई रचना उसी विंा की अन्य रचनाओ से अलग ह ै या उस रचनाकार की कर्न ं भवगमा की वनजी विवशष्टताएँ क्या ह ैं । अब साल यह ह ै वक रचना पाठ की भवमका कै से बने । ि सै े तो हर ू ं अध्यापक की भवमका वनमाथण की अलग - अलग प्रवक्रयाए ँ होतीं ह ैं लेवकन कछ सामान्य बातें ह ैं , ू ु वजनका उललेख वकया जा सकता ह ै । मसलन - वकसी वनजी या पररवचत सामावजक घटना से रचना के ररश्त े के सार् पाठ की पिपथ ीवठका तैयार की जा सकती ह ै । उसी तरह वकसी अन्य विंा में रवचत समान ू प्रसगों से भी बात की शरुआत की जा सकती ह ै । जब रचना से पररचय बन जाय तब उसमें वनवहत वकसी ु ं मावमकथ प्रसग का उललेख वकया जा सकता ह ै । ं उवललवखत प्रसगों के बाद का क्रम ह ै विंागत विवशष्टताओ का विश्लेषण । पहले हम ररपोताथज की बात ं ं करें । साल यह ह ै वक ररपोताथज क्या ह ै ? आइए इसे समझें । वकसी घटना को सिदे नशील सजिीता के ं सार्, इस तरह प्रस्तत वकया जाय वक ि ह अखबारी समाचार की वनजिी तटस्त्रता से आग े बढ़कर मनष्ट्य ु ु की समग्र वचताओ और उसके सौन्दयथबिो को प्रकट करे , तब उसे ररपोताथज कहते ह ैं । वहन्दी सावहत्य ं ं कोश , भाग - 2 के अनसार , ‘ ररपोताथज फ्रासीसी भाषा का शधद ह ै और अग्रेजी शधद ररपोटथ से इसका ु ं ं गहरा सबि ह ै । ररपोटथ वकसी घटना के य ार्तथय साध्य ि णथन को कहते ह ैं । ररपोटथ सामान्यत : समाचार ं ं पत्र के वलए वलखी जाती ह ै और उसमें सावहवत्यकता नहीं होती । ररपोटथ के कलात्मक और सावहवत्यक रूप को ‘ ररपोताथज ’ कहते ह ैं । ’ अक्सर ररपोताथज की चचा थ करते समय अखबारी समाचार से उसके अतर ं को स्पष्ट वकया जाता ह ै । ररपोटथ या रपट में जहाँ सचना सयोजन और तटस्ि अवभव्यवक्त का सकलन ू ं ं महत्त्ि पण थ ह ै , ि हीं ररपोताथज में सचना सयोजन से अविक समग्र मनष्ट्य की तलाश महत्त्ि पणथ ह ै और ू ू ु ू ं तटस्ि अवभव्यवक्त की जगह सिदे नशीलता का पट उसे आत्मीय पाठ की विशेषता प्रदान करता ह ै । ु ं जिीनी में वकसी सम्मावनत व्यवक्त की उन विशषे ताओ का उद्घाटन वकया जाता ह ै , वजनके चलत े ि ह एक ं मशहर शवख्सयत में रूपान्तररत होता ह ै । अब आइए इस विंा के बारे में ोड़ी और जानकारी हावसल ू करें । वहन्दी सावहत्य कोश भाग - 1 का ि णनथ इस सदभ थ म ें उललेखनीय हो सकता ह ै । उसके अनसार ,

Quotes detected: **0.05%** id: **165**

‘ ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 66 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 वकसी व्यवक्तविशेष के जिीन ि ात को जिीनी कहते ह ैं । जिीनी का अग्रेजी पयाथय ‘ लाइफ ’ अि ा ृ ं ं ‘बायोग्राफी ’

ह ै । वहन्दी में जिीनी को जिीन चररत अि ा जिीन - चररत्र भी कहा जाता ह ै । इनमें कोई मौवलक अतर नहीं जान पड़ता । जिीन चररत कालातर में आिनक और सवक्षप्त होकर जिीनी बन गया। ु ं ं ं

Quotes detected: **0%** id: **166**

‘रेखावचत्र ’

भी गद्य सावहत्य की आिनक विंा ह ै । यानी रेखावचत्र का जन्म और विकास कहावनयों , ु उपन्यासों के बाद हआ। प्राय: रेखावचत्र की बात करते हए लगभग समान गद्यविंा

Quotes detected: **0%** id: **167**

‘ सस्मरण ’

का भी ु ु ं नाम वलया जाता ह ै । वलहाजा यह ज़रूरी ह ै वक इन ंिवाओ की प्रकवत स्पष्ट करने के सार् ही इनके बीच ृ ं मौजद सक्ष्म अतरों पर भी एक नज़र डाली जाय ।

Quotes detected: **0%** id: **168**

‘ रेखावचत्र ’

को अग्रेजी के

Quotes detected: **0.01%** id: **169**

‘ स्के च ’

का पयाथय के रूप ू ू ं ं में ग्रहण वकया जाता ह ै । रेखाओ और रगों की बहलता को महत्त्ि न दके र यवद कोई वचत्रकार इनी - वगनी ु ं ं रेखाओ

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **170**

के माध्यम से एक सार्थक रूप गढ़ ले , तब उसे स्के च कहते ह ैं । उसी तरह रेखावचत्र लेखक कम ं से कम शधदों के माध्यम स े वकसी व्यवक्त , िस्त या दृष्ट्य का अकन कर दते ा ह ै । सस्मरण म ें

Quotes detected: **0%** id: **171**

‘ स्मवत ’

की ृ ु ं ं के न्द्रीय भवमका होती ह ै । यानी जहा ँ रेखावचत्र

Quotes detected: **0%** id: **172**

‘ दशे ’

को महत्त्ि दते ा ह ै , िहीं सस्मरण

Quotes detected: **0%** id: **173**

‘ स्मवत ’

को । ृ ू ं यह समझना भी ज़रूरी ह ै वक दोनों की विशेषताएँ एक - दसरे म ें नज़र आ सकतीं ह ैं । पर हम पार्थक्य के ू वलए यह दखे गें े वक रचना म ें के न्द्रीयता वकसे हावसल हई ह ै । अतर करते समय हमें यह भी ध्यान रखना ु ं चावहए वक रेखावचत्र वकसी ऐसे पात्र पर आिाररत होता ह ै , जो इवतहास प्रवसद्ध नहीं होता , यानी रेखावचत्र म ें वकसी पश , पक्षी या सिारण मनष्ट्य का िणनथ होता ह।ै जबवक सस्मरण वकसी प्रवसद्ध व्यवक्त ु ु ं या विषय पर आिाररत होता ह ै । उदाहरण के वलए महादि ी िमाथ के गौरा गाय या घीस पररचर पर वलखे ू रेखावचत्र और वनराला , सभद्रा कमारी चौहान पर वलखे सस्मरण को हम याद कर सकते ह ैं ।यह समझने ु ु ं का प्रयास करें वक सावहत्य की दवनया से गज़रते हए हम वकन कौशलों को अवजथत करते ह ैं । कौशल के दो ु ु ु पक्ष हो सकते ह ैं ।एक तो िह वजन्ह ें हम भाषाई कौशल कहते ह ैं , यानी – सनना , बोलना , पढ़ना और ु वलखना । दसरा िह वजनका सम्बन्ि हमारी अन्य िवत्तयों से जड़ता ह ै , इन्ह ें हम वफलहाल मनोसामावजक ृ ु ू सन्दभ थ कहगें े । इसे और बेहतर और स्पष्ट ढग से समझने का प्रयास करें असल म ें भाषा वशक्षण बहस्तरीय ु ं प्रवक्रया ह ै । सावहवत्यक सामग्री जब पाठयक्रमों का वहस्सा बनती ह ै तब वबना रेखावकत वकए ही विद्याार्री ् ं अपनी स्ियत्तता और स्ितत्रता , पररकलपना बनाने और अपररवचत शधदों के अर्थ का अनमान लगाने ु ं जसै े कौशलों का विकास कर लेते ह ैं । यवद हम विद्याार्री को ख़ास सावहवत्यक ससार और माहौल प्रदान ं करते ह ैं तो िह मनोसामावजक सन्दभ थ से अपने आपको जोड़ सकता ह ै ।िह सावहत्य के बहिवि प्रयोगों स े ु विचार प्रवक्रया को वनयवत्रत करना सीखता ह ै , तार्ा समाज म ें सकारात्मक रूप से योगदान करने की ं अपनी शवक्त और सम्मिाना को महसस करता ह ै । इस वसलवसले म ें कछ विद्वानों के कर्न पर एक नज़र ू ु डालना मनावसब होगा । सी.स्कॉट ने वलखा ह ै ,` सावहत्य राष्ट्र की सौन्दयथपरक , नैवतक और आध्यावत्मक ु मलयों तार्ा सामावजक व्यिस्र्ा के वनयमों यानी सस्कवत का आईना ह ै ।’ जब हम सावहत्य के द्वारा भाषा ृ ू ं सीखने की बात करते ह ैं , तब यह ध्यान भी रखना होता ह ै , इस प्रवक्रया म ें सस्कवतक सन्दभ थ के अतगतथ ृ ं ं ियै वक्तक विकास के मौके वमलने चावहए । इसवलए विद्यावर्थयों को समाज के सास्कवतक जिीन से पररचय ृ ं कराया जाना चावहए और उन्ह ें भागीदारी के अिसर वमलने चावहए। इसी सन्दभ थ पविमी विचाराक विडडोसन के कर्न कोभी उद्धत वकया जा सकता ह ै । उनके मतावबक़,`सावहत्य का इस्तेमाल के िल ् ु ृ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 67 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 भाषा व्यिहार या सास्कवतक विषयिस्त को समझने के वलए नहीं होना चावहए बवलक सिाद वनमाथण के ृ ु ं ं वलए भी होना चावहए ।’ यह कहा जा सकता ह ै वक सावहवत्यक सामग्री के विश्लेषण द्वारा िास्तविक जिीन की घटनाओ और अनभिों से जड़ी सामान्य सचनाओ को प्राप्त करना और समझना सम्मि ह ै । इससे ु ु ू ं ं ियै वक्तक और सामावजक विकास को महसस करन े म ें हम ें मदद वमलती ह ै । सार् ही अपने सिगे ात्मक ू ं लक्षणों के अनसार यह सास्कवतक और शवै क्षक दवष्ट से पाठकों को उन्नवत का अिसर प्रदान करती ह ै । ृ ु ं इससे मातभाषा के व्यिान दर होते ह ैं । विद्यावर्थयों म ें विश्लेषण करने समीक्षा करने का कौशल विकवसत ृ ू होता ह ै । आइए कछ और सन्दभों को भी समझने का प्रयास करें । अार्थत ार्ोड़ी चचाथ इस पर भी

वजनम ें सावहत्य ु और भाषा वशक्षण से हावसल होने िाले ि े आयाम शावमल ह ैं वजनकी तरफ वशक्षणशास्त्र इवगत करता ह ै । ं यानी सनना, बोलना ,पढ़ना और वलखना कौशलों के अवतररत ि े दक्षताए ँ वजनसे हमारा जिीन समद्ध ृ ु होता ह ै । असल म ें सावहत्य वशक्षण बहस्तरीय प्रवक्रया ह।ै कौशलात्मक विकास और सन्दभों से जड़े ु ु व्याकरण के घटकों का ज्ञान इसके प्रार्वमक उद्दश्े य ह ैं तो इसके सार् ही अनेक अन्य दक्षताए भी इसे ं सार्थक बनाती ह ैं । परम्परागत वशक्षाशास्त्र म ें इन उद्दश्े यों को ज्ञानात्मक, अवभित्यात्मक, सजनात्मक ृ ृ ,अलोचनात्मक आवद रूपों म ें ि गीकत वकया गया ह ै । इन कौशलों की जानकारी वशक्षक / वशवक्षका को ृ होना ज़रूरी ह ै तावक ि ह सावहत्य या भाषा की कक्षा को प्रभिी बना सके । आये इन्ह ें विस्तार से समझने का प्रयास करें । i. ज्ञानायमक कौल :- ज्ञानात्मक कौशलों म ें भाषा की परपरा , प्रकवत त ्रा उसके विवि ृ ं घटकों की जानकारी और भाषा विज्ञान

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **174**

के ज्ञान को शावमल वकया जा सकता ह ै । सावहत्य की विषयिस्त के सार् वजतना ज़रूरी ह ै , उतना ही ज़रूरी ह ै उससे सम्बवन्ित अन्य विषयों का ज्ञान। ु इवतहास , भगोल, गवणत , विज्ञान आवद विषयों के सार् विषय से सम्बवन्ित नीिन तर्थयों और ू प्रिवत्तयों का ज्ञान होन

ा इसवलए आिश्यक हो जाता ह ै तावक हम समय के सार् कदमताल वमला ृ सकें । ii. अहभवययायमक:- अवभित्यात्मक उद्दश्े यों की बात करें तो भाषा वशक्षण के माध्यम से वशक्षक ृ ृ विद्यावर्थयों के मन म ें रचनात्मक सावहत्य के प्रवत रुवच जगाने म ें अहम भवमका वनभा सकता ह ै । ् ू आम तौर पर अविकाश विद्या ी पाठयपस्तकों म ें सकवलत रचनाओ को पढ़कर ही सावहत्य ु ं ं ं जगत म ें प्रिशे करते ह।ैं कक्षा म ें कहावनयों , कविताओ और अन्य सावहवत्यक रचनाओ को सरस ं ं तरीके से पढ़ाकर भाषा वशक्षक विद्यावर्थयों को सहृदय पाठाक बना दते ा ह ै । ऐसे विद्या ी पाठयक्रम से इतर रचनात्मक सावहत्य को पढ़ने के वलए त ्रा सावहवत्यक गवतविवियों म ें भागीदारी के वलए भी बेताब रहते ह ैं । अपने मन की बातों अ ्राथत स्ि ीन चेतना की अवभव्यवक्त भी सावहत्य वशक्षण से अवजतथ होने िाले कौशलों म ें शावमल ह ै । iii. सजनायमक कौल :- सजनथ ात्मक कौशल भाषा वशक्षण का महत्त्ि पण थ आयाम ह ै । सावहवत्यक ृ ू अवभरुवच िाले विद्यावर्थयों के वलए वशक्षक / वशवक्षका का प्रोत्साहन खाद – पानी का काम करता ह ै । काव्यशास्त्रीय शधदिाली का व्यिहार करें तो व्यत्पवत्त और अभ्यास म ें इस प्रोत्साहन ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 68 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 की भवमका होती ह।ै बाल-सभा , वभवत्त-पवत्रका , विद्यालय–पवत्रका , सावहवत्यक प्रवतयोवगताओ ू ं से इस कौशल को बढ़ाि द े सकते ह ैं । iv. आलोचनायमक कौल :- पवठत विषयिस्त का विचे न – विश्लेषण , अन्य रचना से तलना ु ु करना , समीक्षा करना इसके विवि आयाम ह ैं । यह आलोचनात्मक दृवष्ट एक पाठक के रूप उसकी पसद को वनिाथरत करती ह ै । मसलन वकसी को कविता पढ़ना अच्छा लगता ह ै तो वकसी ं को कहानी रचना विशषे के कर्थय अि ्रा वशलप से प्रभावित होकर उसकी सराहना करना भी एक कौशल ही ह ै जो सावहत्य वशक्षण का वहस्सा ह ै । काव्यशास्त्रीय शधदिाली म ें इसे भिावयत्री प्रवतभा कहा गया ह ै । इसे सहृदय की ि आिारणा द्वारा भी स्पष्ट वकया गया ह ै । वजसम ें सावहवत्यक विके हो उन्ह ें ही सहृदय कहा जाता ा । दो अलग भाषाओ के बीच सम्ि ाद कायम करना भी ं सवहत्य अध्ययन का उललेखनीय उद्दश्े य ह ै । उसी तरह सास्कवतक सम्ि ाद और समन्ि य के वलए ृ ं भी अनिाद की बड़ी उपादये ता ह ै । इस वलहाज से अनिाद के कौशल को अवजतथ करना भी ु ु सावहत्य से अवजतथ होने िाले कौशल के एक महत्त्ि पण थ पक्ष ह ै । पाठयपस्तकों के रूप म ें शावमल ् ू ु सावहत्य की वकताबें विद्यावर्थयों की अच्छी वमत्र होती ह ैं । इनके

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ + 3 resources! id: **175**

माध्यम से विद्या ी भाषा के ससार से पररवचत होता ह ै । ि ह इनके माध्यम स

े उस कौशल को अवजतथ करता ह ै , वजसके बल ं पर ि ह विवभन्न विषयों पर अपने मतव्य वनवमतथ करता ह ै , विचारों को अवभव्यक्त करता ह ै । इस ं प्रवक्रया म ें विद्या ी तलना , समीक्षा , समके न की सामर्थयथ अवजतथ करता ह ै । प्रकारातर से इस ु ं कौशल को प्राप्त करने म ें भी सावहत्य वशक्षण की महती भवमका होती ह ै । ू 5.4 सचना के युग म हहदी का भतवष्त्य ू ें मौजदा दौर म ें सचना तत्र के सार् विश्वव्यापी बनने के वलए वकसी भाषा के वलए यह ज़रूरी ह ै वक ि ह नई ू ू ं प्रद्यौवगकी के सार् कदमताल वमलाकर चले । उसम ें बदलते दौर के मतावबक़ तकनीकी त ्रा पाररभावषक ु शधदों का वनमाथण हो । उसमें लचीलापन ऐसा हो , वक ि ह सरचनात्मक एि अ ्रों के दबिों को झेल ं ं सके । विश्व की बड़ी आबादी उसका प्रयोग कर सके । जो भाषा सचना के यग म ें इन कसौवटयों पर खरी ू ु उतरेगी उनका सिाथभौवमक प्रयोग होगा और उसके प्रयोगकताथओ की सख्या बढ़ेगी । सार् ही ऐसी ं ं भाषाओ का भविष्य भी उज्ज्ि ल होगा । ं वहदी भाषा म ें उवललवखत सभी गण विद्यमान ह ैं । अब वहदी सचना तत्र की भाषा बनकर विश्वभाषा के रूप ु ू ं ं ं म ें अपनी पहचान बना रही ह ै । तकनीकी रूप से वहन्दी के सरोकार विस्तत और तकथ सगत हो यह समय की ृ ं माँग ह ै । वहन्दी का मानकीकरण , आिवनकीकरण और कम्प्यटरीकरण का पक्ष तकथ सगत और विराट ु ू ं जनसमह के वलए स्ि ीकायथ हो , यह समय की ज़रूरत ह ै । इस वसलवसले म ें विवभन्न सस्र ाए ँ सवक्रय भी ह।ैं ू ं सचना यग म ें वहदी का जो ि वै श्वक रूप उभरा ह ै , उनके साक्ष्य पर यह कहा जा सकता ह ै वक दवनया की ू ु ं ु अविकाँश

Plagiarism detected: **0.04%** https://hi.wikipedia.org/wiki/वर्णमाला id: **176**

भाषाओ का सावहत्य अनवदत रूप म ें वहदी म ें उपलधि ह ै । 15 जनिरी 2001 को फ्लोररडा से ू ं ं इटरनेट पर हए आरम्भ हए शधदकोश `विकीप

ीवडया' ने भी िष थ 2003 से वहन्दी भाषा म ें समद्ध अध्ययन ु ु ृ ं सामग्री प्रस्तत वकया , इसम ें प्रविवष्टयों का दज थ होना एक सतत प्रवक्रया के रूप म ें जारी ह ै । वहदी भाषा म ें ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 69 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 उपलधि दृश्य – श्रव्य माध्यमों की अपार लोकवप्रयता और स्ीकवत को भी इस वसलवसले म ें याद वकया ृ जा सकता ह ै । फे सबक , गगल , टिटर आवद की वहदी दवनया बदलते दौर की पररचायक ह ै । अनेक ् ु ू ं ु विश्वविद्यालय स्काइप

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… id: **177**

के माध्यम से वहदी म ें शिो साक्षात्कार सम्पन्न करि रह े ह ैं । दरस् वशक्षा ं ू कायथक्रमों म ें भी प्रभिी रूप से दृश्य – श्रव्य माध्यमों क

ा उपयोग वकया जा रहा ह ै । 5.6 तकनीकी आितरत भाषा-तशक्षण संबिी वतमथ ान कायथक्रम ं लम्बे असे से भाषा वशक्षण म ें सम्परक अभ्यास या दरिती अध्ययन – सम्ाद के वलए तकनीकों के ू ू विवि प्रयोग वकए जा रह े ह ैं । इस वदशा म ें हो रह े कवतपय निाचारों पर वनगाह रखना मनावसब होगा । ु िषों तक अभ्यास आिाररत प्रार्वमक अभ्यास प्रोग्रामों का भाषा वशक्षण म ें प्रभत्ि रहा ह ै । शधदिाली ु

Plagiarism detected: **0.04%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… + 2 resources! id: **178**

और व्याकरण के अलग-अलग वबन्दओ पर आिाररत अनेक प्रोग्रामों की लोकवप्रयता लगातार कायम ं ु रही ह ै । विवभन्न सस्ाए अनरूपी प्रोग्राम (Simulation Programme) द्वारा व्याकरण क

े विवभन्न ु ं ं वबन्दओ पर आिाररत ऐस े निाचारों को बढ़िा द े रह े ह ैं , वजनम ें िास्तविक जिीन पररवस्वतयों के ं ु अभ्यास शावमल ह ैं । विश्वकोशों पर आिाररत कायथक्रमों से इच्छक छात्र/छत्राए विवि सचनाओ और ु ू ं ं व्याख्याओ को आसानी से प्राप्त कर रह े ह ैं । इससे भाषा वशक्षण के नए वक्षवतजों के आयाम सम्भि हो रह े ं ह ैं । अनेक कम्प्यटर खले आिाररत कायथक्रम भी इस वदशा म ें सवक्रय ह ैं । प्रोग्रामों की रचना , साँचा ू बनाना , प्रचवलत ढाचँ े म ें ढाले कम्पटर आिाररत भाषा वशक्षण अध्यापकों/ अध्यावपकाओ को प्रग्राम ू ं सरचना म ें विशाल सरचना में विशाल लचीलेपन को उपलधि कराते ह ैं । इसी तरह कम्पटर प्रोग्रामों के ू ं ं सार् – सार् लोकल नेटिकथ वक्रयाकलापों के माध्यम से कक्षाओ और प्रयोगशालाओ को आपस म ें ं ं जोड़ा जा सकता ह ै । इसी तरह सीडी द्वारा भडारण म ें अपि थ सहायता वमली । एक सीडी म ें हज़ारों वकताबें सग्रहीत करना सम्भि ू ं ं हआ । तकनीकी वशक्षण के सघन दौर की अभी शरुआत हई ह ै , इसके विकास की अनत सम्भिानाओ ु ु ु ं ं के द्वार अभी भी खले हए ह ैं । ु ु 5.7

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **179**

राष्ट्रीय परीक्षण सेवा की दस्ृ ष्टि म हहदी भाषा म परीक्षण एवं मूलयांकन ें ें राष्ट्रीय परीक्षण सिा भारत द्वारा भाषा और सावहत्य के क्षेत्र

म ें परीक्षण एि मलयाकन के वलए दाशवथ नक , ू ं ं सैद्धावतक और व्याहाररक आिारों को इवगत वकया गया ह ै । उतरोत्तर प्रयोग द्वारा इसकी गणित्ता बढाने ु ं ं के सतत प्रयास जारी ह ैं । इनमें शावमल कछ ंिआरणाए ह-ैं इकाई की ंिआरणा , मापन , समाकलन ु ं और मलयाकन त ा गणित्ता वनयत्रण की ंिआरणाए ँ आवद । राष्ट्रीय परीक्षण सिा इन सभी क्षेत्रों म ें ू ु ं ं सामग्री वनमाथण और योजना वनमाथण त ा उनके कायाथन्ियन की वदशा म ें सवक्रय ह ै । इसका उद्दश्े य भाषा और सावहत्य , विशेषकर वहन्दी के वशक्षण , परीक्षण और मलयाकन म ें सलग्न सभी पक्षों , उदाहरण के ू ं ं वलए – वशक्षक , अवभभिाक , छात्र/छात्राए , पाठयचयाथ / पाठयक्रम वनमाथता , शक्षै वणक प्रशासक , ् ् ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 70 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 परीक्षणकताथ,प्रश्नपत्र लेखक / लेवखका और पाठयपस्तकें तैयार करनिालों के बीच परीक्षण एि मलयाकन ् ु ू ं ं की अतिस्थ त , उसकी पद्धवतयों के प्रवत जागरूकता पैदा करना ह।ै इस वदशा म ें एनटीएस (National ु ं Testing Service) द्वारा विकवसत की गयी कवतपय वशक्षण एि परीक्षण सामवग्रयों की चचाथ की जा ं सकती ह ै –भाषा सामग्री , सावहत्य एि व्यवक्तत्ि के विवि पहल से सम्बवन्ित सामग्री , गौण एि उप ू ं ं अियों से यक्त सामान्य सन्दभ थ , सचार , परीक्षण एि मलयाकन के क्षेत्र की लहभग एक हज़ार ु ू ं ं ंिआरणाओ का शधदकोश , इन ंिआरणाओ की पररभाषा एि व्याख्या से सम्बवन्ित सन्दभ थ पस्तकों ु ं ं ं का वनमाथण । इसके अवतररक्त वहन्दी भाषा एि सावहत्य

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 6 resources! id: **180**

के क्षेत्र म ें उच्च माध्यवमक एि स्नातक स्तरों पर ं ं स्ानीय , क्षेत्रीय एि राष्ट्रीय मानदड स्ावपत करने की वदशा म ें रापसे (राष्ट्रीय

परीक्षण सिा) द्वारा वकए ं ं जा रह े विवि प्रयासों का भी उललेख वकया जा सकता ह ै । यद्यवप हम सैद्धावतक रूप से यह मानते ह ैं वक वशक्षण , अविगम और मलयाकन ये तीनों परस्पर आवश्रत ू ं ं कायथ ह ैं । सार् ही यह भी वक इनम ें से वकसी एक की भी अनपवस्वत बाक़ी दोनों पर प्रवतकल प्रभिा ु ू डालती ह ै । बिजद इसके हमारी व्यिस्ा आरवम्भक दो पक्षों यानी वशक्षण और अविगम पर वजतना ू ध्यान दते ी ह ै उतना ध्यान अवतम पक्ष यानी मलयाकन पर नहीं दते ी । जबवक यह सविथव दत तर्थय ह ै

वक ू ं ं मलयाकन वकसी भी शक्षै वणक कायथक्रम की गणित्ता को तय करने िाला एक आिारभत कारक ह ै । यही ू ु ू ं कारण ह ै वक वशक्षा व्यिस्◌ा के इस पक्ष को गम्भीर आलोचना का दश झले ना पड़ रहा ह ै । ं रापसे का यह मानना ह ं वक परीक्षण म ें मख्यत: सोलह पक्षों को आिार बनाकर योजनाए तयै ार करना एक ु ं आदश थ वस्त्रवत ह ै । ि े सोलह पक्ष ह ैं । मोटे तौर पर इन सोलहों पक्षों को तीन भागों के अतगतथ रखा जा ं सकता ह ै । पहले भाग को हम सज्ञानात्मक

Plagiarism detected: **0.05%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **181**

क्षेत्र (Cognitive Domin) कह सकते ह ैं , इसके अतगतथ छ: ं ं पक्ष ह ैं – 1. ज्ञान (Knowledge) 2. बिो (Comprehension) 3. अनप्रयोग (Application) ु 4. विश्लेषण (Anilysis) 5. सश्लेषण (Synthesis) ं 6. मलयाकन (Evalution) ू ं दसरे पक्ष भिात्मक क्षेत्र

(Affective Domain) म ें पाँच पक्ष शावमल ह ैं – ू 1. ग्रहणशील (Receiving) 2. अनवक्रयात्मक (Responding) ु 3. मलयन (Valuing) ू 4. सगठन (Organization) ं 5. चररत्र – वचत्रण या चररत्राकन (Characterization) ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 71 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इसी तरह तीसरे क्षेत्र (Psychomoter Domain) म ें भी पाच पक्ष शावमल ह ैं – ं 1. अनकरण (Imatation) ु 2. पररचालन (Manipulation) 3. पररशद्धता (Precision) ु 4. प्रयत्न समन्◌िय (Articulation) 5. सहजीकरण (Naturalization) रापसे इन सोलहों पक्ष को आिार बनाकर अपने परीक्षण और मलयाकन अवभयानों को आकार दते ा ह ै । ू ं 5.8 सचना एवं तकनीकी के उपयोग से हहदी सातहत्य तशक्षण को जीवंत ू बनाना सचना एि तकनीकी के उपयोग से वहदी सावहत्य वशक्षण को जित बनाने की विवभन्न प्रविवियों की ू ं ं ं समझ बनाने के वलए यह ज़रूरी ह ै वक उपयोगकताथ इन सन्दभों से पररवचत हों – वडवज़टल , ि बे ररसोसेज, वक्लकर , इ कटेंट , मलटीमीवडया आवद । आिश्यकतानसार इन सन्दभों को विस्तारित भी ु ं वकया जा सकता ह ै । इजीवनयररग , मवे डकल , विज्ञान , प्रबिन , अवभनय आवद विषयों के अध्ययन – अध्यापन म ें सचना ू ं ं ं तकनीक के इस्तेमाल के विवि सन्दभों की प्राय: चचाथ होती ह ै । समाज विज्ञान और सावहत्य म ें सचना ू तकनीक के इस्तेमाल की परम्परा अपेक्षाकत नयी ह ै । अब विवभन्न ि बे साईट सावहत्य वशक्षण में ृ इस्तेमाल वकए जा रह े ह ैं । इसी तरह लैंग्◌िजे लैब द्वारा भाषा वशक्षण को ज़्यादा समद्ध बनाने के प्रया वकए ृ जा रह े ह ैं । ई लवनांग द्वरा कविता , कहानी , नाटक , उपन्यास आवद वििाओ के अध्ययन – अध्यापन म ें ं उन विद्यावर्थयों तक पहच सगम बन गया ह ै , वजन क्षेत्रों में औपचाररक वशक्षा सस्◌ान सवक्रय नहीं ह ैं । ु ु ं ं विवभन्न वििाओ के श्रिण , नाटय रूपान्तरण को दृश्य – श्रव्य माध्यमों द्वारा प्रस्तत कर कारगर अध्ययन- ् ु ं अध्यापन की ज़मीन तैयार हो सकती ह ै । के न्द्रीय प्रद्योवगकी वशक्षा सस्◌ान , राष्ट्रीय मक्त विद्यालयी ु ं वशक्षा सस्◌ान , इग्न आवद इस वदशा म ें गम्भीर प्रयास कर रह े ह ैं । ू ं 5.9 साराशं इस इकाई के विस्तत अध्ययन के बाद आपने बखबी समझ / समझीं वक वहन्दी सावहत्य की विवभन्न ु ू वििाओ के अध्ययन-अध्यापन से वहन्दी की प्रयोजनमलकता की पररवि का विस्तार होता ह ै । आपने ू ं जाना वक मौजदा दौर म ें विद्या◌ी की योग्यता और उनकी उम्मीद ें बीते दौर से अलग ह ैं । सावहत्य का सबि ू ं ं अन्य समानिमाथ अवभव्यवक्त

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **182**

माध्यमों से बना ह ै । वसनेमा , टेलीविजन , वर्येटर , इटरनेट आवद अनेक ं माध्यमों से सावहत्य के दोस्ताना ररश्ते का विस्तार हआ ह।ै ऐसे म ें सावहत्य वशक्षण के नए रूप उभरे ह ैं ।एक ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 72 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 महत्त्◌िपण थ परक के रूप म ें वशक्षण की परम्परागत पद्धवत के सार् सचना तकनीक का उपयोग वशक्षण म ें ू ू ू रूपातरण ला सकता ह ै ।सचना के यग म ें वहन्दी के नए

Plagiarism detected: **0.04%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 4 resources! id: **183**

क्षेत्रों का जन्म हआ ह ै , वजनकी अनदखे ी सम्भि ु ू ु ं नहीं । राष्ट्रीय परीक्षण सिा का गठन कर शक्षै वणक परीक्षण एि मलयाकन के क्षेत्र म

ें अनेक पद्धवतयों , ू ं ं सन्दभ थ सामवग्रयों और मानि ससिानों का विकास वकया जा रहा ह ै । ं 5.10 सन्दभ थ ग्रंर् सची ू 1. भमडलीकरण विश्व के बीच भारत और भारतीय भाषाए;ँ इक्कीसिीं शताधदी , औपवनिवे शक ू ं मानवसकता और भाषा , सम्पादक – हश्बाथला शमाथ , अवतका प्रकाशन , ग़ावज़याबाद , 2011 ं 2. भाषा का साम्राज्यिाद – नगी ि ा र्थयागो , समकवलन्न तीसरी दवनया , जलाई 2012 ु ु ं ु 3. वहन्द स◌िराज – महात्मा गिी , सस्ता सावहत्य मडल , सस्करण 2005 ं ं ं 4. टीवचग वलटरेचर इन ओपन एड वडस्टेंस लवनांग इन आटथस एड ह्यवमवनटीज़ इन हायर एजके शन , ् ु ं ं ं ू ि लियम 6(2)नैटवसना ए , सेज पवधलके शन 2007 ू 5. प्रयोजनमलक वहदी - विनोद गोदरे, ि ाणी प्रकाशन , नयी वदलली 1991 ू ं 6.

Plagiarism detected: **0.09%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **184**

राष्ट्रीय पाठयचयाथ की रूपरेखा , राष्ट्रीय शवै क्षक अनसन्◌ान और प्रवशक्षण पररषद , नयी वदलली ् ु ् 2005 7. आकलन स्रोत पवस्तका , राष्ट्रीय शवै क्षक अनसन्◌ान और प्रवशक्षण पररषद , नयी वदलली 2009 ु ु ् 8. पाठयक्रम माध्यवमक और उच्च माध्यवमक कक्षाए , राष्ट्रीय शवै क्षक अनसन्◌ान और प्रवशक्षण ् ु ं पररषद , नयी वदलली 2006 ् 9. सचना यग में वहन्दी वशक्षण एि परीक्षण : समस्याए ँ एि पररप्रेक्ष्य , राष्ट्रीय

परीक्षण सिा , ू ु ं ं भारतीय भाषा सस्◌ान , मसै र 2013 ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 73 ु

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.apornvideo.com/video/189907/hot… id: **185**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 खण्ड 2 Block 2 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 74 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इकाई 1- हिंदी भाषा विक्षण की ववविभन्न ववविधया ाँ 1.1 प्रस्तिाना 1.2 उद्दश्े य 1.3 प्रत्यक्ष विवि 1.3.1 प्रत्यक्ष विवि की विशेषताए ं 1.3.2 प्रत्यक्ष विवि की सीमाए और न्यनताएँ ु ं 1.4 पारपररक विवि ं 1.4.1 पारपररक विवि की विशेषताएँ ं 1.4.2 पारपररक विवि की सीमाए ं ं 1.5 पाठयपस्तक विवि ् ु 1.5.1 पाठय-पस्तक विवि की सीमाएँ ् ु 1.6 सम्प्रेषणात्मक विवि 1.6.1 विवि की प्रमख विशेषताएँ ु 1.6.2 सम्प्रेषणात्मक विवि की सीमाए ं 1.7 आगमन और वनगमन विवि 1.7.1 आगमन-वनगमन विवि की सीमाएँ 1.8 श्रव्य-भावषक विवि 1.8.1 श्रव्यभावषक- विवि,सरचना विवि की विशेषताएँ ं 1.8.2 सरचना विवि या श्रव्य भाषा भावषक विवि की सीमाए ं ं 1.9 साराश ं 1.10 शधदिाली 1.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1.12 सन्दभथ ग्रन्र् सची ू 1.13 वनबिात्मक प्रश्न ं 1.1 प्रस्तावना वशक्षण अविगम प्रवक्रया को सवनवित वदशा प्रदान करने के वलए वशक्षण विवि की सहायता

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **186**

ली जाती ह ै । ु जिीन के अवत सामान्य व्यिहार क्षेत्र म ें भी वकसी कायथ को सव्यिवस्र्त रुप से सपन्न करने के वलए ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 75 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I

) CPS 4 वनवित कायथ प्रणाली अपनाई जाती ह ै । वशक्षण योजना म ें विविित क्रम से शवै क्षक प्रवक्रया के द्वारा वशक्षा ारी के व्यिहार म ें िवच्छत वनवदष्टथ ए,िविकासात्मक पररितथन लाने का प्रयास वकया जाता ह ै । वशक्षण ं ं विवि इसका प्रमख सिान ह ै अतः इसकी आिश्यकता स्ितः स्पष्ट ह ै वशक्षण विवि के द्वारा शवै क्षक ु प्रवक्रया को वनवदष्टथ मागदथ शनथ प्राप्त होता ह ै । शवै क्षक लक्ष्यों की प्रावप्त सभि ह ै और वशक्षण कायथ में ं सवनवितता होती ह ै इतना ही नहीं वशक्षण की प्रभाविितता भी वनवित विवि पर ही आिाररत ह ै । भाषा ु वशक्षण के वसद्धात त ा विवभन्न प्रवक्रयाए वशक्षण विवियों के सदभ थ में ही सार्थक ह।ै अपने आप को वकसी ं ं ं विशेष विवि का समर्थक ना मानने िाले अध्यापक प्रत्यक्ष अि ा अप्रत्यक्ष रुप से वकसी न वकसी विवि का अनसरण करते ह।ैं स्पष्ट ह ै वक वशक्षण प्रवक्रया म ें वशक्षण विवि का प्रयोग अवनियथ आिश्यकता ह ै । ु विवभन्न विषयों के वशक्षण की भावत भाषा के वशक्षण म ें भी विवियों की सहायता अपररहायथ हो ं जाती ह।ै भाषा वशक्षण मख्यतः कौशल कें वद्रत प्रवक्रया ह ै अतः वशक्षण विवियों का महत्िपण थ स्र्ान ह ै ु ू वशक्षण विविया एक ओर भाषा विश्लेषण के वसद्धातों से प्रभावि

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… id: **187**

त होती ह ैं दसरी ओर ि े वशक्षण की ं ं ू तकनीकों को भी प्रभावित करती ह ैं ।वशक्षण के क्षेत्र म

ें समानता की आिरणा प्रचवलत ह ै वक वशक्षण विविया ही वशक्षण एि अविगम की सफलता और असफलता का मख्य कारण ह ै । इसका एक कारण ु ं ं यह ह ै वक वशक्षण म ें पहले क्या वसखाया जाए और कै से वसखाया जाए इसका वनाथरण वशक्षण विवियों के आिार पर ही वकया जाता ह।ै वशक्षण विवियों की महत्ता इस तर्थय से भी स्पष्ट होती ह ै वक विवशष्ट प्रवशक्षण कें द्रों में इसके आिार पर सीवमत अवि म ें भाषा पर समवचत अविकार कराया जाता ह ै अतः ु एक विचारिारा यह ह ै वक वशक्षण प्रवक्रया म ें वशक्षण विविया बहत अविक महत्िपण थ ह ै । मातभाषा त ा ु ृ ू ं अन्य भाषा अविगम की प्रवक्रया म ें वभन्नता के कारण वशक्षण विवियों

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **188**

के प्रयोग म ें विवभन्नता का होना स्ाभाविक ह।ै अन्य भाषा के विवभन्न घटकों के वशक्षण म ें वकस विवि अि ा विवियों का प्रयोग अविक उपयोगी होगा, यह अध्यापक के सम्मख एक विचारणीय प्रश्न ह ै क्योंवक अन्य भाषा के वशक्षण में छात्र को ु पररवचत पररिशे के वलए अपररवचत ध्वनयों, शधदों के प्रयोग त ा िाक्य सरचनाओ का प्रयोग

वसखाना ं ं अवनियथ हो जाता ह ै । अतः इस बात पर ध्यान दने ा आिश्यक ह ै वक वकस विवि अि ा विवियों

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **189**

के माध्यम से छात्रों म ें भाषाई कशलता उत्पन्न की जाए और उह ें भाषा के प्रयोग

का अभ्यास कराया जाए ु ं अन्य भाषा के वशक्षण म ें विवभन्न विवियों का आविभाथि िस्ततः इन समस्याओ के समिाान के वलए ु ं वकए गए प्रयत्न ह।ै इस प्रकार भाषा वशक्षण एि सबवित वशक्षण विवि, भाषा अध्ययन, भाषा अविगम ं ं ं और सामावजक सदभ थ एि बाध्यताओ से प्रभावित परत समवन्ित रूप म ें विकवसत होती ह ै ।इन्हीं ु ं ं ं ं विविताओ के फलस्िरुप वशक्षण-विवियों म ें भी विविता दवष्टगत होती ह ै । नीन प्रयोगों और ं अनसिानों के फलस्िरुप अन्य भाषा वशक्षण की सभिानाओ म ें िवद्ध होती जा रही ह।ै इस इकाई म ें भाषा ृ ु ं ं ं वशक्षण की मख्य विविया बताई गई ह ैं अन्य विविया इन्हीं का आवशक प्रवतफलन अि ा रूपातरण ह।ै ु ं ं ं ं 1.2 उद्दश्े य इस इकाई का अध्ययन करने के पिात आप- उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 76 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1. वशक्षण प्रवक्रया म ें वशक्षण-विवि का महत्त्ि समझ पायेंग े । 2. प्रत्यक्ष प्रणाली के गण-दोष का विचे न कर पायेंग े । ु 3. पारपररक व्याकरण-अनिाद विवि की उपयोवगता का बिो विकवसत कर सकें ग े । ु ं 4. पारपररक विवि के लाभ और सीमाओ का िणनथ कर पायेंग े । ं ं 5. पाठय-पस्तक विवि की विशषे ता एि दोषों का अिबो विकवसत कर पायेंग े । ् ु ं 6. सम्प्रेषणात्मक विवि की विशेषता एि सीमाओ से पररवचत हो सकें ग े । ं ं 1.3 प्रत्यक्ष तवति

प्रत्यक्ष विवि का आविभाथि व्याकरण अनिाद विवि की प्रवतवक्रया में के रूप में हआ । 19 ंी शताधदी के ु ु अवतम चरण त◌ा 20 ंी शताधदी के पिाथि थ में भाषा िज्ञै ावनक प्रगवत के फलस्िरुप इस विवि का प्रचलन ू ं हआ । इसके अनसार अन्य भाषा का वशक्षण सार्थक सदभों में अन्य

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **190**

भाषा के प्रत्यक्ष सपकथ द्वारा ही होना ु ु ं ं चावहए । प्रत्यक्ष विवि के समर्थकों का आग्रह ह ै वक अन्य भाषा को प्रत्यक्ष रुप से उसी भाषा के द्वारा ही वसखाना चावहए। इस विवि का मख्य लक्ष्य ह ै वक मातभाषा का प्रयोग वकए वबना अनिाद की सहायता ृ ु ु वलए वबना अध्येय भाषा के माध्यम से ह

ी अध्येय भाषा को सीखाना उवचत ह ै । इसकी मल सकलपना यह ह ै वक मातभाषा- उपाजनथ की भावत अन्य भाषा अविगम भी पररभाषा के ृ ू ं ं प्रत्यक्ष सपकथ पर आिाररत होनी चावहए ।मातभाषा- उपाजनथ के क्रम म ें बालक सहज भाषाई पररिशे में ृ ं प्रत्यक्ष सपकथ द्वारा भाषा ही कशलता को विकवसत करता ह।ै अन्य भाषा का अविगम और वशक्षण में भी ु ं इसी प्रवक्रया का अनसरण होना चावहए। स्पष्ट ह ै वक व्याकरण –अनिाद- विवि की तलना म ें इस विवि की ु ु ु कछ अपनी विशषे ताए ह ैं । ु ं 1.3.1 रययक्ष हवहि की हविषताए ंi 1. अध्येय भाषा के वशक्षण म ें अध्येय भाषा का ही प्रयोग वकया जाता ह ै मातभाषा के अनिाद की ृ ु सहायता नहीं ली जाती प्रत्यक्ष विवि में शधदों त◌ा िाक्यों का अर्थ प्रत्यक्ष भाषाई सदभथ पर ं आिाररत होता ह ै ।अध्ये

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindivarnamala.in/teen-akshar-wale-shab… + 2 resources! id: **191**

य भाषा का श्रिण त◌ा उच्चारण द्वारा छात्र म ें अन्य भाषा की ही आदत विकवसत होती ह ै । 2. प्रत्यक्ष विवि की दसरी विशेषता यह ह ै वक यह व्याकरवणक वनयमों को कठस्र करने त◌ा ं ू अनिाद पर बल नहीं दते ी। अन्य भाषा को स

ीखने में व्याकरवणक वनयमों को रटने स े सहायता ु नहीं वमलती ।

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **192**

भाषा के प्रत्यक्ष सपकथ त◌ा व्यिहार से ही भाषा के प्रयोग की कशलता उत्पन्न ु ं होती ह ै प्रत्यक्ष विवि इस वदशा म ें सहायक ह।ै 3. इस विवि में अन्य भाषा के िास्तविक प्रयोग पर बल वदया जाता ह ै ।इस सदभ थ से पर्क शधदों ृ ं को रटन े पर बल नहीं वदया जाता ह।ै इस प्रकार छात्र सदभ थ के अनसार शधदों का प्रयोग करन

ा ु ं सीखते ह ैं और उनके अर्थ से पररवचत होते ह ैं ।शधदों के सदभथ में प्रयोग शधद भडार के विकास ं ं का एक महत्िपण थ सिान ह ै ।अन्य भाषा वशक्षण म ें शधद भडार का विशषे महत्ि ह।ै इस के ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 77 ु

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **193**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 माध्यम से छात्र शधदों का उवचत सदभथ म ें प्रयोग करते ह ैं इस

दृवष्ट से इस विवि की उपादये ता स्पष्ट ं ह।ै 4. इस विवि म ें प्रत्यक्ष िस्तओ, प्रवतरूपों ,वचत्रों और रेखा वचत्रों की सहायता से अर्थ की जानकारी ु ं कराई जाती ह ै लेवकन आवगक सके तों, मद्राओ त◌ा वक्रया- व्यापार का पररचय प्रदशनथ की यवक्त ु ु ं ं ं द्वारा वदया जाता ह।ै आिश्यकतानसार अवभनय त◌ा अनकरण की भी सहायता ली जाती ह।ै ु ु इस प्रकार अध्ये

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **194**

य भाषा के माध्यम से विचारों त◌ा भिा को ग्रहण कराया जाता ह ै । 5. चवक प्रत्यक्ष विवि सहज-स्िाभाविक त◌ा और कवत्रम पररिशे में भाषा क

ी वशक्षण की योजना ृ ू ं प्रस्तत करती ह ै अतः इसमें वदन-प्रवतवदन के जिीन में प्रयक्त भाषा एि िाक्य सरचना

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 5 resources! id: **195**

ओ के ु ु ं ं ं प्रयोग पर विशेष बल वदया जाता ह ै के िल व्याकरवणक वसद्धातों की प्रमावणकता से सबि ं ं ं िाक्य-साँचों का औपचाररक वशक्षण नहीं होता ।व्यिहार म ें आने िाले िाक्य -साँचों के प्रयोग का अभ्यास छात्रों को सरलता से हो जाता ह।ै इस प्रकार भाषा सीखने में उन्ह ें विशेष सविा ु होती ह ै ।इस क्रम म ें सीखी हई भाषा पस्तकीय भाषा नहीं होती बवलक विवभन्न प्रकार क

ी ु ु पररवस्र्वतयों से सबवित व्यिहाररक भाषा होती ह।ै इससे छात्रों म ें अन्

Plagiarism detected: **0.15%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 11 resources! id: **196**

य भाषा के सही त◌ा ं ं व्याकरवणक प्रयोग की कशलता विकवसत होती ह।ै ु 6. इस विवि की प्रमख विशषे ता यह ह ै वक इसमें अन्य भाषा के शधदों, िाक्याशों,त◌ा िाक्यों के ु ं सहज प्रयोग का अभ्यास कराया जाता ह।ै ध्िवनयों का उच्चारण वसखाने के पिात विवभन्न िस्तओ और कायों के सदभ थ म ें शधदों त◌ा िाक्याशों का प्रयोग वसखाया जाता ह ै ।तत्पिात ु ं ं ं वकसी पररवस्र्वत विज्ञान विशेष पर आिाररत मौवखक िाताथलाप का अभ्यास कराया जाता ह।ै विवभन्न सदभों म ें भाषा का मौवखक रूप से व्यिहार करना वसखाने के वलए प्रत्यक्ष िस्तओ के ु ं ं वचत्र त◌ा वचत्र श्र का भी प्रयोग वकया जाता ह ै ।इस

प्रकार प्रारभ में अध्यापक द्वारा खलाओ ृ ं ं ं प्रयक्त िाक्यों का छात्र अनकरण करता ह ै आगे चलकर प्रत्यक्ष िस्तओ तर्ा प्रत्यक्ष सदभथ की ु ु ु ं ं सहायता से भाषा का प्रयोग करना सीख लेता ह।ै इस क्रम में मातभाषा का प्रयोग नहीं वकया ृ जाता छात्रों को िास्तविक परररशे में भी भाषा म ें ही सोचने और भाषा प्रयोग का अिसर वदया जाता ह।ै 7. इस विवि में व्याकरण का ज्ञान व्याकरवणक वनयमों को रटने के द्वारा नहीं कराया जाता बवलक सहज रुप में भाषाई प्रयोगों को क्रम से विकवसत वकया जाता ह ै । प्रारवभक िाताथलाप के आिार ं पर

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 6 resources! id: **197**

छात्रों को स्ि्य भाषा में वनवहत वनयमों को पहचानन े तर्ा उनके सामान्य करण के वलए प्रेररत ं वकया जाता ह।ै इस प्रकार छात्रों को व्याकरवणक वनयमों की जानकारी भाषा के िास्तविक प्रयोग के आिार पर प्राप्त होती ह।ै स्पष्ट ह ै इस विवि के द्वारा व्याकरवणक तर्थयों का मौवखक रूप से सहज एि स्िाभाविक प्रयोग वसखाया जाता ह

।ै प्रत्यक्ष उदाहरण तर्ा िस्त वनदशे की सहायता ु ं से व्याकरवणक वबन्दओ का वशक्षण सभि ह,ै जसै े वक्रया रूपों का प्रयोग वलग िचन के अनसार ु ं ं ं ु इस में परररितथन तर्ा अन्य व्याकरवणक तर्थयों के आिार पर भाषा प्रयोग के माध्यम से ध्यान कें वद्रत वकया जा सकता ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 78 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 8. प्रत्यक्ष विवि

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 12 resources! id: **198**

की सहायता से प्रारभ म ें मौवखक रूप से अन्य भाषा को सीखने के क्रम म ें छात्रों को ं िाचन का अभ्यास कराया जाता ह ै । 9. मौवखक अवभव्यवक्त म ें पररवचत सदभों के आिार पर ही िाचन का अभ्यास कराया जाता ह ै इस ं प्रकार शधदों के उच्चारण तर्ा िाताथलाप की प्रारवभक कशलता के आिार पर छात्रों म ें सहज रुप ु ं से िाचन की कशलता विकवसत की जाती ह ै । पररवचत सामग्री को वशक्षक

Plagiarism detected: **0.11%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **199**

छात्रों के सम्मख ु ु सस्ि्र िाचन के माध्यम से प्रस्तत करता ह ै और तदनसार अनकरण िाचन द्वारा सस्ि्र िाचन ु ु ु का अभ्यास कराया जाता ह ै ।नीिन शधदों,िाक्याशों का अर्थ प्रत्यक्ष िस्तओ, िस्त प्रवतरूपों ु ु ं ं तर्ा वचत्रों के आिार पर स्पष्ट वकया जाता ह ै ।इस प्रकार इस विवि म ें छात्र और अध्यापक दोनों ही सवक्रय रहते ह ैं इस विवि के द्वारा भाषा- पाठो को अविक िस्तवनस्थ बनाया जाता ह ै ।शधदों ु में वनवहत अर्ों की जानकार

ी प्रत्यक्ष िस्तओ के आिार पर दी जाती ह ै ।अमतथ एि सक्ष्म भिों ु ू ू ं ं का स्पष्टीकरण भी प्रत्यक्ष िस्तओ तर्ा समवचत सदभों के आिार पर वकया जाता

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **200**

ह।ै इस प्रकार ु ु ं ं भाषा की जानकारी के वलए प्रत्यक्ष सिानों और उपकरणों का ही अविक प्रयोग वकया जाता ह।ै इस के आिार पर छात्र अन्य भाषा की पयाथप्त जानकारी प्राप्त करने म ें समर्थ होता ह।ै 10. भाषा के प

्रत्यक्ष सपकथ द्वारा छात्र भाषा में अतवनथवहत सास्कवतक विशषे ताओ से अिगत हो ृ ं ं ं ं जाता ह।ै इस विवि म ें अनिाद की सहायता से सास्कवतक अर्ों की जानकारी नहीं प्राप्त होती ृ ु ं छात्र प्रत्यक्ष सदभथ के आिार पर भाषा के सास्कवतक पक्ष से पररवचत होते ह ैं । ृ ं ं 1.3.2 रययक्ष हवहि की सीमाए और न्यनताए ाँ ु ां उपयक्त विरण से स्पष्ट ह ै वक अन्य भाषा के वशक्षण में यह विवि व्याकरण अनिाद -विवि की अपेक्षा ु ु अविक सहायक वसद्ध हई ह ै ।इसका कारण यह ह ै वक छात्र मातभाषा के माध्यम से उन सभी िस्तओ तर्ा ु ृ ु ं सदभों से पररवचत होता ह ै ।वजनके वलए अन्य भाषा में नीिन शधदाली का प्रयोग वकया

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 5 resources! id: **201**

जाता ह ै इस ं प्रकार छात्र भाषा म ें प्रयक्त शधदों तर्ा िाक्य सरचनाओ से सहज पररवचत हो जाता ह।ै परत अनेक ु ु ं ं ं विशेषताओ के होते हए भी यह विवि अन्य भाषा वशक्षण के क्षेत्र

म ें अविक समय तक प्रचवलत ना रह ु ं सकी । वद्वतीय विश्व यद्ध के समय भाषा के बोलचाल के प्रयोग की कशलता िाचन की कशलता से ु ु ु अविक महत्िपण थ प्रभावित हई। इसके फलस्िरुप इस विवि की अनेक न्यनतायें सामने आई ।इनके ु ू ू कारण अन्य भाषा का वशक्षण अपेक्षाकत वपछड़ा रहता ह ै तर्ा उसमें तीव्र प्रगवत नहीं हो पाती।ये सीमाए ृ ं वनम्नवलवखत ह-ै 1. इस विवि की सबसे बड़ी कमी यह ह ै वक यह इस वमर्थया िारणा को पोवषत करती ह ै वक अन्य भाषा अविगम तर्ा मातभाषा अविगम मख्यतः समान प्रवक्रया ह ैं ।वजस प्रकार मातभाषा में छात्र ृ ृ ु िस्तओ तर्ा पररवस्र्वतयों के प्रत्यक्ष सपकथ द्वारा सहज रुप से भाषा पर अविकार पा लेता ह ै िसै े ु ं ं ही अन्य भाषा म ें भी भाषा का प्रत्यक्ष सपकथ भाषाई अविकार प्राप्त करने म ें सहायक होता ह।ै यह ं वमर्थया िारण ह ै ।चँवक मातभाषा अविगम तर्ा अन्य भाषा अविगम की प्रवक्रया म ें परररिे गत ृ ू वभन्नता ह ै अतः उपयक्त मान्यता के िल अशतः सत्य हो सकती ह।ै मातभाषा म ें अविगम की ृ ु ं अवनियथता के फलस्िरुप छात्र भाषा पर सहज अविकार पा लेता ह ै ।अन्य भाषा अविगम में इस उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 79 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 प्रकार की अवनियथता नहीं होती ।इसके अवतररक्त मातभाषा शशै िास्त्र म ें सीखी जाती ह ै और ृ अन्य भाषा

बालयिास्र्ा वकशोरिास्र्ा या यिास्र्ा में शशै ि्रास्र्ा में ।मातभाषा की ृ ु अवनियथता के फल स्िरुप उत्प्रेरण की मात्रा अविक तीव्

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindivarnamala.in/teen-akshar-wale-shab… + 2 resources! id: **202**

र होती ह ै परत अन्य भाषा म ें यह तीव्रता ु ं नहीं होती इसके अवतररक्त मातभाषा को छात्र

मातभाषा के पयाथिरण में रहकर सीखता ह ै । अन्य ृ ृ भाषा को सीखते समय अन्य भाषा का स्िाभाविक पयाथिरण नहीं हो पाता मख्यता मातभाषा का ृ ु ही पयाथिरण होता ह ै अतः अन्य भाषा को सीखने म ें कवठनाई होती ह ै इतना ही नहीं मातभाषा को ृ सीखते समय छात्र का मवष्टतष्टक

Quotes detected: **0%** id: **203**

'खाली स्लेट'

होता ह ै वजस प्रकार मातभाषा के साँचे ही अवकत ृ ं होते ह।ैं परत अन्य भाषा सीखत े समय

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **204**

छात्र के मवस्तष्टक म ें मातभाषा के साँचे ही ितथमान होते ह ैं ृ ु ं ।इस प्रकार मातभाषा की आदत अन्य भाषा को सीखने में व्याघात उत्पन्न करती ह।ै छात्र

अन्य ृ भाषा को मातभाषा की आदत के माध्यम से ग्रहण करने का प्रयत्न करता ह।ै स्पष्ट ह ै वक ृ मातभाषा और अन्य भाषा अविगम समरूपी प्रवक्रयाए नहीं ह ै ।इसके वलए समान विवि का ृ ं उपयोग नहीं हो सकता अतः के िल प्रत्यक्ष पररिशे विशेष रुप से सहायक नहीं होता । 2. छात्र को के िल अन्य भाषा

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **205**

के माध्यम से भाषा वसखान े में त ा मातभाषा के प्रयोग का पण थ रुप ृ ू से वनषि करने के कारण अविगम सबिी कवठनाइया उत्पन्न होती ह।ै प्रारभ म ें छात्र अन्य भाषा ं ं ं ं को समझने में असमर्थ होता ह।ै मातभाषा का वकवचत मात्र प्रयोग ना करने के कारण

के िल भाषा ृ ं ही कशलता

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **206**

के विकास में विलब का सचक ह ै बवलक इसके द्वारा भाषा अविगम में भी अविक ु ू ं समय और शवक्त व्यय होती ह ै । 3. ाताथलाप में कई प्रकार क

ी ाक्य सरचनाओ का प्रयोग होता ह ै इस से ाक्य सरचनाओ की ं ं ं ं आिवत्त को वनयवत्रत करना सभि नहीं होता ह ै । फलस्िरूप छात्रों के ाक्य सरचनाओ का ृ ं ं ं ं व्यिवस्त रुप से अभ्यास नहीं कराया जा सकता । वनयवत्रत ाक्य सरचना का व्यिवस्त ं ं अभ्यास ना होने के कारण उसने भाषा के प्रयोग की कशलता नहीं उत्पन्न होती ।भाषाई आदत ु को सदृण करने के वलए साँचा अभ्यास करना अत्यत आिश्यक ह।ै इस विवि में साचा अभ्यास ु ं ं करना सभि नहीं ह ै अतः उनमे भाषा ही आदत का विकास नहीं हो पाता ह ै । ं 4. इस विवि में

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **207**

छात्रों को स्िय वनयम- वनाथरण करना पड़ता ह ै ।सामान्य योग्यता रखने ाले छात्र ं वनयम वनाथरण में त ा सामान्यीकरण में असमर्थ रहते ह ैं के िल तीव्र बवद्ध के छात्र ही इस कायथ ु में सफल होते ह ैं ।अतः इस विवि के द्वारा अविकतर छात्रों क

ी भाषाई कशलता का विकास नहीं ु होता। इस दवष्ट से इस विवि को अविक उपयोगी नहीं माना जा सकता । 5. प्रत्यक्ष विवि अविक श्रमसाध्य ह।ै ावछत पररिशे और स्त के अभा म ें अध्यापक को अपनी ु ं सझबझ के आार पर अध्यापन के वलए उपयक्त सहायक सामग्री की वनवमतथ करनी पड़ती ह ै । ू ू ु स्त ,प्रवतरूपों, वचत्र त ा रेखा वचत्रों के वनमाथण म ें अध्यापक की दक्षता विशषे रुप से सहायक ु ह ै ।सभी अध्यापक ावछत कशलता म ें समान रुप से दक्ष नहीं होते अतः विवि

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **208**

के प्रयोग म ें ु ं कवठनाई आती ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 80 ु हिन्दी क

ा हिक्षणास्त्र (भाग I) CPS 4 6. इस विवि के द्वारा भाषा के चारों कौशलों का समवचत विकास नहीं होता ।कारण स्पष्ट ह ै ।श्रिण ु त ा उच्चारण पर अविक बल दने े से अन्य भाषाई कौशलों का विकास अिरुद्ध हो जाता ह ै ।इससे ाचन त ा लेखन के विकास में अपेक्षाकत अविक कवठनाई उत्पन्न होती ह ै । ृ 7. भाषा म ें वनवहत सास्कवतक तत्ों से छात्रों को अिगत कराने के वलए बहा मातभाषा की ु ृ ृ ं आिश्यकता होती ह ै मातभाषा का प्रयोग को वनयवत्रत कर दने े से भाषा अविक अविगम की ृ ं प्रगवत मद हो सकती ह।ैं ं अभ्यास रश्न 1. मातभाषा अविगम और अन्य भाषा अविगम म ें क्या मल अतर ह?ै ृ ू ं 2. प्रत्यक्ष विवि रटने के बजाए वकस पर बल दते ी ह ै ? 1.4 पारंपतरक तवति वशक्षण के क्षेत्र म ें यह विवि सबसे प्राचीन मानी जाती ह ै । इसका विशषे

प्रचलन उन्नीसिं सदी म ें ◌ा, इस विवि को व्याकरण-अनिाद विवि के नाम से भी जाना जाता ह,ै जसै ◌ा वक नाम स े स्पष्ट ह,ै यह विवि दो ु तत्ि पर विशेष बल दते ◌ी

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **209**

ह-ै व्याकरण और अनिाद । ु इस विवि का उद्दश्े य छात्रों म ें अन्य भाषा के व्याकरण की विशषे ताओ को याद करने की योग्यता का ं विकास करना ह ै वजससे ि◌ो अध्येय भाषा को व

्याकरण सम्मत वनयमों के अनसार शद्ध एि सही रूप से ु ु ं वलखने की कशलता विकवसत कर सके , इसके वलए अध्यापकों द्वारा बताये गये व्याकरवणक वबन्दओ ु ं ु य◌ा-शधद,शधद-भदे ,ि◌ात-रूप,काल,ि◌चन,कारक आवद को याद करने पर विशषे बल वदया जाता ह ै । ु भाषा सीखने के वलए यह भी आिश्यक समझा जाता ह ै वक छात्र अनिाद की कशलता विकवसत करें । ु ु इसका समर्थन इसवलए भी वकया जाता ह ै वक व्याकरवणक वनयमों को याद करन े के आिार पर अन्य भाषा को पढ़ने और पढ़कर समझने की योग्यता का विकास सभि ह ै । इसकी मलभत सकलपना यह ह ै वक भाषा ू ू ं ं को समझने के वलए उसके व्याकरवणक तर्थयों को याद कर लेना ही पयाथप्त ह ै । अतः भाषा के लेखन और ि◌ाचन दोनों म ें ही व्याकरवणक वनयमों से सहायता वमलती ह ै । अन्य भाषा के वशक्षण म ें इस विवि का प्रचलन इस आिार पर स्ि◌ीकत रहा वक अन्य

Plagiarism detected: **0.07%** https://meaninginhindi.net/hindi-alphabets/ + 2 resources! id: **210**

भाषा के सावहत्य का ृ अध्ययन त◌ा उसके मलयाकन की कशलता व्याकरण की जानकारी पर आिाररत ह ै । व्याकरण की ू ु ं जानकारी न के ि◌ल भाषा को समझने म ें सहायक ह ै बवलक उसके द्वारा सावहवत्यक अवभव्यवक्तयों को भी समझा जा सकता ह ै । इस विवि म ें व्याकरण क

े वनयमों को कठस्ि करने के सार्-सार् अन्य भाषा का ं मातभाषा म ें अनिाद कराया जाता ह,ै ि◌ारणा यह रही वक अनिाद के माध्यम से अन्य भाषा म ें अवभव्यक्त ृ ु ु विचारों को सरलता से समझा जा सकता ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 81 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1.4.1 पारपररक हवहि की हविषताए ाँ ां i. पारपररक विवि की मख्य विशषे ता यह ह ै वक इसके अतगथत व्याकरवणक वनयम से पाठ प्रारभ ु ं ं ं होताह।ै व्याकरण का वशक्षण एक स्ितत्र विवि के रूप म ें होता ह।ै इस प्रकार वशक्षण की प्रवक्रया ं में छात्रों का सपण थ ध्यान व्याकरवणक वसद्धातों पर कें वद्रत रहता ह ै । ू ं ं ii. व्याकरण के वनवित वसद्धातों को समझने के वलए उनके स्पष्टीकरण के वलए कछ उदाहरण वदए ु ं जाते ह।ैं उन उदाहरणों

Plagiarism detected: **0.1%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **211**

की सहायता से छात्रों का वनदशे वनयमों को समझने में सहायता वमलती ह।ै iii. उदाहरणों को प्रस्तत करने के पिात वनयमों के ध्रीकरण के वलए अभ्यास करिाया जाता ह।ै पाठ ु ु म ें प्रवतपावदत वनयमों को छात्र भली-भावत रट लेता ह ै और विवभन्न वलवखत अभ्यासों की ं सहायता से उन्ह ें अपने मवस्तष्ट्क म ें सदृढ़ करने का प्रयत्न करता ह ै । ु iv. व्याकरवणक वनयमों के ध्रीकरण के वलए छात्रों से अनिाद करिाया जाता ह

।ै पहले अन्य भाषा ु ु से मातभाषा म ें तत्पिात मातभाषा से अन्य भाषा में अनिाद के द्वारा यह दखे न े का प्रयत्न वकया ृ ृ ु जाता ह ै वक छात्र ने व्याकरवणक वनयमों पर पयाथप्त अविकार पा वलया ह ै अि◌ा नहीं । v. पाठय सामग्री को मातभाषा में अनिाद की पद्धवत द्वारा स्पष्ट वकया जाता ह ै ।इस प्रकार इस विवि ृ ृ ु में वशक्षण का माध्यम मख्यता अनिाद ह ै । ु ु vi. अनिाद कायथ म ें सहायता दने े के वलए अन्य भाषा म ें प्रयोग कर नीन शधदों के अर्थ की सची दी ु ू जाती ह ै । छात्रों से अपेक्षा की जाती ह ै वक ि◌ह एक शधद सवचयों का अच्छी तरह से याद कर ले ू यहा भी अन्य भाषा से मातभाषा में अनिाद का महत्ि वदया जाता ह।ै ृ ु ं उपयक्त कारणों से अन्य भाषा वशक्षण

Plagiarism detected: **0.04%** https://meaninginhindi.net/hindi-alphabets/ id: **212**

म ें व्याकरण अनिाद विवि का प्रबल समर्थन वकया जाता ◌ा ।यहा ु ु ं तक की 19िीं शताधदी के अत तक अन्य भाषा अविगम के व्याकरण क

े वनयमों को कठस्ि करने त◌ा ं ं वद्वभाषी कोष के अत्यविक प्रयोग का पयाथय बन गया ◌ा ।छात्रों को विवभन्न व्याकरवणक उपागो की ं पररभाषा रटाई जाती ◌ी त◌ा अन्य व्याकरवणक वनयमों पर पयाथप्त अविकार कराया जाता ◌ा। इतना ही नहीं बवलक सीखे गए व्याकरवणक वनयमों को ध्यान म ें रखते हए छात्रों से अनिाद कराया जाता ◌ा। ु ु अनिाद कायथ में सहायता के वलए भी वद्वभाषी कोष त◌ा शधद सची का प्रयोग वकया जाता ◌ा ।परत ु ू ु ं अन्य भाषा वशक्षण के उद्दश्े यों म ें स्ि◌ाभाविक पररितथन के फल स्ि◌रुप इस विवि का महत्ि घटने लगा अन्य भाषा वशक्षण का उद्दश्े य विचारों का आदान-प्रदान माना गया ह।ै इस दवष्ट से यह विवि अनपयक्त ु ु प्रमावणत हई ह ै क्योंवक इसमें भाषा के व्यिहाररक प्रयोग के वलए कोई प्र्रिान नहीं ◌ा। ि◌षो तक भाषा ु का अभ्यास करने पर भी छात्र ि◌ास्तविक पररवस्ितयों म ें उनका उपयोग करने म ें असमर्थ रहता ◌ा ।अन्य भाषा वशक्षण के क्षेत्र म ें व्याकरण अनिाद विवि की वनस्सारता स्पष्ट रुप से प्रमावणत हई । भाषा ु ु ि◌ज्ञै ावनकों त◌ा वशक्षाविदों का ध्यान इस विवि की न्यनताओ की ओर गया और इस विवि के कट ू ु ं आलोचना की गई। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 82 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1.4.2 पारपररक हवहि की सीमाए ां ां व्याकरण अनिाद विवि का यद्यवप विशेष प्रचलन रहा ह ै वकत कछ सीमाए ह ैं उन पर ध्यान दने ◌ा ु ु ु ं ं आिश्यक ह ै - 1. इस विवि म ें मौवखक

अवभव्यवक्त सबिी कशलता के विकास के वलए कोई स्◌ान नहीं ह◌ै ।अतः ◌ु ◌ं ◌ं भाषा के उच्चररत पक्ष पर कोई ध्यान नहीं वदया जाता फलस्◌िरूप

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 4 resources! id: **213**

उच्चारण के शद्धता, अनतान, ◌ु ◌ु विवत आवद के अभ्यास की कलपना भी नहीं की जाती ◌ी। इस प्रकार भाषण कौशल पणतथ या ◌ृ ◌ू उपेवक्षत रहता ह◌ै । छात्र बोलकर ◌िाताथलाप के आवद के माध्यम से विचारों की अवभव्यवक्त म◌ें असमर्थ होते ह

◌ैं । 2. इस विवि में व्याकरण के वनयमों को कठस्◌् कराने पर विशषे बल वदया जाता ह◌ै ।वनयमों के ◌ं स्पष्टीकरण और दृढ़ीकरण के वलए वजन उदाहरणों को वजन अभ्यासों को वलया जाता ह◌ै ि◌े जीवित भाषा के प्रतीक नहीं होते। व्याकरण के वनयमों को हटाने और सीवमत अभ्यासों के आिार पर उनके दृढ़ीकरण के प्रयत्न से भाषाई कशलता का विकास नहीं होता । अन्य भाषा के ◌ु कौशल पर अविकार अन्य भाषा के सतत व्यिहार, भाषाई विविविता आवद के प्रयोग के द्वारा ही सभि ह◌ै । भाषा का वलवखत परपरागत मानक रूप सीवमत और एक पक्षीय होता ह◌ै । ◌ं ◌ं 3. भाषा वशक्षण त◌ा भाषा अविगम परस्पर सम्बद्ध प्रवक्रया ह।◌ै अतः भाषा वशक्षण की प्रवक्रया म◌ें भाषा अविगम के वसद्धातों का समिाशे आिश्यक ह◌ै ।बालक अपनी मातभाषा को उपावजतथ ◌ृ ◌ं करते समय व्याकरण के वनयमों को नहीं कठस्◌् करता बवलक जिीन के विविि व्यिहाररक ◌ं सदभों में भाषा सीखता ह।◌ै यह विवि व्याकरवणक वनयमों को हटाने पर बल दते ◌ी ह◌ै । ◌ं 4. इस विवि में शधद भडार को विकवसत करने के वलए शधद-सवचया याद करिाई जाती ह◌ै । शधद ◌ू ◌ं ◌ं -सवचयों को रटकर याद करना अत्यत कवठन कायथ ह◌ै । इसमें कछ तीव्र बवद्ध के छात्रों को ही ◌ू ◌ु ◌ु ◌ं सफलता प्राप्त होती ह◌ै । सामान्य छात्र इससे लाभावन्◌ित नहीं होते इसके तरीके शधद भडार का ◌ं विकास के ◌िल शधदों के रखने के आिार पर नहीं होता ।जिीन के व्यिहाररक सदभों म◌ें भाषा ◌ं

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 8 resources! id: **214**

प्रयोग से शधद भडार स्◌ितः विकवसत होता ह◌ै । ◌ं 5. इस विवि द्वारा कक्षा म◌ें अन्य भाषा का प्रयोग नहीं वसखाया जाता ह◌ै । छात्रों को मातभाषा के ◌ृ माध्यम से व्याकरवणक वनयमों की जानकारी दी जाती ह◌ै और आिश्यक सचनाओ वनदशे ◌ों में भी ◌ू ◌ं मातभाषा का प्रयोग वकया जाता ह।◌ै इससे छात्र को अन्य भाषा सनने और बोलने का अिसर ◌ृ ◌ु नहीं प्राप्त

होता ।कक्षा में सामान्य त◌ा चयनात्मक श्रिण की कशलता भी नहीं विकवसत होती ◌ु ◌ी। वशक्षण म◌ें मातभा

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **215**

षा का प्रयोग मातभाषा की आदतों को ही सदृढ़ करता ह◌ै ।इससे अन्य ◌ृ ◌ृ ◌ु भाषा के प्रयोग

की कशलता का विकास नहीं होता। स्पष्ट ह◌ै वक इस विवि से अन्य भाषा वशक्षण ◌ु का उद्दश्◌े य परा नहीं होता । ◌ू 6. पारपररक विवि अ◌िा व्याकरण अनिा

Plagiarism detected: **0.13%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **216**

द विवि म◌ें लेखन पर विशेष बल वदया जाता ह।◌ै ि◌ाचन ◌ु ◌ं का के ◌िल सामान्य अभ्यास कराया जाता ह।◌ै इस प्रकार छात्रों में पस्तकीय भाषा का हीं ◌ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 83 ◌ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 त◌ाकवर्त अभ्यास कराया जाता ह।◌ै पस्तकों म◌ें उपलधि भाषा का सावहत्यक रूप भाषा की ◌ु व्यिहाररक अ◌िा बोलचाल के रूप से वभन्न होता ह◌ै यह सावहवत्यक भाषा भी सावहत्य के भली भावत पररवचत ◌िगथ विशेष की भाषा होती ह।◌ै इससे छात्र बोलचाल की भाषा से अपररवचत ◌ं रहता ह।◌ै इतना ही, भाषा का स

◌ावहत्यक रूप भाषा की सास्कवतक विशेषताओ का सीवमत ज्ञान ◌ृ ◌ं ◌ं प्रदान करता ह।◌ै इससे अन्य भाषा भाषी समाज की सास्कवतक विशेषताओ का सपण थ पररचय ◌ृ ◌ू ◌ं ◌ं ◌ं नहीं प्राप्त होता । 7. व्याकरण अनिाद विवि अ◌िा पारपररक विवि की दबथलता इस बात से भी प्रकट ह◌ै वक इसमें ◌ु ◌ं ◌ु अनिाद और व्याकरण को भाषाई समझ, भाषण, ि◌ाचन त◌ा लेखन का पयाथय माना जाता ह◌ै । ◌ु विवभन्न कौशलों की विशेषता पर छात्रों का ध्यान कें वद्रत नहीं वकया जाता ह◌ै ।श्रिण, ि◌ाचन, भाषण त◌ा लेखन भाषा सबिी विवशष्ट कशलताए ह।◌ैं इनको विकवसत करने की प्रवक्रया भी ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं विवशष्ट ह◌ै ।के ◌िल अनिाद त◌ा व्याकरवणक वनयमों की सहायता से इन कशलता

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.justice.gov/crs/media/1059271/dl?… id: **217**

ओ को ◌ु ◌ु ◌ं विकवसत करना असभि ह◌ै । ◌ं 8. इस विवि द्वारा भाषा वशक्षण में छात्र वनवष्क्रय श्रोता के रूप म

◌ें व्याकरवणक वनयमों की व्याख्या सनते रहते ह।◌ैं पाठ

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **218**

के विकास म◌ें उनका कोई सवक्रय योगदान नहीं होता । परपरागत वशक्षण ◌ु ◌ं प्रवक्रया के वनयमों को कक्षा में प्रस्तत वकया जाता ह◌ै ।उनके सबि म◌ें वकसी प्रकार क

◌ी वजज्ञासा ◌ु ◌ं ◌ं प्रदवशतथ करने का अिसर नहीं वदया

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **219**

जाता ह।ै छात्र का कायथ वनिाथररत वनयमों को कठस्र करने ं तक ही सीवमत होता ह।ै सवक्रय सहयोग के अभि म ें वशक्षण अविगम प्रवक्रया प्रभिाशाली नहीं होती और छात्रों क

ी भाषाई कशलता का विकास नहीं होता। स्पष्ट ह ै वक व्याकरण अनिद- ु ु विवि के द्वारा अन्य भाषा वशक्षण के उद्दश्े यों की पवत थ सभि नहीं होती त ा अन्य भाषा वशक्षण ू ं के क्षेत्र में इसकी अनपयक्तता स्पष्ट ह ै । ु ु अभ्यास रश्न 3. पारपररक विवि का दसरा नाम क्या ह ै और क्यों ? ं ू 4. पारपररक विवि की मल िआिरणा क्या ह ै ? ू ं 1.5 पाठ्यपुस्तक तवति पाठयपस्तक विवि का प्रयोग व्याकरण वशक्षण म ें बहि होता ह ै ,यह वनगमन प्रणाली से बहत कछ ु ु ् ु ु वमलता जलता ह ै । अतः इसम ें भी वनयमों पर बहत बल वदया जाता ह,ै क्योंवक सत्र प्रणाली सस्कत से ु ृ ु ू ं वहदी म ें आई ह ै त ा पाठय-पस्तक प्रणाली अग्रेजी से वहदी म ें आई ह ै । इस प्रणाली

Plagiarism detected: **0.03%** https://meaninginhindi.net/hindi-alphabets/ id: **220**

म ें व्याकरण वशक्षण ् ु ं ं ं का आिार एक पस्तक होती ह ै वजसम ें व्याकरण क

े विवभन्न पक्षों पर सामान्य और सवक्षप्त ि णनथ होता ह ै ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 84 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 त ा उन पक्षों को उदाहरण सवहत प्रस्तत वकया जाता ह ै । इन्हीं को आिार मानकर अध्यापक कक्षा म ें ु बालकों को व्याकरण ज्ञान कराता ह ै । 1.5.1 पाठय-पस्तक हवहि की सीमाए ँ ् ु यह एक अमनोिज्ञावनक विवि पर आिाररत प्रणाली ह ै जो व्याकरण के अध्यापन को नीरस,शष्ट्क और ु अनाकषकथ बनाती ह ै । इसम ें भी बालकों को रटने की प्रमखता दी जाती ह ै । के ि ल रटने मात्र से छात्र ु वनयमों का सही और शद्ध प्रयोग म ें लाना नहीं सीख पाते । ु 1.6 सम्प्रेषणात्मक तवति सम्प्रेषणात्मक भाषा वशक्षण विवि को सम्प्रेषणात्मक उपागम के रूप म ें जाना जाता ह,ै यह उपागम बातचीत (सम्प्रेषणात्मक अन्तवक्रथ या) को सिान और अवतम लक्ष्य दोनों मानती ह ै । आलोचनाओ के ं ं बिाजद अपनी सरचनात्मक प्रिवत्त के कारण यह विवि लोकवप्रय ह ै । हालावक 'कम्यवनके वटि भाषा ृ ू ू ं ं वशक्षण' एक स ितत्र विवि नहीं ि रन एक दवष्टकोण ह।ै ं हाल के ि षों म,ें कायथ-आिाररत भाषा अविगम (Task-based language learn lng -TBLL) या कायथ-आिाररत भाषा वशक्षण (Task-based language teach lng TBLT) या कायथ आिाररत अनदशे न (Task-based Instruct lon TB I) के रूप म ें पहचाने जाने ि ाली इस विवि के लोकवप्रयता में ु तेजी से ि वद्ध हई ह।ै विवि भाषा-अविगम म ें वशक्षा ारी की सम्प्रेषण क्षमता और भाषा व्यिहार में ु ृ अर्थवसवद्ध पर अविक बल दते ी ह ै । सप्रेषण व्यापार के सदभ थ म ें वनम्नवलवखत प्रयोजनों की चचाथ भाषा ं ं वशक्षण के कें द्र म ें रही-I. अतियै वक्तक (इटरपसथनल) पक्ष: इसके द्वारा छात्र दसरे व्यवक्त के सार् सबि ं ं ं ं ू स्ापन के वलए भाषा प्रयोग करता ह:ै II. सिान (इस्रमटें ल) पक्ष: इसके द्वारा छात्र वकसी ि स्त की प्रावप्त ु ं ु के वलए भाषा प्रयोग करता ह ै III. वनयामक(रेगलेटरी) कक्ष: इसके द्वारा छात्र अन्य व्यवक्तयों के व्यिहार ु को वनयवत्रत करता ह ै या उससे वनयवत्रत होता ह,ै IV. ियै वक्तक (पसथनल) पक्ष: इसके द्वारा छात्र अपने ं ं व्यवक्तगत अनभिों को व्यक्त करता ह ै V. अन ि षे णात्मक (ह्यारवस्टक) पक्ष: इसके द्वारा छात्र जिीन और ु ू जगत से सबवित ज्ञान को सीखता ह ै VI. कलपनात्मक(इमजे ीनेवटि) पक्ष: इसके द्वारा छात्र अपनी ं ं कलपना के सहारे नई नई दवनया की सवष्ट करता ह ै त ा VII. सके तार्थ (ररप्रेजटें ेशनल) पक्ष: इसके द्वारा ृ ं ु छात्र सचना को सप्रेवषत करता ह ै । वरजरवटश स्कल के अनेक विद्वानों को इस विवि के अनयायी के रूप में ू ू ु ं जाना जाता ह ै । इनम ें कछ प्रमख नाम ह ै – वक्रस्टोफर कैं डवलन, हने री विडोसन,डी.ए. विवलफन्स और ु ु कीर् जोनसन । यह ध्यान दने े की बात ह ै वक सम्प्रेषणात्मक भाषा वशक्षण की विवि ि स्ततः कोई एक विवि नहीं ह ै बवलक ु उन समस्त विवियों के समच्चय का समवे कत नाम ह ै जो ऊपर वदए भाषा वसद्धात के उद्दश्े य,अध्ययन- ु ं विश्लेषण की प्रिवत्त , भाषा वशक्षण के सन्दभ थ और उसकी प्रविवि से सचावलत ह ै । अन्य ा भाषा वशक्षण ृ ं के अन्य उपादानों पर विवभन्न ढग से बल दने े

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **221**

के कारण उनके भीतर भी इस विवि के उप-सम्प्रदाय की ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 85 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 बात की जा सकती ह ै । उदाहरणस् िरुप एलन की

Quotes detected: **0%** id: **222**

‘उपकरणात्मक’

विवि सरचना और प्रयोजन के सार्- ं सार् उसके उपकरण (इस्रमटें ल) पक्ष को भी अपने भीतर समटे ना चाहती ह,ै विल वकस्की अभीप्राय परक ं ं ु (नोशनल) दवष्ट ि स्तवस्रवत एि पात्रों की सकलपना के आिार पर सप्रेषण व्यापार को सिाने के पक्ष म ें ह,ै ु ं ं ं के डवलन की वशक्षा ारी प्रजनक विवि वशक्षा ारी को कें द्र म ें रखकर सप्रेषण व्यापार के वलए सरचना और ं ं उसके प्रकायथ को सिाने का समर्थक ह;ै और विडोशन की अतः वक्रयात्मक (इटरएक्शनल) विवि सप्रेषण ं ं ं म ें प्रयक्त अतियै वक्तक सबिों को कें द्र म ें रखकर सरचना और उसके प्रकार के अतसांबिों की दक्षता ु ं ं ं ं ं ं उत्पन्न करने के पक्ष म ें ह ै । 1.6.1 हवहि की रमख हविषताए ँ ु i. भाषा विज्ञान के सरचनात्मक वसद्धात और रूपातरणपरक प्रजनक वसद्धात म ें व्यवक्त की भावषक ं ं ं ं क्षमता पर बल वदया जाता रहा ह,ै और यह आग्रह वकया जाता रहा ह ै वक भाषा सीखने का तात्पयथ यह ह ै भावषक वनयमों और व्याकरवणक वनयमों म ें क्षमता प्राप्त करना । डेल हाइम्स,हवै लडे आवद विद्वानों ने इिर इस बात पर बल वदया वक भाषा-विज्ञान का दायरा

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindimatra.in/ka-se-shabd-hindi id: **223**

मात्र व्याकरवणक क्षमता तक सीवमत नहीं होता ,बवलक उवचत सदभों में उवचत व्याकरवणक वनयमों के प्रयोग ज्ञान तक फै ला ं होता ह ै । मात्र व

ुयाकरवणक रचना विवान सम्प्रेषण के उन पक्षों को अपन े भीतर नहीं समटे पाता वजनका सम्बन्ि सामावजक अर्थ, प्रवतपाद्य विषयिस्त की प्रकवत , िक्ता की मनःवस्र्वत आवद से ृ ु जड़ा होता ह ै । इसके वलए आिश्यक ह ै वक व्यवक्त म ें भावषक क्षमता के सार्-सार् बोलने िालों म ें ु भाषा-प्रयोग सम्बन्िी सम्प्रेषण क्षमता भी हो । उदाहरण के वलए लक्ष्य भाषा के रूप म ें वहदी िाच्य ं विवान पढ़ाते समय के िल वहदी के कताथ िाच्य,कमिथ ाच्य और भिााच्य सम्बन्िी व्याकरवणक ं व्यिस्ा का ज्ञान छात्रों को द े दने ा ही काफी नहीं, बवलक वकस सन्दभ थ म ें छात्र म ें बोलना है-

Quotes detected: **0.01%** id: **224**

'मनैं े गोली नहीं चलाई',

Quotes detected: **0.01%** id: **225**

'मझसे गोली नहीं चलाई'

अिरा

Quotes detected: **0.01%** id: **226**

'गोली नहीं चलाई गयी'

प्रयोग सम्बन्िी ु यह ज्ञान भी भाषा-विज्ञान के वलए अत्यत आिश्यक ह।ै ं ii. इस विवि के सभी विद्वानों ने भाषा के प्रयोजनपरक पक्ष,सम्प्रेषण म ें वनवहत अर्थव्यापार और िक्ता- श्रोता के अवतयै वक्तक सबिों पर बल दते े हए भाषा-वशक्षण के प्रभिी बनाने की वदशा म ें सार्थक ु ं ं ं प्रयास वकया तर्ा उन भाषाई कौशलों की दक्षता पर बल वदया जो कक्षा के बाहर भी छात्रों के वलए उपयोगी हो । iii. अगर इस सम्प्रेषणात्मक भाषा वशक्षण की तलना इसके पिथिती मौवखक िातालाप वशक्षण-विवि ु ू के सार् करें तो इसे भाषा वचतन, भाषा की विश्लेषण पद्धवत तर्ा भाषा वशक्षण के अवभविन्यास ं एि प्रणालीगत सिानों की दृवष्ट से एक अभतपि थ क्रावत के रूप म ें दखे ा जा सकता ह ै । ू ू ं ं iv. सप्रेषणात्मक भाषा वशक्षण के सभी उपसप्रदाय भाषा की सरचनात्मक व्यिस्ा का अवतक्रमण ं ं ं करते हए उसके प्रयोजन पक्ष पर बल दते े ह।ैं उनके अनसार प्रयोजन, सरचना को वनयवत्रत करता ह।ै ु ु ं ं इस िग थ के विद्वानों ने वनम्नवलवखत कछ प्रयोजनों का ध्यान दते े हए भाषा व्यिहार को ठोस बनाने ु ु का प्रयत्न वकया ह।ै भाषा वशक्षण की यह सप्रेषणपरक पद्धवत वशक्षार्ी म ें भाषा के प्रयोग जन्य ं दक्षता का विस्तार करती ह ै और दसरी तरफ प्रयोग के सहारे भाषा सीखने के लक्ष्य को साती ह ै । ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 86 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1.6.2 सम्प्रेषणायमक हवहि की सीमाए ं सम्प्रेषणात्मक विवि बदलते समय की माँग परी करने के वलए एक निीन वशक्षण विवि ह ै ,जो अतर- ू ं व्यैवक्तक सम्बन्ि कौशल को बढ़ाने,अविगम के प्रवत छात्रों की रूवच जाग्रत करने की दृवष्ट से पारपररक ं विवि से उत्तम ह ै , यह सम्पण थ भाषा को औपचाररक पारपररक विवि से तेजी से वसखाती ह ै वकन्त इस ू ु ं विवि की भी अपनी सीमाए ँ

Plagiarism detected: **0.02%** https://meaninginhindi.net/hindi-alphabets/ id: **227**

ह ैं । व्याकरण वशक्षण हते सम्प्रेषणात्मक विवि के उपयोग से एक सीमा तक व्याकरण क

ा व्यिवस्त वशक्षण ु प्रभावित

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 4 resources! id: **228**

होता ह ै और विद्यार्ी व्याकरण के वनयमों पर अविकार नहीं कर पाते । मनो-भाषाविज्ञान के कछ प्रयोगों से वनष्ट्कष थ प्राप्त हआ ह ै वक एक भाषा का अविगम वद्वतीय भाषा- ु ु अविगम को अपनी सरचनागत अतर के कारण नकारात्मक रूप से प्रभावित करता ह ै । सम्प्रेषणात्मक ं ं उपागम इस बिा का ध्यान नहीं रखता । अभ्यास रश्न 5. सम्प्रेष्टणात्मक विवि को प्रचवलत करने िाले विद्वानों के नाम बताए ? ं 6. यह विवि वसद्धात तलना म ें _____ पर बल दते ी ह ै । ु ं 1.7 आगमन और तनगमन तवति आगमन और वनगमन विवि व्याकरण वशक्षण की सबसे प्रचवलत प्राचीन विवि

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/barahkhadi id: **229**

मानी जाती ह ै तर्ा आज भी इसका प्रयोग होता ह,ै आगमन और वनगमन विवि को अलग-अलग और सयक्त रूप से प्रयोग वकया ु ं जाता ह ै । आगमन विवि म ें जहाँ पहले प्रयोग बताकर वफर वनयम की खोज अर्थात इस प्रणाली

Plagiarism detected: **0.14%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 9 resources! id: **230**

में व्याकरण के वनयमों को प्रत्यक्ष न बताकर उदाहरण द्वारा बालकों से उन वनयमों की खोज करायी जाती ह ै । व्याकरण जसै े विषय को आगमन प्रणाली के माध्यम से अत्यत रोचक बनाया जा सकता ह ै । ं ीहं वनगमन विवि म ें व्याकरण के वनयम-उपवनयमों को सत्रबद्ध कर बालकों से रटिाया जाता ह ै अर्थात ू इसम ें बालकों को पहले व्याकरण सम्बन्िी ज्ञान वदया जाता

ह ै तत्पिात उन्ह ें इन वनयमों का प्रयोग,अभ्यास कराया जाता ह ै । आगमन और वनगमन विवि को सार्-सार् प्रयोग करन े पर आगमन विवि द्वारा वनयमों की खोज करते ह ैं त ा वनगमन द्वारा उस वनयम का प्रयोग करते ह

ैं ,इसम ें वनयम-उपवनयम दके र ऐसे पयाथप्त प्रयोग वलए जाते ह ै वजसम ें अभीष्ट वनयम पररलवक्षत हो वफर उन वनयमों की उदाहरण द्वारा पवष्ट की जाती ह,ै जसै े सवि पढ़ाने के ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 87 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 वलए पहले उपयक्त विवि से वनयम की खोज होगी और उसके बाद अभ्यास के वलए बालकों को कछ ु ु शधद दके र सवि के भदे पहचानने को वदया जाएगा। ं 1.7.1 आगमन-हनगमन हवहि की सीमाए ाँ वनगमन विवि को पर्क उपयोग करने पर यह विवि अमनिैज्ञावनक हो जाती ह ै क्योंवक इसम ें बालकों को ृ वनयम और सत्रों को रटना पड़ता ह ै जो अविगम को अरुवचकर शष्टक और नीरस बनाता ह ै । आगमन- ू ु वनगमन विवि का सयक्त उपयोग इसे व्याकरण वशक्षण की महत्त्िपण थ विवि बनाती ह ै । इसम ें आगमन ु ू ं प्रणाली के सभी गण आ जाता ह ै वकन्त वनगमन विवि का कोई दोष नहीं आने पाता । ु ु 1.8 श्रव्य-भातषक तवति श्रव्य-भावषक विवि को सरचना विवि के नाम से भी जा

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **231**

ना जाता ह ै । वद्वतीय विश्वयद्ध के समय यद्ध में ु ु ं लड़ने िाले सैवनकों को अन्य भाषा के माध्यम स

े विचारों की अवभव्यवक्त वसखाने के प्रयत्न के रूप में सरचना-विवि का आविभाथि हआ । बीसिीं शताधदी के प्रारम्भ से लेकर 40 के दशक तक भाषा-विज्ञान ु ं के क्षेत्र म ें जो नीिन प्रगवत हई उसके फलस्िरूप यह विवि अवस्तत्ि म ें आई । प्रत्यक्ष विवि म ें िाताथलाप ु की प्रारवभक योग्यता और िाचन-कशलता भाषा के सवनवित प्रयोग की कशलता के विकास म ें असमर्थ ु ु ु ं रह े । इस विवि के द्वारा भाषाई सरचना के सवनवित अभ्यास पर बल वदया गया और इसे भाषा सीखने का ु ं मल आिार माना गया । इस विवि के समर्थक भाषा-शावस्त्रयों ने वसद्धात रूप में वनम्नवलवखत मान्यताओ ू ं ं को स्ीकार वकया- क) भाषा मौवखक अवभव्यवक्त

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **232**

ह ै ।भाषा का वलवखत रूप भाषा का िास्तविक पररचय नहीं ह ै । मौवखक भाषा ही पण थ भाषा ह ै अतः भाषाई कशलता के विकास

म ें इस तर्थय पर ध्यान के वन्द्रत ू ु करना आिश्यक ह।ै ख) भाषा आदतों का समह ह ै । अन्य आदतों की भावत यह भी अभ्यासजवनत ह ै । भाषा-वशक्षण म ें ू ं विविि अभ्यासों की सहायता से छात्र म ें भाषाई आदतें सदृढ़ की जाती ह ैं । वजससे िह सहज ु

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **233**

रूप से भाषा का प्रयोग कर सके । ग) भाषा वसखाने का अर्थ भाषा की विवभन्न व्यिस्ाओ पर अविकार प्रदान करना ह,ै भाषा क

े ं सम्बन्ि म ें जानकारी दने ा नहीं । भाषा वसखाना और भाषा के बारे में चचाथ करना दो वभन्न दृवष्टकोण ह ै । घ) भाषा का िास्तविक रूप उस भाषा-भाषी जनता की बोलचाल की भाषा म ें वनवहत ह ै ,सावहत्य की पस्तकों म ें नहीं । ु ङ) प्रत्येक भाषा दसरी भाषा से वभन्न होती ह ै । वकन्हीं दो भाषाओ ँ म ें पणतथ या समानता नहीं होती । ू ू मातभाषा और अन्य भाषा में तो यह वभन्नता अविक स्पष्ट होती ह ै । भाषा के वशक्षण म ें इन ृ वभन्नताओ पर ध्यान के वन्द्रत करना आिश्यक ह ै । ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 88 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1.8.1 श्रव्य-भाहषक हवहि,सरचना हवहि की हविषताए ाँ ां सरचना विवि म ें वसद्धान्तों को व्यिहार म ें पररणत करने के वलए कछ प्रमख तकनीकों को अपनाया गया । ु ु ं कछ पररितथन के सार् श्रिण और भाषण की प्रमखता को स्ीकार करते हए त ा आवशक रूप से प्रत्यक्ष ु ु ु ं विवि की मान्यताओ का समिाशे करते हए इस विवि का पररिद्धथन रूप श्रव्यभावषक विवि के नाम से - ु ं अवभवहत वकया गया। इस विवि की विशषे ताए ँ वनम्नावकत ह ैं – ं i. इस विवि म ें िाताथलाप के आिारभत साँचों के अनकरण त ा स्मरण पर विशषे बल वदया जाता ू ु ह ै ,अतः िाताथलाप म ें प्रयक्त िाक्य-साँचों का पयाथप्त अभ्यास कराया जाता ह ै वजससे छात्र ु िाताथलाप म ें उनका सहज प्रयोग कर सकें ।इस विवि म ें भाषा का उच्चररत रूप अविक महत्िपण थ माना जाता ह,ै अभ्यास और प्रयोग से छात्रों म ें प्रयोग की कशलता उत्पन्

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiparenting.firstcry.com/articles/k-aks… id: **234**

न होती ह ै । ू ु ii. भाषा का मौवखक अभ्यास कराने में पस्तकीय भाषा के शधदों के स्ान पर वदन-प्रवतवदन की ु बोलचाल म

ें प्रयक्त भाषा के शधदों

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 6 resources! id: **235**

का अभ्यास कराना अविक समीचीन माना जाता ह ै । इस से ु छात्रों के भाषा के व्यिहाररक रूपों के प्रयोग का अभ्यास हो जाता ह

ै iii. इस विवि म ें भाषाई कौशल के वशक्षण पर विशषे ध्यान वदया जाता ह ै । मातभाषा उपाजनथ के ृ स्ाभाविक कमथ के अनरूप इस विवि म ें भी श्रिण भाषण िाचन और लेखन के क्रम म ें भाषाई ु कौशलों को विकवसत वकया जाता ह।ै iv. विवभन्न सदभों म ें प्रयक्त िाक्य –साँचों एि शधदिाली की आिवत्त गणना के आिार पर इह ें ृ ु ं ं ं अनस्तररत वकया

Plagiarism detected: **0.11%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 8 resources! id: **236**

जाता ह।ै िाक्य-सरचनाओ का अभ्यास कराते समय इन अनस्तररत िाक्य- ु ु ं ं साँचों त◌ा शधदिाली का ही प्रयोग वसखाया जाता ह ै इस से अन्य भाषा को सीखने म ें ना के िल मनोज्ञै ावनकता का समिोश होता ह ै बवलक भाषा के प्रयोग में सहज क्रमबद्धता के फल स्िरुप भाषा ही अतद्दवथ ष्ट का भी विकास होता ह ै इस प्रकार भाषा अविगम िज्ञै ावनक और मनोज्ञावनक ं क्रम पर आाररत होती ह।ै v. िाक्य का परा पाठ का आरभ िाक्य सरचना से होता ह

ै शधदिाली त◌ा ध्िवनयों का अलग से ू ं ं अभ्यास नहीं कराया जाता बवलक िाक्य सरचनाओ के सदभथ में ही उनका अभ्यास करा

Plagiarism detected: **0.04%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… id: **237**

या जाता ं ं ं ह ै । अन्य भाषा को सीखने उसे भली भावत समझने और उसके व्यिहार करने का एकमात्र उपाय ं यह ह ै वक छात्रों से भाषा क

ो सनें, उस का अभ्यास करें । इस विवि का मल आाार साचा- ु ू ं अभ्यास ह ै साचा-अभ्यास जैसा वक नाम से ही स्पष्ट ह ै भाषाई साँचों के ध्रीकरण का एकमा

Plagiarism detected: **0.15%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **238**

त्र ु ं सिान ह।ै साँचा-अभ्यास द्वारा वजस सरचना का अभ्यास करिाया जाता ह ै उसकी उपयोवगता ं िाताथलाप विशषे म ें प्रयक्त सरचना की तलना में अविक होती ह ै ।साँचा-अभ्यास के द्वारा विवभन्न ु ु ं सरचनाओ पर मौवखक रूप से अविकार प्राप्त कराने के पिात छात्र का ध्यान व्यिवस्त रुप से ं ं वलवखत सामग्री पर कें वद्रत कराया जाता ह ै । यहा भी छात्रों का ध्यान भाषा के सही उच्चररत रूप ं पर कें वद्रत करना आिश्यक ह ै । vi. इस विवि के द्वारा िाचन के वशक्षण म ें सिप्रथ र्म िही सामग्री छात्र के सामने प्रस्तत की जाती ह ै ु वजसे उसने मौवखक रूप से सीख वलया ह

ै इस सामग्री के आाार पर उसका ध्यान वलवप वचह्न उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 89 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 और ध्िवनयों के परस्पर सबि पर कें वद्रत वकया जाता ह ै ।वलवप वचन्ह और ध्िवनयों के बीच ं ं वजतना ही सहज सबि स्ावपत होता ह ै िाचन कशलता उसी अनपात में विकवसत होती ह ै । ु ु ं ं vii. इस विवि म ें िाचन प्रारभ करने के बाद भी निीन सामग्री सदि मौवखक रूप से प्रस्तत की जाती ु ं ह ै कारण स्पष्ट ह ै इस विवि के अनसार भाषा का मौवखक अभ्यास अविक महत्िपणथ मा

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 5 resources! id: **239**

ना जाता ु ू ह ै ।भाषा की ध्िवन व्यिस्ा पर अविकार पाने के बाद ही विवभन्न कौशल म ें दक्षता प्राप्त की जाती ह ै ।अतः प्रत्येक निीन सामग्री का कक्षा में सस्िर िाचन कराया जाता ह ै ।सिथप्रर्म अध्यापक आदश थ िाचन प्रस्तत करता ह ै छात्र

उसका अनकरण करते ह ैं तत्पिात छात्र वलवप ु ु वचह्न प्रतीक पर ध्यान दते े हए सस्िर िाचन करता ह ै । ु viii. इस विवि म ें अन्य भाषाई कौशलों के विकास के पिात लेखन

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 7 resources! id: **240**

वसखाया जाता ह ै प्रारभ में ं अनकरण लेखन यानी अकन या और अनलेखन ही करिाया जाता ह ै वफर उन्ह ें लेखन अभ्यास ु ु ं के विवभन्न अभ्यासों की जानकारी दी जाती ह ै क्य

ोंवक छात्र विवभन्न प्रकार के िाक्य सरचनाओ ं ं से पररवचत होते ह ैं अतः उह ें वनयवत्रत रचना के विवि अभ्यास य◌ा िाक्य-सशिोन िाक्य- ं ं ं रचना अनच्छेद- रचना और स्ितत्र रचना

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 6 resources! id: **241**

का अभ्यास कराया जाता ह ै ।इस प्रकार लेखन ु ं कशलता विकवसत हो जाती ह।ै ु ix. इस विवि में अन्य भाषा की व

्याकरवणक तर्थयों की जानकारी वसद्धात के रूप में नहीं दी जाती ं बवलक िाक्य-सरचनाओ का मौवखक रूप से प्रयोग करते-करते छात्र उनम ें वनवहत व्याकरवणक ं ं तर्थयों को आत्मसात

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **242**

कर लेता ह।ै x. इस विवि की प्रमख विशेषता यह ह ै वक कक्षा के बाहर अध्यापक की प्रत्यक्ष सहायता के वबना ु भी छात्र भाषा के प्रयोग की कशलता अवजथत कर लेता ह ै अतः यह विवि छात्रों में भाषा के ु सदाभोवचत प्रयोग की कशलता विकवसत करता ह ै । ु ं xi. इस विवि की एक विवशष्टता यह भी ह ै यह भाषा के व्यिहार का पयाथप्त अिसर प्रदान करती ह

ै विवभन्न भाषाई कौशल के अविकार प्राप्त करने के पिात छात्र विवभन्न सदभों म ें उसका ं सफलता से प्रयोग करते ह।ैं यद्यवप यह विवि दो महत्िपण थ विवियों की सबवित विशेषता पर ू ं ं आाररत ह ै परत इसकी भी कछ सीमाए ह।ै अतः इनका प्रयोग करते समय इसकी सीमाओ की ु ु ं ं ं जानकारी आिश्यक हो जाती ह।ै 1.8.2 सरचना हवहि या श्रव्य भाषा भाहषक हवहि की सीमाए ं ं i. इस विवि पर सबसे बड़ा दोषारोपण वकया वकया जाता ह ै वक यह विवि यावत्रक ह ै । िाक्य साँचों ं का वनरतर अभ्यास अपने आप म ें नीरस और अरुवचकर कायथ ह,ै इसके अवतररक्त साचा विशषे ं ं

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **243**

का अभ्यास करते समय अध्यापक और छात्रों के बीच वशक्षण अविगम प्रवक्रया पणतथ या यावत्रक ू ं हो जाती ह ै छात्र क

े कौशल वजज्ञासा अ ि्रा आकवस्मक प्रश्नों त ा रुवच के वलए इसमें कोई स्र ान नहीं होता ह ै । ii. इस विवि के सफल प्रयोग के वलए अध्यापक में विशेष योग्यता,कायथ के प्रवत वनष्ठा और पररश्रम करने की मानवसक तत्परता आिश्यक ह।ै इसके अभि में इस विवि की सफलता सदहे ास्पद ह ै । ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 90 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 iii. इस विवि की सफलता मख्यता साचा वनमाथण पर आिाररत ह ै वशक्षण वबदओ का चयन उनका ु ं ं ं ु अनस्तरीकरण त ा समवचत अभ्यास

Plagiarism detected: **0.04%** https://aqicn.org/city/delhi/hi/ id: **244**

सामग्री के आिार पर ही ि ाक्य सरचना का अभ्यास ु ु ं कराया जा सकता ह ै ।इसके वनमाथण के वलए समवचत कशलता अपेवक्षत ह।ै उवचत सामग्री क

े ु ु अभि में विवि की सफलता सवदग्ि ह ैं सभी अध्यापक सामग्री वनमाथण की तकनीक से न तो ं पररवचत होते ह ैं ना अभ्यस्त । iv. इस विवि में भाषाई वनयमों का कोई उललेख नहीं होता साँचा अभ्यासों के आिार पर स्ि य ं छात्रों को ही अतभथत वनयमों को सवनवित करना पड़ता ह ै ।सामान्य योग्यता रखने ि ाला छात्र ू ु ं वनयमों के वनिाथरण म ें असमर्थ होता ह।ै इस कारण भ्रम की वनयमों के गलत प्रयोग की सभिाना ं अविक होती ह ै । v. यह भी समय-सापेक्ष

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **245**

ह ै ।छात्रों को श्रिण और भाषण का अभ्यास कराने के वलए पयाथप्त समय की अपेक्षा होती ह।ै छात्र कक्षा के सीवमत समय म ें अभ्यास सभि नहीं हो पाता। ं vi. इस विवि में छात्रों पर व्यवक्तगत ध्यान दने ा आिश्यक होता ह।ै परत छात्रों क

ी सख्या अविक ु ं ं होने के कारण व्यवक्तगत रुप से ध्यान दने ा सभि नहीं हो पाता इसे श्रिण- भाषण कशलता का ु ं समवचत विकास नहीं हो पाता ह।ै ु अभ्यास रश्न 7. श्रव्य-भावषक विवि की वशक्षकों से एक अपेक्षा बताए ? ं 1.9 साराशं इस इकाई म ें अपने भाषा वशक्षण के कछ महत्त्ि पण थ विवियों का अध्ययन वकया । भाषा वशक्षण के

Plagiarism detected: **0.02%** https://anp.wikipedia.org/wiki/वर्णमाला id: **246**

क्षेत्र – ु ू म ें प्रचवलत वशक्षण विवियों में पयाथप्त वभन्नता पायी जाती ह

ै। इस वभन्नता के अनेक कारण ह ै । भाषा- अविगम -विषयक विवभन्न विरणों के अनरूप त ा भाषा-विषयक वभन्न वसद्धान्तों के अनसार ,भाषा ु ु विवियो-णसम्बन्ि ी विवि विचारों के फलस्ि रूप वशक्षं में अतर होना स्ि ाभाविक ह ै । वशक्षण विवियों ं का समन्ि यन करते समय प्रभाविता की दृवष्ट से कछ प्रमख तर्थयों पर ध्यान दने ा आिश्यक ह ै जसै े ु ु शवै क्षक प्रवक्रया के विवि घटकों त ा अध्येताशवै क्षक उद्दश्े य,शवै क्षक सामग्री त ा मलयाङकन म ें , ृ ू वशक्षण समन्ि य,बालक म ें प्रवक्रया के उपरात ि ावछत विकासात्मक पररितथनभाषण के उपरात -श्रिण, ं ं ं ि ाचन एि लेखन के अनक्रम का अनसरण। ु ु ं साराशतः वकसी एक विवि के द्वारा अन्य भाषा के अध्येता म ें समग्र भाषाई कशलता का विकासभाषाई , ु ं सस्कवत का पररचय सभि नहीं ह।ै अतः पररवस्र्वत भ,थ आिसन्द,श्यकतास्तर त ा कशलता आवद को , ृ ु ं ं दृवष्ट म ें रखते हए विवभन्न विवियों की सिाथविक उपयक्त विशेषताओ का चयन वकया जा सकता ह ै । ु ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 91 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1.10 शब्दावली 1. अध्येय- वजसका अध्ययन वकया जाना हो, पाठय-सामग्री ् 2. व्याघात- बिा,अिरि 3. रयोजनपरकता- उपयोगपरकता, उपयोगिादी दृवष्टकोण 4. सम्प्रेषण- सचार, सन्दशे का आदान-प्रदान ं 5. अतव्यैहिक - व्यवक्तयों के बीच, इटरपसथनल ां ं 6. साँचा-अभ्यास- टेम्पलेट-प्रैवक्टस, ि ाक्य-सरचना के ढाँचे सम्बन्ि ी अभ्यास ं 7. अध्येता- अविगमकताथ, विद्या ी 1.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. मातभाषा में अविगम की अवनियथता के फलस्ि रुप छात्र भाषा पर सहज अविकार पा लेता ह ै ृ ।अन्य भाषा अविगम में

Plagiarism detected: **0.02%** https://meaninginhindi.net/hindi-alphabets/ id: **247**

इस प्रकार की अवनियथता नहीं होती । मातभाषा शशै ि ास्र्ा म ें सीखी ृ जाती ह

ै जबवक अन्य भाषा बालयिास्र्ा वकशोरिास्र्ा या यिास्र्ा म ें शशै ि ास्र्ा में ु 2. प्रत्यक्ष सपकथ और व्यिहार ं 3. पारपररक विवि का दसरा नाम व्याकरण-अनिाद विवि ह ै क्योंवक यह विवि व्याकरवणक वनयमों ु ं ू और अनिाद के माध्यम से भाषा अविगम पर बल दते ी ह ै । ु 4. इसकी मलभत सकलपना यह ह ै वक भाषा को समझने के वलए उसके व्याकरवणक तर्थयों को याद ू ू ं कर लेना ही पयाथप्त ह ै । 5. वरजरवटश स्कल के अनेक विद्वानों को इस विवि के अनयायी के रूप म ें जाना जाता ह ै– वक्रस्टोफर ू ु कैं डवलन, हने री विडोसन,डी.ए. विवलफन्स और कीर् जोनसन 6. यह विवि वसद्धात तलना म ें प्रयोजन और अर्थवसवद्ध पर बल दते ी ह ै । ु ं 7. श्रव्य-भावषक सामग्री वनमाथण के वलए समवचत कशलता, साचा वनमाथण की योग्यता, वशक्षण ु ु ं वबदओ का चयन उनका अनस्तरीकरण त ा समवचत अभ्यास सामग्री की तैयारी ु ु ं ं ु 1.11 सन्दभ थ ग्रन्र् सची ू 1. गप्त, मनोरमा ,भाषा- वशक्षण वसद्धात और प्रविवि ,आगरा,के न्द्रीय वहदी सस्र्ान (2010) ु ं ं ं 2. चौहान,रीता,वहदी वशक्षण ,आगरा,अग्रिाल पवधलके शन ,2016-17 ं 3. श्रीास्ति डॉ.रविन्द्रनार्, भाषा-वशक्षण, ,नई वदलली, ि ाणी प्रकाशन,2005 उत्तराखण्ड

मक्त विश्वविद्यालय 92 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1.12 तनबिात्मक प्रश्न ं 1. प्रत्यक्ष विवि के गण-दोष की विचे ना कीवजए । ु 2. व्याकरण-अनिाद विवि की विशषे ताए ँ बताए । ु ं 3. आगमन-वनगमन विवि वकस प्रकार व्याकरण वशक्षण की उत्तम विवि ह,ै अपने उदाहरण सवहत व्याख्या करें । 4. सम्प्रेषणात्मक विवि के मल सकलपनाओ का िणनथ करें । ू ं ं 5. श्रव्य-भावषक विवि का उद्भि कै से हआ एि इसकी मल मान्यताए ँ क्या ह ैं ? ु ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 93 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इकाई 2 - भाषा एवं साविंत्य का संबंध ति भाषा विक्षण में हिंदी साविंत्य की भूवमका 2.1 प्रस्तािना 2.2 उद्दश्े य 2.3 सावहत्य का अर्थ 2.4 भाषा एि सावहत्य का सबि ं ं ं 2.5 भाषा एि सावहत्य में अतर ं ं 2.6 भाषा वशक्षण में सावहत्य 2.6.1 सावहत्य के माध्यम से भाषा के वशक्षण की आिश्यकता 2.6.2 सावहत्य एि भाषाई कौशलों का वशक्षण ं 2.6.3 सावहवत्यक विाओ के अध्ययन-अध्यापन से भाषा ज्ञान में होनिाले लाभ ं 2.7 भाषा वशक्षण एि जनसचार ं ं 2.7.1 जनसचार के विविि रुप ं 2.7.2 जनसचार

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **248**

माध्यमों की भाषा ं 2.7.3 विद्याेर्ी की भाषा पर जनसचार माध्यमों की भाषा का प्रभाि ं 2.7.4 वहदी भाषा के वशक्षण में जनसचार के माध्यमों क

ी भवमका ू ं ं 2.8 साराश ं 2.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 2.10 सदभथ ग्रर् सची एि सहयोगी ग्र ू ं ं ं ं 2.11 वनबिात्मक प्रश्न ं 2.1 प्रस्तावना भाषा वकसी भी सभ्यता एि समाज की प्राणिाय ह।ै यह कहना वक समाज के वनमाथण की आिारवशला ु ं भाषा ही ह,ै अवतशयोवक्त नहीं होगी। समाज का वनमाथण तब होता ह ै जब मनष्ट्य

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 2 resources! id: **249**

अपने विचारों की ु अवभव्यवक्त एि आिश्यकताओ की पवतथ के वलए एक सार् वमलकर रहना शरु करते ह।ैं विचारों की ू ु ं ं अवभव्यवक्त तो भाषा के माध्यम से ही होती ह।ै आिश्यकताओ की पवतथ उनके अवभव्यवक्त के बाद ही ू ं सभि ह।ै इनकी अवभव्यवक्त का माध्यम

भी भाषा ह।ै अेराथत भाषा और समाज का गहरा सबि ह।ै मनष्ट्य ु ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 94 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 के विचारों की अवभव्यवक्त विविि रुपों येरा- सिाद, कविता, कहानी, उपन्यास, वनबि, आख्यान आवद ं ं म ें होते ह।ैं अवभव्यवक्त के ये विविि रुप ही सावहत्

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 9 resources! id: **250**

य कह े जाते ह।ैं इस प्रकार भाषा और सावहत्य का सबि ं ं स्ितः वसद्ध हो जाता ह।ै सावहत्य वसफथ भाषा से ही नहीं सबवित होता ह ै िरन समाज से भी इसका गहरा ं ं सबि होता ह।ै सावहत्य के अध्ययन से समाज का ज्ञान प्राप्त होता ह।ै इसवलए सावहत्य को समाज का दपथण ं ं भी कहा जाता ह।ै सावहत्य के अध्ययन से भाषा के ज्ञान

म ें भी िवद्ध होती ह।ै प्रस्तत इकाई म ें भाषा एि ृ ु ं सावहत्य के सबि को स्पष्ट करने का प्रयास वकया गया ह।ै इसके सार् ही भाषा वशक्षण म ें सावहत्य की ं ं भवमका पर प्रकाश डालने का भी प्रयास वकया गया ह।ै ू 2.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के पित आप - 1. सावहत्य के अर्थ की व्यख्या कर सकें ग।े 2. भाषा एि सावहत्य के पारस्पररक सबि को स्पष्ट कर सकें ग।े ं ं ं 3. भाषा वशक्षण म ें सावहत्य की भवमका का िणनथ कर सकें ग।े ू 4. जनसचार के विविि रुपों को पररभावषत कर सकें ग।े ं 5. जनसचार के विविि रुपों का उदाहरण द े सकें ग।े ं ं 6. जनसचार

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… + 2 resources! id: **251**

माध्यमों की भाषा पर विचार-विमश थ कर सकें ग।े ं 7. वहदी भाषा के वशक्षण म ें जनसचार के माध्यमों क

ी भवमका का िणनथ कर सकें ग।े ू ं ं 2.3 सातहत्य का अर् थ सावहत्य शधद की उत्पवत्त 'सवहत' शधद म ें 'यत' प्रत्यय के योग से सभि हई ह।ै सवहत का शावधदक अर्थ ु ं ह ै सार् एि यत प्रत्यय का योग होने से अर्थ 'सार् होने' का हो जाता ह।ै इस प्रकार सावहत्य का शावधदक ं अर्थ ह ै 'शधद और अर्थ का सार् होना या शधद और अर्थ का सहभाि'। सावहत्य के इस अर्थ को और स्पष्ट ढग से समझने के वलए हम भारतीय एि पिात्य विद्वानों द्वारा दी गई सावहत्य के विवभन्न ं ं पररभाषाओ को दखे ते ह।ैं ं भारतीय सावहत्य की शरुआत काव्य से मानी जाती ह।ै अतः, काव्य की पररभाषा को सावहत्य की ु पररभाषा के रुप म ें दखे ा जा सकता ह।ै पवडत विश्वनार् ने अपने सावहत्य दपथण नामक ग्रर् में काव्य को ं ं पररभावषत करते हए वलखा ह ै वक 'िाक्य रसात्मकम इवत काव्य'। अेराथत वजस िाक्य का सराह-सराह ु ं ं कर रसास्िादन वकया जा सके िही काव्य ह।ै □ आचाया दडी के अनसार

Quotes detected: **0.01%** id: **252**

"इष्ट अर्थ से विभवषत शधद समह ही काव्य शरीर ह"

ै । ु ू ू ों □ राजिेखर के अनसार

Quotes detected: **0.03%** id: **253**

"शधदार्थ योवन साहस भिने विद्या सावहत्य विद्या' अेराथत शधद और ु अर्थ के सार् समवचत सहयोग िाली विद्या सावहत्य विद्या ह"

ै । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 95 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 □ आचाया कतक के अनसार

Quotes detected: **0.09%** id: **254**

“शधद एि अर्थ के बीच सदरता के वलए स्पिा थ या होड़ के कारण ु ु ु ां ं ं सावहत्य के सवष्ट होती ह।ै कतक ने आगे इस पररभाषा की व्याख्या करते हए कहा वक शधद और ु ृ ु अर्थ का मनोहर विन्यास वजसमें शधद और अर्थ परस्पर इतनी सतवलत हो वक ना तो कोई न्यन ु ू ं हो और न कोई अविक हो”

। □ कहवद्र रहवद्र के अनसार “सवहत शधदों से सावहत्य की उत्पवत्त ह।ै अतः, ित का अर्थ करने पर ु ु ां ां सावहत्य शधद से वमलन का एक भिा दृवष्टगोचर होता ह।ै िह के िल भिा का भिा के सार्, भाषा का भाषा के सार्, ग्रर् का ग्रर् के सार् वमलन ह।ै यही नहीं िह यह बताता ह ै वक मनष्ट्य के सार् ु ं ं मनष्ट्य का, अतीत के सार् ितथमान का, दर के सार् वनकट का अत्यत अतरग योग सबि ु ं ं ं ं ू सावहत्य के इतर और वकसी के द्वार पर सभि नहीं ह।ै वजस दशे म ें सावहत्य का अभिा ह ै उस दशे ं के लोग सजिी बिन से बि नहीं विवछन्न होते ह”ैं । ं ं □ गणपवत चद्र गपत ने अपनी रचना

Quotes detected: **0%** id: **255**

‘सावहवत्यक वनबि’

म ें सावहत्य विज्ञान म ें दी गई न में सावहत्य ु ं ं की पररभाषा को उद्धत वकया ह ै । यह पररभाषा इस प्रकार ह-ै ’सावहत्य भाषा के माध्यम से रवचत ृ सौंदयथ या आकषणथ से यक्त रचना ह ै वजसके अर्थबिो से सामान्य पाठक को आनद की अनभवत ु ु ू ं होती ह’ै । □ मनै ेजर पाडे ने अपनी पस्तक

Quotes detected: **0.01%** id: **256**

‘सावहत्य के समाजशास्त्र की भवमका’

म ें महीिर प्रसाद वद्विदे ी द्वारा ु ू ं दी गई पररभाषा को उद्धत वकया ह।ै वद्विदे ी जी के अनसार ’ज्ञान रावश के सवचत कोष का नाम ु ं ृ सावहत्य ह’ै । □ िमथ्य िज वत्रपाठी ने अपनी पस्तक

Quotes detected: **0.01%** id: **257**

“प्रेमचद क ◌ा सावहत्य : समीक्षा और मलयाकन”

म ें नददलारे ु ू ं ं ं ु िाजपेयी द्वारा दी गई पररभाषा का उललेख वकया ह।ै िाजपेयी जी के अनसार, ’सावहत्य स े ु हमारा आशय उन विवशष्ट और प्रवतवनवि रचनाओ से ह ै जो समाज और सामावजक जिीन को ं भली या बरी दशा म ें ले जाने का सामर्थयथ रखती ह’ैं । ु □ पिाात्य सावहत्य भी काव्य से ही शरु होता ह।ै अतः, पिाात्य परपरा में भी प्रारभ म ें काव्य की ु ं ं पररभाषा को ही सावहत्य की पररभाषा के रूप म ें समझा गया। □ गणपवतचन्द्र गप्त ने अपनी रचना

Quotes detected: **0%** id: **258**

“सावहवत्यक वनबि”

अरस्त एि शलै ी के द्वारा दी गई पिाात्य ु ु ं ं काव्य की पररभाषाओ को उद्धत वकया ह।ै अरस्त के अनसार, ’शधदों के माध्यम से प्रस्तत ु ु ु ं ृ अनकवत को काव्य कहते ह’ैं । ृ ु □ आग्ल भाषा के सप्रवसद्ध कवि शलै ी के अनसार ’काव्य सिाथविक सखी एि श्रेष्ठतम हृदयों के ु ु ु ं ं श्रेष्ठतम क्षणों का लेखा जोखा ह’ै । □ मनै ेजर पाडे ने अपनी पस्तक

Quotes detected: **0.01%** id: **259**

‘सावहत्य के समाजशास्त्र की भवमका’

म ें हने री हडसन के द्वारा दी ु ू ं गई पिाात्य सावहत्य की पररभाषा का वजक्र वकया ह।ै हने री हडसन के अनसार, ’सावहत्य मलतः ु ू भाषा के माध्यम द्वारा जिीन की अवभव्यवक्त ह’ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 96 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 उपरोक्त पररभाषाओ के आिार पर वनष्ट्कष थ रूप म ें यह कहा जा सकता ह ै वक प्रारभ में प्राच्य एि पिाात्य ं ं ं दोनों परपराओ में काव्य को ही सावहत्य माना जाता ◌ा और उसम ें शधद एि अर्थ के योग को प्रिानता दी ं ं ं जाती ◌ी। कालातर म ें सावहत्य में वसफथ शधद और अर्थ ही प्रिान नहीं रह े बवलक समाज को भी प्रमख ु ं स्◌ान वदया गया। इस प्रकार ितथमान पररदृश्य म ें सावहत्य को वसफथ शधद एि अर्थ के माध्यम से भिानाओ ं ं की अवभव्यवक्त के रूप में नहीं पररभावषत वकया जाता ह।ै आज सावहत्य लोकमगल की सिाना और ं सामावजक पनवनथमाथण हते वकया जान े िाला भावषक प्रयास ह।ै ु ु 2.4 भाषा एवं सातहत्य का संबि ं सावहत्य एि भाषा परस्पर सबवित ह।ैं भाषा के वबना सावहत्य कलपना से परे ह।ै सावहत्य की रचना भाषा ं ं ं के माध्यम से ही होती ह।ै अतः, भाषा को सावहत्य का आिार भी कहा जा सकता ह।ै भाषा एि सावहत्य ं के पारस्पररक सबि पर प्रकाश डालते हए राजमल बोरा ने वलखा ह ै वक सावहत्य एक अर्थ म ें भाषा की ु ं ं सपवत्त ह।ै भाषा ने अपने ऐवतहावसक काल म ें जो भी अवजथत वकया ह ै िह सब उस भाषा के सावहत्य म ें ं सरवक्षत ह।ै यँ कवहए वक सावहत्य वकसी भाषा की िरोहर ह ै जो अपने आप पर भाषा की समवद्ध का बिो ृ ु ू दते ◌ा ह।ै रचनाकार की अनभवत को सावहत्य की विवभन्न विाओ में वनबद्ध करके पाठक या श्रोता तक ु ू ं पहचँ ◌ाने का माध्यम भाषा ही ह।ै इसवलए सवच्चदानद हीरानद ित्सायन

Quotes detected: **0%** id: **260**

‘अज्ञये ’

ने भाषा को काव्य का ु ं ं सिाथविक महत्िपण थ गण मानत े हए कहा वक काव्य के जो भी गण बताए जात े ह,ैं जा सकते ह,ैं ु ू ु ु अततोगत्िा भाषा ही के गण ह।ैं ु ं उपरोक्त दोनों विद्वानों के मतों से वभन्न विचार रखत े हए प्रख्यात भाषाविद अशोक रा० के लकर ने कहा ु वक सावहत्य को भाषा की सपवत्त कहना या सावहत्य के गणों को भाषा के गण कहन े का तात्पयथ सावहत्य ु ु ं को भाषा कहना ह,ै जो सिर्थ ा अनवचत ह।ै उन्होंने भाषा एि सावहत्य के सबि को स्पष्ट करते हए कहा वक ु ु ं ं ं

Quotes detected: **0.09%** id: **261**

“भाषा सावहत्य की कला सामग्री ह।ै स्मरण रह े हमन े कला सामग्री कहा ह ै कला माध्यम नहीं। वजस प्रकार वशलप कला का माध्यम िनाकार बनिाट रहता ह ै बवलक भाषा सामग्री रूप ह।ै वजस प्रकार वशलप कला म ें ु पत्र्र की खदाई होती ह,ै िात डाली जाती ह,ै वमट्टी की बनिाट होती ह ै उसी प्रकार भाषा से सावहवत्यक ु ु मवतथया बनती ह”

ै । ू ं सावहत्यकार विवभन्न भिा एि अनभवतयों को सप्रेवषत करने के वलए भाषा का सजन करता ह।ै ृ ु ू ं ं िह नीिन शधदों का वनमाथण करता ह ै त ा प्राचीन शधदों को नया अर्थ दते ा ह।ै अज्ञये जी ने तार सप्तक की भवमका म ें वलखा ह ै वक -

Quotes detected: **0.04%** id: **262**

“अवभियार्थ यक्त शधद तो िह कच्चा माल ह ै वजसस े िह रचना करता ह;ै ऐसी ू ु रचना वजसके द्वारा िह अपना नया अर्थ उसमें भर सके , उसमें जिीन डाल सके ”

। उपरोक्त विवेि न से भाषा एि सावहत्य के पारस्पररक सबि स्पष्ट हो जाता ह।ै इस सबि को वनम्नवलवखत ं ं ं ं ं वबदओ के माध्यम से और स्पष्ट वकया जा सकता ह:ै ं ं ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 97 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 i. साहियय भाषा का दपाण ैि - भाषा के दशनथ सावहत्य से ही होते ह।ैं सावहत्य के माध्यम से ही हम विवभन्न काल

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **263**

की भाषा का दशनथ कर पाते ह।ैं चाह े जीवित भाषा हो या मत भाषा उसकी ृ जानकारी हमें उस भाषा विशषे के सावहत्य से ही प्राप्त होती ह।ै इस प्रकार,

यह स्पष्ट ह ै वक भाषा वबना सावहत्य के समझी नहीं जा सकती ह।ै अतः, दोनों परस्पर सबवित ह।ैं ं ं ii. भाषा और साहियय दोनों समाज से सबहित ैि- भाषा का जन्म समाज म ें

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… id: **264**

होता ह,ै समाज में ां ां ही उसका पालन पोषण होता ह ै और समाज में ही िह समद्ध होता ह।ै स

ावहत्य की व्यत्पवत्त भी ृ ु समाज से ही

Plagiarism detected: **0.02%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 2 resources! id: **265**

होती ह।ै भाषा एि सावहत्य दोनों का कायथ क्षेत्र एक ह।ै कायथ क्षेत्र एक होने के कारण

ं ये दोनों एक-दसरे से अतसांबवित ह।ैं ं ं ू iii. भाषा पर स्वाहमयव की राहप्त साहियय के अध्ययन से ी सभव ैि - सावहत्य के अध्ययन से ां भाषा के विवभन्न शवै लयों का ज्ञान होता ह।ै महिारों, लोकोवक्तयों त ा शवक्तयों का ज्ञान हम ें ु सावहत्य के अध्ययन से ही प्राप्त होता ह।ै अतः, भाषा एि सावहत्य एक-दसरे से सबवित ह।ैं ं ं ं ू वनष्टकषतथ ः हम यह कह सकत े ह ैं वक चकी भाषा एि सावहत्य दोनों की जन्मस्र्ली एि कमस्थ र्ली ु ं ं समाज ही ह ै अतः, ये दोनों परस्पर सबवित ह।ैं ं ं कवि अजीत कमार की ये पवक्तयाँ भाषा एि सावहत्य के सबि को अत्यत ही सदर ढग से स्पष्ट ु ु ं ं ं ं ं ं ं करती ह ैं “लेवकन भाषा के सार् कवि का एक और विस्तार सभि ह ै ं जसै े कम्हार का अपने चाक के सार् ु शात और वस्र्र गवत से ं मनचाह े आकार गढ़ने ाला" 2.5 भाषा एवं सातहत्य म अंतर ें भाषा एि सावहत्य दोनों एक-दसरे स े अतसांबवित ह।ैं इनमें स्पष्ट विभाजन कर पाना अत्यत ही मवश्कल ु ं ं ं ं ं ू कायथ ह।ै वफर भी, वनम्नवलवखत वबदओ के माध्यम से भाषा एि सावहत्य के मध्य अतर स्ावपत करने का ं ं ं ं ु प्रयास वकया जा सकता ह।ै i. भाषा शधदों का एक समह ह ै वजसके द्वारा मनष्ट्य अपने विचारों को अवभव्यक्त करता ह ै जबवक ू ु सावहत्य िह विचार पज ह ै जो भाषा

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 2 resources! id: **266**

के माध्यम से अवभव्यक्त होती ह।ै ु ii. भाषा विचारों की अवभव्यवक्त का एक तरीका ह ै वजसका वनष्ट्पादन ध्िवनयों के उच्चारण

के कारण सभि होता ह ै जबवक सावहत्य का वनमाथण वकसी भाषा म ें कछ कायथ सपावदत करके वकया ु ं ं जाता ह।ै iii. भाषा में ध्िवन, शधद एि ाक्य का समिा

Plagiarism detected: **0.06%** https://hi.wikipedia.org/wiki/सीआईडी_(धारावाहिक) + 3 resources! id: **267**

शे होता ह ै जबवक सावहत्य म ें मानि विचारों का ं समिाशे होता ह ै वजसकी अवभव्यवक्त भाषा के माध्यम से होती ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 98 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 iv. भाषा विचारों की अवभव्यवक्त का माध्यम

ह ै जबवक सावहत्य उन अवभव्यक्त विचारों का क ्रा, कविता, नाटक, वनबि, उपन्यास आवद विविि रूपों में सग्रह ह।ै ं ं v. भाषा मौवखक, वलवखत एि साके वतक होती ह ै जबवक सावहत्य सामान्यतः वलवखत होता ह।ै ं ं vi. भाषा सावहत्य की मौवलक इकाई ह ै या यँ कह े वक भाषा सावहत्य का वनमाथण करता ह ै जबवक ू सावहत्य भाषा को समद्ध करता ह।ै ृ उपरोक्त वबदओ के माध्यम से भाषा एि सावहत्य के मध्य अतर को स्पष्ट वकया जा सकता ह।ै ं ं ं ं ं ु अभ्यास रश्न 1. आचायथ कतक के अनसार सावहत्य की पररभाषा वलवखए । ु ु ं 2. अरस्त के अनसार काव्य को पररभावषत कीवजए । ु ु 3. सावहत्य एि भाषा के सबि को स्पष्ट करने िाली कवि अजीत कमार की पवक्तयों को वलवखए । ु ं ं ं 4. इष्ट अर्थ से विभवषत शधद समह ही _____ शरीर ह।ै ू ू 5. शधदार्थ योवन साहस भिाने विद्या _____ विद्या। 6. _____ के अनसार, शधद कच्चा माल ह।ै ु 7. “भाषा सावहत्य की कला सामग्री ह।ै “ यह कर्न_____ ह।ै 8.

Quotes detected: **0%** id: **268**

‘सावहत्य दपथण’

के रचनाकार _____ ह।ैं 2. 6 भाषा तशक्षण म सातहत्य ें सावहत्य के वबना भाषा वशक्षण अिरा ह।ै हमारे पिजथ ों की भाषा समद्ध ी क्योंवक िह कावलदास, ृ ू ू बाणभट्ट, भास, प्रेमचद्र, जयशकर प्रसाद, सयथकात वत्रपाठी वनराला, शक्े सवपयर, िडथसिर्थ, आवद जसै े ृ ू ं ं ं महान विभवतयों के सावहत्य का अध्ययन करती ी। ितथमान पीढ़ी सावहत्य से कोसों दर ह।ै इसका प्रत्यक्ष ू ू प्रभाि उनके भाषाई ज्ञान पर पड़ा ह।ै इसे वसफथ उनका भाषाई विकास ही बावित नहीं हआ ह ै बवलक ु बौवद्धक एि भिात्मक विकास भी बावित हआ ह।ै अतः, भाषा वशक्षण में सावहत्य की महती भवमका ु ू ं ह।ै इसवलए वपछल े दो-तीन दशकों से भाषाविद एि वशक्षाविद सावहत्य

Plagiarism detected: **0.05%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 2 resources! id: **269**

के माध्यम से भाषा वशक्षण की ं िकालत कर रह े ह।ैं 2.6.1 साहियय के माध्यम से भाषा के हिक्षण की आवश्यकता सावहत्य के माध्यम से भाषा के वशक्षण की आिश्यकता को वनम्नवलवखत वबदओ के माध्यम स

े स्पष्ट ं ं ु वकया जा सकता ह:ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 99 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 i. सास्कहतक समहद्ध- सस्कवत के आदशों एि विचारिाराओ को समझकर विद्यावर्थयों को ृ ृ ृ ां ं ं ं सास्कवतक रुप से समद्ध एि जागरुक बनाने में सहायता करता ह।ै ृ ृ ं ं ii. मानहसक रहिक्षण- यह मवस्तष्क को प्रवशवक्षत करता ह ै एि सिदे नशीलता को प्रोत्सावहत ं ं करता ह।ै iii. स्मरण क्षमता- सावहत्य

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **270**

के माध्यम से भाषा वशक्षण करने पर विद्या ी के वलए शधद िाक्य आवद के भाषा व

िज्ञान सबिी प्रयोगों को याद रखना आसान होता ह ै । ं ं iv. लयबद्ध स्रोत- भाषा की गवतशीलता एि लयबद्धता को समझने म ें त ्रा अर्थ को स्पष्ट करने म ें ं सहायता करता ह।ै v. सहविाजनक स्रोत- यह भाषा वशक्षण का सविाजनक स्रोत ह।ै ु ु vi. हववेचना के हलए मि- यह विचे ना करने की योग्यता को विकवसत करता ह ै एि अतःवक्रया ु ं ं की क्षमता को प्रोत्सावहत करता ह।ै vii. भाषा हवज्ञान सबिी रहतमान- सावहत्य म ें प्रयक्त भाषा के प्रयोग एि लेखन शलै ी को समझने ु ां ां ं के वलए सावहत्य प्रत्यक्ष स्रोत ह।ै यह विद्यावर्थयों के वलए भाषा विज्ञान सबिी प्रवतमान ह ै वजसके ं ं आिार पर ि े अपनी भाषाविज्ञान सबिी कौशलों को वनखारता ह।ै ं ं viii. भाषा हवज्ञान सबिी दक्षता का हवस्तार- विद्या

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **271**

ी की भाषा विज्ञान सबिी दक्षता का विस्तार ां ां ं ं होता ह ै एिउसम ें तीक्ष्णता आती ह।ै ं ix. रमाहणकता- सावहत्य भाषाई ज्ञान के प्रामावणक स्रोत होते ह

ैं 2.6.2 साहियय एव भाषाई कौिलों का हिक्षण ां सावहत्य प्रमख चार भाषाई कौशलों- पठन, लेखन, श्रिण एि िाचन के वशक्षण म ें महत्िपणथ भवमका ु ू ू ं वनभाता ह।ै सावहत्य के माध्यम से भाषा वशक्षण का कायथ करते समय यह ध्यान रखना चावहए वक विवभन्न भाषाई कौशलों को पर्क-पर्क नहीं पढ़ाया जाना चावहए बवलक उन्ह ें समवे कत करके पढ़ाया जाना ृ ृ चावहए। आइए विवभन्न भाषाई कौशलों के वशक्षण म ें सावहत्य की भवमका पर चचा थ करते ह।ैं ू i. साहियय एव पठन कौिल- एक सावहवत्यक रचना का अध्यापन करते समय वशक्षक को एक ां गवतशील एि विद्या ी कें वद्रत उपागम अपनाना चावहए। सावहवत्यक रचना को पढ़त े समय विद्या ी ं पठन कौशल को सीखता ह।ै पढ़त े समय विद्या ी के पठन कौशल य ्रा, यवत त ्रा गवत अ ्राथत ठहरिा एि प्रिाह, विराम वचन्हों का उवचत प्रयोग, आवद कौशलों म ें प्रखरता आती ह।ै शधदों के ं अर्थ एि उनके प्रासवगक प्रयोग की समझ बढ़ती ह।ै ं ं ii. साहियय एव लेखन कौिल- सावहत्य के द्वारा विद्या ी का लेखन कौशल भी समद्ध होता ह।ै ृ ां क ्रा, कहानी, नाटक, आवद का साराश वलखने, भिार्थ वलखने, व्याख्या करने, आवद से उनके ं लेखन क्षमता म ें ि वद्ध होती ह।ै वकसी पस्तक की समीक्षा वलखने एि आलोचना वलखने से भी ृ ु ं विद्या ी का लेखन कौशल समद्ध होता ह।ै ि ाक्य विन्यास एि व्याकरवणक सरचना की समझ ृ ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 100 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 विकवसत होती

ह।ै सावहत्य की विवभन्न विाओ की व्याकरवणक सरचना भी वभन्न होती ह।ै इन ं ं व्याकरवणक सरचनाओ की समझ विवभन्न सावहवत्यक विाओ से सबवित रचनाओ का वशक्षक ं ं ं ं ं ं द्वारा अध्यापन करते समय या विद्याी द्वारा स्िअध्ययन करते समय स्पष्ट होती ह।ै पररणामस्िरुप छात्रों के लेखन कौशल में वनखार आता ह।ै iii. साहियय एव श्रवण कौल- िाचन करते समय विद्याी

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **272**

का उच्चारण शद्ध हो जाता ह।ै इसवलए ु ां सावहत्य के माध्यम से उच्चारण की शद्धता म ें वनखार आता ह।ै िाचन कौशल का एक महत्िपण थ ु ू अग उच्चारण क

ी शद्धता ह।ै ु ं iv. साहियय एव श्रवण कौल- श्रिण एक प्रमख भाषाई कौशल ह।ै सावहत्य द्वारा भाषा का ु ां वशक्षण करते समय हम सावहवत्यक रचना के मौवखक िचन वजसमें की प्रायः दो प्रकार के मौवखक िाचन, आदशथ िाचन एि अनकरण िाचन, सवम्मवलत होते ह,ैं पर बहत बल वदया जाता ह।ै िाचन ु ु ं सबी इन कक्षाओ में विद्याी सनकर सावहत्यक रचना को समझने का प्रयास करता ह।ै पररणाम ु ं ं ं स्िरुप उनके श्रिण कौशल में वनखार आता ह।ै 2.6.3 साहिहययक हविाओ के अध्ययन-अध्यापन से भाषा ज्ञान में िोने वाले लाभ ां सावहत्य की विाओ के अनेक रुप होने के कारण यहाँ दो प्रमख विाओ के अध्ययन-अध्यापन से ु ं ं होनिाले लाभ की चचाथ की गई ह।ै कहवता के अध्ययन अध्यापन से भाषा ज्ञान में िोने वाले लाभ ने कविता के अध्ययन से भाषाई कौशलों म ें होने िाले लाभ को वनम्नवलवखत शधदों म ें वनबद्ध वकया जा सकता ह:ै a. व्याकरण, िाक्य-विचार एि शधदों के ज्ञात प्रयोग एि वनयमों से परे जाकर पाठकों में भाषा के ं ं प्रवत एक विवभन्न दृवष्टकोण विकवसत करता ह।ै b. पाठकों म ें भाषा सबी नीन तर्थयों को ढँढन े की क्षमता त ा सावहत्य की विचे ना करने की ू ं ं उनकी योग्यता को विकवसत करता ह।ै c. सावहत्य के अध्ययन के कारण शधदों में छप े हए विवि रूप य ा- सादृश्यता, उपमा, रूपक, ु ु व्यग्य, आवद उनके दवै नक जिीन का वहस्सा हो जात े ह।ैं पाठक िग थ इन तर्थयों से पररवचत हो जाता ं ह।ै कालातर म ें पाठक िग थ शधदों का इन विवि रूपों में प्रयोग करने में सक्षम होता ह ै और उसके ं भाषाई कौशल में िवद्ध होती ह।ै ृ d. कविता का सस्िर िाचन करने के पररणामस्िरुप विद्याी भाषा के अन्य महत्िपणथ पक्षों य ा- ू स्रेस, तारत्ि ि अनतान आवद से भी पररवचत हो जाता ह।ै फलस्िरुप उनका भाषाई कौशल और ु वनखर जाता ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 101 ु हिन्दी का हिक्षणास्त्र (भाग I) CPS 4 लघ किानी के अध्ययन-अध्यापन से भाषा ज्ञान में िोने वाले लाभ ु लघ कहानी अन्य सावहवत्यक विाओ की तलना म ें सरल होता ह।ै इससे विद्यावर्थयों का पठन सबी ु ु ं ं ं कायथ आसान एि रुवचकर हो जाता ह।ै पररणामस्िरुप विद्याी पठन करने के वलए प्रोत्सावहत होते ह ैं और ं उनके भाषाई कौशल में वनखार आता ह ै ।लघ कहानी का भाषा वशक्षण म ें

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **273**

प्रयोग करने के लाभ को ु वनम्नवलवखत वबन्दओ के माध्यम से स्पष्ट वकया जा सकता ह:ै ं ं ु लघ कहानी का प्रयोग कर भाषा वशक्षण का एक उदाहरण- प्रस्तत उदाहरण िस्ततः लघ कहानी का ु ु ु ु प्रयोग

कर भाषा वशक्षण की एक पाठययोजना ह।ै यह योजना वनम्नवलवखत भागों म ें विभावजत ह:ै ् 1. भाषा के हकन पक्षों का हिक्षण हकया जा सकता ि?ै □ व्याकरण वशक्षण □ उच्चारण वशक्षण □ कर्न वशक्षण □ िणनथ करने की योग्यता का वशक्षण □ विराम वचन्हों का वशक्षण □ शधदिाली वशक्षण □ शधदों के प्रासवगक अर्थ का वशक्षण ं □ पिथनमान करने की कला का वशक्षण ू ु □ शधद में वनवहत विवभन्न अ ों को समझ कर उनका िाक्य म ें प्रयोग करने की कला का वशक्षण □ वदए गए शधदों या िाक्यों के आिार पर कहानी लेख 2. लघ किा का वाचन ु वनम्नवलवखत लघ क ा का िाचन कीवजए । ु वसहल द्वीप म ें एक राजा राज करता ा। उसके चार पत्र ें। ि चारों आपस में खब लड़ते े। राजा उनकी इस आदत से ु ू ं बहत परेशान ा। एक वदन उसके मन में एक विचार आया। उसने अपने चारों पत्रों को अपने पास बलाया और उन्ह ें एक- ु ु ु एक लकड़ी का टकड़ा वदया। राजा ने वफर उन्ह ें तोड़न े के वलए कहा। चारों पत्रों ने बारी-बारी से अपनी लकवड़याँ तोड़ दी। ु ु अब राजा न े अपने बड़े पत्र से लकड़ी के सारे टकड़ों को एकत्र कर एक गट्ठर बनान े के वलए कहा। पत्र न े लकड़ी के टकड़ों ु ु ु ु को एकत्र वकया और उसका एक गट्ठर बना वदया। वफर राजा ने उसे तोड़न े के वलए कहा। बड़ा पत्र उसे तोड़ नहीं पाया। ु राजा न े बारी-बारी से अपने सारे पत्रों से उस गट्ठर को तोड़न े के वलए कहा लेवकन कोई भी पत्र उसे तोड़ नहीं पाया। तब ु ु राजा न े अपन े चारों पत्रों को अपन े पास बलाया त ा उन्ह ें समझाया। वजस तरह से लकवड़यों को एक सार् कर दने े पर ु ु उनको तम में से कोई भी नहीं तोड़ पाया उसी प्रकार से यवद तम भी एक सार् रहोग े तो शत्र तम्ह ें कभी परावजत नहीं कर ु ु ु ु पाएगा। लेवकन यवद तम लोग आपस म ें लड़ोग े तो शत्र तम्ह ें अके ली लकवड़यों की तरह तोड़ डालेंगे। यह बात राजा के ु ु ु पत्रों को समझ में आ गई और ि‍ह एक सार् वमलकर रहन े लग।े ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 102 ु हिन्दी का हिक्षणास्त्र (भाग I) CPS 4 3. हिया-कलाप- इस खड में विद्यावर्थयों द्वारा वकए जा सकने िाले विवभन्न वक्रया-कलापों को ं सवम्मवलत वकया गया ह ै a. हिया-कलाप 1- कहानी के रेखावकत शधदों में से वजतने शधद आपको याद ह ै उन्ह ें एक अलग ं कागज पर वलवखए । b. हिया-कलाप 2 - शधद के विवभन्न रूपों का वशक्षण वनम्नवलवखत तावलका को शधद के विवभन्न रूपों से परा कीवजए । स्मरण रह े वक प्रत्येक शधद के ू सभी रूप नहीं होते ह।ैं ताहलका 2.1: िब्द के हवहभन्न रुप हिया हियाहविषण सज्ञा हविषण ां बोलना िक्ता बोलन े योग्य सोचना वलखिाट तेज समझना रग ं c. हिया-कलाप 3 -यह वक्रया-कलाप मख्यतः विद्याी के िाचन कौशल से सबवित ह।ै विद्याी ु ं ं कहानी म ें आए विवभन्न पात्रों की भवमका का वनिाथह कर कहानी का नाटय मचन कीवजए । ् ू ं d. हिया-कलाप 4- यह वक्रया-कलाप श्रिण कौशल पर आिाररत ह।ै कहानी का कक्षा में सस्िर पाठ वकया जाए तत्पिात विद्यावर्थयों से वनम्नवलवखत

प्रश्न पछे जाए।ँ ू □ कहानी का मख्य पात्र कौन ह?ै ु □ कहानी म ें कल वकतने पात्र ह?ैं ु □ कहानी वकस स्ान की ह?ै भाषा वशक्षण म ं सावहत्य की भवमका पर आाररत उपरोक्त विचे न से स्पष्ट ह ै वक सावहत्य िास्तविक ू जीन म ें भाषा के प्रयोग का एक प्रामावणक प्रवतमान ह।ै अतः, भाषा वशक्षण के वलए यह एक प्रभिी ससिान ह।ै यह वसफथ भाषा का वशक्षण ही नहीं करता ह ै बवलक नैवतक एि आध्यावत्मक

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **274**

विकास के ं ं माध्यम से सास्कवतक एि व्यवक्तगत विकास को भी प्रोत्सावहत करता ह।ै सावहत्य साध्य नहीं ह ै िरन ृ ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 103 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 सजनात्मक योग्यता के विकास क

ा सिान ह ै जो विद्या ी को अपने सामावजक एि मनोज्ञै ावनक सदभ थ से ृ ं ं जड़ने म ें सहायता करता ह।ै ु अभ्यास रश्न 9. लघ कहानी का प्रयोग कर भाषा के वजन पक्षों का वशक्षण वकया जा सकता ह ै , उन्ह ें सची बद्ध ु ू कीवजए । 10. भाषा के चार प्रमख कौशल कौन-कौन से ह।ैं ु 11. कविता के अध्ययन-अध्यापन म ें भाषा ज्ञान म ें होने िाले लाभ का उललेख कीवजए । 2. 7 भाषा तशक्षण एवं जनसंचार जनसचार से आशय उन सभी सिानों के अध्ययन एि विश्लेषण से ह ै जो एक सार् विशाल जनसख्या के ं ं ं सार् सपकथ स्ावपत करने के वलए प्रयक्त वकए जाते ह।ैं जनसचार शधद आज वकसी पररचय का मोहताज ु ं ं नहीं ह।ै यह हमारे जीन का एक अवभन्न अग बन चका ह।ै जसै ा की डॉक्टर महद्रें वसह राणा ने अपनी ु ं ं पस्तक प्रयोजनमलक वहदी के आिनक आयाम म ें वलखा ह ै “इक्कीसिीं सदी का जनसचार(Mass ु ू ु ं ं Media) हमारे जीन त ा राष्ट्रीय विकास और उसके वदशा वनिाथरण का एक अवभन्न अग बन चका ह।ै ु ं प्रातः होते ही अविकतर लोग समाचार पत्र पढ़ने में व्यस्त हो जात े ह,ैं तो सदर गाँिों के कछ लोग रेवडयो ु ु ू खोल लेत े ह।ैं कछ अन्य लोग दरदशनथ पर आखँ –कान लगाए बैठ

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **275**

जाते ह।ैं इन विवि माध्यमों से हम ु ू राजनैवतक, आवर्थक, सामावजक, खले कद आवद से सम्बवन्ित गवतविवियों के समाचारों के अवतररक्त ू विवि प्रकार के मनोरजन का लाभ उठाते ह।ैं इन माध्यमों स

े प्रसाररत विवभन्न विज्ञापन हम ें उपभोक्ता ं सस्कवत से अनायास ही जोड़े रखते ह।ैं सच तो यह ह ै वक जनसचार के इन विवभन्न माध्यमों ने व्यवक्त से ृ ं ं लेकर जन–समह तक त ा एक दशे से लेकर विश्व के विवभन्न दशे ों को एक सत्र म ें बाँि वदया ह।ै इस ू ू बिन के पररणामस्िरूप जनसचार माध्यम

Plagiarism detected: **0.06%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… id: **276**

राष्ट्रीय त ा िवै श्वक स्तर पर वचतन, विचार, राजनीवत, अर्थ, ं ं ं सस्कवत आवद के क्षेत्र म ें सवम्मवलत प्रभिा डालने लगे ह ैं और उन म ें विश्व का मानवचत्र बदलने की क्षमता ृ ं विकवसत हो चकी ह।ै जनसचार का उद्दश्े य ह ै विवि प्रकार क

े भिों, विचारों त ा जानकाररयों को ु ं अविकाविक लोगों तक पहचँ ाना।” जहाँ तक वशक्षण का प्रश्न ह ै जनसचार अपने उद्भि काल से ही ु ं लोकवशक्षक की भवमका का वनिाथह कर रहा ह।ै इसे लोकवशक्षक की भी सज्ञा दी गई ह।ै भाषा वशक्षण में ू ं इसकी भवमका पर चचा थ करने से पहले हम इसके विवि रूपों की चचा थ करेंग।े ू 2.7.1 जनसचार के हवहवि रुप ां जनसचार माध्यमों को अब तक तीन िगो म ें िगीकत वकया जाता ह।ै ये तीन िगथ एि इन में सवम्मवलत ृ ं ं होने िाल े जन सचार के प्रमख सिान वनम्नवलवखत ह।ैं ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 104 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 a. श्रव्य- इस माध्यम में रेवडयो, रावजस्टर, टेप-ररकॉडथर, टेलीफोन, मोबाइल आवद सवम्मवलत होते ं ह।ैं b. दृश्य- इस माध्यम म ें समाचार-पत्र, पवत्रकाए,ँ पोस्टर, टेंपलेट, होवडांग, आवद को शावमल वकया जाता ह।ै c. श्रव्य- दृश्य माध्यम- इसमें वसनेमा,

Plagiarism detected: **0.16%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 5 resources! id: **277**

टेलीविजन, िीवडयो कै सेट प्लेयर, आवद को सवम्मवलत वकया जाता ह।ै ितथमान म ें वसफथ ये तीन िग थ ही जनसचार माध्यम के रूप में प्रचवलत नहीं ह।ै वनत्य नीन माध्यमों का ं विकास हो रहा ह।ै इटरनेट, कप्यटर, मलटीमीवडया, डीटीएच, विदशे ी सैिा प्रभिा, सोशल नेटिकां ग, ू ं ं आवद जनसचार के नए माध्यम के रूप म ें प्रवसद्ध हो रह े ह।ैं कप्यटर एि इटरनेट के प्रयोग ने जनसचार ू ं ं ं ं ं माध्यम के क्षेत्र म ें क्रावत ला दी ह ै और जनसचार माध्यमों को अब वकसी िग थ म ें िगीकत करना दष्टकर ृ ं ं ु कायथ हो गया ह।ै 2.7.2 जनसचार माध्यमों की भाषा ां जब जनसचार माध्यमों क

ी भाषा की बातचीत की जाती ह ै तब उसका आशय वहदी, अग्रेजी, जापानी, ं ं ं आवद भाषाओ से नहीं होता ह ै क्योंवक यह बात तो स्पष्ट ह ै वक जनसचार माध्यम द्वारा सचार करने के वलए ं ं ं विश्व की लगभग सभी प्रमख भाषाओ का उस भाषा भाषी क्षेत्र म ें प्रयोग वकया जाता ह।ै यहाँ जनसचार ु ं ं

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.doubtnut.com/qna/364564594 + 2 resources! id: **278**

माध्यम की भाषा से हमारा आशय भाषा के स्तर से ह।ै चाह े िह वहदी भाषा हो या अग्रेजी या वफर अन्य ं ं कोई भाषा। दसरे शधदों म ें हम कह सकते ह ैं वक जनसचार माध्यमों क

ी भाषा से आशय भाषा के ं ू सावहवत्यक होने या सामान्य व्यिहार/बोलचाल की भाषा होने से ह।ै पाठयक्रम वहदी वशक्षण विवि का ् ं होने के कारण हम यहाँ वहदी भाषा के जनसचार माध्यमों की भाषा के स्तर पर चचा थ कीवजए ग।े ं ं तकनीकी के विकास के

सार्-सार् भाषा का विकास अिश्यभिी ह।ै लगभग 1000 िषों के सार्थक ं प्रयास के बाद आज हमें वहदी का यह स्िरूप दखे न े को प्राप्त होता ह।ै लेवकन अभी भी हम या कहन े में ं अक्षम ह ैं वक यह वहदी भाषा का वस्र् स्िरुप ह ै और अब इसमें पररितथन नहीं होगा। भाषा स्िभिा से ही ं गवतशील ह।ै भारत में पत्रकाररता का आरभ 1776 ईसिीं में ईस्ट इवडया कपनी के भतपिथ अविकारी विवलयम ू ू ं ं ं धलॉटस द्वारा अग्रेजी भाषा में प्रकावशत अखबार के सार् मानी जाती ह।ै ् ं वहदी म ें पहला अखबार

Quotes detected: **0%** id: **279**

'उदत मातांड'

के नाम से सन 1826 ईसिीं स्िी में प्रकावशत होना शरू हआ ु ु ं ं लेवकन अ्राथभिा के कारण 1827 म ें बद हो गया। यहीं से वहदी पत्रकाररता की शरुआत मानी जाती ह।ै ु ं ं ंिरिरिरे वहदी पत्रकाररता का विकास हआ और समाचार पत्रों की सख्या बढ़ी। इस समय तक अविकतर ु ं ं समाचार पत्रों में बोलचाल की भाषा वहदस्तानी का प्रयोग होता ्रा। राजा वशिप्रसाद वसह ने 1846 म ें ं ं ु बनारस अखबार का प्रकाशन शरू वकया। इसी समय राजा लक्ष्मण वसह ने भी एक अखबार का प्रकाशन ु ं शरू वकया। राजा वशिप्रसाद वसह जहा वहदस्तानी के समर्थक ्रे िही लक्ष्मण वसह विशद्ध वहदी के ।

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **280**

इस ु ु ं ं ं ं ं ु प्रकार वहदी पत्रकाररता के क्षेत्र में दो भाषाओ वहदस्तानी एि शद्ध वहदी का प्रयोग दखे न े को वमलने लगा। ु ं ं ं ं ं ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 105 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 अब तक भारत में भारतेंद हररिद्र का उन्द्रि हो चका ्रा और उन्होंने अपनी रचनाओ म ें समद्ध एि सरल ृ ु ं ं ं ु वहदी का प्रयोग

वकया और आिवनक वहदी की नींि डाली। 1854 ईसिीं में उन्होंने वहदी का पहला ु ं ं ं दवै नक समाचार-पत्र

Quotes detected: **0%** id: **281**

'समाचार सिषणथ '

त्रा 1868 ईसिी में सावहवत्यक पवत्रका

Quotes detected: **0%** id: **282**

'कविचन सिा'

का ु ु प्रकाशन प्रारभ वकया। इस प्रकार आिवनक वहदी का सत्रपात हआ त्रा वहदी पत्रकाररता म ें भाषा के ु ु ू ं ं ं स्िरूप एि को लेकर तीन वभन्न-वभन्न विचाराराए दखे न े को वमलने लगी। कालातर में आिवनक वहदी ु ं ं ं ं ं का प्रचलन बढ़ा लेवकन इसमें भी पररितथन होता रहा। इस प्रकार हम यह कह सकते ह ैं वक वहदी भाषा का ं स्िरूप एि स्तर पत्रकाररता म ें प्रारभ से ही बदलता रहा ह।ै जनसचार पत्रकाररता का ही व्यापक रुप ह।ै ं ं ं अतः, जनसचार माध्यमों की भाषा में भी पररितथन होता रहा ह।ै पहले खड़ी बोली, वफर वहदस्तानी, वफर ं ं ु वहदी और अब वहदी एि वहवग्लश। ितथमान म ें वहदी भाषा के जनसचार माध्यमों म ें प्रयक्त होनेाली भाषा ु ं ं ं ं ं ं ं में वहवग्लश एि इवग्लश का बहत अविक समिाशे हो गया ह ै और प्रयक्त वहदी भाषा का स्तर भी वगर चका ु ु ु ं ं ं ं ह।ै आज जनसचार

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… + 2 resources! id: **283**

माध्यमों की भाषा म ें जगाड़ीवफके शन जसै े वहवग्लश शधदों का िड़लले से प्रयोग हो रहा ु ं ं ह।ै ितथमान समय म ें जनसचार माध्यमों क

ी भाषा सावहवत्यक न रहकर सामान्य बोलचाल की भाषा म ें ं बदलती जा रही ह।ै कर्थय के अनकल

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **284**

भाषा का प्रचलन भी कम होता जा रहा ह।ै विज्ञापनों की भाषा म ें ु ू प्रायः व्याकरवणक सरचना का अभि वदखता ह।ै इस प्रकार वहदी का स्िरुप ितथमान में सरल तो हआ ु ं ं लेवकन विरूवपत भी हो गया ह।ै 2.7.3 हवद्यिी की भाषा पर जनसचार माध्यमों की भाषा क

ा रभाव ां जनसचार माध्यम भाषा सीखने के सशक्त उपकरण होते ह।ैं विद्या्री समाचार-पत्र पढ़कर, रेवडयो सनकर, ु ं वफलम सगीत सनकर, भाषा सीखने का प्रयास करता ह।ै वजस स्तर की भाषा िह सनता ह ै या पढ़ता ह ै ु ु ं उसका भाषा विकास उसी स्तर का

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **285**

होता ह।ै अ्राथत जनसचार माध्यमों की भाषा का विद्या्री की भाषा पर ं प्रत्यक्ष प्रभि पड़ता ह।ै आजकल के विद्यावर्थयों में इवग्लश स्टाइल की वहदी या वफलमी वहदी का प्रयोग ं ं ं जनसचार माध्यमों क

े कारण ही बढ़ा ह।ै इससे विद्यावर्थयों की भाषा विरूवपत होती जा रही ह ै और ि े ं मानक वहदी की जानकारी से िवचत होते जा रह े ह।ैं ं ं 2.7.4 हिदी भाषा के हिक्षण में जनसचा

Plagiarism detected: **0.11%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… + 3 resources! id: **286**

र के माध्यमों की भहमका ू ां ां जनसचार के विवभन्न माध्यमों का वशक्षण-अविगम में प्रयोग वशक्षण-अविगम प्रवक्रया को रुवचकर बनाता ं ह।ै जनसचार के माध्यम वशक्षक को अपने विद्यावर्थयों की आिश्यकताओ एि रुवचयों को सतष्ट करने का ु ं ं ं ं अिसर प्रदान करते ह।ैं भाषा वशक्षण में इनका प्रयोग या इनके माध्यम से भाषा वशक्षण, भाषा वशक्षण की प्रवक्रया को अविक प्रभिी बना दते ा ह।ै वहदी भाषा के वशक्षण म ें जनसचार माध्यमों की भवमका को ू ं ं वनम्नवलवखत वबदओ के माध्यम स े और स्पष्ट वकया जा सकता ह:ै ं ं ु □ समाचार-पत्रों, पवत्रकाओ, रेवडयो, टिीी, वफलम, इटरनेट, आवद का प्रयोग करके विद्या

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **287**

ंर्ी को ं ं भाषा का व्यिाहाररक अभ्यास करने त ंर्ा िाचन, पठन, लेखन त ंर्ा श्रिण सबिी कौशलों के ं ं विकास का अिसर प्रदान करता ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 106 ु हिन्दी क

ंा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 □ जनसचार के विवभन्न माध्यम विद्यावर्थयों को बोलने के वलए प्रोत्सावहत करते ह ैं विविि

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **288**

प्रकार के ं भाषाई वक्रया-कलापों के द्वारा त ंर्ा श्रिण, पठन, िाचन एि लेखन कौशल को समवे कत करने म ें ं सहायता करते ह।ैं □ पिार प्ाइट प्रस्ततीकरण का प्रयोग

करके विद्या ंर्ी अविक स्ितत्र ढग से और विचारों को ु ं ं ं अविक अच्छे ढग से वनयोवजत करके सप्रेवषत करता ह।ै पररणामस्िरुप उसके भाषाई कौशल म ें ं ं वनखार आता ह।ै □ इटरनेट आिाररत ऐसे कई सॉफ्टिये र ह ै जो भाषा सीखने का अिसर प्रदान करते ह।ैं इन ं सॉफ्टिये र के माध्यम से विद्या ंर्ी अपनी गवत एि समय के अनसार सीखता ह।ै ु ं □ रेवडयो पर समाचार सनकर विद्या ंर्ी सही उच्चारण सीखता ह।ै समाचार पत्रों का वहदी भाषा की ु ं कक्षा में प्रयोग करके एक समय पर वलवखत भाषा के विविि प्रारूप को प्रस्तत वकया जा सकता ु ह ै जो वक भाषा के विद्या ंर्ी के वलए बहत महत्िपणथ होता ह।ै इसवलए इसका प्रयोग भाषा वशक्षण ु ू की सहायक सामग्

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **289**

री के रूप में प्रयक्त वकया जा सकता ह।ै ु □ समाचार पत्रों म ें प्रस्तत विविि प्रकार क

े विषयों पर आलेख विद्यावर्थयों की रुवच एि उत्सकता ु ु ं को बढ़ाता ह।ै अतः, समाचार-पत्र आिाररत कायथ-कलाप भाषा वशक्षण को प्रभिी एि ं विद्यावर्थयों के वलए आनददायक बनात ं ह।ैं ं □ भाषा की कक्षा म ें वफलम या टिीी कायथक्रमों का प्रयोग कर विद्यावर्थयों के लेखन कौशल में िवद्ध ृ की जा सकती ह।ै विद्यावर्थयों को अपने पसदीदा वफलम या टिीी कायथक्रमों के विषय में वलखने ं के वलए कहा जा सकता ह ै वजससे उनकी लेखन क्षमता में प्रखरता आएगी। उपरोक्त विचे न के आिार पर भाषा वशक्षण म ें जनसचार माध्यम की भवमका स्पष्ट हो जाती ह।ै जनसचार ू ं ं माध्यमों को लोकवशक्षक की सज्ञा इसवलए दी गई ह ै वक िह अनौपचाररक ढग से लोगों को विविि ं ं विषयों य ंर्ा राजनीवत, समाज, अर्थव्यिस्ा, सावहत्य भाषा, आवद की वशक्षा दते ा ह।ै भाषा वशक्षण के वलए तो यह और भी उपयोगी ह ै क्योंवक वकसी भी विषय

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **290**

के ज्ञान के वलए भाषा एक आिश्यक तत्ि ह।ै वबना पढ़े-वलखे तो वकसी भी विषय का ज्ञान ह

ो ही नहीं सकता ह ै और पढ़ना एि वलखना भाषा के दो ं प्रमख कौशल ह,ैं वजनका विकास व्यवक्त के जनसचार माध्यमों के सार् जड़ि के कारण प्रत्यक्ष या ु ु ं अप्रत्यक्ष रुप से स्ितः होता रहता ह।ै अभ्यास रश्न 12. जनसचार शधद से क्या आशय ह?ै ं 13.

Quotes detected: **0.01%** id: **291**

‘प्रयोजनमलक वहदी के आिनक आयाम’

वकसकी रचना ह?ै ू ु ं 14. जनसचार माध्यमों को सामान्यतः वकतने िगों म ें विभावजत वकया जाता ह?ै ं 15. भारत म ें पत्रकाररता का आरभ _____ ईसिीं से माना जाता ह।ै ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 107 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 16. वहदी का प्रर्म समाचार-पत्र का नाम_____ ंर्ा। ं 17. भारत म ें पहला समाचार-पत्र _____ भाषा का ंर्ा। 18. बनारस अखबार का प्रकाशन_____ ने आरभ वकया ंर्ा। ं 19. भारत म ें वहदी भाषा के प्रर्म दवै नक समाचार-पत्र का प्रकाशन _____नाम से शरु वकया ु ं गया। 20. वमलान कीवजए स्तभ अ स्तभ ब ं ं (अ) बनारस अखबार (1) 1868 (ब) समाचार सिुाषणथ (2) 1846 ु (स) कविचन सिु (3) 1854 ु 2.8 सारांश प्रस्तत इकाई म ें वहदी भाषा एि सावहत्य के पारस्पररक सबि अत्यत ही सदर व्याख्या प्रस्तत की गई ह।ै ु ु ु ं ं ं ं ं ं इसके इतर दोनों के मध्य अतर स्ावपत करन े का भी प्रयास वकया गया ह।ै भाषा एि सावहत्य के मध्य ं ं सबि एि अतर को स्पष्ट करने के उपरात वहदी भाषा के वशक्षण म ें सावहत्य को कै से माध्यम बनाया जा ं ं ं ं ं ं ं सकता ह ै या सावहत्य के अध्यन-अध्यापन से भाषाई ज्ञान का वकस प्रकार विकास वकया जा सकता ह ै की चचाथ की गई ह।ै सावहत्य की विवभन्न विाओ के अध्ययन-अध्यापन से भाषा ज्ञान म ें होनिाले लाभ का ं भी उललेख वकया गया ह।ै लघ क ंर्ा

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… + 2 resources! id: **292**

के माध्यम से वकन-वकन भाषाई कौशलों का वशक्षण वकया जाता ह,ै ु इसका भी िणनथ वकया गया ह।ै इस तर्थय को और स्पष्ट करने के वलए लघ क◌ा के माध्यम से वहदी वशक्षण ु ं की एक पाठययोजना भी प्रस्तत की गई ह।ै इकाई के अवतम खड म ें भाषा वशक्षण म ें जनसचार माध्यमों ृ ु ं ं ं क

ी भवमका का िणथन भी प्रासवगक ह।ै इस प्रकार, यह इकाई, अपने समग्र रुप में, वहदी भाषा वशक्षण के ू ं ं कायथ म ें शावमल सभी व्यवक्तयों के वलए अत्यत उपयोगी ह।ै ं 2.9 अभ्यास

Plagiarism detected: **0.04%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… id: **293**

प्रश्नों के उत्तर 1. इस प्रश्न के उत्तर के वलए खड 2.3 दखे ें। ं 2. इस प्रश्न के उत्तर के वलए भी खड 2.3 दखे ें। ं 3. इस प्रश्न क े उत्तर के वलए खड 2.4 दखे ें। ं 4. काव्य 5. सावहत्य 6. अज्ञये 7. अशोक रा◌ े के ललर उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 108 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 8. विश्वनार् 9.

Plagiarism detected: **0.03%** https://alphabetsinhindi.com/hindi-alphabets-wi… id: **294**

इस प्रश्न के उत्तर के वलए खड 2.6.3 देख।ें ं 10. पठन कौशल, लेखन कौशल, िाचन कौशल त◌ा श्रिण कौशल । 11. इस प्रश्न क े उत्तर के वलए खड 2.6.3 देख।ें ं 12. जनसचार से आशय उन सभी सिानों के अध्ययन एि विश्लेषण से ह ै जो एक सार् विशाल ं ं जनसख्या के सार् सपकथ स्◌ावपत करने के वलए प्रयक्त वकए जाते ह।ैं ु ं ं 13. डॉ० महद्रें वसह राणा ं 14. तीन 15. 1776 16. उदत मातथण्ड ं 17. अग्रेजी ं 18. राजा वशि प्रसाद वसह ं 19. समाचार सिा ु 20. (अ) (2) (ब) (1) (स) (3) 2.10 सदं भ थ ग्रंर् सची एवं सहयोगी ग्रंर् ू 1. वत्रपाठी, िमथ्य िज. प्रेमचद क◌ा सावहत्य : समीक्षा और मलयाकन, पष्ठ-55. ृ ू ं ं 2. पाडे, मनै ेजर. सावहत्य के समाजशास्त्र की भवमका, पष्ठ – 58. ृ ू ं 3. गप्त, गणपवतचन्द्र. सावहवत्यक वनबि’, पष्ठ -5. ृ ु ं 4. राणा, महद्रें वसह. प्रयोजनमलक वहदी के आिवनक आयाम, पष्ठ–235-236. ृ ू ु ं ं 5. सावहत्य की पररभाषा, http://vle.du.ac.in/dandi/mod/book/print.Ph p?id=12741&chapterid=27064 retrieved from www.google.com on 15/02/17. 6. सावहत्य की पररभाषा, http://vle.du.ac.in/kuntak/mod/book/print. Php?id=12745&chapterid=27063 retrieved from www. google. com on 15/02/17. 7. सावहत्य की पररभाषा, http://vle.du.ac.in/vishvanatha/mod/book/ print.php?id=12749&chapterid=27034 retrieved from www. google. com on 15/02/17. 8. सावहत्य की पररभाषा http://vle.du.ac.in/rakshekhara/mod/book/ print.php? id =12541&chapterid=26064 retrieved from www.google.com on 15/02/17. उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 109 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 9. सावहत्य की पररभाषा , किंद्र रविद्र, http:// gadyakosh. org/ gk/ सावहत्य /भाषा की ं पररभाषा/”हररऔ”. 2.11 तनबिात्मक प्रश्न ं 1. सावहत्य को पररभावषत करते हए भाषा एि सावहत्य के सबि पर एक वनबि वलवखए । ु ं ं ं ं 2. भाषा एि सावहत्य के मध्य अतर को स्पष्ट कीवजए । ं ं 3. भाषा वशक्षण म ें वहदी सावहत्य की भवमका का विस्तत िणनथ कीवजए । ृ ू ं 4. कविता

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… + 3 resources! id: **295**

के माध्यम से भाषा के वकन-वकन पक्षों का वशक्षण वकया जा सकता ह?ै 5. कविता के माध्यम से भाषा वशक्षण की एक पाठय योजना प्रस्तत कीवजए । ृ ु 6. जनसचार माध्यमों को पररभावषत करते हए भाषा वशक्षण म ें जनसचार माध्यमों क

ी भवमका का ु ू ं ं विस्तत िणनथ कीवजए । ृ 7. भाषा कक्षाकक्ष म ें समाचार-पत्र की उपयोवगता को स्पष्ट कीवजए । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 110 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इकाई 3 - हिंदी भाषा ति हिंदी सावित्य के ववविभन्न ववधाओ ं का विक्षण 3.1 प्रस्तािना 3.2 उद्दश्े य 3.3 पद्य वशक्षण 3.3.1 स्◌िरूप,विषय एि इवन्द्रयों की ग्राह्यता के आिार पर काव्य के भेद ं 3.3.2 कविताओ के चयन के वलए कछ सके त ु ं ं 3.3.3 कविता वशक्षण के उद्दश्े य 3.3.4 कविता वशक्षण की विवियाँ 3.4 गद्य वशक्षण 3.4.1 गद्य पाठ के रूप 3.4.2 गद्य वशक्षण के उद्दश्े य 3.4.3 गद्य की वशक्षण विवि 3.5 व्याकरण वशक्षण 3.5.1 व्याकरण वशक्षण के उद्दश्े य 3.5.2 व्याकरण वशक्षण की विवियाँ 3.6 रचना वशक्षण 3.6.1 रचना वशक्षण के उद्दश्े य 3.6.2 उद्दश्े य एि स्◌िरूप की दृवष्ट से रचना के भेद ं 3.6.3 रचना वशक्षण विाएँ एि वशक्षण विवि ं 3.6.4 रचना का सशिोन ं 3.7 साराश ं 3.8 शधदिाली 3.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 3.10 सन्दभथ ग्रन्र् सची ू 3.11 वनबिात्मक प्रश्न ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 111 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 3.1 प्रस्तावना िास्ति म ें वशक्षा का एक भाग भाषा वशक्षण भी ह ै । वशक्षण शधद का अर्थ ह ै वशक्षा दने ा यानी ज्ञान प्रदान करना अ◌र्ाथत कशलता उत्पन्न करना । भाषा वशक्षण का प्रमख उद्दश्े य ह ै वशक्षा

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **296**

◌र्ी को भाषा व्यिहार में ु ु कशल बनाना, प्रिीण करना भाषा व्यिहार की यही कशलता या प्रिीणता भाषा के व

िवभन्न कौशलों य◌ा ु ु श्रिण, भाषण, पठन, िाचन त◌ा वलखना के सामवहक विकास पर वनभरथ ह ै ।भाषा पर अविकार का ू अर्थ ह ै जिीन के विवभन्न व्यिहार क्षेत्रों म ें उस भाषा का कशलतापिकथ प्रयोग कर सकना । वशक्षक को ु ू विद्यावर्थयों के बौवद्धक और मानवसक विकास के अनसार भाषा वशक्षण का कायथक्रम रखना चावहए। भाषा ु सीखने का स्◌िाभाविक एि मनिोज्ञै ◌ावनक क्रम ह ै सनना, बोलना, पढ़ना, वलखना बालक के अदर भाषा ु ं ं सीखने की स्◌िाभाविक प्रिवत्त होती ह।ै अतः उसे भाषा स्◌िभाविक विवि से ही वसखाई जानी चावहए। ृ बालक 6 माह की अिस्◌ा से बोलना प्रारभ कर दते ा ह।ै व्यस्कों को बोलते दखे

कर त◌ा उनके सपकथ में ◌ं ◌ं आने के कारण और अनकरण के कारण बालक भाषा बोलना सीख जाता ह।◌ै सपकथ और अनकरण के ◌ु ◌ु ◌ं पित बार-बार अभ्यास करने से उन्हीं शधदों की आिवत्त मात्र से बोलना सीखता ह।◌ै यवद हम बालक के ◌ृ मानवसक विकास का सक्ष्म वनरीक्षण करें तो विवदत होता ह◌ै की भाषा सीखने का भी क्रम होता ह।◌ै ◌ू मानवसक

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **297**

विकास के सार्-सार् भाषा सीखने की शवक्त भी बढ़ती जाती ह।◌ै मानवसक विकास के सार

◌् स्तर अनकल भाषा ज्ञान के स्तर के क्रम का भी ध्यान म◌ें रखना चावहए। भाषा वशक्षण के दो मनोविज्ञान ह◌ै ◌ु ◌ू एक भौवतक और दसरा मानवसक । ◌ू भाषा कौशल एक या दो क्षमताओ तक ही सीवमत नहीं ह◌ै ि◌रन इसने चारों क्षमताओ को सवम्मवलत ◌ं ◌ं करते ह◌ैं । यह श्रिण कौशल, वशक्षण श्रिण कौशल, वशक्षण मौवखक अवभव्यवक्त, कौशल वशक्षण, पठन या ि◌ाचन कौशल, वशक्षण अवलवखत कौशल वशक्षण चारों क्षमताओ का प्रिीणता स्तर बढ़ता जाएगा तो ◌ं विद्या◌र्ी भाषा पर पण थ अविकार या पण थ लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। भाषा कौशल के विकास क्रम म◌ें जब ◌ू ◌ू बालक सावहत्य का अध्ययन करने लगता ह◌ै तो सावहत्य की वकस ि◌ा के प्राप्य उद्दश्◌े य,लक्ष्य म◌ें अतर के ◌ं कारण वशक्षण विवि,प्रश्न वनमाणथ ,मलयाकन आवद समस्त प्रवक्रया म◌ें अतर आ जाता ह◌ै । सावहत्य की सभी ◌ू ◌ं ◌ं ि◌ाओ को मख्यतः चार भागों - गद्य,पद्य,व्याकरण और रचना म◌ें बाँटा गया ह◌ै । ◌ु ◌ं 3.2 उद्दश्◌े य इस इकाई का अध्ययन करने के पित आप - 1. ि◌े पद्य वशक्षण की आिश्यकता एि काव्य के वभन्न रूपों का ि◌णनथ कर पायेंग◌े । ◌ं 2. ि◌े उच्च माध्यवमक स्तर पर काव्य चयन के आिार बता पायेंग◌े । 3. उनम◌ें पद्य,गद्य,व्याकरण एि रचना वशक्षण की महत्ता के ि◌णथन की क्षमता विकवसत होगी । ◌ं 4. ि◌े पद्य,गद्य,व्याकरण एि रचना वशक्षण के उद्दश्◌े यों का ि◌ीकरण कर पायेंग◌े । ◌ं 5. उनम◌ें विवभन्न ि◌ाओ के वशक्षण-विवियों,प्रणावलयों,उपागमों का बिो विकवसत होगा । ◌ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 112 ◌ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 3.3 पद्य तशक्षण सावहत्य का ही एक अग कविता ह◌ै जो मानिीय भिों को सहज रूप से अवभव्यक्त करता ह,◌ै अ◌ि◌ा सख- ◌ु ◌ं दख की भि◌ाशे मयी अिस्◌ा के स◌ि◌र सिाना का उपयक्त पदों म◌ें प्रकाशन ही कविता ह◌ै । कविता म◌ें भि◌ा ◌ु ◌ु तत्◌ि, कलपना तत्◌ि और बवद्ध तत्◌ि तीनों का सवम्मश्रण होता ह।◌ै काव्य मनष्ट्य को उस ि◌ारातल पर ल◌े ◌ु ◌ु जाता ह◌ै जहा ि◌ह

Quotes detected: **0%** id: **298**

‘स्◌ि’

पर

Quotes detected: **0%** id: **299**

‘पर’

की भि◌ाना से रवहत होकर अपने को के ि◌ल मनष्ट्य अनभि करता ह◌ै ◌ु ◌ु ◌ं ।हृदय की मक्तिास्◌ा के वलए मनष्ट्य की ि◌ाणी जो शधद ि◌ावन करती ह◌ै ि◌ही कविता ह◌ै ।सावहत्य के ◌ु ◌ु आचायों ने रसात्मक ि◌ाक्य को ही कविता कहा ह◌ै ।

Quotes detected: **0%** id: **300**

‘काव्य प्रकाश’

के रचवयता आचायथ मम्मट के अनसार विभि, अनभि एि व्यवभचारी भि◌ा द्वारा व्यक्त स्◌ाई भि◌ा रस कहलाता ह◌ै । भि◌ा ही रस का ◌ु ◌ु ◌ं आिार ह◌ै । मन के विकार भि◌ा कहलाते हैं, भि◌ा का आश्रय हृदय होता ह◌ै । यह स्◌ाई भि◌ा के रूप में ि◌ासना के रूप म◌ें मानि हृदय म◌ें सदा विद्यमान होते हैं। भि◌ा के दो रूप ह◌ैं 1. स्◌ाई भि◌ा और 2. सचारी ◌ं भि◌ा । सस्कत के आचायों ने काव्य के भदे पर भी विचार वकया ह◌ै उन्होंने काव्य का विभाजन छद के आिार पर ◌ृ ◌ं ◌ं वकया ह◌ै । छद के आिार पर काव्य दो प्रकार का ह◌ै 1.गद्य 2. पद्य ◌ं यवद गद्य म◌ें रमणीयता रचनात्मकता और ध्◌ि◌न्यात्मकता ह◌ै तो ि◌ह भी काव्य के समान आनदमयी ह।◌ै ◌ं कादबरी म◌ें यत्र-तत्र काव्य के गण विद्यमान ह।◌ै यद्यवप यह गद्य का उत्कष्ट ग्रन्◌ थ ह◌ै । वहदी म◌ें काव्य की ◌ृ ◌ु ◌ं ◌ं परपरा से सभी पररवचत ह।◌ैं ◌ं 3.3.1 स्वरूप,हवषय एव इहन्द्रयों की ग्राह्यता के आिार पर काव्य के भेद ◌ां स्◌ि◌रूप के आिार पर काव्य के वनम्नवलवखत भदे है। a. महाकाव्य b. रूपक c. आख्यावयका d. क◌ि◌ा e. मक्तक ◌ु विषय के आिार पर काव्य के चार भदे वकये गये ह◌ैं – a. ख्यातित्त ◌ृ b. कवलपत c. कलावश्रत d. शास्त्रावश्रत इवन्द्रयों की ग्राह्यता के आिार पर काव्य के दो भदे वकये गये ह◌ै – a. दृश्य काव्य b. श्रव्य काव्य उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 113 ◌ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 वहदी म◌ें काव्य का यह विभाजन सामान्य रूप से ही समझना चावहए । वहदी काव्य की परम्परा म◌ें इस ◌ं ◌ं विभाजन को सदि आिार नहीं माना गया ह◌ै । 3.3.2 कहवताओ के चयन के हलए कछ सके त◌ु ◌ां ◌ां उच्चतर माध्यवमक कक्षाओ को पढ़ाई जाने ि◌ाली

Plagiarism detected: **0.02%** https://mycoaching.in/barahkhadi id: **301**

कविताओ का चयन करते समय वनम्नवलवखत बातों ◌ं ◌ं का ध्यान रखा जाना चावहए 1. सकवलत कविताओ क

◌े रस और सौंदयथ का आस्◌ि◌ादन छात्र सहज रुप से कर सकें इसमें ◌ं ◌ं अध्यापक की ◌ि◌ोड़ी ही सहायता की आिश्यकता हो । 2. वहदी के प्रमख प्राचीन और नि◌ीन कवियों और काव्य ि◌ाराओ का पररचय द◌े सकें । ◌ु ◌ं ◌ं 3. सकवलत कवियों की य◌ि◌ासभि प्रवतवनवि रचनाए हों । ◌ं ◌ं ◌ं 4. खड़ी बोली के अवतररक्त वहदी की अन्य सावहवत्यक बोवलयों का भी प्रवतवनवित्◌ि करें । ◌ं 5.

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **302**

छात्रों के चररत्र को उदार बनाने िाली हो । 6. विवभन्न रसों अलकारों छदों और काव्य शवै लयों का पररचय द े सकें । ं ं 7. छात्रों क

ी जिीन दृवष्ट को विशाल और उनकी अनभवत और सिदे नशीलता को विस्तत और ृ ु ू ं गहरा बना सकें । 8. उनम ें सजनशीलता

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **303**

का विकास करने िाली हो तर्ा कछ अपिादों को छोड़कर आकार म ें इस ृ ु प्रकार क

ी हो वक उन्ह ें एक दो कालाश म ें पढ़ाया जा सके । ं 9. कविताओ के कछ प्रमख विषय वनम्नवलवखत हो सकते ह ैं नीवत, भवक्त, दशे - प्रेम, जिीन- दशनथ , ु ु ं प्रकवत, सौंदयथ, िीरता, हास्य-विनोद, प्रेरणा, नर-नारी समानता, छोटे पररिार का प्रवतमान, ृ रहस्यिाद, हमारी समान सास्कवतक िरोहर, पयाथिरण सरक्षण ृ ं ं 3.3.3 कहवता हिक्षण के उद्देश्य कविता कलपना और मनोिगे ों द्वारा जिीन की व्याख्या करती है। उसकी िवत्त रागात्मक होती ह ै ।िह ृ मानि, प्रकवत या जड़ तीनों स े भिा ग्रहण कर मावमकथ हृदयगामी रुप से सत्य और आनद की व्याख्या का ृ ं प्रयत्न करती ह ै । अतः कविता का लक्ष्य कालपवनक और भिा जगत म ें विचरण करने का सिान प्रस्तत ु करता ह ै । कविता उपभोग की िस्त ह ै ज्ञानिथन की नहीं। अतः कविता पढ़ाते समय अत्यविक व्याख्या, ु शधदार्थ, व्याकरण आवद का स्पष्टीकरण की विशषे वचता नहीं करनी चावहए। क्योंवक इससे रसानभवत में ु ू ं व्याघात उत्पन्न होता ह।ै लेवकन कहीं-कहीं कविता के अर्थ को समझना एि रसानभवत के वलए अर्थ का ु ू ं बताना आिश्यक हो जाता ह।ै परत के िल उन्हीं शधदों का स्पष्टीकरण करना चावहए वजसके द्वारा ु ं रसानभवत एि आनद उपलवधि म ें बिा उत्पन्न होती ह।ै कवि के अनसार कविता को वबना अच्छी तरह ु ू ु ं ं समझ े हए भी उसका आनद वलया जा सकता ह ै । ु ं कविता हृदय की सिी सच्ची अवभव्यवक्त ह।ै उसम ें हृदय का श्रोत फटकर बाहर वनकलना चाहता ह।ै ू अतः उसे वनाथि गवत से ही पढ़ना चावहए अन्यर्ा समस्त सौंदयथ नष्ट हो जाएगा। कविता हृदय की िस्त ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 114 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 ह,ै अनभवत की अवभव्यवक्त ह।ै अतएि कविता का उद्दश्े य मानि- हृदय की रागात्मक प्रिवतयों का ृ ु ू सशिोन सस्कार और उसकी सदिवतयों का उद्भिोन ह।ै उसके उद्दश्े य ह ैं -कवि भिनाओ और ृ ं ं ं अनभवतयों

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **304**

का छात्रों को यर्ार्थ रूप म ें अनभि कराना तर्ा आस्िादन कराना ।प्रारवभक कक्षा तक ु ू ु ं अध्यापक को सदिै इसी उद्दश्े य पर दृवष्ट रखनी चावहए अस्त कविता वशक्षण के समय ऐसा िातिारण ु उपवस्त करना आिश्यक ह ै वजससे छात्र का ह

ृदय तन्मय होकर कवि के भिा का अनगमन एि अनभि ु ु ं कर सके । कविता हमारे प्राणों का सगीत ह।ै अतः कविता का पाठ इस प्रकार मिर सस्िर प्रभिापण थ हो वजससे छात्र ु ू ं कविता का सगीत, मिायथ उसकी कालपवनक उड़ान, उसके और सिारण सिगात्मक िातिारण का ु ं ं अनभि कर सके । कवि और कक्षा म ें तादात्म्य स्ावपत कर दने ा ही सफल अध्यापक की विशषे ता ह।ै ु उपयथक्त विचे न के आिार पर कविता वशक्षण के वनम्नवलवखत उद्दश्े य पर ध्यान दने ा अध्यापक के वलए ु आिश्यक ह-ै a. लय,ताल और भिा के अनसार कविता पाठ करना। ु b. कविता म ें रुवच उत्पन्न कर काव्य रचना के वलए प्रोत्सावहत करना। c. सहानभवत क्षेत्र के विस्तार तर्ा उदात्त भिों के उत्पादन एि सिथन द्वारा उन्ह ें सतवलत एि लोक ु ू ु ं ं ं ं ं कलयाणकारी चररत्र के वनमाथण की प्रेरणा दने ा। d. कवि के भिा एि विचारों के सार् पण थ तादात्म्य स्ावपत करा कर अलौवकक आनद की ू ं ं अनभवत कराना। ु ू e. छात्रों म ें कवि के भिों, कलपनाओ तर्ा अवभव्यवक्तयों के सौंदयथ की परख की योग्यता उत्पन्न ं करना। f. भिा- भवगमाओ तर्ा सृि के उतार-चढ़ाि के सार् कविता पाठ का अभ्यास कराना। ं ं g. विविि कविता शैवलयों का पररचय करा कर उन्ह ें अपने योग्य शलै ी

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **305**

के विकास म ें सहायता दने ा। h. सावहत्य के सार् पररचय कराते हए उसम ें बालकों की ऐसी स्ाई रुवच का विकास

करना वजससे ु उनम ें स्िाध्यायशीलता उत्पन्न हो । उपयथक्त उद्दश्े यों को दृवष्ट म ें रखते हए कविता वशक्षण होना चावहए। कविता का वनाथचन छात्रों के दवै नक ु ु जिीन से सबवित हो िह उसके अनभि से परे की बात ना हो। उनकी व्यक्त अनभवतया ऐसी हो वजन्ह ें ु ु ू ं ं ं बालक ने अपने जिीन म ें अनभि वकया हो । ु 3.3.4 कहवता हिक्षण की हवहिया ां उपयथक्त उद्दश्े यों को परा करने के वलए कविता वशक्षण की अनेक विविया प्रचवलत ह ैं वजनम ें से कछ इस ु ू ु ं प्रकार ह-ैं 1. गीत और अवभनय प्रणाली 2. अर्थबिो प्रणाली 3. व्याख्या प्रणाली 4. खड अन्िय प्रणाली ं 5. व्यास प्रणाली 6. तलना प्रणाली 7. समीक्षा प्रणाली ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 115 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1. गीत और अहभनय रणाली- यह प्रणाली प्रारवभक कक्षा म ें बाल गीत के वलए प्रयोग में लाई ं जाती ह ै । कछ गीतों के अर्थ का कोई महत्ि नहीं होता। के िल बालकों को सस्िर बनाना , ताल ु म ें लाना और सगीत से पररचय कराना ही इन का उद्दश्े य ह ै । ं अवभनय प्रिान पदों म ें बालक उवचत अग-सचालन के द्वारा भिा व्यक्त करना भी सी

Plagiarism detected: **0.02%** https://meaninginhindi.net/hindi-alphabets/ id: **306**

ख जाता ह।ै ं ं बालक को पद्य के आिार पर ही सामवहक अवभनय वसखाना चावहए । इस प्रकार

के अवभनय ू द्वारा बालकों की कविताओ में रुवच उत्पन्न होगी, फती आएगी, कविताए भी कठस्र् हो जाएगी ु ं ं ं ं और खले -खले म ें ही उवचत अग सचालन द्वारा भिा व्यक्त करने की भी विवि आ जाएगी। ं ं 2. आिबिो रणाली- इस प्रणाली म ें वशक्षक स्ियम कविता का अर्थ बताता रहता है। बालक की रुवच त ा रसानभवत का कोई ध्यान नहीं रखा जाता अतः यह प्रणाली दवषत और त्याज्य ह ै । ु ू ू 3. व्याख्या रणाली- इस प्रणाली म ें अध्यापक एक- एक पद लेकर उसका अर्थ करता हआ कवि ु का दाशवथ नक मत प्रिवत्त ,उसकी रचना शलै ी ,पररवस्र्वत ,कविता की भाषा, अलकार, भिा ,रस ृ ं आवद की व्याख्या करते हए पद्य का अर्थ स्पष्ट करता चलता ह।ै यवद उसम ें कोई अतकथ ा होती ु ं ह ै तो उसका भी ज्ञान करा दते ा ह।ै इस प्रणाली का उपयोग माध्यवमक और उच्च कक्षाओ म ें ही ं उवचत ह ै । 4. खड - अन्वय रणाली- इसको प्रश्नोत्तर प्रणाली भी कहते ह।ैं यह प्रणाली उन पदों को पढ़ाने के ां काम आती ह,ै वजनम ें विशषे णों की भरमार हो, भिा की भीड़ हो, घटनाओ की घटा हो और एक ं बात का अर्थ स्पष्ट वकए वबना स्पष्टता न आती हो । इस प्रणाली का प्रयोग के िल िणनथ ात्मक त ा ऐवतहावसक पद्यों को पढ़ाने म ें वकया जाता ह ै । 5. व्यास रणाली- यह मख्यतः उच्च श्रेणी की भिा प्रिान कविताओ को पढ़ाने के वलए प्रयोग ु ं की जाती ह ै । इस प्रणाली म ें पद की भाषा और भिा दोनों की दवष्ट से परखा जाता है। भिा के स्पष्टीकरण के वलए अनेक उदाहरणों दृष्टातों सवक्तयों त ा क ाओ का प्रयोग कर अध्यापक ू ं ं व्याख्या करता ह।ै भाषा की दवष्ट से विचार करते समय अध्यापक एक एक शधद उसकी उपादये ता, शधद बल, दोष त ा िाक्य विन्यास का स्पष्टीकरण करता चलता ह।ै अतः इस प्रणाली म ें अध्यापक को विषय का गहनज्ञान अपेवक्षत ह ै । बालकों की रुवच उत्साह त ा उललास को बनाए रखने के वलए अध्यापक को कशल अवभनेता भी

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **307**

होना चावहए। भिात्मक ु कविताओ म ें इसी प्रणाली का प्रयोग उत्तम माना जाता ह

।ै ं 6. तलनायमक रणाली- इस प्रणाली में सम भाषा कवि, वभन्न भाषा कवि की तलना त ा भिा ु ु तलना द्वारा साम्य और असाम्य दोनों का ही विचे न वकया जाता ह ै । सार् ही एक ही कवि ु अपने बनाए हए विवभन्न काव्यों म ें एक ही बात कई भिा या उद्दश्े य से कहता ह ै । ऐसे भिा या ु िणनथ ों को तलनात्मक दवष्ट से पढ़ना चावहए । इससे विद्यावर्थयों म ें विचे न त ा तकथ शवक्त

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **308**

का ु विकास होता ह,ै ज्ञान का विस्तार होता ह।ै कवि के उद्दश्े य, कविता के विवभन्न स्िरूपों त ा कभी शलै ी का भी पररज्ञान हो जाता ह

ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 116 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 7. समीक्षा रणाली- इस प्रणाली द्वारा अध्यापक

Quotes detected: **0%** id: **309**

‘ प्रश्नोत्तर विवि’

का आश्रय लेकर कवि की समीक्षा करता ह।ै त ा विद्यावर्थयों को आलोचना के वसद्धात बताकर सहायक पस्तकों की ु ं सहायता से समवष्ट रूप म ें एक कवि की रचनाओ अि ा कविताओ की समीक्षा करने को कहता ं ं ह ै । अतः यह प्रणाली उच्च कक्षाओ के वलए उपयोगी हो सकती ह ै । ं अभ्यास रश्न 1. स्िरूप के आिार पर काव्य-भेदों के नाम बतायें । 2. कविता वशक्षण की कछ प्रचवलत विवियों के नाम बतायें । ु 3.4 गद्य तशक्षण गद्य और पद्य म ें से पहले वकसका प्रादभाथि हआ ,यह कहना कवठन ह ै । पवडत करुणापवत वत्रपाठी के ु ं ु कर्न इस सन्दभ थ म ें ध्यान दने े योग्य ह ै । ि े कहते ह,ै “इस भावत नर-समाज ने पहले गद्य-सावहत्य का ं आविष्ट्कार वकया होगा,परन्त गद्य-सावहत्य से उसकी पण थ पवष्ट न हो सकी । अतः प्रभिोत्पादकता और ु ू ु रमणीयता की अवभिवद्ध करने के विचार से मनष्ट्य ने अपनी सावहवत्यक अवभव्यवक्त म ें सगीत तत्ि का ृ ु ं सवम्मश्रण कर उसे

Quotes detected: **0%** id: **310**

‘कविता’

नाम वदया । सगीत तत्ि से अनप्रावणत सावहत्य का यह रूप इतना लोकवप्रय ु ं हो गया वक इसके सामने गद्यात्मक आख्यावयका आवद का सावहत्य गौण हो गया । फलतः आज हम ससार के सभी प्राचीन सावहत्य म ें पद्य की ही प्रचरता पाते ह ैं ।” ु ं कहने का तात्पयथ यह ह ै की प्रतीक पाठ का मख्य विवशष्ट उद्दश्े य गद्य पाठ म ें हीं वनवहत होता ह ै । ु 3.4.1 गद्य पाठ के रूप गद्य पाठ विवभन्न प्रकार के हो सकते ह ैं । उनके वनम्न प्रकारों पर विशेष ध्यान वदया जाता है- a. सचनात्मक ू b. िणनथ ात्मक c. विचारात्मक d. भिात्मक i. सचनायमक गद्य पाठ- इसम ें विवभन्न

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 5 resources! id: **311**

प्रकार की सचनाए रहती ह ै जो दवै नक जिीन म ें हमारे ू ू ं वलए बड़ी उपयोगी वसद्ध होती ह ै । यह सचना ह ै अनेक प्रकार की होती ह

ैं । सभ्यता सस्कवत, ृ ू ं बीमारी, यात्रा, पि,थ तीर्थ स्र्ान, ि ैं ावनक अन्ि ेष ण आवद से सबवित सचनाओ के आिार पर ू ं ं ं हम अपने आचरण को सरल ि समाज उपयोगी बना सकते ह ैं । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 117 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग

I) CPS 4 ii. वणानायमक गद्य पाठ- िणनथ ात्मक गद्य पाठों म ें यात्रा, प्राकवतक दृश्य, यद्ध आवद का िणनथ ृ ु होता ह।ै वजनके आिार पर हम िणनथ करने की कला का विकास करते ह ैं । iii. हवचारायमक गद्य पाठ- सर, तलसी, कावलदास,' सभ्यता ि सस्कवत',' मानि और समाज' ृ ू ु ं आवद विषयों पर आलोचनात्मक वनबि हमारे मानवसक विकास म ें सहायक होते ह ैं । ं iv. भावायमक गद्य पाठ- रामलीला, दीनों पर प्रेम आवद पाठ छात्रों के हृदय को छते ह ैं ।

Quotes detected: **0%** id: **312**

' ताज',
,

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **313**

ू फतेहपर सीकरी' जसै े गद्यकाव्य भिात्मक ु वनबि वलखने की शैली से पररवचत कराना सरल होता ह ै । ं 3.4.2 गद्य हिक्षण के उद्देश्य भाषा वशक्षण के उद्दश्े यों म ें एक प्रमख उद्दश्े य ह ै वक छात्रों की व

िचारशवक्त म ें िवद्ध हो और अपने विचारों ृ ु को प्रभिी ढग से व्यक्त कर सकें त ा विवभन्न सावहत्यकारों द्वारा व्यक्त विचारों को सरलता से ग्रहण कर ं सकें । इस उद्दश्े य की प्रावप्त के वलए गद्य वशक्षण प्रभिी सिान ह।ै गद्य वशक्षण

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 2 resources! id: **314**

के सामान्य उद्दश्े य वनम्नवलवखत ह- 1. छात्रों के िणों, शधदों त ा िाक्यों के उच्चारण

म ें शद्धता उत्पन्न करना । ु 2. उनके विचारों त ा शधदों,रूढ़ोवक्तयों, लोकोवक्तया, सवक्तयों एि क ाओ के कोष का क्रमशः विकास ू ं ं ं करना । 3. वचतन म ें क्रमशः स्पष्टता, सगतता एि क्रमबद्धता उत्पन्न करना । ं ं ं 4. िाक्य म ें प्रयक्त शधद रूपों की शद्धता और अशद्धता समझने की स्तरोवचत योग्यता उत्पन्न करना । ु ु ु 5.

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **315**

छात्रों को सदर गद्यात्मक उद्धरणों के सकलन की प्रेरणा दने ा । ु ं 6. छात्रों के ह

ृदय म ें भाषा विषयक शद्धता के प्रवत गभीर ंिाानी का भिा उत्पन्न करना । ु ं 7. ज्ञान क्षेत्र एि ंविक

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **316**

के विकास द्वारा चररत्र वचत्रण करना । ं 8. विवभन्न लेखन शवै लयों का पररचय कराके लेखन शलै ी के विकास

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **317**

म ें उनकी सहायता करना । इस प्रकार, हम कह सकते ह ैं की गद्य वशक्षण के माध्यम से छात्रों के शधद एि सवक्त भडार म ें िवद्ध करना, ृ ु ं ं उवचत आरोह-अिरोह के सार् िाचन की योग्यता उत्पन्न करना, छात्रों क

ी विचार शवक्त म ें िवद्ध करना ृ एि विवभन्न लेखन शवै लयों से पररवचत कराना गद्य वशक्षण के उललेखनीय सामान्य उद्दश्े य ह ै । ं सामान्य उद्दश्े यों के अवतररक्त कछ विवशष्ट उद्दश्े य भी होते ह ैं । विद्यालय म ें जो गद्य पाठ पढ़ाए जाते ह,ैं ु उनम ें कछ पाठ विचारात्मक होते ह ैं तो कछ सचनात्मक, कछ िणनथ ात्मक, कछ भिात्मक, कछ ु ु ू ु ु ु क ात्मक त ा कछ चररत्र वनमाथणात्मक होते ह ैं । कछ पाठ व्यिहाररक ज्ञान पर आिाररत होते ह ैं । कछ ु ु ु अन्य पाठ िज्ञै ावनक, भौगोवलक अिि ा ऐवतहावसक विषयों पर आिाररत होते ह ैं । इन पाठों के अपन े विवशष्ट उद्दश्े य होते ह ैं । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 118 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 3.4.3 गद्य की हिक्षण हवहि भामह ने काव्यालकार म ें गद्य को

Quotes detected: **0.01%** id: **318**

" प्रकवत अनाकल श्रव्य शधदार्थ पद्धवत्त"

कहा ह ै । कछ विचारक गद्य ृ ु ु ं ृ और पद्य की भाषा म ें कोई अतर नहीं मानते, वकत दोनों म ें कछ अतर अिश्य ह।ै पद्य सिाारणतः ु ु ं ं ं छदोबद्ध रचना होती ह ै । कछ विचारकों की दवष्ट म ें गद्य और पद्य का भदे क तत्ि छद ह ै । नई कविता ु ं ं छद से मक्त ह,ै वकत िहा भी लय, गवत , प्रिाह, स्िराघात, सगीत, अर्थ की लय, अनभवत आवद तो ु ु ु ू ं ं ं ं विद्यमान रहते ही ह ैं । प्रवसद्ध समालोचक डी.डधलय.रेनी का कहना ह ै वक कविता बौवद्धक सजन करती ह,ै गद्य बौवद्धक वनमाथण ृ ु करता ह।ै हरबटथ रीड के अनसार भी कविता सजनात्मक अवभव्यवक्त (वक्रएवटि एक्सप्रेशन) ह ै और गद्य ृ ु वनमाथणात्मक अवभव्यवक्त (कस्रवक्टि एक्सप्रेशन) । सजन नतनता की उदभिाना ह ै और वनमाथण पहले ृ ू ं प्राप्त स्तिओ म ें व्यिस्र्ा लाना ह ै । भिन का नक्शा तैयार करना सजन ह ै , ईट, चना, गारा आवद को ृ ु ू ं व्यिवस्त करना वनमाथण। सावहत्य की विवभन्न ंविाओ म ें गद्य का स्ान महत्िपण थ ह ै ।

Quotes detected: **0.01%** id: **319**

' गद्य कीनाम वनकष िदवन्त'

उवक्त के ् ू ं ं ं अनसार गद्य को कवियों की कसौटी कहा गया ह ै । काव्य म ें अलकार, वपगल आवद के रूपों म ें कवियों ु ं ं के समक्ष कछ मागदथ शकथ तत्ि होते ह ैं वकत गवत म ें इनका होना आिश्यक नहीं ह ै । गद्य रचना म ें लेखक ु ु ं स्ितत्र रहता ह ै । स्ितत्र होने के नाते उसे बहत सिािान भी रहना पड़ता ह ै । काव्य म ें भाषण सबिी भल ु ू ं ं ं ं को यह मानकर स्ि ीकार कर वलया जाता ह ै की लय एि भिा की दृवष्ट से व्याकरण पर कवि का ध्यान ं नहीं गया, वकत गद्य म ें लेखक को व्याकरवणक त्रवट के वलए क्षमा नहीं वकया जाता और उसका दोष ु ु ं घोवषत कर वदया जाता ह ै । आज

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **320**

ज्ञान की प्रत्येक शाखा म ें विषय का विस्तार होता जा रहा ह ै । बीसिीं शताधदी म ें ज्ञान का विकास बड़ी द्रत गवत से हो रहा ह ै । सावहत्य के क्षेत्र

म ें भी कहानी, उपन्यास, वनबि,लेख आवद प्रचर मात्रा म ें रचे ु ं ु जा रह े ह ैं । इन विषयों

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… + 2 resources! id: **321**

का माध्यम काव्य नहीं हो सकता । इवतहास, भगोल नागररक शास्त्र, विज्ञान आवद ू का माध्यम गद्य ही होता ह ै । कहानी, नाटक, उपन्यास, लेख आवद भी गद्य म ें ही रचे जा रह े ह ैं । गद्य के माध्यम स

े ही हम अपने दवै नक जिीन म ें विचारों का आदान प्रदान करते ह ैं । इस दृवष्ट से गद्य का वशक्षण भाषा वशक्षण का अवनियथ अग बन जाता ह ै । ं गद्य के अतगतथ कछ पाठ द्रत पाठ

Plagiarism detected: **0.13%** https://hi.wikipedia.org/wiki/सीआईडी_(धारावाहिक) + 6 resources! id: **322**

के रूप म ें अध्यापन हते होते ह ैं । यह पाठ प्रायः कहानी के रूप म ें ु ु ं ु होते ह ैं और इन पाठों की वशक्षण विवि पर यहा विचार नहीं वकया जा रहा ह ै । कछ अन्य पाठ सिाद की ु ं ं शलै ी म ें वलख े होते ह ैं और उनका वशक्षण भी अन्य विवि से होना चावहए। यहा पर उन पाठों के विषय म ें ं विचार कर रह े ह ैं जो गभीर अध्यापन के वनवमत्त लेख या वनबि के रूप म ें वलख े होते ह ैं और

जो प्रायः ं ं सचनात्मक, ि णनथ ात्मक, विचारात्मक, भिात्मक और चररत्र वनमाथणात्मक होते ह ैं अि्रा ि ज्ञै ावनक, ू भौगोवलक, ऐवतहावसक विषयों पर आिाररत होते ह ैं । प्रस्तािना- गद्य वशक्षण का प्रारभ करने का प्रर्म सोपान हमारे समक्ष प्रस्तािना का होता ह ै । प्रस्तािना ं के वलए हम प्रार्वमक कक्षाओ म ें ि ाताथलाप से प्रारभ कर सकते ह।ैं कोई कहानी भी सक्षेप म ें सनाई जा ु ं ं ं सकती ह।ै वनम्न माध्यवमक कक्षाओ में भी ि ाताथलाप या कहानी के माध्यम से प्रस्तािना हो सकती ह ै । ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 119 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इस स्तर पर सबवित विषय पर प्रश्न भी वकए जा सकते ह।ैं प्रश्नों के अवतररक्त लेखक के पररचय स े भी ं ं प्रस्तािना हो सकती ह।ै प्रस्तािना के पिात पाठ के उद्दश्े य से छात्रों को पररवचत करा दने ा चावहए । ि ाचन- प्रस्तािना एि उद्दश्े य कर्न के पिात अध्यापक द्वारा उवचत आरोह-अिरोह का ध्यान रखते हए ु ं शद्ध उच्चारण सवहत विराम आवद वचन्हों का ध्यान रखते हए प्रभिापण थ ढग से आदश थ ि ाचन वकया जाता ु ु ू ं ह।ै आदश थ ि ाचन के पिात छात्रों द्वारा अनकरण ि ाचन करिाना चावहए। कछ छात्र सस्ि र ि ाचन करें और ु ु अध्यापक के आदश थ ि ाचन के समान शद्ध उच्चारण करने का प्रयास करें । वजस समय अध्यापक आदशथ ु ि ाचन करें अि्रा कवतपय छात्र अनकरण ि ाचन करें , शषे अपनी पस्तक को दखे ते हए मौन रूप से ु ु ु ि ाचन करते रह ें । समस्त छात्र मौन रूप से ि ाचन उस समय करें , जब कवठन शधदों की व्याख्या हो जाए। प्रार्वमक कक्षाओ म ें भी कभी-कभी अनिाचन की आिश्यकता पड़ सकती ह।ै जब वकसी कवठन गद्य ु ं खड के ि ाचन में छात्र कवठनाई का अनभि कर रह े हो तो अध्यापक एक पवक्त का पनः आदश थ ि ाचन ु ु ं ं करें और समस्त छात्र उस पवक्त का एकसार् ि ाचन करें। इससे कमजोर छात्र भी ि ाचन करने के वलए ं उत्सावहत होंग।े बाद म ें व्यवक्तगत रूप से अनकरण ि ाचन कराया जाए । ु आदश थ ि ाचन एि अनकरण ि ाचन के पिात कभी-कभी बिो परीक्षा के वलए प्रश्न वकए जा सकते ह ैं । ु ं ि ाचन के पिात गद्य खड के भिा को छात्र कछ समझ सके या नहीं, इसके वलए दो - एक प्रश्न कर वलए ु ं जाते ह,ैं तावक आग े कावठन्य वनिारण के वलए अध्यापक को यह पता हो जाए की छात्र ने वकतना समझा और उसकी कवठनाई के मख्य स्थल कौन-कौन से ह ैं । बिो- परीक्षा के प्रश्न कछ अध्यापक नहीं करते। ु ु यवद अध्यापक कक्षा के स्तर से पणरूथ पेण पररवचत ह ै और छात्रों की कवठनाई का सफलतापिकथ ू ू पिाथनमान लगा सकता ह ै तो बिो परीक्षा आिश्यक नहीं ह ै । ू ु कावठन्य वनिारण- ि ाचन के पिात गद्य वशक्षण का मख्य भाग कावठन्य वनिारण आता ह।ै प्रत्येक गद्य ु पाठ म ें कछ कवठन प्रश्न होते ह ैं । इन कवठन शधदों का स्पष्टीकरण आिश्यक ह ै । कवठन शधदों का ु स्पष्टीकरण कई प्रकार से वकया जाता ह।ै कछ प्रमख प्रविविया आग े दी जा रही ह,ै वजनके

Plagiarism detected: **0.08%** https://mycoaching.in/barahkhadi id: **323**

माध्यम से ु ु ं प्रार्वमक ि माध्यवमक कक्षाओ म ें कवठन शधदों का अर्थ बताया जा सकता ह ै - ं i. वचत्र वदखाकर- जसै े शर, चाप, पकज शधदों का अर्थ ि ाण, ि नष कमल के फल का वचत्र ु ू ं वदखाकर समझाया जा सकता ह ै । ii. प्रवतमवतथ वदखाकर- मीनाक्षी, अजता, एलोरा आवद का मॉडल वदखाया जा सकता ह

ै । ू ं iii. रेखा वचत्र द्वारा- यवद अध्यापक का श्यामपट कायथ अच्छा ह ै तो ि ह भाजन, गज, बक आवद शधदों का अर्थ बताने के वलए श्यामपट्ट पर रेखा वचत्र बना सकता ह ै । iv. मानवचत्र द्वारा- कोसल, मगि, प्रायद्वीप आवद शधदों का अर्थ समझाते हए

मानवचत्र का आश्रय ु वलया जा सकता ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 120 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 v. प्रत्यक्ष पदार्थ द्वारा- बीज, वलली, गलदाउदी शधदों का अर्थ बताने के वलए प्रत्यक्ष रुप से पदार्थ ु वदखाया जा सकता ह।ै यहा पर

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **324**

ध्यान रह े की पालत पशओ को नहीं ले जाना चावहए या वकसी ू ु ं ं ऐसे पदार्थ को नहीं ले जाना चावहए, वजससे कक्षा म ें तमाशा होने लग े । vi. सके त द्वारा-शीश, हस्त आवद शधदों का अर्थ इनकी ओर कक्षा म ें सके त करके बताया जा सकता ं ं ह ै । यहा पर ध्यान रह

े की गप्तागों की ओर सके त िवजतथ ह।ै ु ं ं ं vii. अवभनय द्वारा- पिारना , वनष्टकासन आवद शधद तदनकल वक्रया द्वारा समझाये जा सकते ह ैं । ू ू viii. पयाथय कर्न- जसै े कर, िसिरा, सयथ हा ्री का पयाथय वदया जा सकता ह।ै अनेक शधद दखे ने म ें ु ू ं पयाथय से लगते ह ैं वकत उनम ें से प्रत्येक का अपना विशषे अर्थ होता ह।ै बहत और अविक पयाथय ु ु ं ह ै वकत भिात्मक िाक्य में

Quotes detected: **0%** id: **325**

‘ अविक’

और सख्याचक िाक्य में प्रायः

Quotes detected: **0%** id: **326**

‘ बहत’

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **327**

का प्रयोग ु ु ं ं होता ह ै । भीगा और गीला पयाथय ह,ै वकत भीगा का प्रयोग सजीि के वलए और दोनों का प्रयोग ु ं वनजीि के वलए हो सकता ह ै । ठीक और सही पयाथय ह ैं पर सही का प्रयोग गलत के विलोम के अर्थ म ें और ठीक का प्रयोग उवचत के अर्थ म ें होता ह

ै । ix. सवि विच्छेद- जसै े अत्यविक, इत्यावद आवद शधदों को समझाने के वलए । ं x. समास विग्रह- जसै े दशानन, राजपरुष आवद शधदों को समझाने के वलए । ु xi. अर्थ कर्न- कभी कभी वकसी यवक्त का आश्रय ना लेकर सिी अर्थ बता वदया जाता ह ै जसै े- ु प्रयत्न = कोवशश। xii. िाक्य प्रयोग- जसै े िाित, मवछथत आवद शधदों का िाक्य म ें प्रयोग करके समझाया जा सकता ह ै । ृ ू ं xiii. व्याख्या- न्याय, पीवड़त, समाज आवद शधदों की व्याख्या करके समझाया जा सकता ह ै । xiv. अतकथ ्रा द्वारा- भगीरर् प्रयत्न, ध्रि वनिय जसै े शधदों को अतकथ ्रा के

Plagiarism detected: **0.06%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… id: **328**

स्पष्टीकरण द्वारा समझाना ु ं ं चावहए । इस प्रकार, शधदों का स्पष्टीकरण करने के वलए उपयथक्त विवि का आश्रय वलया जाता ह ै । कभी-कभी कछ ु ु महिारे या लोकोवक्तया आ जाती ह ैं । उनका भी ह ै स्पष्टीकरण ह

ोना आिश्यक ह ै । यवद कोई िाक्य जवटल ु ं प्रतीत हो रहा ह ै तो उसे भी इसी सोपान म ें समझा दने ा चावहए । कावठन्य वनिारण के पिात प्रार्वमक कक्षाओ म ें अध्यापक पनः आदश थ िाचन कर सकता ह ै और ु ं कवतपय छात्रों द्वारा अनकरण िाचन कराया जा सकता ह ै । माध्यवमक कक्षाओ म ें इस स्तर पर मौन ु ं िाचन ही

Plagiarism detected: **0.09%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **329**

होना चावहए । प्रार्वमक कक्षाओ म ें भी विकलप से मौन िाचन कराया जा सकता ह ै । ं विश्लेषण- इसके पिात प्रमख विचारों का विश्लेषण होना चावहए । यह कायथ प्रश्न उत्तर के माध्यम से होना ु चावहए। प्रश्न छोटे और उवचत भाषा म ें हो त ्रा छात्रों से पण थ िाक्य म ें ही उत्तर वलए जाए । सभी प्रमख ू ु ं पाठय वबदओ पर प्रश्न होने चावहए

। इस प्रकार प्रश्न उत्तर के माध्यम से विचारों का विश्लेषण हो जाना ् ं ं ु चावहए । विचार विश्लेषण के पिात पनः अध्यापक द्वारा आदश थ िाचन और छात्रों द्वारा सस्िर िाचन हो । यवद दो ु अवन्िवतयाँ हो तो दोनों के वलए अलग से आदश थ िाचन, अनकरण िाचन, कावठन्य वनिारण, मौन ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 121 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 िाचन त ्रा विचार विश्लेषण हो । पनः िाचन करने के पिात दोनों अवन्िवतयों का मौन िाचन करा ु वदया जाए और अत म ें दोनों अवन्िवतयों पर आिारत कछ पनरिावत प्रश्न पछे जाए । ृ ु ु ू ं ं अभ्यास रश्न 3. कावठन्य-वनिारण की कछ यवक्तयों के नाम बतायें । ु ु 4. गद्य और पद्य म ें मल अतर का आिार बतायें । ू ं 3.5 व्याकरण तशक्षण वहदी भाषा वशक्षण

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 6 resources! id: **330**

म ें व्याकरण का विशेष महत्त्ि ह ै ।व्याकरण के ज्ञान से ही भाषा म ें बोलने वलखने की ं शद्धता आ सकती ह ै ।भाषा की अशवद्धय व्याकरण के द्वारा ही दर की जा सकती ह ै ।व्याकरण के ज्ञान के ु ु ू वबना भाषा के प्रयोग म ें उच्रखलता,वनरकशता , अव्यिस्ा और अशवद्ध आ जाती ह ै ।व्याकरण भाषा ु ु ं के प्रचेत रूप और प्रिवत्तयो का ज्ञान दते ी ह ै ।इसम े भाषा के प्रयोग

और अर्थ बिो म ें सांवि रहती ह ै ृ ु ।अतः भाषा वशक्षण

Plagiarism detected: **0.03%** https://meaninginhindi.net/hindi-alphabets/ id: **331**

म ें व्याकरण वशक्षण महत्िपण थ ह ै । आचायथ सीताराम चतिदे ी ने कहा ह ै वक ू ु

Quotes detected: **0.04%** id: **332**

“व्याकरण की वशक्षा,भाषा की वशक्षा का एक आिश्यक एिं अपररहायथ अग ह ै ।भाषा को शद्ध बनाये ु ं ं रखने का काम वसफथ व्याकरण का ही ह”

ै । आवद काल म ें मानि न े अपने विचारों के आदान प्रदान के वलए जो माध्यम बनाया ि ो आज भी प्रचवलत ह ै । इसी का नाम भाषा ह ै आवदकाल म ें भाषा का स्िरूप साके वतक रहा होगा परन्त सभ्यता

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **333**

के ु ं विकास के सार् ही इसके स्िरुप म ें भी पररितथन आया । ित्तमथ ान समय म ें भाषा मौवलक ि वलवखत रूप म ें प्रचवलत ह ै और इसके भी कई रूप ह ै । भाषा क

े उन रूपों म ें वनयवमतता एिं वस्रता लाने के वलए वनयम ं बनाये गये ह ै इन्ही वनयमों को व्याकरण कहते ह ै ।डा.बद्रीनार् कपर के अनसार –

Quotes detected: **0.02%** id: **334**

‘वकसी भाषा की बोलने ू ु ि वलखने के वनयमो की व्यिवस्त पद्धवत का नाम ही व्याकरण ह’

ै । 3.5.1 व्याकरण हिक्षण के उद्देश्य 1. व्याकरण वशक्षण की सहायता से बालको को वहदी

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **335**

भाषा की विवभन्न ध्ि वनयों का ज्ञान दने ा । ं 2. व्याकरण वशक्षण द्वारा बालकों म ें रचना त ा सजनात्मक पद्धवत ि प्रिवत्त का विकास करना । ृ ृ 3. भाषायी कौशल पढ़ना , वलखना ,बोलना त ा सनना का विकास

व्याकरण से ही सम्भि ह ै । ु 4. बालको को शद्ध भाषा के प्रयोग को सीखना सार् ही उनम े ऐसी योग्यता विकवसत करना वजसमे ु ि े भाषा की अशद्धता को समझ सकें । ु 5. बालको को भषा से सम्बवित वनयमों का ज्ञान कराना । ं 6. बालकों म ें भाषा की शद्धता के प्रवत आस्ा विवक्सत करना । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 122 ु

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **336**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 7. बालको म ें ि ज्ञावनक दवष्टकोण , वचन्तन ि मनन –शवक्त का विकास करना । 8. बालको म ें व्याकरण वशक्षण द्वारा मानवसक अनशासन स्ावपत करना । ु 9. बालको को भाषा के गण-दोषों की परख करने योग्य बनाना । ु 10. भाषा के व्याकरण सगत रूप को सरवक्षत रखना । ु ं 11. बालको को ि णों शधदों और ि ाक्यों के शद्ध और सही रूप की वशक्षा दने ा तावक भाषा को ु व

ि कवत से बचाया जा सके । ृ 12. व्याकरण वशक्षण से भाषा म ें वनयवमतता और स्ावयत्ि लाकर उनके सिमथ ान्य रूप को सरवक्षत ु रखना । 13. व्याकरण के व्याहाररक पक्ष पर सैद्धावतक पक्ष की अपेक्षा अविक बल दने ा , वजससे व्याकरण ं वशक्षण नीरस न बन पाए । अग्रेज विद्वान पोकाक त ा भारतीय विद्वान लज्जा शकर के विचार के अनसार

Quotes detected: **0.03%** id: **337**

“व्याकरण की ु ं ं वशक्षा का उद्दश्े य बालक की भाषा को ि ज्ञावनक दवष्टकोण से देखने म ें प्रिीण बनाना होना चावहए।”

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 3 resources! id: **338**

3.5.2 व्याकरण हिक्षण की हवहियाँ व्याकरण का विषय प्रायः बालको को शष्टक ि नीरस लगता ह ै ।बालको का सावन्नध्य व्याकरण की ऐसी ु अमनोज्ञावनक विवियों से कराया जाता ह ै जो उनके वलए अरुवचकर होती ह ै ।व्याकरण वशक्षण म ें आनद ं का भि लाने हते उनकी वशक्षण विवियों म ें उपयक्त पररितथन लाना होगा वजससे व्याकरण क

ी वशक्षा में ु ु सजीिता आ सके त ा भाषा-ससग थ के सार् उसे रुवचपण थ वसखाया जा सके । ू ं व्याहाररक रूप से व्याकरण वशक्षण को तीन रूप म ें बाँटा गया ह ै – 1. बालकों को व्याकरण के वनयम बता वदए जाये और ि े उन वनयमों का स्मरण करें ि प्रयोग करें । 2. बालकों को अविक-से-अविक प्रयोग कराये जाए ँ और ि े उन वनयमों की खोज स्ि य करें । ं 3. तीसरा रूप बालकों को व्याकरण की वशक्षा अलग से न दके र भाषा के सार् ही द े दी जाये । इसे भाषा-ससग थ या समिाय विवि कहते ह ै । ं हम वनम्न महत्िपण थ प्रणावलयों का विस्तत अध्ययन करेंग े – ृ ू a. हनगमन रणाली या सि रणाली- यह प्रणाली सिाथविक प्रचवलत प्राचीन प्रणाली ह ै आज भी ू

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 10 resources! id: **339**

इसका प्रयोग वकया जाता ह ै ।इसम े व्याकरण वनयमों-उपवनयमों को सत्रबद्ध कर बालकों स े ू रटाया जाता ह ै ।इसम ें बालको को व्याकरण के वनयम पहले बता वदए जाते ह ै और उन उदाहरणों द्वारा वनयमों को प्रयोग करना वसखाया जाता ह ै । जसै े हम े सवि का ज्ञान

दने ा ह ै तो ं सिप्रथ र्म सवि की पररभाषा बतायेंग े जसै े –

Quotes detected: **0.04%** id: **340**

“सवि दो स्र ि ए व्यजनों के समीप आने पर उनसे ं ं ं ं बनने ाला ततीय ि ण थ या शधद म ें जो पररितथन होता ह ै ि ह सवि ह ै ।”

उसके बाद कछ ि ाक्य या ृ ु ं शधद बोलकर या वलखकर बालकों द्वारा उनम े से सवि शधदों को छटाया जाता ह ै । इसी प्रकार ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 123 ु हिन्दी का हिक्षणास्त्र (भाग I) CPS 4 सज्ञा के वलए पररभाषा

Quotes detected: **0.02%** id: **341**

“वकसी व्यवक्त,ि ास्त,या स्◌ान के नाम को सज्ञा कहते ह ै ।”

वनयम बताने ु ं ं के बाद ि ाक्य की सहायता से सज्ञा को छटायेग े । ं ं दोष - यह विवि अमनोज्ञै ावनक ह ै । इस विवि म ें बालको को वनयम ि सत्रों को रटाना पड़ता ह।ै ू वजसके फलस्र ि रूप सत्र ि वनयम को रटना अरुवचकर,शष्ट्क ि नीरस लगता ह ै । इसम ें भाषा के ू ु प्रयोग का ज्ञान त ा अभ्यास नही हो पता ।इसम ें समय ि श्रम दोनों का दरूपयोग होता ह ै । ु b. पाठयपस्तक रणाली- यह विवि भी वनगमन प्रणाली की तरह ही ह ै ।अतः इसम ें भी वनयमों पर ् ु विशेष बल वदया जाता ह ै क्योवक सत्र प्रणाली सस्कत से ही वहदी म ें आई ह ै त ा पाठय पस्तक ृ ् ू ु ं ं प्रणाली अग्रेजी से वहदी म ें आई ह ै ।i प्रणाली

Plagiarism detected: **0.06%** https://meaninginhindi.net/hindi-alphabets/ + 2 resources! id: **342**

म ें व्याकरण वशक्षण का आिार एक पस्तक होती ह ै ु ं ं वजसम े व्याकरण के विवभन्न पक्षों पर सामान्य ि सवक्षप्त ि णनथ होता ह ै त ा उन पक्षों को उदहारण ं सवहत प्रस्तत वकया जाता ह ै ।इन्ही को आिार मानकर अध्यापक कक्षा म ें व्याकरण क ा ज्ञान ु कराता ह ै । दोष- यह एक अमनोज्ञावनक विवि पर आिाररत ह ै जो व्याकरण के अध्यापन को नीरस ,शष्ट्क ु ि अनाकवषतथ बनाती ह ै इसम ें भी रटने को प्रमखता दी जाती ह।ै अतः रटने से बालक वनयमों का ु शद्ध ि सही

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 2 resources! id: **343**

प्रयोग नही सीख पाते। ु c. आगमन रणाली- आगमन प्रणाली, वनगमन प्रणाली के वबलकल विपरीत प्रणाली ह ै । वनगमन ु प्रणाली म ें पहले वनयम बताकर वफर उसके प्रयोग बताये जाते ह,

ै जबवक आगमन प्रणाली म ें पहले प्रयोग बताकर वफर वनयम की खोज अ ाथत इस प्रणाली

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiparenting.firstcry.com/articles/k-aks… + 4 resources! id: **344**

में व्याकरण के वनयमों को प्रत्यक्ष न बताकर उदाहरण द्वारा बालकों से उन वनयम की खोज करायी जाती ह ै । व्याकरण जसै े विषय को आगमन प्रणाली के माध्यम से अत्यत ही रोचक त ा सरल बनाया जा सकता ह

ै । इसम ें पहले ं कछ उदाहरण बालकों के समक्ष प्रस्तत वकए जाते ह ैं । बालक इन उदाहरणों के आिार पर वनयम ु ु खोजते ह,ैं वफर इन वनयमों का परीक्षण वकया जाता

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **345**

ह ै । इस प्रकार से इस विवि म ें बालकों की सवक्रयता बढ़ जाती ह ै और वचतन से उनका मानवसक सभि होता ह ै । इसी कारण इस प्रणाली ं ं को प्रयोग प्रणाली भी कहते ह ैं । d. हवश्ले षणायमक पद्धहत- विश्लेषणात्मक पद्धवत को कोई नई पद्धवत नहीं बवलक आगमन-वनगमन प्रणाली क

ा सवम्मवलत रूप ह ै । इसमें आगमन पद्धवत द्वारा वनयमों की खोज करते ह ैं त ा वनगमन पद्धवत द्वारा उस वनयम का प्रयोग करते ह ै अ ाथत इसम ें वनयम-उपवनयम दके र ऐसे पयाथप्त प्रयोग वलए जाते ह ैं वजनम ें अभीष्ट वनयम पररलवक्षत हों वफर उन वनयमों की उदाहरणों के द्वारा पवष्ट की ु जाती ह ै ; जसै े सज्ञा पढाने के वलए पहले उपयक्त विवि से वनयम की खोज की जाएगी उसके बाद ु ं अभ्यास के वलए बालकों को कछ ि ाक्य वलखकर सज्ञा शधद अलग करिए जाएगँ े । ु ं e. भाषा-ससगा रणाली- यह प्रणाली व्याकरण वशक्षा के विरोिी प्रणाली ह ै । उनके वलए यह ां प्रणाली सोत्तम ह ै जो व्याकरण वशक्षण के सैद्धावतक पक्ष के स्◌ान पर व्यिाहाररक पक्ष पर बल ं दते े ह ैं । इसम ें बालकों को रचनाए ँ पढने को दी जाती ह ै त ा बालक स्र ि य इस बात का वनणयथ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 124 ु

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **346**

हिन्दी का हिक्षणास्त्र (भाग I) CPS 4 करता ह ै वक भाषा का सही स्र ि रूप कौन-सा ह ैं । इस प्रकार

से उनका भाषा पर अविकार हो सकता ह ै । यह एक मनोिज्ञावनक प्रणाली ह,ै लेवकन यह सिर्थ ा अपण थ ह ै । ू अभ्यास रश्न 5. व्याकरण वशक्षण की प्रमख विवियों के नाम बतायें । ु 3.6 रचना तशक्षण लेखन कौशल के सदभथ में रचना से तात्पयथ विचारों की क्रमबद्ध वलवखत अवभव्यवक्त

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ id: **347**

से ह ै । िाक्य- ं सरचना, शधद- भडार ,वलवप- रचना त ा ितथनी का पयाथप्त ज्ञान होने पर छात्रों से अन्य भाषा में वलवखत ं ं रचना करिाई जाती ह ै । रचन

ा से तात्पयथ विचारों त ा भिों की वलवखत अ ा मौवलक मौवखक क्रमबद्ध अवभव्यवक्त से ह ै । भाषण- कौशल के अतगथत छात्र मौवखक अवभव्यवक्त

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **348**

का अभ्यास करते समय मौवखक ं रचना की कशलता विकवसत करता ह ै । लेखन कौशल म ें छात्र इस कशलता का लेखन में उपयोग करता ु ु ह ै । अतः छात्र क

ी रचना कशलता विकवसत करते समय वनवदष्टथ उद्दश् ें यों की प्रावप्त पर ध्यान दने ा आिश्यक ु ह ै । 3.6.1 रचना हिक्षण के उद्देश्य रचना वशक्षण के वनम्नवलवखत उद्दश् े य हो सकत े ह ैं । 1. छात्र से या अपेक्षा की जाती ह ै वक ि ह अन्य भाषा के शधदों त ा िाक्य सरचनाओ का समवचत ु ं ं प्रयोग कर सके । 2. उनमें क्रमबद्ध वचतन शवक्त की कशलता विकवसत हो । ु ं 3. ि े त ा विचारों को प्रभिाशाली ढग से वलवखत रुप में प्रस्तत कर सकें । ु ं 4. लेखन के माध्यम से ि ह आत्मावभव्यवक्त में समर्थ हो सके । 5. अन्य भाषा की सस्कवत से िचाररक सबि रखत े हए लेखन- कशलता को विकवसत कर सके । ु ृ ु ं ं ं 6. भाषा के प्रयोजनमलक त ा सौंदयथपरक वलवखत अवभव्यवक्त की कशलता को सपष्ट कर सके । ू ु ु ं 3.6. 2 उद्देश्य एव स्वरूप की दृवि से रचना के भेद ां रचना वशक्षण के उद्दश् े य एि स्िरूप की दृवष्ट से रचना के मख्यता दो प्रकार माने जाते ह ैं वनयवत्रत रचना ु ं ं त ा स्ितत्र रचना । वनयवत्रत रचना वनवदष्टथ भाषाई कशलता के विकास का आिार ह ै । विवशष्ट िाक्य ु ं ं सरचना, शधद प्रयोग त ा वलवखत अवभव्यवक्त का वशक्षण ही इसका मख्य उद्दश् े य होता ह ै । अध्यापक ु ं द्वारा वनवित की गई रूपरेखा एि अपेक्षाओ के अनरूप ही छात्र भाषा का वलवखत

Plagiarism detected: **0.16%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **349**

प्रयोग करता ह ै । ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 125 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इसके विपरीत स्ितत्र रचना म ें िह विचारों त ा भिों की अवभव्यवक्त म ें अपेक्षाकत स्ितत्र होता ह ै । भाषा ृ ं ं के प्रयोग म ें भी शधद भडार िाक्य सरचना आवद के चयन में स्ितत्र होता ह ै । ं ं ं वनयवत्रत रचना वशक्षण -वनयवत्रत रचना म ें विचारों की वलवखत अवभव्यवक्त को कछ अशों म ें वनयवत्रत ु ं ं ं ं वकया जाता ह ै और उसी के अनरूप छात्रों से विवशष्ट प्रकार के उत्तर की अपेक्षा की जाती ह ै । वनयवत्रत ु ं रचना रचना-वशक्षण का ि ह रूप ह ै वजसे अध्यापक सतकथ ता से इस प्रकार

तैयार करता ह ै वक छात्र विवशष्ट व्याकरवणक त ा िाक्य रचना सबवि तत्िों का ही

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **350**

प्रयोग करते ह ैं । इसके माध्यम से अध्यापक छात्रों की ं ं विवशष्ट प्रकार की सरचना त ा विवशष्ट वशक्षण -वबदओ का अभ्यास कराता ह ै । इसके द्वारा छात्र का ं ं ं ु भाषा पर िाक्य- सरचनाओ त ा शधद भडार पर पयाथप्त अविकार कराया जाता ह

ै । आग े चलकर विचारों ं ं ं की स्ितत्र अवभव्यवक्त में यह सहायक होते ह ैं । ं 3.6.3 रचना हिक्षण हविाए ाँ एव हिक्षण हवहि ां 1. वाक्य सिोन अभ्यास - प्रारभ

Plagiarism detected: **0.18%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **351**

में छात्रों को सही रूप से िाक्यों को वलखने का अभ्यास नहीं ां ं होता अतः वनयवत्रत रूप से िाक्य लेखन का अभ्यास करना आिश्यक समझा जाता ह ै । इस के ं वलए प्रारभ में कछ िाक्य सरचनाए दी जाती ह ै त ा छात्रों से एक अ ा एकाविक स्ानों पर ु ं ं ं उवचत शधदों के माध्यम से िाक्य सशिोन कराया जाता ह ै इस प्रकार के अभ्यास में छात्रों के ं सम्मख एक बार में एक ही समस्या रखी जाती ह ै और ि ह उसके समिाान का प्रयत्न करते ह ैं । ु िाक्य -सशिोन अभ्यास वनम्नवलवखत अभ्यासों की सहायता से कराया जाता ह- ै ं a. बिहवकल्प अभ्यास- इस अभ्यास में छात्रों के सम्मख कई िाक्य रखे रखे जाते ह ैं । ु ु प्रत्येक िाक्य के सार् दो तीन अ ा अविक विकलप वदए जाते ह ैं । छात्र

इन विकलपों में से सही विकलप को चनता ह ै और िाक्य के सार् सयोवजत करता ह ै । प्रारभ में एक ु ं ं ही स्ान पर सही विकलप का सयोजन करा

Plagiarism detected: **0.21%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **352**

या जाता ह ै । क्रमशः इस अभ्यास को ं जवटल बनाने के वलए दो स्ानों पर विकलपों के सार् सयोजन का अभ्यास कराया जा ं सकता ह ै । इनमें के ि ल एक ही विकलप सही होता ह ै । b. ि मानसार लेखन अभ्यास- इस प्रकार के अभ्यास का मख्य उद्दश् े य िाक्य सरचना ु ु ं का अभ्यास कराना ह ै । इसके द्वारा िाक्य सरचना म ें व्यिवस्त क्रम से प्रस्तत शधदों ु ं को क्रम से

वलखने का अभ्यास कराया जाता ह ै । इस प्रकार के अभ्यास म ें छात्रों को ि ाक्य सरचना की प्रारवभक जानकारी होनी चावहए ,तभी ि ह ि ाक्यों के सार् शधदों को ं ं सही क्रम से वनयोवजत कर सकते ह ैं । c. अनरूपण अभ्यास- इस अभ्यास म ें छात्र बाकी के प्रर्म खड से दसरे खड का सही ु ं ं ू वमलान करना सीखता ह ै । इस प्रकार के अभ्यास म ें ि ाक्यों को दो खड में प्रस्तत

वकया ु ं जाता ह ै । दसरे खड के बाद ि ाक्यों का क्रम पहले खड के ि ाक्यों की क्रम से वभन्न ं ं ू होता ह ै । छात्रों को यह वनदशे वदया जाता ह ै वक ि ह प्रर्म खड के बाकी को दसरे खड ं ं ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 126 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 के सबवित ि ाक्य का वमलान करें । इस से

Plagiarism detected: **0.2%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 12 resources! id: **353**

छात्र की भाषाई अतदृवथ ष्ट का भी पता चलता ं ं ं ह ै और ि ाक्य लेखन का भी अभ्यास होता ह ै । d. रूपातरण अभ्यास - इस प्रकार के अभ्यास में वदए गए ि ाक्य का वनदशे के अनसार ु ां रूप परिवतथत वकया कराया जाता ह ै । इस अभ्यास से भाषाई साँचों की अतररक ं आतररक सरचना को समझने की अतदृवथ ष्ट विकवसत होती ह ै और छात्र विवभन्न रूपों म ें ं ं ं ं ि ाक्यों का प्रयोग करने म ें समर्थ होते ह ैं । इसका सबसे सरल रूप ह ै वक दी गई ि ाक्य सरचना म ें आवशक परिवतथन करने का अभ्यास कराया जाता ह ै अ ार्थत सिारण कर्न ं ं को प्रश्न सचक अि ा नकारात्मक कर्न में परिवतथत करने का अभ्यास कराया जाता ू ह ै । e. वाक्य पहता अभ्यास - इस प्रकार के अभ्यास के द्वारा ि ाक्य म ें ररक्त स्र्ान स्र्ानों की ू पवतथ करने का अभ्यास कराया जाता ह

ै ।यह पवत थ दो प्रकार से कराई जा सकती ह ै ू ू वनयवत्रत त ा स्ितत्र । वनयवत्रत पवतथ- अभ्यास म ें शधद वदए जात े ह ैं परत उनका क्रम ू ु ं ं ं ं अव्यिवस्

Plagiarism detected: **0.14%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **354**

त होता ह ै ।छात्र ि ाक्यों के अनरूप सही शधद का चयन कर के ररक्त स्र्ान ु की पवतथ करता ह ै । स्ितत्र अभ्यास म ें छात्रों को स्िय शधद सोचने और वलखने का ू ं ं वनदशे वदया जाता ह ै । इससे छात्रों म ें भाषाई कशलता का समवचत विकास होता ह ै । ु ु इसी अभ्यास का अपेक्षाकत जवटल रूप ि ात -रूपों के प्रयोग में दृवष्टगत होता ह ै । ृ ु 2. वाक्य रचना- ि ाक्य-सशिोन के विवभन्न अभ्यासों के फल स्िरुप छात्र ि ाक्य सरचना सबिी ं ं ं ं पयाथप्त कशलता विकवसत कर लेता ह ै । अतः स्ितत्रता की रचना के वलए तैयार होता ह

ै । ि ाक्य- ु ं सशिोन और ि ाक्यों की स्ितत्र रचना में अतर ह ै । ि ाक्य- सशिोन

Plagiarism detected: **0.11%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **355**

का उद्दश्े य वदए गए ि ाक्यों म ें ं ं ं ं आिश्यक परिद्धथन और परिरतथन का अभ्यास कराना ह ै परत ि ाक्य- रचना में छात्र स्ितत्र रुप ु ं ं से ि ाक्यों की रचना करता ह ै । इसका उद्दश्े य छात्रों को विविि प्रकार की रचना का अभ्यास कराना ह ै । ि ाक्य- रचना की कशलता मख्यतः वनम्नवलवखत अभ्यासों की सहायता से विकवसत ु ु की जाती ह ै – a. मख्य हवचार पल्लवन अभ्यास- इस अभ्यास के वलए वचत्र का प्रयोग वकया जाता ु ह।ै छात्र

प्रत्येक वचत्र में वनवहत मख्य भिा को समझने के वलए ि ाक्यों की रचना करता ु ह ै । ि ह वचत्र से नीचे अि ा अपनी उत्तर पवस्तका में वचत्र से सबवित ि ाक्य वलखता ह।ै ु ं ं वचत्र का उपयोग इसवलए भी करना उवचत समझा जाता ह ै वक प्रारभ में रचना म ें ं सहायता वमल सके । b. सारणी के आिार पर

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **356**

वाक्य रचना- इस अभ्यास में छात्रों को सारणी के आिार पर ि ाक्यों के लेखन का अभ्यास कराया जाता ह ै । मौवखक अभ्यास में वसखाई गई सारणी को लेखन- अभ्यास म ें छात्रों क

े सम्मख प्रस्तत वकया जाता ह ै और ि े उस के आिार ु ु पर अनेक ि ाक्यों की रचना करते ह ैं । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 127 ु

Plagiarism detected: **0.1%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 8 resources! id: **357**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 c. वाक्य अनवाद अभ्यास- इस प्रकार के अभ्यास में ि ाक्य अनिाद के माध्यम से छात्रों ु ु को ि ाक्य रचना का अभ्यास कराया जाता ह ै । मातभाषा के ि ाक्यों का अनिाद अन्य ृ ु भाषा में कराया जाता ह।ै अनिाद करते समय छात्र शधदों के चयन त ा ि ाक्य सरचना ु ं का अभ्यास करता ह ै । अनिाद एक जवटल प्रवक्रया ह ै अतः इस के वलए ि ाक्यों का ु अभ्यास करन

ा आिश्यक ह ै वजससे मातभाषा और अन्य भाषा का अतर एि व्यवतरेक ृ ं ं स्पष्ट होता ह ै । 3. अनच्छेद लेखन- अनच्छेद लेखन से तात्पयथ

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **358**

छात्रों को विचार-विशेष से सबि िक्यों को ु ु ं ं क्रमबद्ध रूप से वलखना वसखाना ह ै । िक्य- रचना का अभ्यास करिने के पिात इस अभ्यास को सहज रुप में विकवसत वकया जा सकता ह ै । छात्र

परस्पर सबि िक्यों को क्रमबद्ध रूप म ें ं ं वलखते ह ैं । क्रमशः सम्बद्ध िक्यों की सख्या में िवद्ध की जाती ह ै और छात्र वकसी विशषे से ृ ं सबवित विचारों को अनच्छेद के रूप में प्रस्तत करते ह।ैं इस प्रकार अनच्छेद रचना विशषे स े ु ु ु ं ं सम्बवित विचारों की क्रमबद्ध अवभव्यवक्

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 6 resources! id: **359**

त ह ै । िक्य की सरचना वसखाने के बाद ही उनकी ं ं क्रमबद्ध लेखन का अभ्यास कराया जाता ह ै । अनच्छेद रचना को क्रवमक रूप में वसखाना ही ु उवचत ह ै । प्रारभ म ें छात्रों से दनै वदन वक्रयाओ का अपने पररिार का और प्रवतवदन के सपररवचत ु ं ं ं घटनाओ का िणनथ कर पाया जाता ह,

ै वजससे उसका ध्यान भाषा और विचारों की अवभव्यवक्त ं पर कें वद्रत हो सके । सीखे गए िक्यों के माध्यम से विचारों की क्रम पद्य व्यवक्त त ा िक्यों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तत करना सीखाना आिश्यक ह ै । अनच्छेद रचना म ें वनम्नवलवखत अभ्यासों ु ु की सहायता ली जा सकती ह ै – a. भाव किन एव सक्षेपण अभ्यास- इस अभ्यास म ें गद्याश अ ा वनाथररत अितरण ां ां ं का अपने शधदों म ें भिा कर्न करिाया जाता ह ै । छात्रों को यह वनदशे वदया जाता ह ै वक अितरण में व्याप्त विचारों को अपने शधदों में इस क्रम से प्रस्तत करें अवभव्यवक्त की ु एक श्र बन जाए । इसके वलए गद्याश का िाचन और उनमें वनवहत मख्य भिा को, खला ृ ु ं ं विचारों को रेखावकत करिने के पिात अपने शधदों म ें क्रमबद्ध रूप से वलखना ं वसखाया जाता ह ै । b. किन अभ्यास - इस अभ्यास म ें छात्र अपनी वदनचयाथ के सबि म,ें अपने सबि म,ें ं ं ं ं ं अपने पररिार, पालत पश -पक्षी अपने वमत्रों आवद के बारे म ें कछ िणनथ करता ह ै । ू ु ु प्रारभ म ें इसके वलए वचत्रों का उपयोग वकया जाता ह ै । वचत्र के आिार पर अ ा ं प्रत्यक्ष अनभि के आिार पर छात्र कर्न को वलवपबद्ध करता ह ै । प्रारभ में सीखी गई ु ं िाक्य-सरचनाओ के आिार पर िह अपनी वदनचयाथ अ ा वदए गए वचत्र अ ा अन्य ं ं वकसी विषय पर लेखन के माध्यम से तर्थय वनरूपण

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.nou.ac.in/Online Resourses/10-8/m… id: **360**

करता ह ै । उदाहरणार्थ यवद उसे कहा जाए वक िह अपना पररचय 10 िाक्य म ें द ें तो िह

अपने सबवित तर्थयों को ं ं वलवखत रुप म ें प्रस्तत करता ह ै । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 128 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 c. वणान अभ्यास - िणनथ म ें छात्र वकसी घटना, वकसी दृश्य, वकसी स्ान आवद का विस्तार से िणनथ करता ह ै । कर्न में तो िह अवतपररवचत विषयों का य ातर्थय विचे न करता ह ै परत िणनथ में िह कलपना, तर्थय, अनमान का भी उपयोग करता ह ै । इस प्रकार ु ु ं िणनथ में रोचकता का समिोश हो जाता ह ै । कर्न की शष्टकता त ा य ातत् ि विचे न ु शलै ी के क्रम में छात्र भाषा पर पयाथप्त अविकार पा लेता ह ै त ा अवभव्यवक्त शलै ी म ें नीिनता त ा विलक्षणता आ जाती ह ै । िणनथ के क्रम म ें छात्र वचत्र के आिार पर घटना-विशषे , दृश्य-विशेष और अन्य विषयों के सबि में रोचकता से िणनथ करता ह।ै ं ं ं d. हववेचन ति उद्घाटन अभ्यास- छात्रों से पररवचत वक्रया-विशषे का विचे न करिाया जाता ह ै । उनसे यह

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **361**

कहा जाता ह ै वक दवै नक जिीन म ें प्रवतवदन की जान े िाली वक्रयाओ ं का अ ा वक्रया विशेष का समवचत विचे न प्रस्तत करें । इस अभ्यास क

े द्वारा उन्ह ें ु ु वक्रया-विशेष का क्रम से सक्ष्म विचे न करना वसखाया जाता ह- जसै े िह िवशष्ट खले ू वकस प्रकार खले ता ह ै ? साइवकल कै से चलाता ह ै ? टेलीफोन कै से करता ह?ै e. पनगाठन अभ्यास - इस अभ्यास का उद्दश्े य िाचन म ें दी गई सामग्री

Plagiarism detected: **0.03%** https://testbook.com/hindi-grammar/varn-aur-a… + 2 resources! id: **362**

का लेखन के ु माध्यम से पनगठथ न करिाना ह ै । वजसमें छात्र से एक अ ा दो अनच्छेदों का िाचन ु ु करिाया जाता ह

ै । िाचन के पिात इस सामग्री को वबना दखे े हए वलखने का वनदशे ु वदया जाता ह ै । यह अभ्यास भिा कर्न- अभ्यास से वभन्न ह ै । इसमें के िल मख्य भिों ु को ही अपने शधदों म ें वलखने

Plagiarism detected: **0.12%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **363**

का अभ्यास नहीं कराया जाता बवलक पढ़ी हई सामग्री ु को य ा वलखने का वनदशे वदया जाता ह ै । f. रहतपादन अभ्यास- इस अभ्यास के द्वारा छात्रों का अपने विचारों को प्रवतपावदत करने का पयाथप्त अिसर वदया जाता ह ै । छात्रों से एक अ ा दो अितरणों का भाषण करिाया जाता ह ै त ा उन्ह ें ऐसे विचारों को चनन े का वनदशे वदया जाता ह ै वजनसे िह ु सहमत अ ा असहमत हो । सहमवत और असहमवत का कारण भी वलखने के वलए वदया जाता ह ै । इस

प्रकार छात्र पढ़ी हई सामग्री से सबवित विचारों को इस क्रम म ें ु ं ं व्यक्त करता ह ै वक क्रमबद्ध रूप से कछ बातों का समर्थन एि खडन हो सके । इस ु ं ं

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **364**

अभ्यास के द्वारा वनयवत्रत रूप में विचारों की क्रमबद्ध वलवखत अवभव्यवक्त का अभ्यास ं कराया जाता ह ै । आग े चलकर वकसी के आिार पर विचारों के स्ितत्र प्रवतपादन का ं अभ्यास

सभि ह ै । ं 4. अनच्छेद अनवाद - यह अभ्यास अनच्छेद रचना का जवटलतम अभ्यास ह ै । इसम ें के िल ु ु ु एकि िाक्यों का नहीं बवलक सपण थ अनच्छेद का अनिाद करा

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **365**

या जाता ह ै । इस बात का ध्यान ू ु ु ं रखा जाता ह ै वक अनिाद के क्रम म ें अन्य भाषा क

ी सरचनागत विशेषताओ को सरवक्षत रखा ु ु ं ं जाए । इसम ें छात्रों से अपेक्षा की जाती ह ै वक उन्ह ें उस भाषा की सरचना एि शधद भडार से ं ं ं पणतथ ः पररवचत हो त ा उन्ह ें शधदों के विवभन्न अर्थ और सदभों की परी जानकारी हो । इसके ू ू ं वलए अन्

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.deepawali.info/ka-se-gya-tak-k-se-… id: **366**

य भाषा के सास्कवतक सदभों की ,अ ों त ा उनकी विवशष्टताओ का परा ज्ञान होन

ा ृ ू ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 129 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 चावहए ।स्ितत्र रचना -क्रमबद्ध रूप से विचारों के वनयवत्रत वलवखत अवभव्यवक्त वसखाने के बाद ं ं स्ितत्र रूप से विचारों को व्यक्त करने का अिसर दने ा आिश्यक ह ै । अतः लेखन विकास के ं कौशल स्ितत्र रचना की कशलता को विकवसत करना मख्य उद्दश्े य ह ै । छात्रों में लेखन सबंी ु ु ं ं ं इतनी कशलता आप उत्पन्न करना आिश्यक ह ै वक ि ह स्ितत्र रुप से भिों की वलवखत ु ं अवभव्यवक्त कर सकें और अपने विचारों को िारा प्रिाह रूप में अवभव्यक्त कर सकें । स्ितत्र ं रचना म ें छात्र ना के िल विचारों की दवष्ट से स्ितत्र होता ह ै बवलक ि ह भाषाई अवभव्यवक्त की ं दवष्ट से भी स्ितत्र होता ह ै । अतः रचना में शधद-चयन, सरचना और शलै ीगत विविता स्पष्ट ं ं रुप से दवष्टगत होती ह ै । स्ितत्र रचना वसखाने के वलए वनबि कहानी त ा पत्र लेखन का वशक्षण आिश्यक समझा

Plagiarism detected: **0.11%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **367**

जाता ं ं ह ै । छात्र अनभि- क्षेत्र से सबवित वनबि’ पररवचत कहानी और विवि प्रकार के पत्र लेखन के ु ं ं ं आिार पर विचारों की स्ितत्र अवभव्यवक्त करना सीखते ह ैं । ं 5. हनबि लेखन- छात्रों को स्ितत्र रुप से वनबि वलखना वसखाना विवशष्ट कशलता ह ै वजसके वलए ु ां ं ं रचना वशक्षण से सबवित विवि अभ्यास वदए जान े चावहए । छात्रों को प्रारभ म ें सरल रचना ं ं ं वसखाई जानी चावहए

वफर क्रमशः जवटल विषयों पर रचना करिाई जा सकती ह ै । रचना वशक्षण के प्रारभ म ें वनबि का मौवखक प्रवतपादन करना उवचत ह ै ।

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **368**

अध्यापक क्रमबद्ध रूप से वनबि का ं ं ं विकास करता ह ै और इस क्रम में छोटे-छोटे प्रश्न पछ कर छात्रों क

ो उत्तर दने े के वलए प्रोत्सावहत ू करता ह ै । रचना का मौवखक रूप से विकास करते समय उसकी रूपरेखा प्रस्तत की जाती ह ै और ु छात्रों से उसके आिार पर वनबि वलख पाया जाता ह ै । छोटी कक्षाओ म ें छात्रों से वचत्र के ं ं आिार पर रचना करिाई जा सकती ह ै । रचना वशक्षण का मख्य उद्दश्े य होना चावहए वक छात्र ु विचारों की क्रमबद्ध अवभव्यवक्त में भाषा का स्ितत्र प्रयोग कर सकें । उच्च स्तर पर रचना ं वसखाते समय शलै ीगत विशषे ताओ पर छात्र का ध्यान कें वद्रत करना आिश्यक नहीं ह ै । ं 6. पि लेखन- वनबि लेखन की कशलता विकवसत करने के अवतररक्त स्ितत्र रचना सीखाने का ु ं ं दसरा तरीका पत्र रचना ह ै । पत्र रचना वनबि रचना से वभन्न न एक विवशष्ट

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **369**

प्रकार की कशलता ु ं ू ह ।ै इसके वलए छात्रों का अभ्यास करना आिश्यक ह ै । विवभन्न प्रकार के पत्रों की विवभन्न लेखन-शलै ी होती ह ै । पररिार के विवभन्न सदस्यों एि सबवियों त ा आत्मीय जन के वलए वलखे ं ं ं गए वनजी पत्रों की एक विवशष्ट शलै ी होती ह ै । व्यिसावयक उद्दश्े य से वलखे गए पत्र की अलग कोवट होती ह ै । व

िशषे उत्सि, शादी-विवाह आवद के वलए वदए जाने िाले सचनाओ की अलग ू ं शलै ी होती ह ै । छात्रों को इसके लेखन में वनवहत विवशष्टताओ को समझाते हए इनके अभ्यास ु ं करना आिश्यक ह ै । छात्रों को यह स्पष्ट रुप से बता दने ा चावहए वक पत्र में बोलचाल

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **370**

की भाषा का ही प्रयोग होता ह ै । इस प्रकार सीख े गये शधद भडार त ा व्याकरवणक सरचना की सहायता से छात्रों को पत्र रचना ं ं का अभ्यास करिाया जाता ह

ै । अन्य भाषा -भाषी वकशोरों के सार् पत्र व्यिहार करना पत्र लेखन वसखान े का उपयोग उपयोगी अभ्यास ह ै । इससे ना के िल अन्य भाषा पर स्िाभाविक उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 130 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 अविकार होता ह ै और भाषा

का जिीन और प्रयोजनमलक सदभथ म ें प्रयोग कराना होता ह ै बवलक ू ं छात्र अन्य भाषा की सस्कवत से भी पररवचत होते ह।ैं िहा के यिा िगथ स,े वकशोरों से वमत्रता का ृ ु ं ं सबि स्ावपत करते ह ैं । चँवक अन्य भाषा वशक्षण का उद्दश्े य अपनी भाषा की सस्कवत के पयाथप्त ृ ू ं ं ं जानकारी कराना ह ै अतः पत्र लेखन के माध्यम से यह कायथ सहज रुप म ें सपन्न होता ह ै ं 7. किानी लेखन - स्ितत्र रचना के अतगतथ कहानी रचना का भी अभ्यास करा

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **371**

या जाता ह ै । ं ं प्रारवभक स्तर पर छात्रों को कहानी की रूपरेखा दी जाती ह ै और कक्षा में मौवखक रूप से उसका ं विकास करा जाता ह ै । तत्पिात छात्रों क

ो घर की रुपरेखा के आिार पर कहानी वलखकर लाने का वनदशे वदया जाता ह ै । कहानी के आिार पर रचना करिाने का एक दसरा तरीका यह ह ै वक ू कहानी का पिांश अि्रा उत्तराश वदया जाए और

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **372**

छात्रों को कहानी परी करने का वनदशे वदया ू ू ं जाए । इस प्रकार के अभ्यास में पहले मौवखक चचाथ की जाए, आिश्यक शधद वदए जाए और ं उसके बाद उनका लेखन में प्रयोग कराया जाए । वचत्र सख्या के आिार पर कहानी रचना का ं अभ्यास

कराया जा सकता ह ै 8. सजानायमक लेखन - सजनथ ात्मक लेखन लेखन कौशल

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **373**

के विकास का उत्कष्टतम रूप ह ै । सभी ृ छात्रों म ें सहज रुप से इस कशलता का विकास

नहीं वकया जा सकता । मातभाषा म ें भी यह ृ ु कौशल सिसथ ारण में समान रुप से विकवसत नहीं होता । परत अन्य भाषा सीखने िाले छात्रों म ें ु ं सावहत्य के िाचन के प्रवत अवभरुवच जागत करने के सार्-सार् छोटी कहावनया कविताए और ृ ं ं अन्य रचनाए वलखने के वलए प्रोत्सावहत वकया जा सकता ह ै । वकशोरिस्था में छात्रों में यह वफर ं उवचत मातभाषा म ें सहज रुप में अवभव्यक्त होती ह ै अन्य भाषा म ें लेखन पर अविकार करने और ृ रचना के विवभन्न रूपों

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **374**

का विकास करने के फल स्िरुप छात्रों को कहानी, कविता एि ं विचारात्मक लेखन के वलए प्रोत्सावहत करना उवचत ह ै । 3.6.4 रचना का सिोन ां लेखन कौशल के विकास में रचना का सशिोन महत्िपणथ कायथ ह ै । विवभन्न प्रकार की रचना अभ्यासों ू ं का पयाथप्त ज्ञान और अभ्यास ही रचना के विकास

में सहायक नहीं होता । यवद छात्र रचना में की गई त्रवटयों के वनरतर आिवत्त करता ह ै ,उसका ध्यान त्रवटयों की ओर नहीं जाता और िह उनके सशिोन का ृ ु ु ं ं प्रयत्नपिकथ अभ्यास नहीं करता तो लेखन कौशल का समवचत विकास नहीं होता । इस दवष्ट से छात्र द्वारा ू ु वकए गए लेखन कायथ का सिार और सशिोन आिश्यक ह ै । यह सशिोन इस रीवत से वकया जाए वक ु ं ं के िल त्रवट करन े िाला विवशष्ट छात्र नहीं नहीं कक्षा के सभी छात्र समान रुप से लाभावन्ित हो सकें । ु 3.7 सारांश सावहत्य की विविि विाओ के स्िरुप एि रचना-प्रवक्रया म ें वभन्नता के कारण उनके उद्दश्े य,वशक्षण ं ं विवि,मलयाङकन प्रणाली आवद म ें परररितथन आ जाता ह ै । वकसी एक विवि,उद्दश्े य के द्वारा अध्येता म ें ृ ू समग्र भाषाई कशलता

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **375**

का विकास,भाषाई सस्कवत का पररचय सभि नहीं ह ै । अतः ृ ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 131 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 पररवस्ित,सन्दभ,थ आिश्यकता,स्तर तरा कशलता को दवष्ट म ें रखते हए विवभन्न विाओ के अनरूप ु ु ु ं इकाई म ें िवणथत सिाथविक उपयक्त प्रवक्रया का वशक्षक अपनी कक्षा म ें प्रयोग करता ह ै । वशक्षण-विवि के ु स्िरूप वनिाथरण का दावयत्ि कशल अध्यापक का ह ै । िहीं छात्रों को अविकतम अविगम के वलए ु उत्प्रेररत कर सकता ह ं तरा आिश्यक सामग्री का सकलन एि चयन कर सकता ह ै । ं ं 3.8 शब्दावली 1. साँचा अभ्यास- भाषा की सरचना के वनयवत्रत नमनों का अभ्यास ू ं ं 3.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. स्िरूप के आिार पर काव्य के वनम्नवलवखत भदे है। i. महाकाव्य ii. रूपक iii. आख्यावयका iv. करा v. मक्तक ु 2. कविता वशक्षण की अनेक विविया प्रचवलत ह ैं वजनम ें से कछ इस प्रकार ह-ैं ु ं i. गीत और अवभनय प्रणाली ii. अर्थबिो प्रणाली iii. व्याख्या प्रणाली iv. खड - अन्िय प्रणाली ं v. व्यास प्रणाली vi. तलना प्रणाली ु vii. समीक्षा प्रणाली 3. कावठन्य वनिारण की कछ यवक्तयाँ- ु ु i. वचत्र वदखाकर ii. प्रवतमवतथ वदखाकर ू iii. रेखा वचत्र द्वारा iv. मानवचत्र द्वारा v. प्रत्यक्ष पदार्थ द्वारा vi. सके त द्वारा ं vii. अवभनय द्वारा उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 132 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 viii. पयाथय कर्न ix. सवि विच्छेद ं x. समास विग्रह xi. अर्थ कर्न xii. िाक्य प्रयोग xiii. व्याख्या xiv. अतकथ ारा द्वारा ं 4. पद्य म ें छद, लय, गवत, प्राि एि सगीत तत्ि रहता ह ै । ं ं ं 5. वनगमन या सत्र,पाठय-पस्तक प्रणाली,आगमन,सत्र,विश्लेषण,भाषा-ससग थ प्रणाली ृ ू ु ू ं 3.10 सन्दभ थ ग्रत्र् सची ू 1. गप्त, मनोरमा ,भाषा- वशक्षण वसद्धात और प्रविवि ,आगरा,के न्द्रीय वहदी सस्ान (2010) ु ं ं ं 2. चौहान,रीता,वहदी वशक्षण ,आगरा,अग्रिाल पवधलके शन ,2016-17 ं 3. श्रीिास्ति डॉ.रविन्द्रनार्, भाषा-वशक्षण, ,नई वदलली, ाणी प्रकाशन,2005 3.11 तनबिात्मक प्रश्न ं 1. गद्य, पद्य,व्याकरण और रचना वशक्षण के उद्दश्े यों का िणथन करते हए उनम ें मल अतर स्पष्ट ु ू ं कीवजए । 2. गद्य और पद्य वशक्षण म ें शधदार्थ की

वशक्षण यवक्तयों का िणथन कीवजए । ु 3. गद्य वशक्षण की पाठ-योजना के चरणों को क्रमबद्ध िणनथ कीवजए । 4. रचना की विवभन्न विाए ँ बताते हए उसके वशक्षण की यवक्तयों का िणनथ कीवजए । ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 133 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इकाई 4- हिंदी भाषा विक्षणिा विक्षण-अवधगम सामग्री एवं ण पाठ्यसिंगामी वियाए ँ 4.1 प्रस्तािना 4.2 उद्दश्े य 4.3 वशक्षण-अविगम सामग्री एि उनके विविि रूप ं 4.4 दृश्य सामग्री 4.4.1 मवद्रत सामग्री ु 4.4.2 गरै मवद्रत सामग्री ु 4.5 श्रव्य सामग्री 4.6 श्रव्य-दृश्य सामग्री 4.7 पाठयसहगामी वक्रयाएँ ् 4.8 साराश ं 4.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 4.10 सदभथ ग्रर् सची एि सहयोगी पस्तकें ू ु ं ं ं 4.11 वनबिात्मक प्रश्न ं 4.1 प्रस्तावना वशक्षा चाह े वकसी भी विषय का हो वबना वशक्षण-अविगम सामग्री के सपन्न नहीं हो सकता ह।ै भाषा ं वशक्षण में तो इसकी और भी आिश्यकता

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **376**

हो जाती ह ै क्योंवक इसके माध्यम से भाषा के विविि पक्षों को एक सार् वसखाया जा सकता ह।ै वशक्षण प्रभिी तभी माना जाता ह

ै जब वक विद्याार्ी को अविगम हो जाए। विद्याार्ी वशक्षण-अविगम सामग्री के माध्यम से अपेक्षाकत तीव्र गवत से सीखता ह।ै अतः, वशक्षण- ृ अविगम सामग्री भाषा वशक्षण के क्षेत्र में अत्यत महत्िपण थ ह।ै इसके महत्ि को स्ीकार करते हए आशीष ु ू ं प्रकाशन द्वारा बी.एड.. पाठयक्रम के वलए प्रकावशत एक पस्तक

Quotes detected: **0.01%** id: **377**

“सम्पण थ पाठयचयाथ म ें भाषा”

म ें मके ॉन ् ् ु ू रॉबटथस के कर्न को उद्धत वकया ह,ै जो इस प्रकार ह ै -

Quotes detected: **0.07%** id: **378**

“वशक्षक इन उपकरणों के उपयोग द्वारा बालक की ृ एक से अविक इवद्रयों को प्रयोग में ला कर पाठयपस्तक को सरल, रुवचकर, स्पष्ट, प्रभिाशाली त ा स्ाई ् ु ं बनाता ह।ै इन सामवग्रयों की सहायता से वकतने ही ऐसे विषयों, जो पाठयपस्तकों म ें नहीं होते ह,ैं उन पर ् ु प्रकाश डाला जाता ह”

ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 134 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 रॉबटथस महोदय के इस कर्न से यह स्पष्ट ह ै की वशक्षण-अविगम सामग्री के विविि रूप होते ह।ैं यहाँ तक की पाठयपस्तक को भी वशक्षण-अविगम सामग्री में शावमल वकया जाता ह।ै वशक्षण-अविगम सामग्री के ् ु अवतररक्त पाठयसहगामी वक्रयाए ँ भी वशक्षण को प्रभिाशाली बनाने में महत्िपणथ भवमका वनभाती ह।ैं ् ू ू भाषा वशक्षण के वलए तो िाद-विवाद, कविता का सस्ि िाचन, नाटय मचन, भाषाण प्रवतयोवगता, आवद ् ं जसै े अनेक पाठय- सहगामी वक्रयाओ का आयोजन वकया जा सकता ह।ै इन पाठयसहगामी वक्रयाओ के ् ् ं ं आयोजन से कक्षा को रुवचकर एि आनददायक बनाया जा सकता ह।ै प्रस्तत इकाई वहदी वशक्षण में ु ं ं ं प्रयक्त वकए जाने योग्य वशक्षण-अविगम सामग्री एि पाठय सहगामी वक्रयाओ की विस्तत विवे ना करने ृ ् ु ं ं का प्रयास करता ह।ै 4.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के उपरात विद्याार्ी इस योग्य हो जायेंगे वक- ं 1. वशक्षण-अविगम सामग्री एि उनके विविि रुपों का पररचय द े सकें ग।े ं 2. दृश्य

Plagiarism detected: **0.07%** https://aqicn.org/city/delhi/hi/ id: **379**

सामग्री को पररभावषत कर सकें ग।े 3. दृश्य सामग्री को विवभन्न िगों में िगीकत कर सकें ग।े ृ 4. वहदी वशक्षण में मवद्रत सामग्री के उपयोग की चचा थ कर सकें ग।े ु ं 5. वहदी वशक्षण में गरै मवद्रत सामग्री के उपयोग का िणनथ कर सकें ग।े ु ं 6. श्रव्य सामग्री क

े उपयोग एि सिंाावनयों की व्याख्या कर सकें ग।े ं 7. श्रव्य-दृश्य सामग्री में शावमल होने िाल े िाली विवभन्न सामवग्रयों का उललेख कर सकें ग।े 8. वहदी वशक्षण में उनका उपयोग कर सकें ग।े ं 9. पाठयसहगामी वक्रयाएँ को पररभावषत कर सकें ग।े ् 10. वहदी वशक्षण के वलए आयोवजत की जा सकने िाली विविि पाठयसहगामी वक्रयाओ का िणनथ ् ं ं कर सकें ग।े 4.3 तशक्षण अतिगम सामग्री एवं उनके तवतवि रूप

Plagiarism detected: **0.02%** https://leverageedu.com/blog/hi/k-se-shuru-hon… id: **380**

सामान्य अर्ों म,ें वशक्षण-अविगम सामग्री से आशय पाठ योजना म ें वनवित वकए गए सामान्य

एि ं विवशष्ट शवै क्षक उद्दश्े य को प्राप्त करने के वलए वशक्षक द्वारा कक्षाकक्ष म ें प्रयक्त वकए जानेाली शवै क्षक ु सामग्री से होता ह।ै यह ीवडयो, ऑवडयो, पाठयपस्तक, कोई खले , आवद हो सकता ह।ै विवशष्ट अर्थ म,ें ् ु वशक्षक द्वारा कक्षाकक्ष म ें वशक्षण कायथ के वलए प्रयक्त की जान े िाली सामग्री को वशक्षण-सामग्री त ा ु विद्याार्ी द्वारा अविगम के वलए प्रयक्त की जाने िाली सामग्री को अविगम-सामग्री कहते ह।ैं प्रारभ म,ें ु ं वशक्षण-अविगम सामग्री से आशय वसफथ पाठयपस्तक, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, आवद से होता ा लेवकन ् ु तकवनकी के विकास के सार्-सार् वशक्षण-अविगम सामग्री के क्षेत्र म ें भी विस्तार हआ और ु पाठयपस्तक, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर आवद के सार्-सार् अनेक मशीनों य ा टेप- ररकॉडथर, रेवडयो, ् ु टेलीविजन आवद को भी स्ान वदया जाने लगा ह।ै ितथमान समय सचना एि सचार प्रौद्योवगकी का ह।ै ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 135 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 4 resources! id: **381**

र (भाग I) CPS 4 सचना एि सचार प्रौद्योवगकी आज जिीन के हर क्षेत्र में समावहत ह।ै वफर वशक्षण-अविगम का क्षेत्र

इससे ू ं ं कै से बचा रह सकता ह।ै सचना एि सचार प्रौद्योवगकी के विवभन्न सिानों, वजनमें की सिाथविक प्रमख ू ु ं ं कप्यटर एि इटरनेट ह,ैं का भी वशक्षण-अविगम सामग्री के रुप म ें बहतायत में प्रयोग वकए जाते ह।ैं इस ु ू ं ं ं प्रकार, ितथमान पररदृश्य में वशक्षण-अविगम सामग्री के कई रुप ह ैं वजनको मख्यतः तीन िगों म ें िगीकत ृ ु वकया जाता ह।ै ये तीन प्रमख िग थ वनम्नवलवखत ह:ै ु 1. दृश्य सामग्री 2. श्रव्य सामग्री 3. दृश्य-श्रव्य सामग्री आइए अब बारी-बारी से वशक्षण-अविगम सामग्री के इन विविि िगों की चचा थ कीवजए । 4.4 दश् ृ य सामग्री दृश्य सामग्री शधद को सनने से ही प्रतीत होता ह ै वक िह सामग्री जो वदखाई द।े वशक्षण अविगम के सदभथ ु ं में वशक्षण अविगम प्रवक्रया के वनष्टपादन में प्रयोग की जा सकने िाली ऐसी सामग्री वजस े की दखे ा जा सकता ह ै को दृश्य सामग्री कहते ह।ैं इसे वनम्नवलवखत दो उप िगों में िगीकत वकया जाता ह ै : ृ 1. मवद्रत सामग्री; त ा ु 2. गरै मवद्रत सामाग्री ु 4.4.1 महद्रत सामग्री ु मवद्रत सामग्री से आशय शवै क्षक कायों में प्रयोग की जा सकने िाली प्रकावशत या छपी हई सामग्री से ह।ै ु ु इसके अतगथत वनम्नवलवखत सामग्री आती ह:ैं ं 1. पाठयपस्तक- यह मानि जावत की सबसे महत्िपणथ सवष्ट । इसम ें एक पीढ़ी से दसरी पीढ़ी तक ृ ् ु ू ू ज्ञान का हस्तातरण करने के वलए ज्ञान का सचय वकया जाता ह।ै पाठयपस्तक से आशय वकसी ् ु ं ं विशेष पाठयक्रम के वलए वनवमतथ पस्तक से होता ह।ै आशीष प्रकाशन द्वारा बी. एड.. पाठयक्रम ् ् ु के वलए प्रकावशत पस्तक

Quotes detected: **0.01%** id: **382**

“सम्पण थ पाठयचयाथ म ें भाषा”

म ें पाठयपस्तक की हरै ोवलकर द्वारा दी ् ् ु ू ु गई पररभाषा को उद्धत वकया गया ह।ै हरै ोवलकर ने पाठयपस्तक को पररभावषत करते हए कहा ु ् ु ृ वक “पाठयपस्तक ज्ञान, अनभि, भिानाओ विचारों, त ा प्रिवतयों ि मलयों के सचय का सिान ृ ् ु ु ू ं ं ह।ै “ उसी पस्तक म ें हॉलक्िस्े ट की पररभाषा को भी उद्धत वकया गया ह।ै हॉलक्िस्े ट के अनसार, ु ु ृ पाठयपस्तक “वशक्षण वक्रयाओ एि अवभप्रायों के वलए सव्यिवस्त वचतन एि

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… id: **383**

ज्ञान का ् ु ु ं ं ं ं वलवखत रूप मानते ह।ैं “ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय

136 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इस प्रकार पाठयपस्तक वकसी विशषे पाठयक्रम से सबवित शवै क्षक वक्रयाओ के वनष्टपादन हते ् ् ु ु ं ं ं ज्ञान, अनभि, भिानाओ आवद के सचय का वलवखत रूप ह।ै ु ं ं भाषा वशक्षण म ें पाठयपस्तकों की उपयोवगता को ओिवलवखत रूप म ें उललेवखत वकया जा ् ु सकता ह ै : i. पाठयपस्तक पाठयक्रम को स्पष्ट करने के वलए अवत उपयोगी ह।ै इसकी सहायता से अध्यापक ् ् ु और छात्र दोनों को ये बात पता रहती ह ै की सपणथ वशक्षण सत्र में उन्ह ें क्या पढ़ना ह ै ि क्या ू ं पढ़ाना ह।ै ii. कक्षाकक्ष में जान े से पहले की तैयारी करने में पाठय पस्तक वशक्षक की सहायता करते ह।ैं ् ु iii. कक्षा में पढ़ाई गई बा

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.patrika.com/business-news/year-2… id: **384**

त विद्या ी को तरत समझ म ें आ ही जाय यह बात आिश्यक नहीं ह।ै ु ं पाठयपस्तक के माध्यम स

े विद्या ी स्ि अध्ययन कर विषय को समझ सकता ह।ै ् ु iv. पाठयपस्तकों में उस विषय विशषे से सबवित सपण थ सामग्री एक ही स्ान पर सवचत रहती ह ै ् ु ू ं ं ं ं वजससे विद्यावर्थयों को परेशानी नहीं होती ह।ै v. विषय के पनः अध्ययन के वलए पाठयपस्तकें उपयोगी होती ह।ैं ् ु ु vi. पठन योग्यता का विकास करने में पाठयपस्तकें सहायक होती ह ैं त ा विद्यावर्थयों म ें स्ि ाध्याय की ् ु आदत भी विकवसत होती ह।ै vii. अध्यापकों को छात्रों को गहकायथ दने े एि छात्रों को गह कायथ करने म ें पाठयपस्तक से सहायता ृ ृ ् ु ं वमलती ह।ै viii. पाठयपस्तकों के माध्यम से छात्र लेखकों की विवभन्न शवै लयों से पररवचत होते ह।ैं ् ु ix. विवभन्न सावहवत्यक एि सास्कवतक कायथक्रमों का आयोजन करने में पाठयपस्तकें महत्िपण थ ृ ् ु ू ं ं भवमका वनभाती ह।ैं ू हिदी भाषा के पाठयपस्तकों की हविषताए ाँ एव उनका चयन ् ु ां ां भाषा ज्ञान अन्य विषयों के अध्ययन-अध्यापन की आिारशला ह।ै अतः, भाषा वशक्षण के वलए पस्तकों ु का चयन करते समय बहत सिाानी रखनी पड़ती ह।ै वहदी भाषा के पाठय पस्तक की कछ अपेवक्षत ु ् ु ु ं विशेषताए ँ होती ह ैं वजनका ध्यान पाठयपस्तकों का चयन करते समय रखना पड़ता ह।ै इन विशेषताओ ् ु ं को वनम्नवलवखत वबदओ के माध्यम से स्पष्ट वकया जा सकता ह:ै ं ं ु a. पस्तक लेखक- पाठयपस्तक का लेखक अनभि एि अपने विषय म ें वनष्टणात

Plagiarism detected: **0.12%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **385**

होना चावहए। ् ु ु ु ं उसे वशक्षा मनोविज्ञान त ा बाल मनोविज्ञान की समझ होनी चावहए। b. पस्तक की भाषा- पाठयपस्तक की भाषा छात्रों की आय, उनकी मानवसक योग्यता एि पस्तक ् ु ु ु ु ं में सवचत की जानिोली अतिथस्त के अनकल होनी चावहए। ु ु ू ं ं c. पाठयवस्त का व्यवस्ि ापन- पाठयपस्तक में, पाठयिस्त तावकथ क क्रम में व्यिवस्त होनी ् ् ् ु ु ु चावहए। विवभन्न प्रकरण सरल से कवठन के क्रम म ें होने चावहए त ा उनमें अतसांबि भी होना ं ं चावहए

। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 137 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 d. पाठयपस्तक की आतररक साजसज्जा- आतररक साजसज्जा विद्यावर्थयों को पाठयपस्तक के ् ् ु ु ां ं प्रवत आकवषतथ करती ह।ै पाठयपस्तकों म ें य ार्ास्् ान वचत्र, तावलका, ग्राफ आवद का समिाशे ् ु वकया जाना चावहए वजससे पाठयिस्त की व्याख्या और स्पष्ट हो सके । ् ु e. पस्तक का मल्य- पाठयपस्तकों का मलय बहत अविक नहीं होना चावहए। ु ् ु ू ू ु ू f. पाठयपस्तक के प्रारभ में विषय सची त ार्ा अत में अनक्रमवणका का प्रयोग उसे और उपयोगी ् ु ू ू ु ं ं बनाता ह।ै g. रययेक प्रकरण के अत म ें अभ्यास प्रश्न त ार्ा कछ पररयोजना कायथ वदए जाने चावहए। ु ं h. िास्ति म ें पाठयपस्तक सिाथविक महत्िपणथ वशक्षण-सामग्री ह।ै अतः, इनका चयन बहत ु ् ु ू ंसिाानी के सार् होना चावहए। उपरोक्त विचे न पाठयपस्तक की अपेवक्षत विशेषताओ का ् ु ं उललेख ह।ै ये विशेषताए ँ पाठयपस्तक के चयन का आिार भी ह।ैं यवद इन आिारों का अनगमन ् ु ु कर पाठयपस्तक का चयन वकया जाए तो उनकी उपयोवगता बढ़ जाती ह।ै ् ु 2. श्यामपट्ट- श्यामपट्ट प्रत्येक कक्षाकक्ष का एक अवनिायथ उपकरण ह।ै हालाँवक ितथमान पररदृश्य में इसका स्् ान अनेक विद्यालयों में श्वेतपट्ट या अतःवक्रयात्मक श्वेतपट्ट ने ले वलया ह।ै भाषा ं वशक्षक का श्यामपट्ट लेखन पर वजतना अविक स्िावमत्ि होता ह ै िह उतना ही प्रभिाशाली वशक्षक होता ह।ै वशक्षक इसका प्रयोग कवठन शधदों के अर्थ वलखने, कविता वशक्षण के समय तलनात्मक कविता वलखने, रस, छद, अलकार आवद की व्याख्या करने म ें कर सकता ह।ै ु ं ं श्यामपट्ट का यवद कछ ंसिाानी के सार् प्रयोग वकया जाय तो इसका प्रयोग और प्रभिी हो ु जाता ह।ै श्यामपट्ट का प्रयोग करते समय वशक्षक को

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **386**

वनम्नवलवखत बातों का ध्यान रखना चावहए: i. कक्षा में प्रिशे करते ही छात्रों का ध्यान

विषय िस्त की ओर आकवषतथ करने के वलए ु वशक्षक को श्यामपट्ट साफ करके उस पर कक्षा, विषय, प्रकरण, वदनाक, अिवि आवद ं आिश्यक सचनाओ को वलख दने ा चावहए। ू ं ii. श्यामपट्ट पर लेखन कायथ करते समय अध्यापक को

Plagiarism detected: **0.11%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **387**

इस प्रकार खड़े होना चावहए वक विद्या ार्ी को श्यामपट्ट पर वलखी हई सामग्री को दखे ने म ें असविा न हो। ु ु iii. अशद्ध भाषा के प्रयोग से बचना चावहए। ु iv. श्यामपट्ट पर लेखन कायथ करते समय सफे द ए ि रगीन चॉक का य ार्ोवचत प्रयोग करना ं ं चावहए। v. श्यामपट्ट के अत्यविक प्रयोग से भी बचना चावहए क्योंवक इससे कक्षा में नीरसता आती ह।ै vi. श्यामपट्ट पर वलवखत विषय सामग्री को स्पष्ट करने के वलए सके तक का प्रयोग करन

ा ं चावहए। vii. श्यामपट्ट पर लेखन कायथ करते समय वशक्षक को बोलन े की गवत का भी ध्यान रखना चावहए। वलखने ए ि बोलने की गवत में तारतम्यता होनी चावहए। ं viii. कक्षा के बाहर वनकलते समय अध्यापक को श्यामपट्ट साफ कर दने ा चावहए। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 138 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 3. वस्त/मॉडल/हचि/रेखाहचि- भाषा एक ऐसा विषय ह ै वजसमें सभी विषयों से सबवित ु ं ं पाठयसामग्री सकवलत होती ह।ै भाषा के पाठयपस्तकों म ें भी लगभग सभी विषयों से सबवित ् ् ु ं ं ं लेख का सकलन

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ + 2 resources! id: **388**

होता ह।ै इन लेखों को स्पष्ट ढग से समझने के वलए पाठयपस्तकों के इतर भी ् ु ं ं कछ सामग्री की आिश्यकता होती ह।ै इन सामवग्रयों में िस्त, मॉडल, रेखावचत्र, वचत्र आवद का ु ु प्रयोग वकया जा सकता ह।ै िस्त से आशय सामग्री के िास्तविक रुप से ह।ै यवद छोटे बच्चों को ु सवधजयों के नाम बताए जा रह े ह ैं तो कक्षा म ें विवभन्न सवधजयों को वशक्षण-सामग्री के रूप में प्रयक्त वकया जा सकता ह।ै मॉडल िस्त के प्रवतमान या प्रवतरुप को कहते ह।ैं यवद ताजमहल पर ु ु आिाररत कोई वनबि पढ़ाया जा रहा ह ै तो ताजमहल के प्रवतरूप को कक्षाकक्ष में लाकर ं विद्यावर्थयों को वदखाया जा सकता ह।ै वकसी महापरु

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **389**

ष की जिीनी पढ़ात े समय उनके वचत्र का ु प्रयोग वकया जा सकता ह।ै कक्षा म ें इन िस्तओ का प्रयोग कर बच्चों की मौवखक भाषा को ु ं विकवसत वकया जा सकता ह।ै इनके प्रयोग के माध्यम से बालक म ें लेखन क्षमता का भी विकास वकया जा सकता ह।ै सामवग्रयों के प्रयोग में ंसिाानी रखकर इनको और अविक प्रभिी बनाया जा सकता ह

।ै ये ंसिाावनयाँ ओिवलवखत ह:ैं i. प्रयक्त की जान े िाली िस्त या मॉडल या रेखावचत्र का आकार बहत महत्िपण थ ह।ै इनका ु ु ु ू आकार न ज्यादा बड़ा और न ही ज्यादा छोटा होना चावहए। ये आकार म ें इतने बड़े होने चावहए वक इन्ह ें एक स्् ान से दसरे स्् ान तक आसानी से ले जाया जा सके ए ि कक्षा के सभी ं ू विद्या ार्ी उसे सरलतापिकथ दखे सकें । ू ii. कक्षा म ें इनको उवचत स्् ान पर रखना चावहए और अध्यापन कायथ करते समय आिश्यकता पड़ने पर इन्ह े छात्रों को वदखाना चावहए। iii. यवद वकसी वचत्र या रेखावचत्र

Plagiarism detected: **0.13%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **390**

का प्रयोग वकया जा रहा ह ै तो उसे कक्षा की दीिार पर इस प्रकार से टँगना चावहए वक सारे विद्या ार्ी उसे आसानी से दखे सकें । iv. मॉडल, वचत्र, रेखावचत्र, आवद का प्रयोग समाप्त हो जान े पर इसे उवचत स्् ान पर रख दने ा चावहए। v. उपकरण का प्रयोग करते समय वशक्षक को यह ध्यान रखना चावहए वक वशक्षण- सामग्री विषयिस्त से सबवित हो। ु ं ं 4. पोस्टर, मानहचि और चाटा

- भाषा कक्षा म ें वशक्षक को भाषा का इवतहास या भौगोवलक वस्त्वत का अध्यापन करना पड़ता ह।ै इस वस्त्वत में वशक्षक वशक्षण-सामग्री के रुप म ें मानवचत्र का प्रयोग

कर सकता ह।ै प्राचीन वशक्षण सस्त्ाओ को पढ़ाते समय मानवचत्र के द्वारा उनकी ं ं भौगोवलक वस्त्वत को दशाथया जा सकता ह।ै भाषा पररिार या भारत म ें बोली जान े िाली प्रमख ु भाषाओ को बतान े के वलए चाटथ आवद का प्रयोग वकया जा सकता ह।ै इन सामवग्रयों का उपयोग ं करते समय यवद कछ ससिाावनयाँ बरती जाए तो इनका उपयोग और प्रभिाशाली हो सकता ह।ै ु i. य ास्त्मय प्रयोग उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 139 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 ii. पोस्टर या चाटथ का वनमाथण करते समय वशक्षक को तर्थय एि वचत्रों के समिोश पर ध्यान ं दने ा चावहए। तर्थय एि वचत्र विषयिस्त के अनकल होने चावहए। ु ु ू ं iii. सस्पष्ट होना चावहए तावक परी कक्षा को वदखाई द े सके । ु ू iv. भाषागत त्रवट से बचना चावहए । ु 5. मैहजक लालटेन, हचिदिाक हचि हवस्तारक मक चलहचि - मवै जक लालटेन एक ऐसा ू उपकरण ह ै वजसके माध्यम से वचत्रों, रेखावचत्रों, चाटथ आवद के स्लाइडों को बड़ा करके प्रस्तत ु वकया जाता ह।ै कम्प्यटर एि प्रोजक्े टर के प्रचलन के कारण इसका प्रयोग लगभग समाप्त सा हो ु ं चका ह।ै वचत्र विस्तारक सिी वचत्रों को बड़ा करके वदखाता ह।ै सामान्यतः भाषा वशक्षण म ें वचत्रों ु

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **391**

का प्रयोग कम होता ह।ै अतः, वचत्र विस्तारक का भी प्रयोग कम होता ह।ै वफर भी इसका प्रयोग

य ास्त्रा समय करके भाषा वशक्षण को प्रभिी बनाया जा सकता ह।ै मक चलवचत्रों में परी वफलम ू ू वबना आिाज के वदखाई जाती ह।ै आिाज का काम बच्चे करते ह ैं वजससे उनके मौवखक भाषा का विकास होता ह।ै उपरोक्त सारी सामग्री अपने स्िरुप म ें यावत्रक ह।ै अतः, कक्षाकक्ष म ें इनका ं प्रयोग करते समय विशेष ससिाानी रखनी पड़ती ह।ै कक्षाकक्ष म ें इनका प्रयोग करते समय ध्यान रखने िाली बात ें ओिवलवखत ह:ैं i. कक्षाकक्ष म ें इनके प्रयोग से पहले इन्ह ें भली-भाँवत जाँच लेना चावहए त ास्त्रा विद्यावर्थयों के कक्षा में प्रिेश से पहले इन्ह ें सटे कर लेना चावहए। ii. वचत्र विस्तारक की सहायता से वचत्रों के आकार को इतना ही बड़ा रखना चावहए वक विद्या ास्त्री उन्ह ें सरलता से दखे सकें । iii. इन यत्रों का प्रयोग कर पाठयिस्त को पढ़ात े समय विद्यावर्थयों से बीच-बीच में प्रश्न भी ृ ु ं पछते रहना चावहए तावक यह पता चल सके वक विद्या ास्त्री का ध्यान विषय िस्त एि यत्र ू ु ं ं दोनों पर ह ैं या वसफथ यत्र पर ह।ै ं अभ्यास रश्न 1. श्यामपट्ट, चॉक आवद को वशक्षण-अविगम सामग्री नहीं कहते ह।ैं (सत्य/असत्य) 2. सचना एि सचार प्रौद्योवगकी को भी वशक्षण-अविगम सामग्री म ें शावमल वकया जाता ह।ै ू ं ं (सत्य/असत्य) 3. वशक्षण-अविगम सामग्

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindivarnamala.in/teen-akshar-wale-shab… id: **392**

री के तीन प्रमख िग थ ह।ैं (सत्य/असत्य) ु 4. दृश्य वशक्षण-अविगम सामग्री के तीन

उपिग थ ह।ैं (सत्य/असत्य) 5. पाठयपस्तक एक महत्िपण थ श्रव्य वशक्षण-अविगम सामग्री ह।ै (सत्य/असत्य) ृ ु ू 6. हॉलक्िस्े ट के अनसार पाठयपस्तक की पररभावषत कीवजए । ृ ु ु 7. वशक्षक द्वारा कक्षा म ें प्रिेश करते ही श्यामपट्ट पर वलखी जाने िाली महत्िपण थ सचनाओ को ू ू ं सचीबद्ध कीवजए । ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 140 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 4.5 श्रव्य उपकरण इस श्रेणी में शावमल होनिाली प्रमख वशक्षण सामग्री ग्रामोफोन, वलग्िाफोन, टेप-ररकॉडथर, रेवडयो, आवद ु ं ह।ै तकवनकी के विकास के सार्-सार् विवभन्न यत्रों का विकास हआ जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से ु ं वशक्षण कायथ के वलए लाभप्रद ह।ैं कछ प्रमख यत्रों का िवरण ओिवलवखत ह:ै ु ु ं 1. ग्रामो ास्त्रोन- विवभन्न यत्रों म ें सबसे प्राचीन ग्रामोफोन को माना जाता ह।ै ग्रामोफोन का कायथ भी टेप- ं ररकॉडथर के कायथ के समतलय ास्त्रा। टेपररकाडथर के प्रचलन से ग्रामोफोन का प्रचलन समाप्त हो गया। ु 2. हलग्वा ास्त्रोन- यह इस क्षेत्र का दसरा प्रमख आविष्कार ास्त्रा। टेप-ररकॉडथर के प्रचलन के कारण यह भी ु ां ू प्रचलन से बाहर हो गया। - 3. टेप-ररकॉडार- यह एक ऐसा यत्र ह ै वजसकी सहायता से आिाज को ररकॉडथ करके बाद में सना जा ु ं सकता ह।ै प्राचीन समय म ें ऐसी व्यिस्त्ा नहीं ास्त्री। उस समय वकसी व्यवक्त के द्वारा कही गई बात तभी तक हम ें याद रहती ास्त्री जब तक वक हमारा मवस्तष्ट्क उसे याद रख पाता ास्त्रा। उस बात को दबारा सनने ु ू की भी व्यिस्त्ा नहीं ास्त्री। टेप ररकॉडथर के माध्यम से हम वजतनी बार चाह े और जब चाह े तब वशक्षण- सामग्री को सन सकत ें ास्त्रें। इसका स्त्ान पेन ड्राइि, ममे ोरी काडथ एि सीडी जसै े यत्रों ने ले वलया ह ै जो ु ं ं कप्यटर या सीडी प्लेयर की सहायता से चलाए जाते ह।ैं इन यत्रों के प्रयोग द्वारा कविता, पाठ, नाटक ू ं ं आवद का वशक्षण सगमता से वकया जा सकता ह।ै यह सिाद, उच्चारण एि पठन कौशल में वनपणता ु ु ं ं म ें विवद्ध करता ह ै एि मौवखक अवभव्यवक्त की शवक्त का विकास करता ह।ै यह ग्रामोफोन एि ृ ं ं वलग्िाफोन दोनों की तलना म ें छोटा होता ह ै त ास्त्रा अविक प्रभिी होता ह।ै इसके

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/barahkhadi id: **393**

माध्यम से सस्िर ु ं िाचन, आदशथ िाचन, अनकरण िाचन आवद कौशलों का अभ्यास सरलता एि प्रभिा पण थ ढग से ु ू ं ं कराया जा सकता ह

।ै विवभन्न विद्वानों के व्याख्यानों को ररकॉडथ करके भिी प्रयोग के वलए सरवक्षत ु रखा जा सकता ह।ै 4. रेहडयो- रेवडयो सिाथविक मशहर सिान ह।ै आकाशिाणी के द्वारा प्रसाररत कायथक्रमों से विद्या ास्त्री शद्ध ू ु

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 2 resources! id: **394**

उच्चारण करना सीखते ह।ैं इसके सार्-सार् स्रेस, तारत्ि, अनतान आवद जसै े भाषाई पक्षों का भी ु ज्ञान होता ह।ै इनका प्रयोग करते समय वशक्षक को कछ बातों को ध्यान

में रखना चावहए। ये बातें ु वनवम्नलवखत ह:ैं i. कक्षा में प्रयोग से पहले उपकरण की भली-भाँवत जाँच कर लेनी चावहए। ii. यत्रों

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **395**

के प्रयोग से पहले विद्याार्ी को यत्र के सचालन की विवि से अिगत कराना चावहए। ं ं ं iii. यत्रों का प्रयोग शवै क्षक महत्ि के वलए वकया जाना चावहए ना वक मनोरजन के वलए। ं ं iv. इन यत्रों का प्रयोग करते समय कक्षाकक्ष का ातिारण शात होना चावहए तावक विद्याार्ी ं ं सनकर भली-भाँवत समझ सकें । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 141 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 4.6 दश्ृ य-श्रव्य उपकरण 1. टेलीहवजन/वीहडयो/चलहचि/नाटक - दृश्य-श्रव्य सामग्री से आशय ऐसी सामवग्रयों से ह ै वजन्ह ें एक समय पर दखे ा और सना दोनों वकया जा सकता ह।ै इस प्रकार की सामग्री हमारे वशक्षण-अविगम ु कायथ को अविक प्रभिी बना दते ी ह ै क्योंवक इन सामवग्रयों का उपयोग करते समय में हमारी दो ज्ञानेंवद्रयाएँ एक सार् सवक्रय रहती ह।ै दरदशनथ पर पहले प्रौढ़ वशक्षा के कायथक्रम वदखाए गए। बाद म ें ू 1960-61 ईसिीं म ें बच्चों की वशक्षा के कायथक्रम प्रसाररत वकए गए। एनसीईआरटी द्वारा वनवमतथ एक और अनेक के वशक्षण को लेकर बनाए गए एवनमटे ेड मिी वजसका प्रसारण दरदशनथ पर होता ारा ि ह ू ू सबको याद होगा। टेलीविजन पर विविि कायथक्रमों को दखे कर एि सनकर विद्याार्ी भाषा सबिी ु ं ं ं बारीवकयों यारा- शद्ध उच्चारण, शधदों का सप्रासवगक प्रयोग, मौवखक अवभव्यवक्त के सार् आनन ु ं अवभव्यवक्त का तारतम्य आवद तर्थयों को भी सीखता ह।ै ि ारिाावहक या ज्ि लित मद्दों पर नाटय मचन ृ ु ं ं को दखे कर विद्याार्ी सिाद शलै ी में वनपणता हावसल करता ह।ै चलवचत्र या वसनेमा समाज में ु ं मनोरजन के सिान के रूप म ें प्रचीन काल से ही प्रवसद्ध ह।ै इसका शभारभ 2ठिीं शताधदी म ें हआ ु ु ं ं लेवकन यह वसफथ मनोरजन का ही सिान नहीं ह ै बवलक वशक्षा के क्षेत्र म ें भी इसका महत्िपण थ स्ान ू ं ह।ै विवभन्न ऐवतहावसक वफलमों, ि ावमकथ वफलमों आवद को दखे ने से उस समय की भाषाई वस्वत का पता चलता ह।ै इस प्रकार भाषा वशक्षण के वलए टेलीविजन, चलवचत्र, आवद उपयोगी सिान ह।ै नाटक के मचन का भी उपयोग भाषा वशक्षण में वकया जा सकता ह।ै पाठयपस्तक में प्रदत्त नाटक का ृ ु ं मचन कर विद्याार्ी सिाद मैं उवचत आरोह-अिरोह, अनतान, तारत्ि आवद कौशलों में दक्षता हावसल ु ं ं कर सकता ह।ै 2. भाषा रयोगिाला- भाषा प्रयोगशाला एक ऐसा कक्षाकक्ष ह,ै वजसमें भाषा अविगम को अविक प्रभिाशाली बनाने के वलए विशषे प्रकार के उपकरणों को एक सार् सबद्ध कर अविगम ि ातिारण ं तैयार वकया जाता ह।ै सरल शधदों में, हम भाषा प्रयोगशाला को भाषा वशक्षण कें द्र

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindimatra.in/ka-se-shabd-hindi id: **396**

के रूप म ें समझ सकते ह ैं वजसमें विद्याार्ी को पढ़ने, वलखने, बोलन े तारा सनन े के वलए वनयवत्रत ि ातिारण प्रदान ु ं वकया जाता ह।ै स

िप्रथ र्म, भाषा प्रयोगशाला की स्ापना, 1966 में अमरे रका के शवै क्षक तकवनकी राष्ट्रीय पररषद के द्वारा की गई। कालातर म ें विश्व के सभी विकवसत और विकासशील दशे ों म ें इसकी ं स्ापना की गई। भारतिषथ के कछ विद्यालय एि विश्वविद्यालय में भी भाषा प्रयोगशाला की स्ापना ु ं की गई ह।ै रयोगिाला भाषा रयोगिाला मैं उपकरण ति रहिया भाषा प्रयोगशाला के तीन महत्िपणथ भाग होते ह।ैं ये भाग वनम्नवलवखत ह:ैं ू 1. श्रवण कोष्ठ - श्रिण कोष्ठों की सख्या 16 से 20 होती ह।ै प्रत्येक कोष्ठ म ें एक मजे तारा एक कसी ु ं होती ह ै वजस पर बैठकर छात्र कायथ करते ह।ैं इसके अलिा परामशदथ ाता से बातचीत करने के वलए दरभिा, ईयरफोन, वस्ि च तारा टेप-ररकॉडथर होते ह।ैं उपरोक्त यत्रों की सहायता से छात्र वनयत्रण कक्ष से ं ं ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 142 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 सपकथ स्ावपत करता ह।ै श्रिण कोष्ठ में छात्र को अपनी आिाज को ररकॉडथ करने तारा वफर उसे सनने ु ं का प्रबि रहता ह।ै प्रत्येक कोष्ठ एक-दसरे से 4 फीट ऊँ ची दीिारों के माध्यम से अलग वकए गए रहते ं ू ह ैं तावक छात्र वबना वकसी व्यिान के अपना कायथ कर सकें । 2. परामिदाता कोष्ठ- इस कोष्ठ म ें कई प्रकार के मास्टर टेप रख े रहते ह ैं तारा परामशदथ ाता और

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 3 resources! id: **397**

छात्र के मध्य सबि स्ावपत करने की व्यिस्ा बनाई गई रहती ह।ै इस कोष्ठ म ें वनम्नवलवखत सामग्री होती ं ं ह:ैa. छात्रों के वलए ररकॉडथ वकए गए कायथक्रम को वनयवत्रत करने के वलए वडस्रीधयशन वस्ि च्स ू ं b. छात्रों क

े आिाज को सनने हि उसमें सिार लान े के वलए मॉवनटररग वस्ि च्स ु ु ं ं c.

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **398**

छात्रों के सार् वद्धमागी सप्रेषण करने के वलए करने के वलए इटरकॉम वस्ि च्स ं ं d. विशेषज्ञ टेप के सार् कायथ करने ि ाल े छात्रों के वलए उद्घोषणा करने हते ग्रप कॉल वस्ि च्स ु ु e. सभी छात्रों के वलए उद्घोषणा करने हते ऑल कॉल वस्ि च्स ु 3. हनयिण कक्ष- इस कक्ष में छात्रों क

ो उपलधि कराने के वलए सभी

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **399**

प्रकार के टेपररकॉडथर त◌ा◌ं उपकरण रखे गए होते ह।◌ैं परामशदथ ◌ाता मास्टर टेप का प्रयोग करता ह

।◌ै प्रत्येक कोष्ठ म◌ें उपलधि टेप में, आाजों को ररकॉडथ

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **400**

कर वलया जाता ह।◌ै छात्र अपने-अपने कोष्ठ म◌ें टेप को सनते ह◌ैं त◌ा उस पर ◌ु मौवखक अवभव्यवक्त करते ह।◌ैं ये अवभव्यवक्तयाँ या अनवक्रयाए ◌ँ छात्र के कोष्ठ म◌ें रख◌े गए उपकरण के ◌ु द्वारा ररकॉडथ कर ली जाती ह।◌ै छात्र

उस ररकॉडथ का कई बार प्रयोग कर स्◌िय यह जान लेता ह◌ै वक◌ं उसके द्वारा की गई अवभव्यवक्त या अनवक्रया सतवष्टप्रद ह◌ै या नहीं। ◌ु ◌ु◌ं भाषा रयोगिाला के लाभ इसके वनम्नवलवखत लाभ ह:◌ैं a. छात्र स्◌ि गवत से अविगम करता ह।◌ै b. इसम◌ें त्◌िररत पष्ठपोषण प्राप्त होने के कारण

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… + 4 resources! id: **401**

विद्या◌र्ी को उच्चस्तरीय अवभप्रेरणा वमलती ह।◌ै ◌ृ c. विषयिस्त को बार-बार सनने के कारण उच्चारण की शद्धता का ज्ञान होता ह।◌ै ◌ु ◌ु ◌ु d. विद्या◌र्ी अपनी गलवतयों को स्◌ि प्रयास से ठीक करना सीखता ह।◌ै e. प्रत्येक कोष्ठ एक-दसरे से अलग होते ह।◌ैं इसवलए छात्र को अन

◌्य विद्यावर्थयों की उपलवधि की ◌ू मौजदगी से कोई सकोच नहीं होता ह।◌ै ◌ू◌ं सीमाए ◌ाँ इसकी वनम्नवलवखत सीमाए ◌ँ ह:◌ैं a. भाषा प्रयोगशाला वसफथ श्रिण एि◌ं िचन कौशल के वलए ही उपयोगी ह।◌ै पठन एि◌ं लेखन◌ं◌ं कौशल म◌ें इसका उपयोग नहीं वकया जा सकता ह।◌ै b. यह अत्यविक व्यय साध्य विवि ह।◌ै c. इसमें छात्र सामवहक कायथ से ि◌वचत रह जाता ह।◌ै ◌ू◌ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 143 ◌ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 d. मौवखक अवभव्यवक्त के सार्-सार् आनन अवभव्यवक्त का उवचत समायोजन ि◌चन कौशल का एक महत्◌िपणथ पक्ष ह।◌ै भाषा प्रयोगशाला में छात्र आनन अवभव्यवक्त से ि◌वचत रह जाता ह।◌ै ◌ू◌ं 4. कम्प्◌्यटर एव इटरनेट ◌ु ◌ां◌ं ि◌तथमान पररदृश्य म◌ें कप्यटर एि◌ं इटरनेट सिाथविक महत्◌िपण थ दृश्य-श्रव्य सामग्री ह।◌ै कप्यटर पर हम ि◌ी सारे ◌ू ◌ू ◌ू◌ं◌ं◌ं◌ं कायथ कर सकते ह◌ैं जो टेलीविजन या रेवडयो या वफर टेप-ररकॉडथर

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **402**

के माध्यम से भाषा वशक्षण के वलए सपन्न वकया जाता ह।◌ै पेन ड्राइि या ममे ◌ोरी काडथ के माध्यम स

◌े हम अपनी आाज को ररकॉडथ कर असख्य◌ं◌ं बार सन सकते ह।◌ैं अपनी गलती का पता कर उसका वनिारण कर सकते ह।◌ैं इटरनेट पर अनेक ऐस◌े ◌ु◌ं सॉफ्टिये सथ ह◌ैं जो भाषा सीखने म◌ें सहायता करते ह।◌ैं ऐसे कई ऑफलाइन सॉफ्टिये र भी उपलधि ह◌ैं जो की भाषा सीखन◌े में मदद करते ह।◌ैं य◌ा- कें द्रीय वहदी सस्◌ान आगरा के वलए सी डैक पण◌े द्वारा तैयार वकया ◌ू◌ं◌ं गया लीला प्रिीण, लीला प्राज्ञ आवद सॉफ्टिये सथ। यहाँ छात्र अपनी गवत से सीखता ह◌ै एि◌ं वबना सकोच के◌ं◌ं अपनी गलवतयों का वनिारण करता ह।◌ै अभ्यास रश्न 8. वचत्र या रेखावचत्र को कक्षा के दीिार पर

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **403**

इस प्रकार टाँगना चावहए वक ि◌ह सभी विद्यावर्थयों को स्पष्ट वदखाई पड़े। (सत्य/असत्य) 9. मॉडल का प्रयोग करने के बाद उसे ि◌हीं छोड़ दने ◌ा चावहए। (सत्य/असत्य) 10. कक्षा म◌ें ि◌ास्तविक ि◌स्तओ का वशक्षण अविगम सामग्री के रूप म◌ें प्रयोग करत

◌े समय उसके ◌ु◌ं आकार को ध्यान म◌ें रखना चावहए । (सत्य/असत्य) 11. वशक्षण-अविगम सामग्री विषयिस्त से सबवित होनी चावहए।(सत्य/असत्य) ◌ु◌ं◌ं 12. रेखावचत्र म◌ें अशद्ध

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **404**

भाषा का प्रयोग ग्रहणीय ह◌ै । (सत्य/असत्य) ◌ु 13. मवै जक लालटेन वकसे कहते ह?◌ैं 14. वचत्र विस्तारक क्या ह?◌ै 15. टेप-ररकॉडथर का प्रयोग

मख्यतः वकस भाषाई कौशल के वशक्षण हते उपयोगी ह?◌ै ◌ु ◌ु 16. भाषा प्रयोगशाला वकसे कहते ह?◌ैं 17. सिप्रथ र्म भाषा प्रयोगशाला की स्◌ापना वकस ि◌ष थ एि◌ं वकस दशे म◌ें हई◌ ◌ी। ◌ु◌ं 18. भाषा प्रयोगशाला म◌ें कोष्ठों की सख्या_____होती ह।◌ै◌ं 19. परामशदथ ◌ाता कोष्ठ भाषा_____ का एक भाग ह।◌ै 20. ऑल कॉल वस्◌िच्स

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **405**

का प्रयोग_____उद्घोषणा करने के वलए वकया जाता ह।◌ै 21. भाषा प्रयोगशाला वसफथ ि◌चन एि◌ं_____कौशल के वलए उपयोगी ह।◌ै◌ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 144 ◌ु हिन्दी क

◌ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 4.7 भाषा तशक्षण के तलए पाठ्य सहगामी तक्रयाए ◌ँ पाठय सहगामी वक्रयाओ से आशय ऐसे वक्रया-कलापों से ह◌ै जो पाठयक्रम का वहस्सा नहीं होते ह◌ैं वफर भी ◌्◌ं◌ं पाठयक्रम को प्रभिी ढग से विद्यावर्थयों तक प्रसाररत करने एि◌ं वशक्षण अविगम-प्रवक्रया को रुवचकर ◌्◌ं◌ं बनाने के वलए आयोवजत वकए जात◌े ह।◌ैं ये व्यवक्तत्◌ि के सिांगीण विकास के सशक्त माध्यम ह।◌ैं ऐसे वकयाकलाप

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **406**

छात्रों को विद्यालय में बाँि रखते ह ैं त ा श्रेष्ठ नागररक बनने म ें उनकी सहायत

ा करते ह।ैं ये वसफथ मनोरजन के सिान नहीं होते ह ैं बवलक इनके द्वारा वशक्षण कायथ भी सपन्न वकया जा सकता ह।ै भाषा ं ं वशक्षण म ें तो पाठय सहगामी वक्रयाएँ महत्िपणथ भवमका वनभाती ह।ैं भाषा वशक्षण के क्षेत्र में आयोवजत की ् ू ू जा सकने िाली मख्य पाठय सहगामी वक्रयाए ँ वनम्नवलवखत ह:ैं ् ु 1. वाद-हववाद- िाद-ंविाद से आशय वकसी प्रत्यय या विचार के पक्ष एि प्रवतपक्ष म ें तावकथ क चचा थ से ं ह।ै यह व्यवक्तगत एि सामवहक दोनों स्िरूप का होता ह।ै सिथप्रर्म वकसी एक विषय का चयन वकया ू ं जाता ह ै वजस पर एक व्यवक्त उसके पक्ष में तो दसरा विपक्ष म ें तकथ दते ा ह।ै यवद इसका स्िरूप ू सामवहक होता ह ै तो एक समह इस विषय के पक्ष में विचार प्रस्तत करता ह ै एि दसरा समह विपक्ष म।ें ू ू ु ू ं ू इससे विद्या ी में तावकथ क रूप से वचतन करने एि मौवखक अवभव्यवक्त करने की योग्यता का विका

Plagiarism detected: **0.02%** https://grammarsikho.in/k-se-gya-tak/ id: **407**

स ं ं होता ह।ै िाद- ंविाद का विषय यवद विद्या ी के रूवच के अनकल होता ह ै त

ो विद्या ी खद को इससे ु ू ु दर नहीं रख पाता ह।ै विद्या ी यवद स्िच्े छा से इन आयोजनों म ें भाग लेता ह ै तो िह अविक ू प्रभिाशाली ढग से सीखता ह।ै ं 2. भाषण रहतयोहगता- भाषण से अर्थ वकसी विषय के समग्र रूप को भाषाई अवभव्यवक्त द्वारा प्रस्तत ु करने से ह।ै भाषण के आयोजन द्वारा व्यवक्त को मौवखक अवभव्यवक्त के वलए अवभप्रेरत वकया जा सकता ह।ै मौवखक अवभव्यवक्त के पररणाम-स्िरुप विद्या ी का िाचन कौशल समद्ध होता ह।ै इसके ृ सार् ही श्रिण कौशल भी समद्ध होता ह।ै भाषाण प्रवतयोवगता का आयोजन करते समय यह ध्यान ृ रखना चावहए वक भाषण का विषय समसामवयक एि विद्या ी के मानवसक स्तर त ा रूवच के ं अनकल होना चावहए। जवटल विद्वतपणथ विषय विद्यावर्थयों को इस प्रवतयोवगता से दर रख सकते ह।ैं ु ू ू ू भाषाई कौशल म ें विकास के अवतररक्त भाषण प्रवतयोवगता से विद्यावर्थयों के बौवद्धक स्तर म ें भी विकास होता ह।ै विवभन्न विषयों पर अपने विचार रखने में सक्षम होते ह।ैं 3. नाट्य मचन- नाटक प्रारभ से ही समाज में मनोरजन के सिान

Plagiarism detected: **0.02%** https://hi.wikipedia.org/wiki/सीआईडी_(धारावाहिक) id: **408**

के रूप में प्रयोग वकया जाता रहा ह ै ् ां ं ं लेवकन मनोरजन के सिान के स

ार्-सार् यह वशक्षण कायथ, विशेषतः भाषा वशक्षण कायथ म ें भी ं महत्िपण थ भवमका वनभाता ह।ै इससे छात्र के िाचन कौशल में वनखार आता ह।ै छात्र सिाद शलै ी को ू ू ं समझता ह।ै पररवस्र्वत के अनसार स्िरों म ें कै से आरोह-अिरोह का प्रयोग करना ह,ै इसका ज्ञान प्राप्त ु करता ह।ै शधदों के प्रासवगक प्रयोग को सीखता ह।ै मौवखक अवभव्यवक्त के सार्-सार् आनन ं अवभव्यवक्त के समायोजन को सीखता

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **409**

ह।ै इस प्रकार नाट्य मचन के द्वारा एक सार् कई भाषाई ् ं कौशलों का विकास वकया जा सकता ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 145 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 4. कहवता का सस्वर वाचन- कविता का सस्िर िाचन या काव्य पाठ छात्रों के िाचन कौशल को विकवसत करता ह।ै छात्र शद्ध उच्चारण करना सीखता ह।ै िाचन म ें यवत, गवत, लय, विराम-वचन्ह, ु आवद के महत्ि को सीखता ह।ै आरोह, अिरोह, स्रेस अनतान आवद का ज्ञान भी प्राप्त होता ह।ै ु 5. समाचार पि पर आिाररत काया-कलाप- इस पर आिाररत प्रमख कायथ-कलाप समाचार-पत्र का ु िाचन ह।ै इससे

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **410**

छात्रों के िाचन एि पठन दोनों कौशलों म ें विकास होता ह।ै िगथ-पहले ी समाचार-पत्र ं के आिार पर आयोवजत की जाने िाली दसरी प्रमख गवतविवि या वक्रया-कलाप ह ै जो छात्रों क

े ु ू शधदकोष को विकवसत करती ह।ै समाचार- पत्रों म ें प्रकावशत आलेख को स्िय के शधदों में वलखने से ं विद्या ी के लेखन कौशल में भी विकास होता ह।ै विवभन्न सावहवत्यक ंविाओ के व्याकरवणक ं सरचना की जानकारी एक स्ान पर ही प्राप्त

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **411**

हो जाती ह।ै इस प्रकार समाचार-पत्र आिाररत वक्रया- ं कलाप भाषा वशक्षण म ें महत्िपण थ भवमका वनभा सकते ह।ैं ू ू 6. अययाक्षरी- यह एक प्रकार क

ा खले ह ै वजसमें वकसी शधद के अवतम अक्षर से शरु होने िाले शधद ु ां ं को बोलना होता ह।ै यह खले विद्यावर्थयों के शधदकोश वनमाथण में महत्िपणथ भवमका वनभाता ह।ै ू ू 7. मच सचालन- विद्यालय म ें आयोवजत होने िाले विवभन्न कायथक्रमों के वलए मच- सचालन का ां ां ं ं दावयत्ि विद्यावर्थयों को प्रदान वकया जाना चावहए। इससे विद्या ी मच सचालन की गररमा को समझ ं ं सकें ग।े मच सचालन की भाषा शलै ी से पररवचत हो सकें ग े और उनका प्रयोग कर सकें ग।े मच ं ं ं सचालन

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.focusonlearn.com/hindi-varnmala/ id: **412**

में उच्चारण की शद्धता बहत महत्िपणथ होती ह।ै अतः, छात्र उच्चारण की शद्धता पर ु ु ू ु ं अविक ध्यान दीवजए ग े और उनका उच्चारण क

ौशल समद्ध होगा। ृ 8. हनबि लेखन रहतयोहगता- वनबि लेखन प्रवतयोवगता के आयोजन से विद्यावर्थयों के लेखन क्षमता ां ं पर प्रत्यक्ष प्रभिा पड़ता ह ै इसके सार् ही विद्यावर्थयों की वचतन शवक्त का भी विकास होता ह।ै ं 9. हवज्ञापन हनमााण- विज्ञापन की अपनी एक अलग दवनया ह।ै इस की भाषा शलै ी भी अलग होती ह।ै ु इस शलै ी पर स्िावमत्ि स्ावपत करने के वलए अभ्यास की आिश्यकता होती

Plagiarism detected: **0.01%** https://hindivarnamala.in/char-akshar-wale-shab… id: **413**

ह।ै विज्ञापन वनमाथण सबवित प्रवतयोवगता का आयोजन करके विद्यावर्थयों को विज्ञ

ापन की दवनया में प्रिेश करने एि उसे ं ं ं ु पण थ रूप से अपने आत्मसात करने का अिसर प्रदान वकया जा सकता ह।ै इससे वसफथ विद्यावर्थयों के ू भाषाई कौशल का ही विकास नहीं होता ह ै बवलक उनके अदर ह ै व्यिसावयक दक्षता भी आती ह ै जो ं उनके भिी जिीन के वलए उपयोगी ह।ै विद्यालय में होने िाले अन्य कायथक्रमों के सार् विज्ञापन वनमाथण सबिी कायथक्रम को जोड़ा जा सकता ह।ै प्रत्येक कायथक्रम के प्रचार-प्रसार के वलए विज्ञापन ं ं वनमाथण प्रवतयोवगता का आयोजन वकया

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **414**

जाना चावहए और विद्यावर्थयों को इसमें भाग लेन े के वलए प्रोत्सावहत वकया जाना चावहए

। उपरोक्त पाठय सहगामी वक्रयाए ँ भाषा वशक्षण के वलए अत्यत ही उपयोगी प्रमावणत होती ह।ैं इन पाठय ृ ृ ं सहगामी वक्रयाओ के इतर भी कछ पाठय सहगामी वक्रयाओ का आयोजन भाषा वशक्षण हते वकया जा ृ ु ु ं ं सकता ह।ै य ा- सगोष्ठी का आयोजन, सास्कवतक कायथक्रम का आयोजन, आशभाषण का आयोजन ृ ु ं ं आवद। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 146 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 अभ्यास रश्न 22. पाठय सहगामी वक्रयाओ से आप क्या समझते ह?ैं ृ ं 23. वहदी भाषा वशक्षण अर्थ आयोवजत की जा सकने िाली मख्य पाठय सहगामी वक्रयाओ को ृ ु ं ं सचीबद्ध कीवजए ? ू 4.8 सारांश भाषा मनष्ट्य की ऐसी विशेषता ह ै जो उसे अन्य प्रावणयों से अलग कर दते ी ह।ै भाषा ऐसे तो जन्मजात ह ै ु लेवकन उसका सिथन समाज के सार् अतःवकया के फलस्िरूप होता ह ै त ा उसम ें पररपक्िता भी ं ं सामावजक अतवक्रया का ही पररणाम ह।ै बद कमरे म ें रहने िाला मनष्ट्य स्तरीय

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **415**

भाषा का प्रयोग नहीं कर ु ं ं सकता ह।ै यह भी कहा जाता ह ै वक यवद एक मानि वशश को जगल में छोड़ वदया जाए तो िह मानिोवचत ु ं भाषा का प्रयोग नहीं कर पाता ह

।ै तात्पयथ यह ह ै वक भाषा सामावजक अतवक्रथ या का पररणाम ह ै और इसे ं सीखना पड़ता ह।ै अ ाथत भाषा का वशक्षण वकया जाता ह।ै मातभाषा के अवतररक्त अन्य भाषा सीखने के ृ वलए तो आिश्यक रूप से वशक्षण की आिश्यकता पड़ती ह।ै अब यवद वशक्षण ह ै तो वशक्षण-सामग्री एि ं पाठय सहगामी वक्रयाए ँ आिश्यक रुप स े होंगी। प्रस्तत इकाई में वहदी भाषा के वशक्षण के वलए प्रयक्त की ृ ु ु ं जा सकने िाली वशक्षण-अविगम सामग्री एि पाठय सहगामी वक्रयाओ का िणनथ वकया गया ह।ै इकाई के ृ ं ं प्रारभ म ें ही वशक्षण-अविगम सामग्री के विविि रुप, वजसमें की दृश्य, श्रव्य, एि दृश्य-श्रव्य वशक्षण ं ं अविगम-सामग्री शावमल ह ैं का सदर िणनथ वकया गया ह।ै भाषा प्रयोगशाला कम्प्यटर एि इटरनेट के वहदी ु ु ं ं ं ं भाषा वशक्षण म ें उपयोग पर जो चचा थ प्रस्तत की गई ह ै िह वनिय ही भाषा वशक्षण-अविगम के कायथ म ें ु शावमल व्यवक्तयों को लाभावन्ित करने िाली ह।ै पाठय सहगामी वक्रयाएँ वशक्षण-अविगम प्रवक्रया के वलए ृ उत्प्रेरक का काम करती ह।ैं भाषा वशक्षण में प्रयक्त की जा सकने िाली विवभन्न पाठय सहगामी वक्रयाओ ृ ु ं की सवक्षप्त व्याख्या इकाई के अवतम खड म ें प्रस्तत की गई ह।ै विद्या ी एि वशक्षक इस व्याख्या का अपन े ु ं ं ं ं वशक्षण-अविगम व्यिहार म ें उपयोग कर उनका प्रभिी प्रयोग कर सकते ह ैं । इस प्रकार, यह इकाई भाषा वशक्षण-अविगम के कायथ म ें शावमल वशक्षकों, विद्यावर्थयों, एि अन्य व्यवक्तयों के वलए अत्यत उपयोगी ं ं ह।ै 4.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. असत्य 2. सत्य 3. सत्य 4. सत्य 5. असत्य उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 147 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 6. हॉलक्िस् े ट के अनसार, “पाठयपस्तक वशक्षण-वक्रयाओ एि अवभप्रायों हते सव्यवस्त्र वचतन ृ ु ु ु ु ं ं ं एि ज्ञान की वलवखत सामग्री ह”ै । ं 7. वशक्षक द्वारा कक्षा म ें प्रिेश करने के तरत बाद श्याम पट्ट पर वलखी जानिाली मख्य आिश्यक ु ु ं सचनाए ँ वनम्नवलवखत ह:ैं ू i. वदनाक ं ii. कक्षा या िग थ iii. चक्र iv. अविे v. विषय vi. प्रकरण 8. असत्य 9. असत्य 10. सत्य 11. सत्य 12. असत्य 13. मवै जक लालटेन एक ऐसा उपकरण ह ै वजसके माध्यम से वचत्रों, रेखावचत्रों, चाटथ आवद के स्लाइडों को बड़ा करके प्रस्तत वकया जाता ह।ै ु 14. वचत्र विस्तारक वचत्रों को बड़ा करके वदखाता ह।ै 15. िचन एि श्रिण कौशल ं 16. भाषा प्रयोगशाला एक ऐसा कक्षाकक्षा ह ै वजसमें भाषा अविगम को अविक प्रभिाशाली बनाने के वलए विशषे प्रकार के उपकरणों को एक सार् सबद्ध कर अविगम ितिारण तैयार वकया ं जाता ह।ै 17. सिप्रथ र्म भाषा प्रयोगशाला की स्ापना 1966 में अमरे रका के शवै क्षक तकवनकी राष्ट्रीय पररषद के द्वारा की गई ी। 18. 3 19. प्रयोगशाला 20. सभी विद्यावर्थयों 21. श्रिण 22. प्रश्न सख्या 1 (अ) एि 1 (ब) के वलए इकाई के खड 3.7 को दखे ।ें ं ं ं 23. प्रश्न सख्या 1 (अ) एि 1 (ब) के वलए इकाई के खड 3.7 को दखे ।ें ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 148 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 4.10 सदं भ थ ग्रंर् सची एवं सहायक पुस्तकें ू 1. अग्रिाल,परोषत्तम एि कमार, सजय. (2000). वहदी नई चाल म ें ढलती: एक पनविचथ ार, ु ु ु ं ं

ं दशे काल प्रकाशन, नई वदलली. 2. कमार, कषण (2004). बच्चे की भाषा और अध्यापक, राष्ट्रीय पस्तक न्यास, नई वदलली. ृ ु ु 3. कौवशक, जयनारायण. (1987). वहदी वशक्षण, हररयाणा सावहत्य अकादमी , चडीगढ़. ं ं 4. गोस्ामी, कष्ण कमार. (1990). सावहत्य भाषा और सावहत्य वशक्षण, उच्च वशक्षा और शिो ृ ु सस्ान, दवक्षण भारत वहदी प्रचार सभा, हदै राबाद ं ं 5. गोस्ामी, कष्ण कमार ए शक्ल, दि द्रें . (1992). सावहत्य वशक्षण, उच्च वशक्षा और शिो ृ ु ु ं सस्ान मद्रास ं 6. वतिारी, परोषत्तम. (1992). वहदी वशक्षण, राजस्ान ग्रर् अकादमी. ु ं ं 7. वतिारी, भोलानार्, (1990). वहदी भाषा वशक्षण, वलवप प्रकाशन, वदलली. ं 8. सम्पण थ पाठयचयाथ म ें भाषा, आशीष प्रकाशन, पटना. ् ू 4.11 तनबिात्मक प्रश्न ं 1. वशक्षण-अविगम सामग्री के वकतने प्रमख िगथ ह?ैं उनके नाम वलवखए तर्ा प्रत्येक िग थ से एक- ु एक उदाहरण दीवजए । 2. कक्षाकक्ष में पाठय पस्तकों के उपयोग की चचाथ कीवजए । ् ु 3. एक वशक्षक को पाठयपस्तक का चयन करते समय पाठयपस्तक की वकन-वकन विशषे ताओ का ् ् ु ु ं ध्यान रखना चावहए? 4. श्यामपट का उपयोग करते समय वशक्षक द्वारा वजन बातों को ध्यान म ें रखना चावहए उनका सवक्षप्त िणनथ कीवजए । ं 5. कक्षाकक्ष में वशक्षण-अविगम सामग्री के रुप म ें मॉडल, चाटथ, पोस्टर, रेखावचत्र आवद के उपयोग पर वनबि वलवखए । ं 6. भाषा प्रयोगशाला का उसकी विशषे ताओ एि सीमाओ के सार् िणनथ कीवजए । ं ं ं 7. वहदी भाषा वशक्षण के वलए आयोवजत की जा सकने िाली विविि पाठय सहगामी वक्रयाओ का ् ं ं सवक्षप्त िणनथ कीवजए । ं 8. अपने विद्यालय म ें वहदी भाषा वशक्षण को ध्यान म ें रखते हए एक िाद-विवाद प्रवतयोवगता का ु ं आयोजन कीवजए और उस प्रवतयोवगता के आिार पर विद्यावर्थयों के भाषाई कौशल में होन े िाले लाभ को इवगत कीवजए । ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 149 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 इकाई 5- हिंदी भाषा विक्षण में सूचना एवं तकनीकी का उपयोग 5.1 प्रस्तािना 5.2 उद्दश्े य 5.3 सचना एि सप्रेषण तकनीवक: सवक्षप्त पररचय ू ं ं ं 5.4 भाषा एि कम्प्यटर ु ं 5.5 भाषा वशक्षण एि कम्प्यटर ु ं 5.6 भाषा वशक्षण-अविगम के वलए सचना एि सप्रेषण तकनीकी सबिी उपकरण ू ं ं ं ं 5.7 इटरनेट एि भाषा वशक्षण ं ं 5.8 भाषा वशक्षण अविगम में सचना एि सचार तकनीकी

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **416**

के प्रयोग के लाभ ू ं ं 5.9 भाषा वशक्षण-अविगम में सचना एि सचार तकनीकी के प्रयोग

की सीमाएँ ू ं ं 5.10 सचना एि सचार तकनीकी समेवकत भाषा वशक्षण एि अविगम ितिारण का वनमाथण ू ं ं ं करने हते आिश्यक शतें ु 5.11 सचना एि सचार तकनीकी के सहयोग से वहदी सावहत्य के वशक्षण को जिीत बनाना ू ं ं ं ं 5.12 वहदी सावहत्य के वशक्षा में सचना एि सचार सबिी तकनीकी सिानों के उपयोग की ू ं ं ं ं ं चनौवतयाँ ु 5.13 साराश ं 5.14 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 5.15 सदभथ ग्रर् सची एि सहयोगी ग्रर् ू ं ं ं ं 5.16 वनबिात्मक प्रश्न ं 5.1 प्रस्तावना ितथमान समय सचना एि प्रौद्योवगकी का ह।ै कम्प्यटर , इटरनेट तर्ा सचना एि सचार प्रौद्योवगकी सबिी ू ु ू ं ं ं ं ं ं उपकरण यर्ा- मोबाइल, टैबलेट आवद का हमारे जिीन में इस प्रकार समिाशे हो चका ह ै वक ये हमारे ु जिीन के अवभन्न अग बन गए ह।ैं दसरे शधदों म ें यह भी कहा जा सकता ह ै वक ितथमान समय में सचना ू ं ू एि तकनीकी के वबना जिीन की कलपना भी नहीं की जा सकती ह।ै जिीन के समस्त वक्रयाकलापों म ें ं इसका प्रयोग ि़लले से हो रहा ह।ै ऐसे म ें वशक्षण-अविगम इससे अछता नहीं ह।ै भाषा वशक्षण के

Plagiarism detected: **0.04%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… id: **417**

क्षेत्र म ें ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 150 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 भी इसका बहतायत से प्रयोग हो रहा ह।ै विगत 20-25 िषों में इस क्षेत्र म

ें उललेखनीय प्रगवत हई ह।ै भारत ु ु सरकार के इलेक्रॉवनक विभाग(ितथमान म ें प्रौद्योवगकी विभाग) की इस प्रगवत में महत्िपणथ भवमका रही ह।ै ू ू आस्की कोड का मानकीकरण, वजस्ट तकनीक

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **418**

का विकास, वहदी म ें ितथनी शद्धीकरण प्रोग्राम का विकास, ु ं मशीनी अनिाद, अनसार प्रौद्योवगकी का विकास

इलेक्रॉवनक कोशों का वनमाथण, भारतीय भाषाओ म ें ु ु ं कारपोरा विकास आवद इस वदशा में उललेखनीय कायथ ह।ैं उपयथक्त सारे कायों के मल में भाषा वनवहत

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **419**

ह।ै ु ू इस प्रकार उपरोक्त कायों के वलए भाषा ज्ञान का होना आिश्यक ह।ै भाषा का ज्ञान प्रदान करने के वलए भाषा वशक्षण की आिश्यकता ह।ै प्रस्तत इकाई भाषा वशक्षण में सचना एि सचार तकनीकी के प्रयोग

पर ु ू ं ं आिाररत ह।ै दसरे शधदों म ें यह कहा जा सकता ह ै वक प्रस्तत इकाई का वनमाथण सचना एि सचार ु ू ं ं ू तकनीवक के द्वारा भाषा-वशक्षण-अविगम का ज्ञान प्रदान करने के वलए वकया गया ह।ै 5.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के पिात आप - 1. सचना एि सप्रेषण तकनीवक का सवक्षप्त पररचय द े सकें ग।े ू ं ं ं 2. भाषा एि कम्प्यटर के पारस्पररक सबि को समझ सकें गे तर्ा इस क्षेत्र म ें हए विवभन्न शिो ु ु ं ं ं कायों का िणनथ कर सकें ग।े 3. भाषा वशक्षण म ें कम्प्यटर के अनप्रयोग का िणनथ कर सकें गे। ु ु 4. भाषा वशक्षण-अविगम के वलए प्रयोग म ें लाए जाने िाले सचना एि सप्रेषण तकनीकी

सबिी ू ं ं ं ं उपकरणों से पररवचत हो सकें ग।े 5. भाषा वशक्षण म ें इटरनेट की भवमका की व्याख्या कर सकें गे। ू ं 6. भाषा वशक्षण अविगम में सचना एि सचार तकनीकी

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **420**

के प्रयोग के लाभों को सचीबद्ध कर ू ू ं ं सकें ग।े 7. भाषा वशक्षण-अविगम में सचना एि सचार तकनीकी के प्रयोग

की सीमाओ को उवललवखत कर ू ं ं ं सकें ग।े 8. सचना एि सचार तकनीकी समवे कत भाषा वशक्षण एि अविगम ितिारण के वनमाथण की ू ं ं ं आिश्यक दशाओ से अवप्रवचत हो सकें ग।े ं 9. वहदी सावहत्य के वशक्षण को जीित बनाने के वलए सचना एि सचार तकनीकी के महत्ि को ू ं ं ं ं प्रकावशत कर सकें ग।े 10. वहदी सावहत्य के वशक्षा म ें सचना एि सचार सबिी तकनीकी सिानों के उपयोग की चनौवतयों ू ु ं ं ं ं ं का उललेख कर सकें ग।े उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 151 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 5.3 सचना एवं संप्रेषण तकनीतक: संतक्षप्त पतरचय ू सचना एि सप्रेषण तकनीवक शधद तीन अलग-अलग शधदों

Quotes detected: **0%** id: **421**

'सचना',

Quotes detected: **0%** id: **422**

'सप्रेषण'

एि

Quotes detected: **0%** id: **423**

'तकनीवक'

का ू ू ं ं ं ं सवम्मवलत रुप ह।ै इसका सामान्य अर्थ िसै ी सारी तकनीवक, वजनका प्रयोग सचनाओ के सप्रेषण को सरल ू ं ं एि प्रभिाकारी बनाने के वलए वकया जाता ह,ै के समच्चय से ह।ै मफी(2011) के अनसार, यह पद ु ु ं

Quotes detected: **0%** id: **424**

'सचना तकनीवक'

पद का विस्तत रुप ह।ै (एफ ओ एल डी ओ सी, 2008) के अनसार, इसका उद्दश्े य ृ ू ु सप्रेषण को एकरुप बनाए रखने पर बल दने ा त◌ा टेवलकम्यवनके शन्स, कम्प्यटसथ त◌ा आिश्यक ु ु ं सॉफ्टिये सथ, भडारण एि दृश्य-श्रव्य प्रणाली के समके न पर बल दने ा ह ै तावक इस तकनीवक का ं ं उपयोगकताथ सचनाओ को प्राप्त कर सके , उसका उपयोग कर सके , उसे भडाररत कर सके त◌ा उसे ू ं ं प्रसाररत कर सके । इस शधद का प्रयोग कम्प्यटर नेटिकथ के सार् एकल तार या एकल वलक प्रणाली की ु ं व्यिस्◌ा से दृश्य-श्रव्य एि टेलीफोन नेटिकथ की सबद्धता के वलए भी वकया जाता ह।ै ं ं सचना एि सप्रेषण तकनीवक कोई सिमथ ान्य पररभाषा दने ा सभि नहीं ह ै क्यों वक इसके सप्रत्यय, ू ं ं ं ं विवि एि अनप्रयोग म ें वनरतर प्रगवत हो रहा ह।ै इसका

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **425**

क्षेत्र इतना व्यापक हो गया ह ै वक इसम ें ि े सभी ु ं ं उत्पाद शावमल हो जाते हैं, जो वक भडारण, पनःप्रावप्त, सचनाओ का प्रसारण एि ग्रहण, वडजवटल रुप म ें ु ू ं ं विद्यतीय माध्यम स

े कर सकते ह।ैं उदाहरणार्थ, व्यवक्तगत कम्प्यटर, वडवजटल टेवलविजन, इमले , रोबोट, ु ु आवद। इस पद का प्रयोग शवै क्षक शिोकायों म ें सन 1980 से होता आ रहा ह।ै इस पद का शधद-सक्षेप, ं आईसीटी, डेवनस स्टिने के द्वारा यनाएटेड वकगडम सरकार के के एक प्रवतिदे न म ें वकए जाने त◌ा ु ं इगलैण्ड, िले स एि उत्तरी आयरलैंड के सन 2000 म ें सशोवित हए पाठयक्रम म ें प्रयोग वकए जाने के बाद ु ् ं ं ं प्रवसद्ध हआ। सयक्त राष्ट्र सघ द्वारा सयक्त राष्ट्र सचना एि सप्रेषण तकनीवक कायथ दल त◌ा सचना एि ु ु ु ू ू ं ं ं ं ं ं सप्रेषण तकनीवक के अतराथष्ट्

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 2 resources! id: **426**

रीय कायाथलय के वनमाथण के पिात इस पद का प्रसार परे विश्व म ें हो गया। ू ं ं वशक्षा के क्षेत्र म

ें सचना एि सप्रेषण तकनीवक पद का प्रयोग वशक्षा को सिाभथ ौवमक बनाने, वशक्षा ू ं ं म ें समता लाने, गणित्तापण थ वशक्षण-अविगम प्रदान करने, वशक्षकों का व्यिसावयक विकास करने के ु ू वलए त◌ा अविक प्रभिी शवै क्षक प्रबिन एि प्रशासन के वलए वकया जाता ह।ै ितथमान समय में सचना ू ं ं एि सचार तकनीवक सित्रथ उपवस्◌त ह।ै लगभग 3 वबवलयन लोग इटरनेट का प्रयोग कर रह े ह।ैं इटरनेट ं ं ं ं उपयोग करनिाले प्रत्येक 10 व्यवक्तयों म ें से 8 के पास स्माटथ फोन ह।ै विकासशील दशे ों म ें तो सचना एि ू ं सप्रेषण तकनीवक सामावजक जिीन का वहस्सा हो गया ह।ै आज सचना एि सप्रेषण तकनीवक सामावजक ू ं ं ं परिितथन म ें महत्िपण थ भवमका वनभा रहा ह ै । ू ू 5.4 भाषा एवं कम्प्यिुर भाषा के क्षेत्र म ें कम्प्यटर के प्रयोग की उपयोवगता से इनकार नहीं वकया जा सकता ह।ै कम्प्यटर एि ु ु ं भाषा से सबवित वजतने भी कायथ हए ह ैं ि◌ह मख्यतः वनम्नवलवखत ह:ैं ु ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 152 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1. कापथस वनमाथण एि

प्रबिन ं ं 2. पाठ ससिान, मशीनी अनिाद एि सवक्षप्तीकरण आवद ु ं ं ं 3. शधद आिाररत सामग्री- शधदकोश, शधद जालक्रम (िडथ नेट), अर्थ जालक्रम (वसमवैं टक नेट) आवद का विकास 4. िाक प्रौद्योवगकी 5. भाषा सबिी सचनात्मक सामग्री का विकास ू ं ं 6. शधद ससिाक, ओ सीआर, श्रतलेखन आवद उत्पादों का वनमाथण ु ं 7. विषय आिाररत वशक्षण कायथक्रम ये सारे कायथक्रम विवभन्न कप्यवटग एजसें ीयों द्वारा तैयार वकए गए ह।ैं ू ं ं 5.5 भाषा तशक्षण एवं कम्प्यिुर भा

Plagiarism detected: **0.05%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 4 resources! id: **427**

षा के क्षेत्र म ें कम्प्यटर के प्रयोग से सबवित उपरोक्त कायथ प्रत्यक्ष रुप से भाषा वशक्षण एि परीक्षण से ु ं ं ं सबवित नहीं ह।ै भाषा वशक्षण के क्षेत्र में कम्प्यटर के अनप्रयोग से सबवित कायथ के क्षेत्र म

ें ितथमान में दो ु ु ं ं ं ं महत्िपणथ सस्ाए ँ कायथ कर रही ह।ैं प्रर्म भारतीय भाषा सस्ान, मसै र त ा वद्वतीय कें द्रीय वहदी सस्ान, ू ू ं ं ं ं आगरा। कें द्रीय वहदी सस्ान में अवहदी भावषयों त ा विदवे शयों को वहदी पढ़ान े का काम वकया जाता ह।ै सस्ान म ें ं ं ं ं ं भारत सरकार के राजभाषा विभाग के वहदी वशक्षण योजना के अतगथत भारत सरकार के अवहदी भाषी ं ं ं अविकाररयों त ा कमचथ ाररयों के वलए चल रह े प्रबिो, प्रिीण त ा प्राज्ञ कायथक्रमों के वलए सी डैक, पण े ु द्वारा सन 1995-96 म ें लीला प्रबिो, लीला प्रिीण त ा लीला प्राज्ञ नामक भाषा वशक्षण के एप्लीके शन सॉफ्टिये सथ का विकास वकया। सस्ान द्वारा इन एप्लीके शन सॉफ्टिये सथ

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 4 resources! id: **428**

का प्रयोग इन पाठयक्रमों के वलए ् ं वशक्षण सामग्री के रूप म ें वकया जाता ह।ै ये एवप्लके शन सॉफ्टिये सथ, सन 1980 में कें द्रीय वहदी सस्ान ं ं द्वारा इन पाठयक्रमों के वलए वशक्षण-सामग्री के रुप म ें व

िकवसत पाठयपस्तकों पर आिाररत ारे। ् ् ु आइ0आइ0टी0, कानपर त ा कें द्रीय वहदी सस्ान आगरा के सयक्त तत्ाि ान म ें आज से ु ु ं ं ं लगभग 25- 26 िषथ पि थ एक कायथक्रम चलाया गया ारा वजसका उद्दश्े य विवभन्न भारतीय भाषाओ म ें ू ं परस्पर अनिाद हते कापथस वनमाथण करना ारा। उस समय भाषा विश्लेषण के वलए नमने के छोटे-छोट े ु ु ू कायथक्रम बनाए गए । उनमें से एक कायथक्रम ारा वहदी म ें

Quotes detected: **0%** id: **429**

‘को’

का प्रयोग। इस कायथक्रम के तहत वहदी ं ं भाषा म ें

Quotes detected: **0%** id: **430**

‘को’

का प्रयोग वकन-वकन पररवस्वतयों में वकया जाता ह,ै उनसे सबवित सामग्री को एकत्र कर ं ं उसकी प्रोग्रावमग की गई ारी। प्रोग्रावमग करने के बाद कम्प्यटर यह वनणयथ लेने म ें सक्षम ारा वक वदया गया ु ं ं िाक्य सही ह ै या गलत। इसके सार् ही कम्प्यटर यह भी बताता ारा वक अगर िाक्य गलत ह ै तो उसम ें ु क्या गलती ह ै त ा इसे कै से ठीक वकया जा सकता ह।ै प्रोग्राम के जाँच हते कम्प्यटर को वनम्नवलवखत दो ु ु िाक्य वदए गए: उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 153 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 □ मैं वकताब चावहए □ राम जाना होगा ` कम्प्यटर ने इन दोनों िाक्यों को गलत कहा और िाक्यों के सही रूप हते वनम्नवलवखत िाक्य सझाए: ु ु ु □ मझे वकताब चावहए ु □ राम को जाना होगा जब कम्प्यटर से पछा गया वक वहदी भाषा म ें वकन-वकन पररवस्वतयों में

Quotes detected: **0%** id: **431**

‘को’

का प्रयोग वकया जाता ह ै ु ू ं तब उसने सारी वस्वतयों (िाक्य सरचनाओ) का िणनथ प्रस्तत कर वदया। हालाँवक इन प्रोग्राम्स के वनमाथण ु ं ं का उद्दश्े य प्रत्यक्ष रुप से भाषा वशक्षण नहीं ारा लेवकन भाषा वशक्षण के वलए इन सॉफ्टिये सथ का बखबी ू प्रयोग वकया जा सकता ारा या वकया जा सकता ह ै । भारतीय भाषा सस्ान, मसै र के क्षेत्रीय

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiparenting.firstcry.com/articles/k-aks… + 2 resources! id: **432**

कें द्रों ने भारतीय भाषाओ के वशक्षण के वलए सलभ भाषा ू ु ं ं प्रौद्योवगकी का प्रयोग

वकया ारा लेवकन यह सभी प्रयोग उच्चारण वशक्षण तक ही सीवमत ारे। वहदी भाषा की सरचना को ध्यान में रखते हए कम्प्यटर समवर्थत भाषा वशक्षण सबिी अनेक सामवग्रयों ु ु ं ं ं ं का विकास वकया जा सकता ह ै उदाहरणार्थ कछ महत्िपणथ विषय वनम्नवलवखत ह:ै ु ू □ दि नागरी वलवप वशक्षण (मानक वलवप) □ मानक ितथनी वशक्षण □ मानक उच्चारण वशक्षण □ वहदी भाषा सरचना का वशक्षण ं ं □ वहदी सज्ञाओ के बहिचन बनाने के वनयम ु ं ं ं □ सज्ञा, सिनथ ाम, विशषे ण रुपिाली ं □ वहदी म ें अवन्ित ं □ वहदी म ें काल, पक्ष ित्त ृ ं □ पयाथयिाची शधद, विपरीतार्थक शधद, श्रवतसम वभन्नार्थक शधद ु □ उपसगथ ,प्रत्यय एि वहदी म ें शधद वनमाथण प्रवक्रया ं ं □ सवि, समास एि कारक ं ं □ एक शधदों के बदले अनेक शधद □ विराम वचन्ह □ वहदी

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **433**

भाषा का विकास ं □ वहदी सावहत्य ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 154 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 □ व्याकरण शिोक कायथक्रम □ वहदी भाषा मलयाकन परीक्षण आवद ू ं ं अभ्यास रश्न 1. शवै क्षक तकनीवक शधद

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **434**

का प्रयोग शवै क्षशोदजक शिोकायों में _____से होता आ रहा ह।ै ् 2. यनाइटेड वकगडम सरकार के एक प्रवतिदे न में _____द्वारा आई0सी0टी शधद का प्रयोग

ु ं वकया गया । 3. कें द्रीय वहदी सस्ान _____ म ें वस्त ह।ै ं ं 4. लीला प्रिीण नामक भाषा वशक्षण सॉफ्टिये र _____भाषा के वशक्षण के वलए बनाया गया ा। 5. सी डैक का शधद विस्तार _____ ह ै । 6. वमलान करें स्तभ अ स्तभ ब ां ां (अ) सी डैक (1) मसै र ू (ब) वहदी वशक्षण योजना (2) मशीनी अनिाद ु ं (स) भारतीय भाषा सस्ान (3) पण े ु ं (द)

Quotes detected: **0%** id: **435**

'मत्र राजभाषा'

(4) 1995-96 ं (य) लीला प्राज्ञ (5) राजभाषा विभाग, भारत सरकार 5.6 भाषा तशक्षण-अतिगम के तलए सचना एवं सप्रं ेषण तकनीकी संबिी ू ं उपकरण वशक्षण एि अविगम में सचना एि सचार तकनीकी के प्रयोग ने विद्यावर्थयों को भाषा सीखने त ा अपने ू ं ं ं भाषा सबिी कौशलों को प्रखर एि तीक्ष्ण करने के वलए या यँ कवहए वक उसे पररष्टकत करने के वलए ृ ू ं ं ं पहले की तलना म ें ितथमान में अविक अिसर एि ससिान प्रदान वकए ह ैं । इसके प्रयोग ने भाषा अविगम ु ं ं की विवभन्न विवियों एि वक्रयाकलापों को समद्ध वकया ह।ै विद्यावर्थयों को स्ितत्र रुप से िाचन, श्रिण, ृ ं ं लेखन एि अतः वक्रया के अिसर भी प्रदान वकए ह।ैं िाशाथयर एि वलया (2011) के अनसार सचना एि ु ू ं ं ं ं सप्रेषण तकनीकी सबिी भाषा वशक्षण एि अविगम के वलए उपकरण, अविगम के स्ितत्र उपकरणों का ं ं ं ं ं ं प्रवतवनवित्ि करते ह ैं वजन्ह ें की प्रत्येक विद्या ी तक पहचँ ाया जा सकता ह।ै इस प्रकार से यह विविि ु विविि प्रकार के विद्यावर्थयों की आिश्यकताओ को सतष्ट करने के वलए सिश्रथ ेष्ठ उपाय ह।ै सचना एि ु ू ं ं ं सप्रेषण तकनीकी सबिी साथविक प्रयक्त वकए जाने िाल े उपकरण एि ससिान वनम्नवलवखत ह:ैं ु ं ं ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 155 ु

Plagiarism detected: **0.11%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **436**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1. आकड़ों को भडाररत करने वाले उपकरण- इस प्रकार के उपकरणों में मख्य रूप से सीडी ु ां ां रोम, डिीिडी, सीडी, पेन ड्राइि, ममे ोरी काडथ आवद आते ह।ैं इस प्रकार के उपकरण विद्यावर्थयों म ें अवभप्रेरणा विकवसत करते ह।ैं 2. अतः हियायमक उपकरण - इस प्रकार के उपकरण विद्यावर्थयों को अन्य विद्यावर्थयों से त ा ां वशक्षकों से प्रत्यक्ष कक्षाकक्ष की तरह अतः वक्रया करने के वलए ितिारण प्रदान करते ह।ैं इस ं प्रकार क

े उपकरणों म ें वनम्नवलवखत उपकरणों को शावमल वकया जाता ह:ै □ अतःवक्रयात्मक व्हाइट बोडथ (श्वेत पट्टी)- मानसी एि ज्यररख 2013 के अनसार इसका प्रयोग ू ु ं ं वशक्षण सामवग्रयों एि सचनाओ को प्रस्तत करने के वलए वकया जाता ह।ै ू ु ं ं □ िॉइस चैट, विडीयो चैट, स्काइपी, विबर, व्हाटसएप आवद- ये सारे अपने-अपने उपयोगकताथओ ् ं को ऐसे ितिारण प्रदान करते ह ैं वजनकी सहायता से उनके मध्य उच्चस्तरीय अतवक्रथ या सभि ं ं होती ह।ै इन सारे सॉफ्टिये सथ के उपयोगकताथ वशक्षक एि विद्या ी दोनों होते ह।ैं अतः, इन ं सॉफ्टिये सथ का प्रयोग करके वशक्षक एि विद्या ी आपस में परस्पर उच्चस्तरीय मौवखक ं अततवक्रथ या कर प्रभिी रूप से भाषा वशक्षण कर सकते ह,ैं अ ाथत यह भाषा वशक्षण के प्रभिी ं उपकरण ह।ै □ टेली कॉन्फ्रें वसग- इसके अतगथत ऑवडयो ििवडयो कॉन्फ्रें वसग त ा िवे बनार सवम्मवलत होते ह।ैं ं ं ं यह उपकरण विद्या ी के िाचन, श्रिण िाक त ा

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **437**

लेखन कौशल को वशक्षक एि विद्या ी के ं मध्य सपन्न आमने-सामने की अतवक्रया के द्वारा प्रोत्सावहत करते ह।ैं ं ं ईमले - यह विद्यावर्थयों को लेखन कौशल

त ा सप्रेषण कौशल को बहत आसान तरीके से ु ं विकवसत करता ह।ै □ प्रस्ततीकरण उपकरण- इसके तहत एम एस एक्सेल सॉफ्टिेयर का प्रयोग वकया जाता ह।ै यह ु विद्यावर्थयों को शधदों की तावलका बनाकर प्रस्तत करने, शधदकोश बनाकर प्रस्तत करने, ु ु व्याकरवणक अियिों को प्रस्तत करने, आवद म ें सहायता करता ह।ै ु □ प्रक्षेपक उपकरण (प्रोजक्े टर)- इसके अतगथत ओिरहडे प्रोजक्े टर, एल सी डी, एि स्लाइड ं ं प्रोजक्े टर को शावमल वकया जाता ह।ै वशक्षक इसका प्रयोग कक्षाकक्ष म ें ध्िवन एि वचत्रों के ं प्रस्ततीकरण द्वारा विद्यावर्थयों के ध्यान को कक्षा में बनासे रखने के वलए वकया जाता ह।ै ु □ सचना एि सचार तकनीकी सबिी अन्य उपकरण- एक शधद ससिाक िडथ प्रोसेवसग प्रोग्राम, इ- ू ं ं ं ं ं ं ं बक्स, जरनलस, शधदकोश, इलेक्रॉवनक पवत्रका, ऑनलाइन समाचार पत्र आवद। ु 3. वल्डा वाइड वेब उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 156 ु हिन्दी का

हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 5.7 इंिरनि एवं भाषा तशक्षण आज समस्त विश्व इटरनेट क्रावत के दौर से गजर रहा ह।ै िवै श्वक जिीन का ऐसा कोई भी पक्ष नहीं ह ै ु ं ं वजसमें इटरनेट

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 2 resources! id: **438**

का प्रयोग नहीं हो रहा ह।ै भाषा वशक्षण इन विविि पक्षों में से एक ह।ै ितथमान समय म ें ं इटरनेट भाषा वशक्षण का एक महत्िपणथ उपकरण ह।ै भाषा वशक्षण म ें इटरनेट के प्रयोग

से भाषा वशक्षण ू ं ं की गणित्ता बढ़ी ह।ै आज अरबों की सख्या में लोग भाषा वशक्षण के वलए या भाषा अविगम के वलए ु ं इटरनेट का िड़ललेे से प्रयोग कर रह े ह।ैं ं भाषा वशक्षण की विवभन्न शवै लयाँ होती ह ैं य ा श्रिण एि बातचीत, व्याकरण शलै ी, आवद। विद्या ी भी ं वभन्न वभन्न शवै लयों की मदद से भाषा सीखना चाहते ह ैं । य ा- कछ विद्या ी अन्य व्यवक्तयों द्वारा वलखे ु गए लेख का विश्लेषण करके भाषा सीखते ह ैं तो कछ विद्या ी वचत्र की सहायता से भाषा सीखते ह।ैं ु इटरनेट की सहायता से वकसी शलै ी का प्रयोग कर भाषा वशक्षण एि अविगम की प्रवक्रया को सपन्न ं ं ं वकया जा सकता ह।ै प्रभिी भाषा वशक्षण-अविगम के वलए कोई एक शलै ी पयाथप्त नहीं ह ै अवपत विवभन्न ु शवै लयों का य ोवचत वमश्रण कर प्रयोग वकया जाना चावहए। इटरनेट इस कायथ को अत्यत सहज बना दते ा ं ं ह।ै इटरनेट आिररत विविि भाषा-वशक्षण उपकरण य ा भाषा अनिद, इटरनेट पर शधदकोश, ु ं ं ऑनलाइन पाठयक्रम, उच्चारण, ऑनलाइन परीक्षा, सहायक पस्तकों की सची, आवद भाषा अविगम को ृ ु ू और भी प्रभिी बना दते े ह।ैं इन उपकरणों के वनशलक उपलधि होने के कारण समस्त विद्यावर्थयों तक ु इसकी पहचँ सरल ह।ै इस क्षेत्र म ें भारत सरकार एि अन्य सस्ाओ द्वारा जो प्रयास वकए गए ह ैं उनमें से ु ं ं ं कछ प्रमख प्रयासों का विरण वनम्नवलवखत ह:ै ु ु 1. मिनी अनवाद- अनप्रयक्त कवत्रम बवद्ध समह (एप्लाइड आवटथवफवशयल इटेवलजसें ग्रप) प्रगत ृ ु ु ु ु ू ु ं सकलन विकास कें द्र(सी डैक), पण े के द्वारा एक मशीन सावित अनिद प्रणाली विकवसत की ु ु ं गई ह ै वजसका नाम मत्र राजभाषा ह।ै यह प्रणाली राजभाषा के प्रशासवनक,

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.doubtnut.com/qna/364564594 + 2 resources! id: **439**

वित्तीय, कवष, लघ ृ ु ं उद्योग, सचना प्रौद्योवगकी, स्ास्थय, रक्षा, वशक्षा एि बैंवकग क्षेत्रों क

े दस्तिाजे ों का अग्रेजी से ू ं ं ं वहदी में अनिद करता ह।ै यह पररयोजना भारत सरकार के गह मत्रालय के राजभा

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-kk-path… id: **440**

षा विभाग ृ ु ं ं द्वारा प्रायोवजत ी। इस प्रोग्राम के स्टैंडएलोन, इरानेट एि इटरनेट सस्करण को विकवसत वकया ं ं ं ं गया ह।ै 2. सी डैक पण े ने राजभाषा विभाग,

गह मत्रालय के के वलए वहदी म ें श्रतलेखन (वडक्टेशन) का एक ृ ु ु ं ं सॉफ्टिये र तैयार वकया ह।ै इस सॉफ्टिये र का नाम श्रतलेखन राजभाषा ह।ै इस सॉफ्टिये र का ु कायथ िाक को पाठ में बदलना ह ै अ ाथत यह सॉफ्टिये र माइक्रोफोन में बोली गई ध्िवन को टेक्स्ट के रूप म ें बदलता ह।ै इस सॉफ्टिये र को स्पीच ट टेक्स्ट सॉफ्टिये र भी कहते ह।ैं ू सीडैक पण े ने ही टकण (टाइवपग) सीखने के वलए

Quotes detected: **0%** id: **441**

‘वलप ऑवफस’

नामक सॉफ्टियर का ु ं ं विकास वकया ह ै । 3. हल्यातरण- वलप्यातरण से आशय वकसी एक वलवप म ें वलखी गई बात का दसरे वलवप म ें ां ं ू रूपातरण ह।ै इ-महाशधदकोश इसका बेहतर उदाहरण ह।ै भारतीय प्रौद्योवगकी सस्ान, मबई द्वारा ु ं ं ं बनाया गया शधदकोश भी बहत उपयोगी ह।ै कछ प्रमख शधदकोशों का विरण वनम्नवलवखत ह:ै ु ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 157 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 □ शधदकोश- इस शधदकोश का वनमाथण मनीष सोनी द्वारा िषथ 2003 में वकया गया ा। मनीष सोनी ने www.shabdakosh.com नामक एक िबे साइट बनाया । इस शधदकोश म ें प्रारभ में 1500 ं शधद ें । आज इस शधदकोश में शधदों की सख्या 100000 से भी अविक हो गई ह।ै ं ं □ google शधदकोश- यह शधदकोश google कपनी द्वारा वनवमतथ ह ै त ा अनिदकों के वलए ु ं अविक उपयोगी ह।ै इस शधदकोश में शधद के अर्थ के सार् अनेक सबवित पदबि भी वदखते ह।ैं ं ं ं उदाहरण के वलए यवद आपको

Quotes detected: **0%** id: **442**

‘फे ज’

शधद का अर्थ दखे ना ह ै तो अर्थ के सार् आपको नेटिकथ करोल फे ज, सपोटथ करोल फे ज आवद अनेक सबवित पदबि भी वदखगें ।े ं ं ं ं ं ं भाषा वशक्षण एि अविगम के कछ महत्िपणथ िबे साइट ह ै जो इस कायथ में सहायता करते ह।ैं ु ू ं 1. mylanguage.org - इस साइट के द्वारा अनेक भारतीय भाषाओ को सगमता के सार् सीखा ु ं जा सकता ह।ै इस साइट की एक खास बात ह ै की यह विवभन्न भारतीय भाषाओ के माध्यम से ं विवभन्न भारतीय भाषाओ का वशक्षण प्रदान करता ह ै अ ाथत अविगमकताथ का भाषाई माध्यम ं कछ भी हो उसे अन्य भाषा सीखने में होने िाली समस्या या तो समाप्त हो जाएगी या अलप हो ु जाएग।ा े वनम्नवलवखत तावलका में इस िबे साइट द्वारा विवभन्न भाषाओ

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.jagran.com/bihar/patna-city-bihar-n… + 2 resources! id: **443**

के माध्यम से प्रदान की ं जान े िाली विवभन्न भाषाओ के वशक्षण को अवकत वकया गया ह:ै ं ं भाषा (अनदिन के भाषा (सीखने के हलए उपलब्ि) ु माध्यम के रुप में) अग्रजे ी माध्यम स

े अवगका, असवमया, ाँिी, बघेलखडी, बगाली, भोजपरी, विष्टणवप्रया मवणपरी, ु ु ु ं ं ं ं बोडो, बदले खडी, छत्तीसगढ़ी, गजराती, हररयाणिी, वहदी, कन्नड़, कश्मीरी, ु ु ं ं ं कोंकणी, मैवर्ली, मलयालम, मवणपरी, मराठी, मारिाड़ी, नेपाली, ओवड़या, ु पजाबी, राजस्ानी, वसहली, तवमल, तेलग, तल एि उद थ ु ु ु ु ं ं ं ू असमी

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **444**

माध्यम से गजराती, वहदी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, ओवड़या, तवमल एि तेलग ु ु ु ं ं बाग्ला माध्यम स

े गजराती, वहदी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, ओवड़या, तवमल एि तेलग ु ु ु ं ं ं गजराती

Plagiarism detected: **0.18%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **445**

माध्यम से बगाली, वहदी, मलयालम, मराठी, तवमल एि तेलग ु ु ू ं ं ं वहदी माध्यम से बगाली, गजराती, मलयालम, उवड़या, तवमल एि तेलग ु ु ू ं ं ं कन्नड़ माध्यम से बगाली, गजराती, वहदी, मलयालम, मराठी, ओवड़या, तवमल एि तेलग ु ु ू ं ं ं मलयालम माध्यम से बगाली, गजराती, वहदी, कन्नड़, मराठी, उवड़या, तवमल एि तेलग ु ु ू ं ं ं ओवड़या माध्यम से बगाली, गजराती, वहदी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, तवमल एि तेलग ु ु ू ं ं ं पजाबी माध्यम से बगाली, गजराती, वहदी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, उवड़या, तवमल एि तेलग ु ु ू ं ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 158 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 तवमल माध्यम से बगाली, गजराती, वहदी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, उवड़या एि तले ग ु ु ू ं ं ं तेलग माध्यम स

े बगाली, गजराती, वहदी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, उवड़या एि तवमल ु ु ु ं ं ं स्रोत: भाषा हिक्षण एव इटरनेट(टेक चद) ां ां ां 2. Youtube- youtube/in में चीनी फॉर टॉटस एि वकडस वहदी सॉफ्टिये र जसै े सॉफ्टिये र ् ् ं ं उपलधि ह।ैं इनके

Plagiarism detected: **0.02%** https://www.hindisahity.com/hindi-alphabet/ id: **446**

माध्यम से अनेक भारतीय भाषाओ को त ्रा भारतीयेतर भाषाओ को वहदी ं ं ं माध्यम स

े सीखा जा सकता ह।ै 3. www.languagereef.com- यह िबे साइट भारतीय भाषाओ एि विश्व की अन्य भाषाओ को ं ं ं सीखने के वलए उपयोगी ह।ै उपरोक्त विचे न से यह स्पष्ट ह ै वक यद्यवप भाषा वशक्षण एि अविगम के क्षेत्र में इटरनेट के प्रयोग को ं ं लेकर विवभन्न सरकारी एि गरै सरकारी सस्ानों द्वारा अनेक प्रयास वकए गए हैं त ्रा वकए जा रह े ह ैं ं ं लेवकन यह प्रयास पयाथप्त नहीं ह।ै अभी इस क्षेत्र म ें और प्रयास करने की आिश्यकता ह।ै भाषा के वशक्षण एि अविगम के वलए और अविक सॉफ्टिये र विकवसत वकए जान े चावहए तावक सभी लोगों तक उनकी ं पहचँ हो सके एि लोग सहजता के सार् भाषा का वशक्षण एि अविगम कर सकें । ये प्रयास वसफथ ु ं ं सॉफ्टिये र के विकास तक ही सीवमत नहीं रहने चावहए बवलक इनके विकास का लोगों तक प्रसार भी होना चावहए। वशक्षकों एि विद्यावर्थयों त ्रा आम जनता को भी इनके प्रयोग के वलए जागरूक बनाया जाना ं चावहए तावक िह आने िाली पीढ़ी को भाषा वशक्षण एि अविगम के वलए इटरनेट के प्रयोग के प्रवत ं ं जागरुक बना सके । अभ्यास रश्न 7. सचना एि सप्रेषण तकनीवक सबिी सिाथविक प्रयक्त जाने िाले उपकरणों के विवभन्न िर्गों के ू ु ं ं ं ं नाम वलखें। 8. हर िर्ग थ म ें आने िाले उपकरणों के दो-दो उदाहरण वलख।ें 9. गह मत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा विभाग के वलए वहदी म ें श्रतलेखन का सॉफ्टिये र वकस ृ ु ं ं सस्ा ने तैयार वकया ्रा। ं 10.

Quotes detected: **0%** id: **447**

'वलप्यातरण'

शधद का क्या अर्थ ह?ै ं 11. विवभन्न भरतीयों के माध्यम से विवभन्न भारतीयों भाषाओ को सीखने का ितिारण प्रदान ं करनिाला िबे साइटस कौन ह?ै ् उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 159 ु

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **448**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 5.8 भाषा तशक्षण अतिगम म सचना एवं सचं ार तकनीकी के प्रयोग के लाभ ें ू जसै ा वक मलम्मा (2010) के द्वारा सझाया गया ह,ै सचना एि सचार तकनीकी सबिी ससिानों का प्रयोग

ु ु ू ं ं ं ं ं कक्षाकक्ष म ें सपाववदत वकए जानिाले विवभन्न कायथक्रमों के वलए वकया जा सकता ह।ै इसमें सामवहक ू ं कायथ, व्यवक्तगत कायथ, विद्यार्ी कें वद्रत अविगम को समर्थन दने े का कायथ आवद को सवम्मवलत वकया जा सकता ह।ै विगत कछ दशकों में तकनीकी के बढ़ते हए प्रयोग ने भाषा वशक्षण एि अविगम की ु ु ं सभिानाओ में अनेक पररितथन वकए ह ैं त ्रा सचना एि सचार तकनीकी सबिी उपकरणों

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **449**

के प्रयोग न े ू ं ं ं ं ं ं विद्यार्ी त ्रा वशक्षक एि विद्यार्ी त ्रा विद्यार्ी के मध्य अतः वक्रया को बढ़ाया ह।ै भाषा वशक्षण- ं ं अविगम म ें सचना एि सचार तकनीकी सबिी उपकरणों के प्रयोग के लाभ को वनम्नवलवखत वबदओ के ू ं ं ं ं ं

ं ु माध्यम से समझा जा सकता है- 1. इटरनेट पढ़ाए जा रह े भाषा सबिी निीन एि अविकत सामवग्रयों के प्रयोग

को विद्यावर्थयों तक ृ ं ं ं ं सहजता एि तीव्रता से पहचाता ह।ै ु ं ं 2. चैट रूम एि आभासी ितिारण जसै े वक सेकड लाइफ आवद विद्याी को न वसफथ भाषा के ं ं वलवखत प्रयोग बवलक बोलने एि सही उच्चारण का अभ्यास करने का अिसर प्रदान करता ह।ै ं यहा उसे गलती करने का कोई भय नहीं रहता ह।ै ं 3. स्काइपी या अन्य ऑनलाइन चैट प्रोग्राम्स के माध्यमो

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/… id: **450**

का प्रयोग करके विद्याी वलखने, पढ़ने, बोलने एि सनन े तथा बातचीत म ें उवचत प्रवतवक्रया करने म ें सक्षम होते ह।ैं ु ं 4.

विद्याी, अपने सहपावठयों के सार् बातचीत करने एि आपसी सहयोग के द्वारा भाषा अविगम ं सबिी ं ं 5. ससिानों के विकास जसै े वक विकी के वनमाथण आवद के वलए अवभप्रेररत होते ह।ैं ं 6. सचना एि सचार तकनीकी सबिी उपकरणों का प्रयोग करके वशक्षक अपने विद्यावर्थयों को ू ं ं ं ं अविक प्रभिाशाली ढग से भाषा सीखा सकता ह।ै ं 7. सचना एि सचार तकनीकी सबिी उपकरणों एि उपलधि शवै क्षक ससिानों की बढ़ती हई ु ू ं ं ं ं ं ं सख्या के कारण वशक्षक अपने विद्यावर्थयों को भाषा अविगम सबिी वनदशे न, व्यवक्तगत रुप से, ं ं ं दने े म ें सक्षम ह।ै 8. इसकी सहायता से वशक्षक विवशष्ट आिश्यकता िाले विद्यावर्थयों की आिश्यकताओ को सतष्ट ु ं ं कर सकता ह ै या दसरे शधदों में यह भी कहा जा सकता ह ै वक व्यवक्तगत विवभन्नता के वसद्धात ं ू को कक्षाकक्ष में प्रयक्त करने में वशक्षक को सचना एि सचार तकनीकी के माध्यम से आसानी ु ू ं ं होती ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 160 ु

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **451**

हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 5.9 भाषा तशक्षण-अतिगम म सचना एवं सचं ार तकनीकी के प्रयोग की ें ू सीमाए ँ भाषा वशक्षण एि अविगम म ें सचना एि सचार तकनीकी के प्रयोग

की वनम्नवलवखत सीमाएँ ह:ैं ू ं ं ं 1. भारतीय पररप्रेक्ष्य म ें इटरनेट के अवस्र कनेक्शन (सपकथ) के कारण विद्याी हतोत्सावहत हो ं ं जाते ह ैं और सचनाओ को ढँढने या अविगम के वलए इटरनेट

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **452**

का प्रयोग करने का पणथ प्रयास नहीं ू ू ू ं ं करते ह।ैं 2. आकँ ड़ों का नष्ट हो जाना विद्यावर्थयों के वलए सचना एि सचार तकनीकी के प्रयोग

की दसरी ु ं ं ू सीमा ह।ै 3. आकँ ड़ों के नष्ट हो जान े के कारण विशषे तः यवद गह-कायथ एि सत्रीय-कायथ को परा करते समय ृ ू ं आकँ ड़े नष्ट

Plagiarism detected: **0.17%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 6 resources! id: **453**

हो जाते ह ैं तो विद्याी हतोत्सावहत हो जाते ह।ैं बराक (2000) ने अपने शिो कायथ ु के आिार पर यह बताया वक विद्याी आकड़ों के नष्ट हो जान े पर तनिा ग्रवसत हो जात े ह।ैं ं 4. वशक्षकों की सचना एि सचार तकनीकी सबिी जागरुकता, साक्षरता तथा सचना एि सप्रेषण ू ू ं ं ं ं ं ं तकनीकी सबिी उपकरणों के प्रयोग में वशक्षकों की कशलता भी इसकी एक सीमा ह।ै यवद ु ं ं वशक्षक सचना एि सप्रेषण तकनीकी सबिी उपकरणों के प्रयोग में कशल नहीं ह ै तो िह अपने ू ु ं ं ं ं विद्यावर्थयों को इन उपकरणों के उपयोग के वलए अवभप्रेररत नहीं कर पाता ह।ै इसके सार् ही सार् िह कक्षाकक्ष म ें इन उपकरणों का प्रभिी उपयोग नहीं कर पाता ह

।ै 5.10 सचना एवं संचार तकनीकी समतकत भाषा तशक्षण एवं अतिगम ू े वातावरण का तनमाण करने हते ु आवश्यक शत ें इसके वलए वनम्नवलवखत आिश्यक शत्त ें ह:ैं 1. एक वशक्षक को उन सॉफ्टिये रों से पररवचत होना चावहए। वशक्षक वजतना ही ज्यादा उन सॉफ्टिये रों से पररवचत होता ह ै उतना ही प्रभिी अविगम ितिारण का वनमाथण विद्यावर्थयों के वलए कर पाता ह।ै 2. अविगम के पररणाम में अतर स्ावपत करने के वलए विद्यावर्थयों की क्षमता का आकलन करना। ं 3. मख्य भाषा के विवभन्न तत्ि यथा विषय विवशष्ट शधदाली, भाषा की सरचना, व्याकरण तथा ु ं भाषा के प्रकाय थ आवद की पहचान। 4. मख्य

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ + 3 resources! id: **454**

भाषा को प्रस्तत करने एिम उसका विस्तार करने के वलए परे प्रोग्राम का प्रयोग वकया जाना ु ु ू चावहए या वक प्रोग्राम के वकसी चयवनत भाग का इसका वनणथय करने के वलए विचार करना। 5. यह वनवित करना वक क्या प्रोग्राम विद्यालय

स्तर, भाषायी-

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **455**

विकास की अिस्ा तथा सास्कवतक ृ ं पररदृश्य एि आय के अनकल ह ै या नहीं। ु ु ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 161 ु हिन्दी क

ा हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 6. सबवित सामग्री की तैयारी वजसम ें दृश्य सामग्री को डाउनलोड करना िबे साइट को बकमाकथ ु ं ं करना। 7. यह विचार करना वक नए भाषा का प्रयोग करने एि सप्रत्य को समझने के वलए वकस प्रकार से ं ं व्हाइट बोडथ का परे कक्षा के सार् प्रयोग वकया जा सकता ह।ै ू 8. कक्षा के विद्यावर्थयों की समह गवतकी ग्रप डायनेवमक्स का अध्ययन करना। ू ु अभ्यास रश्न 12. भाषा वशक्षण अविगम में सचना एि सचार तकनीकी

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **456**

के प्रयोग के लाभ को उवललवखत करें। ू ं ं 13. भाषा वशक्षण-अविगम म ें सचना एि सचार तकनीकी के प्रयोग

की सीमाओ का उललेख करें। ू ं ं ं 14. सचना एि सचार तकनीकी समवे कत भाषा वशक्षण एि अविगम िातिारण का वनमाथण करने ू ं ं ं हते आिश्यक शतों का उललेख करें। ु 5.11 सचना एवं सचं ार तकनीकी के सहयोग से हहदी सातहत्य के तशक्षण को ू जीवंत बनाना वहदी सावहत्य के विवभन्न विाओ के वशक्षण के वलए विवभन्न विवियाँ अपनाई जाती ह।ैं व्यिहाररक स्तर ं ं पर इन विवभन्न विवियों म ें स्पष्ट अतर नहीं वदख पाता ह।ै पररणाम स्िरुप कक्षाकक्ष म ें रोचकता उत्पन ं नहीं हो पाती ह।ै अग्रेजी के बढ़ते हए प्रभाि के कारण वहदी भाषा एि सावहत्य के प्रवत विद्यावर्थयों की रुवच ु ं ं ं में वनरतर ह्रास हो रहा ह।ै इन पररवस्र्वतयों में वहदी सावहत्य का अध्यापन करते समय यवद कक्षा कक्ष में ं ं जीितता नहीं होगी तो विद्याी ऊबने लगगें ।े परपरागत वशक्षण विवियों से अध्यापन कायथ करते समय ं ं वशक्षक जीितता लान े म ें असमर्थ होते ह ैं । कविता, नाटक एि कहानी सबका वशक्षण एक जसै ा ही प्रतीत ं ं होता ह।ै कविता चाह े िीर रस की हो या श्र रस की मन में भिा एक ही उत्पन्न होते ह।ैं ऐसे म ें सचना गार ृ ू ं एि सचार तकनीकी सबिी सिान वशक्षक को अिसर प्रदान करते ह ैं की इन उपकरणों का प्रयोग कर िह ं ं ं ं अपने अध्यापन कायथ म ें जीितता लाए। वहदी सावहत्य वशक्षण को अविक आकषकथ एि रोचक या यँ कह ू ं ं ं लें की जीित बनाने के वलए ऑवडयोी-विडयो उपकरण, वसनेमा की वक्लवपग, नाटक का कोई दृश्य, ं ं नाटक ररहसथल की ररकॉवडांग, िबे ररसोसेज, शधदकोश, वसाँरस, पिार प्िाइट प्रस्ततीकरण, सबवित ु ं ं ं लेखक पर बने वित्तवचत्र आवद का प्रयोग वकया जा सकता ह।ै ृ आइए कछ उदाहरणों के माध्यम से हम यह समझने का प्रयास करें वक कै से सचना एि सचार तकनीकी के ु ू ं ं सहयोग के पररणामस्िरुप वहदी सावहत्य के विवभन्न विाओ के वशक्षण को जीित बनाया जा सकता ह।ै ं ं ं ं सिप्रथ म हम क ा सावहत्य का उदाहरण लेते ह।ैं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 162 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 1. किा साहियय का हिक्षण- यह बात सिथ िवदत ह ै वक वहदी क ा सावहत्य और वहदी वसनेमा ं ं त ा टेलीविजन िाराावहकों का बहत करीबी ररश्ता ह।ै वहदी क ा सावहत्य पर आाररत अनेक ु ं चलवचत्रों त ा िाराावहकों का वनमाथण हआ ह।ै य ा- रविद्र नार् टैगोर के उपन्यास विनोवदनी ु ं पर आाररत चलवचत्र चोखरे बाली, दि कीनदन खत्री के उपन्यास चद्रकाता एि चद्रकाता ं ं ं ं ं ं सतवत पर आाररत िाराावहक चद्रकाता आवद। क ा सावहत्य का वशक्षण करते समय उस ं ं ं क ा सावहत्य से सबवित यवद कोई वसनेमा या िाराावहक हो तो उसके अश को वदखाकर ं ं ं क ा सावहत्य के वशक्षण को रोचक बनाया जा सकता ह।ै क ा सावहत्य के वशलप, चररत्र, अतिस्थ त, कर्न शलै ी आवद की जीित व्याख्या इन सिानों के उपयोग से की जा सकती ह।ै वहदी ु ं ं ं सावहत्य की एक विा का दसरी विा में रूपातरण का प्रत्यक्ष अनभि भी इन विद्यावर्थयों को इन ु ं ू ससिानों के प्रयोग से प्रदान वकया जा सकता ह।ै ं 2. कहवता हिक्षण- कविता वशक्षण करते समय कवि का वचत्र, उनके जन्म स्ान त ा कम थ स्ान के भोगोवलक, राजनैवतक एि आवर्थक पररदृश्य को वदखाया जा सकता ह ै वजससे विद्याी को ं कवि की पष्ठभवम को समझने म ें सहायता वमलती ह।ै कविता का अध्यापन करने के पि थ यवद ृ ू ू रचनाकार के जीिन वस्र्वतयों से सबवित उपलधि सामवग्रयों को स्लाइड

Plagiarism detected: **0.02%** https://hindiyadavji.com/hindi-barakhadi/ id: **457**

के माध्यम से दृश्य रूप ं ं में वदखा वदया जाए तो वशक्षण और भी जीित हो ज

ाता ह।ै कविता के कें द्रीय भिा से सबवित ं ं ं वचत्र वदखाकर भी विद्यावर्थयों को उस भिा को समझने म ें सहायता की जा सकती ह।ै य ा- यवद आप सयथकात वत्रपाठी वनराला जी द्वारा रवचत

Quotes detected: **0%** id: **458**

‘वभक्षक’

शीषकथ कविता या

Quotes detected: **0%** id: **459**

‘तोड़ती पत्र’

ू ं ु शीषकथ कविता का वशक्षण कर रह े ह ैं तो आप वभक्षक का वचत्र या वचलवचलाती िप म ें पत्र ू ु तोड़ती हई स्त्री का वचत्र वदखाकर अपने अध्यापन कायथ में जीितता ला सकत े ह ैं और विद्यावर्थयों ु ं को कविता के भिार्थ को समझने में सहायता कर सकत े ह।ैं इसके माध्यम से आप अपने विद्यावर्थयों को सिदे नशील भी बना सकते ह।ैं कक्षाकक्ष में कविता के पाठ को प्रस्तत कर, ु ं वजसमें की दृश्य-श्रव्य पाठ शावमल ह,ैं विद्यावर्थयों को आसानी से आप अपने वशक्षण कायथ म ें सवम्मवलत कर सकते ह।ैं कविता के वशलप एि भावषक विशषे ताओ को स्पष्ट करने में भी ं ं सहायता वमलती ह।ै समान भिा एि विरिी भिा की कविताओ को भी प्रस्तत करने में सहायता ु ं ं वमलती ह ै वजससे वशक्षण और भी जीित हो उठता ह।ै कवि पर बने वित्तवचत्र को

भी वदखाया जा ृ ं सकता ह ै जो वशक्षण कायथ को जीत बनाने म ें सहायता करती ह।ै ं 3. नाटक का हिक्षण- क ा सावहत्य एि कविता के वशक्षण को जीत बनाने के वलए वजन ं ं ससिानों के प्रयोग की बात ऊपर की गई ह,ै उनके प्रयोग के सार्-सार् नाटक के वकसी अश का ं ं प्रस्ततीकरण भी सार्थक प्रयास होता ह।ै यवद अलग-अलग वनदशे कों द्वारा नाटक का वनमाथण ु वकया गया ह ै तो उनका प्रस्ततीकरण भी नाटक के वशक्षण को जीत बनाता ह ै त ा नाटक के ु ं वशलपगत बारीवकयों को समझने म ें विद्यावर्थयों की सहायता करता ह।ै इस प्रकार के प्रस्ततीकरण ु के माध्यम से विद्यावर्थयों में रगकमथ अ ाथत ध्ि वन, प्रकाश, मच- सज्जा, दृश्य-ंविान आवद ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 163 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 सबिी समझ को सपोवषत वकया जा सकता ह ै एि कालातर में विद्या ी को स्ि य नाटक का ं ं ं ं ं ं ं वनदशे न करने एि मचन करने में सक्षम बनाया जा सकता ह।ै ं ं ं 5.12 हहदी सातहत्य के तशक्षा म सचना एवं संचार संबिी तकनीकी सिानों ें ू ं के उपयोग की चुनौततया ँ सचना एि सचार सबवित तकनीकी ससिानों के उपयोग की सबसे बड़ी चनौती यह ह ै वक वशक्षण के कें द्र ू ु ं ं ं ं ं ं म ें विषयिस्त रह े न वक कम्प्यटर और सचना एि सचार तकनीकी सबिी उपकरण। यवद कें द्र में ु ु ू ं ं ं ं विषयिस्त के स्न पर तकनीकी ससिान स्वपत

Plagiarism detected: **0.02%** https://mycoaching.in/barahkhadi + 4 resources! id: **460**

हो जाते ह ैं तो कक्षाकक्ष में अराजकता का ितिारण ु ं उत्पन्न हो जाता ह

।ै विद्या ी को भी तकनीकी सिानों के उपयोग में विशषे तः सचना एि सप्रेषण तकनीकी सबिी ससिानों के ू ं ं ं ं ं प्रयोग म ें दक्ष होना चावहए। भारतीय पररप्रेक्ष्य म ें इन ससिानों की उपलधिता भी एक बहत बड़ी चनौती ह।ै अभी तक भारत में कोई ु ु ं ऐसा सरकारी विद्यालय नहीं ह ै जो पण थ रुप से कप्यटरीकत हो एि उस म ें इटरनेट सिा की आबिा आपवतथ ृ ू ू ू ं ं ं हो रही हो। अभ्यास रश्न 15. वहदी सवहत्य के वशक्षण को जीत बनाने के वलए आप क्या करेंग?े ं ं 5.13 सारांश प्रस्तत इकाई भाषा वशक्षण म ें सचना एि सप्रेषण तकनीवक के प्रयोग पर आिाररत ह।ै इकाई के प्रारभ में ु ू ं ं ं सचना एि सप्रेषण तकनीवक का सवक्षप्त पररचय वदया गया ह ै वजसम ें पाठकों को सचना एि सप्रेषण की ू ू ं ं ं ं ं एक समझ हो जाए। इकाई के अगले खड में भाषा एि कम्प्यटर के क्षेत्र में हए कायथ का उललेख वकया ु ु ं ं गया ह।ै पाठकों को विषय से जोड़ने म ें यह खड उपयोगी ह।ै अगले कछ खडों म ें भाषा वशक्षण-अविगम म ें ु ं ं सचना एि सप्रेषण तकनीवक सबिी विवभन्न उपकरणों के प्रयोग की विस्तत व्याख्या की गई ह।ै इसके ृ ू ं ं ं ं उपयोग के लाभ एि सीमाओ का भी उललेख वकया गया ह।ै वहदी सावहत्य के वशक्षण को जीत बनाने के ं ं ं ं वलए सचना एि सप्रेषण तकनीवक के प्रयोग की जो व्याख्या की गई ह ै यह इस इकाई को और रुवचकर ू ं ं बनाती ह।ै यह इकाई वनिय ही वशक्षाशास्त्र के वशक्षकों, विद्यावर्थयों एि इस क्षेत्र म ें कायथ कर रह े अन्य ं व्यवक्तयों के वलए उपयोगी ह।ै 5.14 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. 1980 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 164 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 2. डेवनस स्टिने 3. आगरा 4. वहदी ं 5. सेंटर फॉर एडिास कम्प्यवटग ु ं ं 6. (अ) (iii) (ब) (v) (स) (i) (द) (ii) (य) (iv) 7. आकँ ड़ों को भडाररत करनिाले उपकरण, अतःवक्रयात्मक उपकरण , िलडथ िाइड िब ं ं 8. आकँ ड़ों को भडाररत करनिाले उपकरण - सीडी रोम, पेन ड्राइि ं अतःवक्रयात्मक उपकरण - अतःवक्रयत्मक बोडथ , प्रोजक्े टर ं ं िलडथ िाइड िबे - www.google.com, www.rajbhaashaa.gov 9. सी डैक 10. एक वलपी म ें वलखी गई बात का दसरी वलवप म ें पररितथन ू 11. www.mylanguage.org 12. इसके उत्तर के वलए इस इकाई का खड 5.8 देख ें । ं 13. इसके उत्तर के वलए इस इकाई का खड 5.9 देख ें । ं 14. इसके उत्तर के वलए इस इकाई का खड 5.10 दखे ें । ं 15. इसके उत्तर के वलए इस इकाई के खड 5.11 एि 5.12 दखे ें । ं ं 5.15 सदं भ थ ग्रंर् सची एवं सहयोगी ग्रंर् ू 1. एफ0ओ0एल0डी0ओ0सी0 (2008). इफॉरमशे न ऐण्ड कम्यवनके शन टेक्नोलॉजी. ु ं 2. टेकचद. (2013). भाषा वशक्षण एि इटरनेट सचना यग म ें वहदी वशक्षण एि परीक्षण समस्याए ँ ू ु ं ं ं ं ं ं एि पररप्रेक्ष्य (एवडटेड – एम. बलकमार) (पीपी. 167-170). ु ं 3. फिावज़, एफ. आइ. ऐण्ड ज़वह्एह, एस. (2013). द यस ऑफ इटरैवक्टि व्हाइटबोडथ बाइ ु ु ं वप्रसविसथ वटचसथ ट एनहसैं अरेवबक लैंग्ि वटचवग ऐण्ड लवनांग, इ हाउ ऑनलाइन जनथल. ु ं 4. बलॉक, ज.ं (2000). इ्लियएवटग द इम्पैक्ट ऑफ उवसग आईसीटी अपॉन स्टडेंट मोवटिशे न ु ु ु ं ं ऐण्ड अटेनमटें इन इगवलश. ररराइव्ड फ्रॉम ं http://www.edu.cam.ac.uk/Tips/bullock.pdf.` 5. मरे, ज.ं (2011). क्लाउड नेटिकथ आवकथ टेक्चर एण्ड आईसीटी-मॉडनथ नेटिकथ आवकथ टेक्चर ु आईटी नॉलेज एक्सचेंज वटच टारगटे , रेराइव्ड ऑन 8-18-13. उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 165 ु हिन्दी का हिक्षणिास्त्र (भाग I) CPS 4 6. मलम्मा, के .(2010). आईसीटी इन लैंग्ि जे लवनांग-बेवनवफटस ऐण्ड म ेरे डोलॉवजकल ् ु इवम्प्लके शस, ऑन्लाइन जनथल इटरनेशनल स्टवडज. 3(1). ं ं 7. िशौर, एम. ऐण्ड वलआि, एम. (2011). एमवजांग टेक्नोलॉजीज फॉर ऑटोनोमस लैंग्ि लवनांग. स्टडीज इन सेलफ-एक्सेस लवनांग जनथल, 2(3), पीपी. 107-118 5.16 तनबिात्मक प्रश्न ं 1. भाषा एि कम्प्यटर को एक सार् सबद्ध करके वजन

Plagiarism detected: **0.03%** https://edurev.in/t/397601/प्रारंभिक-प्रश्न-पौधों-के-समुद… + 3 resources! id: **461**

क्षेत्रों म ें कायथ हए ह ै उनम ें से कछ महत्ि पणथ ु ु ु ू ं ं क्षेत्रों क

ो सचीबद्ध करें। ू 2. भाषा वशक्षण को कम्प्यटर से सबवित करने के वलए सी डैक, पण े द्वारा अब तक जो प्रयास वकए ु ु ं ं गए ह,ै उनका ि णनथ करें। 3. भाषा वशक्षण-अविगम म ें प्रयक्त वकए जानिाले सचना एि सप्रेषण तकनीवक सबिी उपकरणों ु ू ं ं ं ं का ि णनथ करें। 4. भाषा वशक्षण-अविगम म ें इटरनेट के प्रयोग पर एक वनबि वलख।ें ं ं 5. राजभाषा द्वारा विकवसत मशीनी अनिाद सॉफ्टिये र

Quotes detected: **0%** id: **462**

'मत्र राजभाषा'

का िणनथ करें। ु ं 6. इटरनेट द्वारा भाषा का वशक्षण एि अविगम करते समय होनेिाली कवठनाइयों को अपने ं ं व्यिाहाररक अनभिों के आिार पर िवणतथ करें। ु 7. वहदी नाटय सावहत्य का वशक्षण करते समय आप अपनी कक्षा को जीत बनाने के वलए सचना ् ू ं ं एि सप्रेषण तकनीवक का वकस प्रकार प्रयोग करेंग?े ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 166 ु

Disclaimer:

This report must be correctly interpreted and analyzed by a qualified person who bears the evaluation responsibility!

Any information provided in this report is not final and is a subject for manual review and analysis. Please follow the guidelines: Assessment recommendations

Plagiarism Detector - Your right to know the authenticity! © SkyLine LLC